# दोन के किनारे

( विश्वविख्यात रूसी उपन्यास का हिन्दी अनुवाद )

अनुवादक :—
श्रीरामवृक्ष 'बेनीपुरी'

प्रकाशक
युनिवर्सल प्रेस
१६, शिवचरनलाल रोड,
प्रयाग

मूल्य ४)

प्रकाशक
युनिवर्सल प्रेस
१६, शिवचरन लाल रोड,
इलाहाबाद
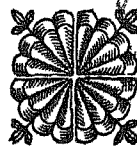
मुद्रक
पं० जयराम भार्गव
युनिवर्सल प्रेस,
प्रयाग

# शान्ति के जमाने में

क

१

मेलखौव परिवार के खेतों का चकला तारतारस्क गाँव की छोर पर दाहिनी ओर था। पशुशाला के फाटक का रुख उत्तर ओर दोन-नदी की तरफ था। साठ फीट ढालवें के बाद नदी का किनारा आता था। दोन का नीला पानी हवा के झोंके से हमेशा चंचल रहता था। पूरब तरफ खलिहान था, जिसके बाद आम सड़क जाती थी। सड़क के छोर पर गिरजाघर था और उसके बाद भुलानेवाली झाड़ियाँ शुरू हो जाती थीं। दक्षिण ओर सुफेद पहाड़ी का सिलसिला था; पश्चिम ओर गली थी।

टर्की की पिछली लड़ाई में प्रोकोफे मेलखौव युद्ध-भूमि से बीबी लेकर लौटा। वह छोटी-सी औरत थी, जो हमेशा शाल में लिपटी रहती। वह अपना मुँह हमेशा ढँके रखती। रेशमी शाल का इन्द्र-धनुषी रंग और उससे निकलने वाली मादक गंध कोजाक स्त्रियों के मन में डाह पैदा करती। कैद करके लाई गई इस टर्की-महिला के चलते मेलखौव परिवार में फूट पड़ गई। प्रोकोफे अपने बेटे से अलग होकर रहने लगा। इस अलगाव का उस पर ऐसा असर हुआ कि उसने फिर अपने बेटे के झोंपड़े में कभी पैर नहीं रखा।

प्रोकोफे ने अपनी अलग गिरस्ती बसाई। अलग घर बनाया, पशुशाला बनाई और जाड़ा आते-आते उसमें जा बसा। जिस दिन वह अपनी बीबी को लेकर नये घर में चला, गाँव के बूढ़े-बच्चे तमाशा देखने को घर से निकल आये। बूढ़े अपनी लम्बी सुफेद डाढ़ी में हँसते; बच्चे उसके पीछे हो लिये।

स्त्रियाँ एक दूसरे के कानों में फुसफुस करतीं। लेकिन प्रोकोफे ने इनकी तनिक परवाह न की। वह अपने ओवर कोट के बटन खोले, अपने तगड़े हाथ से बीबी को पतली कलाई पकड़े, बिखरे बालों वाले सर को ऊँचा किये, तुरन्त जोते हुए खेत की राह बढ़ता गया। हाँ, उसके गाल की उभड़ी हुई हड्डी के नीचे का हिस्सा रह-रह कर फूल उठता, हिल जाता और उसकी पथरीली ऊँची भौहों के बीच में पसीने की बूदें झलक जातीं।

तब से वह कभी गाँव में न गया। न उसे बाजार में देखा गया। दोन के किनारे बनी अपनी एकान्त कुटिया में वह रहता। उसके बारे में गाँव में तरह तरह की कहानियाँ सुनी जातीं। बच्चों ने एक दिन बताया, वह अपनी बीबी को गोद में उठाकर पहाड़ी पर ले जाता है, दोनों वहाँ से झाड़ियों वाले मैदान को देखते हैं और सूरज डूबने पर फिर वह अपनी बीबी को उठाये घर लौटता है। ऐसे व्यवहारों के क्या मानी—गाँव वाले समझ नहीं पाते। बीबी के बारे में भी तरह तरह की बातें होतीं। कोई कहता, वह सुन्दरी है। कोई इसके खिलाफ कसमें खाता। एक दिन एक साहसी औरत ने इस रहस्य का भेदन किया। वह उसके घर किसी बहाने गई और आकर लोगों से कहना शुरू किया—

"छीः छीः बुड्ढा क्या देखकर रीझा? क्या वह औरत है? न उसके नितम्ब हैं, न पेट। उसकी कमर—बर्रे की तरह तुम उसे आसानी से दो टुकड़ों में बाँट सकती हो। छोटी काली आँखें—शैतान की तरह घूरती है। हाल ही वह बच्चा देगी!"

"बचा देगी!" औरतें चिल्ला उठीं।

"हाँ, हाँ। क्या मैं अबोध हूँ, पहचानती नहीं, खुद तीन बच्चे की माँ हूँ।"

"उसका चेहरा कैसा है?"

"उसका चेहरा—पीला; करुण आखें। दूसरे देश में कहीं औरतें खुश रह सकती हैं! और वह प्रोकोफे का पाजामा पहने रहती है।"

"नहीं—ऐसा क्या होगा ?" औरतों की जैसे सांसें छूटने लगीं।

"मैंने खुद देखा है। वह पाजामा पहनती है। ऊपर एक लम्बा कुर्ता, नीचे पाजामा। देखते ही मेरा खून पानी हो गया।"

यह अफवाह फैलने लगी कि प्रोकोफे की बीबी डायन है। गाँव की एक पतोहू ने कसम खाई, एक व्रत के दिन उसने उसे चोरी से उसकी गाय दुहते देखा। तब से गाय का थन सूख गया। थोड़े दिनों बाद गाय मर भी गई। उसी साल गायों की महामारी फैली। दोन के किनारे के बालू पर गायों और बैलों के मुर्दार पड़े हुए दिखाई देते। फिर घोड़ों की बीमारी आई। गाँव की चरागाह में हिनहिनाते फिरने वाले घोड़ों की तायदाद कम होने लगी। अफवाह अब सच मानी जाने लगी।

गाँव के कोजाको ने सभा की। फिर सब प्रोकोफे के पास पहुँचे। प्रोकोफे ने घर से निकल कर पूछा। एक शराब में बुत बूढ़ा चिल्ला उठा—

"अपनी डायन को घर से बाहर करो—हम उसे सजा देंगे।"

प्रोकोफे घबरा कर घर में घुसना चाहा। एक ने उसे दरवाजे पर ही पकड़ लिया। उसका सिर दीवाल से सटाते हुए कहा—

"चिल्लाओ मत, चूँ मत करो। हम तुम्हें कुछ न करेंगे। लेकिन, उस डायन को जिन्दा चबा जायँगे। गाँव भर के पशु न रहें, यह अच्छा या इस डायन का न रहना अच्छा। समझे ? चुप रहो; नहीं तो तुम्हारा सिर भी इस दीवाल से टकरा कर हम भुर्ता बना देंगे।

उसी समय दूसरी तरफ से आवाज आ रही थी—"उस डायन को घसीट लाओ।" प्रोकोफे के साथ ही फौज में काम करने वाला एक आदमी उसके घर में घुस गया और एक हाथ से उसकी बीबी के बाल पकड़े और दूसरे हाथ में उसका मुँह दबाये, उसे घसीटते बाहर लाकर पटक दिया। लोगों की चिल्लाहट में भी उसकी चीख सुनाई पड़ती थी। उस चीख को सुनते ही प्रोकोफे में अजीब गुस्सा आया। आधा दर्जन कोजाकों को औंधे मुँह गिराकर वह घर में घुसा और अपनी तलवार लेकर बाहर मुड़ा। लोगों में भगदड़ मच गई। वह झपट कर उस आदमी पर टूटा जिसने

उसे पहले गाली दी थी। वह मोटा शराबी भाग न पाया था। प्रोकोफे की तलवार के एक वार ने ही उसका वारा न्यारा कर दिया। लोग बे-तहाशा भाग पड़े।

आध घंटे के बाद भीड़ फिर प्रोकोफे के घर के निकट इकट्ठी होने लगी। दो साहसी कोजाकों ने घर में घुसकर देखा—प्रोकोफे की बीबी खून में पड़ी हुई है। वह कराह रही है, दाँत से होंठ काट रही है, जीभ लपलपा रही है। उसकी गर्दन पीड़ा से छटपटा रही है। और, प्रोकोफे काँपते हाथों से एक लाल गेंदे की तरह, समय के पहले ही जन्मे, चें चें करते हुए बच्चे को भेंड़ की खाल में सम्हाल रहा है।

## २

प्रोकोफे की बीबी उसी रात मर गई। उसकी माँ को दया आई और उसने उस बच्चे को सम्हालना शुरू किया। घोड़ी का दूध पिला-पिला कर जब उसे एक वर्ष का कर लिया गया, तब एक दिन गिरजा-घर में ले जाकर उसका नामकरण भी करा लिया गया। उसका नाम पैंतेलीमन रख गया। प्रोकोफे जब बारह वर्ष की सजा भुगत कर लौटा, अपने बच्चे को लेकर फिर अपने खेत के चकले पर रहने लगा।

पैंतेलीमन बढ़ने लगा। साँवला, लम्बा, उध्वत। चेहरा और शकल माँ से मिलती। प्रोकोफे ने उसकी शादी बगल के कोजाक पड़ोसी की लड़की से कर दी।

तब से तुर्की खून कोजाक से मिलने लगा। लम्बी नाक वाली, बेहद खूबसूरत एक नस्ल गाँव में देखी जाने लगी, जिसे लोग 'टर्क' कह कर भी पुकारते।

बाप के मरने पर पैंतेलीमन ने खेती का भार सम्हाला। उसने घर की नई छावनी की, एक एकड़ नई जमीन हासिल की, नई पशुशाला और नया खलिहान बनाया। मेलखौव परिवार एक सम्पन्न परिवार समझा जाने लगा। वहाँ संतोष और चिन्ताहीनता का राज था।

पैंतेलीमन को वर्षों का बोझ मजबूत बनाने लगा। उसका शरीर चौपड़ा होने लगा, कुछ झुक कर चलने लगा, एक तगड़ा बूढ़ा सा वह दीखता। एक बार जवानी में वह घोड़े से गिर पड़ा था, जिससे उसका एक पैर टूट गया था, इस लिए वह थोड़ा लंग देकर चलता था। अपने बायें कान में वह चाँदी का आधा चाँद कनौसी की तरह पहने रहता। बुढ़ापे में भी उसके बाल और दाढ़ी ने रंग नहीं खोया था। जब वह गुस्से में आता, अपने पर काबू खो देता। उसके इस स्वभाव ने उसकी स्त्री को बेवक्त ही बूढ़ी बना दिया था। बेचारी इलिनिचना के सुन्दर मुखड़े पर झुर्रियों का मकड़-जाला छा गया था।

पियोत्रा, उसका बड़ा बेटा, माँ पर पड़ा था। तगड़ा, नाक थोड़ी चिपटी, भूरे बालों के गुच्छे, सुन्दर आँखें। लेकिन छोटा ग्रीगर बिल्कुल बाप की तरह था। पियोत्रा से छः वर्ष का छोटा, मगर उससे आधा सिर बड़ा, नाकें नुकीली, बाल नीले, चमड़ी खाकी, गाल की हड्डी उभड़ी, बाप की ही तरह थोड़ा झुककर चलता और जब मुस्कराता-बाप के जंगली स्वभाव की झलक उसमें स्पष्ट देखी जाती।

छरहरी बदन, बड़ी-बड़ी आँखों वाली दुनिया बाप की प्यारी बेटी थी और पियोत्रा की बीबी दारिया की गोद में एक छोटा-सा बच्चा था। यही मेलखौव परिवार है!

# ख

## १

अब तक इधर उधर कुछ तारे भोर के खाकी आसमान से झांक रहे थे। बादलों को उड़ाती हवा सरसर बह रही थी। दोन के ऊपर कुहासा छाया हुआ था, जो ऊपर की ओर बढ़ता पहाड़ी के सिर पर ऐसा लगता था, मानो बिना सिर का भूरा सांप उस पर ससर कर चढ़ने की कोशिश कर रहा हो। सुहावनी, ठंडी ऊषा की छाप नदी के किनारे बालू कंकड़, ओसभरी दूब सब पर पड़ी हुई थी। क्षितिज के परे सूरज जम्हाई ले रहा था—अभी उठा नहीं था।

मेलखौव परिवार में पहले पैंतेलीमन जागा। अपनी कमीज के बटन लगाते उसने आंगन में आकर देखा घास पर ओस की बूँदे चाँदी सी चमक रही हैं। उसने पशुओं को चरने के लिए खोल दिया। दारिया उठकर गोशाला की ओर गाय दुहने चली। वह सिर्फ साया पहने थी। उसके गोरी टांग पर ओस की बूंदें झड़ने लगीं; जब वह घासों को कुचलते आगे बढ़ी, बूढ़ा पैंतेलीमन विमुग्ध आंखों से उन कुचली घासों का फिर सिर उठाना देखता रहा।

आंगन की बड़ी खिड़की से बाहर के बाग का सौन्दर्य स्पष्ट दीख पड़ता था। ग्रीगर अपने हाथों को आगे फैलाये औंधे मुँह पड़ा था।

"ग्रीगर, मछली मारने चलोगे?" बाप ने उसे पुकारा!

एक पैर बिछावन से जमीन पर रखते हुए उसने कहा—"क्या?"

"जब तक सूरज ऊपर नहीं जाता, चलो, मछली पकड़ लावें।" पैंतेलीमन ने प्रस्ताव किया।

जोरों से सांस खींचते ग्रीगर ने अपना पाजामा खूँटी से उतारा, उजला ऊनी मोजा पैर में पहना, और जूते का फीता बाँधते आगे बढ़ा। पैंतेलीमन

एक हाथ में चारे का मग और दूसरे में बंशी लिये दोन की तरफ रवाना हुआ।

दोनों नाव पर सवार हुए। लगर हटाते ही नाव तेजी से प्रवाह के जोर पर बह चली। तेज धार ने उसे चट्टानों से टकराने और उलट देने की कितनी कोशिशें की; किन्तु ग्रीगर पतवार से उसके सारे वार बचाता रहा। नदी की बिचली मुख्य धारा को पार कर नाव उस तरफ जा पहुँची। तरंगों के हरहर के बीच भी गाँव के मुर्गों की आवाज सुनाई पड़ती थीं। किनारे से चालीस फीट की दूरी पर बीच धारा में, एक पुराना पेड़ गिरा हुआ था, जिसकी सूखी डालों से पानी के टकराने से फेन पर फेन निकल रहे थे।

नाव वहीं रोक दी गई। चारा डाल दिया गया। बूढ़ा सिगरेट जलाकर पीने लगा, ग्री र ने बंशी सम्हाली।

"आजा अंधरिया पखवारा है, शायद मछली न मिले।"

"गलत बात, यह नहीं कहा जा सकता है कि मछली कब चारे की ओर मुड़ेगी। अंधरिया पख में भी मछलियां मैंने पकड़ी हैं।"

उसी समय नाव की बगल में पानी हरहर कर उठा। चार फीट की एक मछली अपनी टेढ़ी पूँछ को हवा में उछालते फिर पानी में धम्म से आ रही। उसके छींटे नाव पर भी पड़े। बूढ़े पैंतेलीमन की दाढ़ी भींग गई। वह अपनी दाढ़ी पोंछ ही रहा था कि दो बड़ी बड़ी मछलियाँ पेड़ की डालियों के बीच उछलीं। तीसरी, छोटी, चट्टान की ओर हवा में तैरती-सी फिर पानी में गिर गई।

ग्रीगर ने बंशी की डोर को जोर से दातों से दबाया। कुहासा में छिपा सूरज आधा उग आया था। पैंतेलीमन होंठों को दबाये बंशी की लग्गी को एकटक देख रहा था।

ग्रीगर मन ही मन अपने बाप को कोस रहा था, जिसने उसे इतना सबेरे जगा दिया था। बिना कुछ खाये सिगरेट पीने से उनके मुँह का स्वाद अजीब हो गया था। वह चुल्लू से पानी निकाल कर पीने का उपक्रम कर ही रहा था कि उसने देखा, उसकी बंशी की लग्गी की छोर पानी की ओर

खिंची जा रही है ; ग्रीगर ने लग्गी को जोर से पकड़ा, लेकिन मछली ज्यादा मजबूत थी। लग्गी धनुषाकार होकर उसके हाथ से छूट गई। "पकड़ो"–बूढ़ा चिल्लाया। नाव बढ़ाकर ग्रीगर ने लग्गी पकड़ ली और बड़े जोरों से खींचा। दोनों ओर से तनाव हुआ। अचानक डोर टूट गई और ग्रीगर नाव पर गिर पड़ा।

"पिया करो पानी"—बूढ़ा उसे भला-बुरा सुनाने लगा। ग्रीगर हँस कर रह गया। फिर, एक नई बंशी पानी में डाली।

पानी में बंशी पहुँची ही थी कि फिर तनाव हुआ। "बदमाश यहीं है।" ग्रीगर बोल उठा और फिर जोर से लग्गी पकड़ी। मछली उसे बीच धारा में घसीट कर ले जाना चाहती थी।

धीरे-धीरे जब डोर बाहर खींची गई, एक लाल मछली जोरों से पानी उछालती हुई ऊपर आई और फिर नीचे जा रही।

"पकड़े रहो,"—बाप ने कहा।

"पकड़े हूँ।"

"देखे नाव के नीचे न जाय!"

सांस सम्भाल कर ग्रीगर मछली को फिर नाव के किनारे लाया। बूढ़े ने उसे पकड़ने को हाथ बढ़ाया कि, वह फिर पानी के नीचे भाग गई।

"जरा उसका मुँह ऊपर करो—थोड़ी हवा लेने के बाद वह कुछ शान्त हो जायगी।" बूढ़े ने आज्ञा दी।

ग्रीगर ने फिर उस मछली को नाव की ओर खींचा। वह थक गई थी। उसकी नाक नाव से टकराई। जब वह नाव में लाई गई, वह मुँह बा रही थी उसकी देह के सुनहले चिउँटे चमचम कर रहे थे। "आखीर हम सफल हुए!"—बूढ़े ने यह कहते हुए मछली को खांची में रखा। आधे घंटे के बाद यह समझते हुए कि अब नई मछली नहीं फँसने की, दोनों बाप बेटे घर की ओर रवाना हुए।

जब ग्रीगर नाव को खेते हुए घर की ओर आ रहा था, उसने यह अनुभव किया कि उसके पिता उससे कुछ कहना चाहते हैं, क्योंकि बूढ़ा विचित्र ढंग से कितने के घरो को देख रहा था। आखिर वह बोला—

"सुनो, ग्रीगर,...मैंने तुम्हें और अक्सोनिया..."

ग्रीगर का चेहरा भयानक ढंग से लाल हो गया! उसने दूसरी ओर गर्दन फेर ली। उसकी कमीज का बटन उसकी मांसल गरदन में जैसे गड़-सा गया।

"तुम उसे घूरते रहते, हो"—बूढ़ा उत्तेनता और क्रोध में बकता गया—"स्तेपन हमारा पड़ोसी है। उसकी बीबी से तुम यों खेलवाड़ करो—मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। ऐसी बातों से खुराफात बढ़ती है। मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ—अगर फिर देखा तो, कोड़े से तुम्हारी खबर लूँगा।"

पैंतेलीमन ने देखा, उसके लड़के के चेहरे पर खून तरंगे ले रहा है।

"यह सब झूठी बात है!"—ग्रीगर चिल्ला उठा। उसकी आँखें बाप की आँखों में गड़ी थीं।

"चुप रहो।"

"लोग झूठी बात कहते है!"

"जबान पकड़ो, हरामजादे!"

किनारे आने तक दोनों चुप रहे। बाप ने आखिरी चेंतावनी दी—

"सुनो, मैंने जो कहा है, भूलो मत। नहीं तो मैं आज ही से तुम्हारा सारा खेल बंद कर दूँगा। घर से तुम एक कदम बाहर नहीं निकल पाओगे।"

ग्रीगर ने कोई जवाब नहीं दिया। नाव से उतरते हुए पूछा—"क्या यह मछली घर में दे दूँ।"

"ले जाओ, साहूकार मोरबौव के धर जाकर बेच लो। इसके पैसे से सिगरेट पीना।"

अपने होंठों को काटते ग्रीगर बाप के पीछे चला आ रहा था। उसकी गुस्से से भरी आँखें बाप की गर्दन पर गड़ी हुई थीं।" यह भी कर लिजिये बाबूजी! आप मुझे काल कोठरी में कर दें; किन्तु आज रात में तो उससे मिलूँगा ही।" वह इस तरह सोच रहा था।

## २

पहला मुर्गा बाँग दे चुका था, तब ग्रीगर अपनी शाम की सैर से लौटा। वह धीरे-धीरे घर में घुसा, कपड़े उतारे, लेट गया। सहन में सुनहली चाँदनी फैल रही थी। बिछावन के ऊपर ताखे पर मक्खियाँ भिन्ना रही थीं।

वह सो चुका होता लेकिन रसोईघर में उसके भतीजे ने चिल्लाना शुरू किया। उसका पालना चें चें कर रहा था और उसकी माँ दारिया ऊँची हुई आवाज में कह रही थी—

"सो, शैतान बच्चे, सो—तुम्हारे चलते न दिन में चैन और न रात में नींद!" वह धीरे-धीरे एक पालने का गीत गाने लगी।"

न-जाने वह कब सोया? घोड़े की लगातार हिनहिनाहट सुनकर उसकी नींद टूटी। दारिया उस समय गा रही थी—

बतख कहाँ गये? नरकट में घुस गये।

और नरकट कहाँ हैं? लड़कियों ने उन्हें उखाड़ दिया।

लड़कियाँ कहाँ गईं? लड़कियों ने दुल्हे का साथ किया।

और कोसाक कहाँ हैं? वे लड़ाई के मैदान गये।

आँख मलते ग्रीगर अस्तबल में गया और पियोत्रा के घोड़े को पानी पिलाने चला।

दोन के किनारे अछूती, फैली हुई चाँदनी बिछी थी। दोन के ऊपर कुहासा लटक रहा था और आसमान में तारे झिलमिल कर रहे थे। ढालवें उतार पर घोड़े ने सजगता से अगले पैर नीचे बढ़ाये। दूर से बतख की कूँ-कूँ आवाज सुनाई पड़ी। एक बड़ी मछली छोटी मछली का पीछा कर रही थी, उसकी पूँछ पानी पर फट-फट कर रही थी।

घोड़ा पानी पीने लगा, ग्रीगर आसमान देखने लगा, जहाँ उषा की पहली झलक दीख पड़ती थी। उसके हृदय में एक हल्की, आनन्द-दायिनी शून्यता थी।

घर आकर वह माँ के निकट गया।

"कौन? ग्रिश्का? घोड़े को पानी पिला दिया?"

"हाँ ।"

"तो जाओ, स्तेपन को भी जगा दो। वह भी पियोत्रा के साथ जायगा ।"

भोर की ताजगी ने ग्रीगर का हृदय चंचल कर दिया। वह काँप उठा। काँपते पैरों से वह स्तेपन के घर आया। स्तेपन रसोईघर में एक तख्ते पर सोया था। उसकी बीबी का सर उसकी छाती पर था। धुँधली चाँदनी में ग्रीगर ने अक्सीनिया को देखा। उसका घाँघरा घुटने के ऊपर सिमटा था। उसकी खुली, सुफेद टाँगें निर्लज्जता से अलग-अलग पड़ी थीं। एक क्षण तक वह घूरता रहा। उसके मुँह में धूल उड़ रही थी, उसके सर में साँय-साँय हो रहा था।

एक अद्भुत कर्कश स्वर में वह चिल्लाया—

"कोई है ? अरे, उठते जाओ ।"

अक्सीनिया उठ कर बोली—"कौन ?" और अपने घांघरे को सम्हालने लगी। उसके तकिये पर कुछ बूँदें चमक रही थीं। जवान औरत की भोर की नींद बड़ी गहरी होती है।

"मैं हूँ, माँ ने कहा है, स्तेपन को जगा दो ।"

"अभी हम उठे ।" बड़ी असमंजस में पड़ी वह फिर बोली—"स्तेपन, प्यारे, उठो ।" ग्रीगर वहाँ खड़ा नहीं रह सका।

गाँव के ३० कोजाक मई महीने की सैनिक शिक्षा लेने जा रहे थे। सात बजे के लगभग गाड़ियों पर सामान लादे, पैदल या घोड़े पर चढ़े कोजाक चौराहे पर एकत्र होने लगे।

ग्रीगर ने देखा, पियोत्रा लगाम की बागडोर की मरम्मत कर रहा है और उसका बाप पैंतेलीमन घोड़े के तोबड़े में जई रख रहा है। भूखा घोड़ा लगातार मुँह चलाता जा रहा है। जब वह खा चुका, ग्रीगर उसे फिर पानी पिलाने ले चला।

घोड़े पर जीन कसी जा चुकी थी। उसके सिर पर एक उजला चाँद चमचम कर रहा था। ग्रीगर के सवार होते ही वह सरपट भागा। जब

घोड़ा दोन के किनारे के ढालुवें पर उतर रहा था, ग्रीगर ने देखा, अक्सीनिया घड़ा लिये नदी की ओर जा रही है। ग्रीगर ने घोड़े को उसकी ओर बढ़ाते हुए नदी किनारे ले गया। घोड़े की टापों से इतनी धूल उड़ी कि अक्सीनिया को उसने ढँक-सा लिया। उस धूल के घटाटोप से निकल कर जब वह नदी किनारे पहुँची, ग्रीगर से बोली—

"शैतान कहीं का—घोड़े से मुझे कुचल ही डाला था तुमने। ठहरो—मैं तुम्हारे बाप से कहूँगी, तुम किस तरह घोड़ा हाँकते हो!"

"अरी, पड़ोसिन मेरी! नाराज मत हो। जब तुम्हारा पति कैम्प चला जायगा, हो सकता है, मैं तुम्हारे किसी काम का हो सकूँ।"

"तुम किस तरह मेरे काम के होगे?"

"जब कटनी के दिन आवेंगे तुम मेरी मदद चाह सकती हो।"—ग्रीगर ने मुस्कुराते हुए कहा।

अक्सीनिया ने अपना घड़ा नदी में डुबाया और भर कर बाहर किया। उसने अपने घांघरे को घुटनों में दबा लिया, क्योंकि हवा जोरों से उसे लहरा रही थी।

"तो तुम्हारे स्तेपन को वे तुमसे छीन रहे हैं?" ग्रीगर ने पूछा।

"इससे तुम्हारा क्या?"

"अरी, इतनी आग-बबूला मत बन, मैं पूछने से भी गया?"

"वह जा रहे हैं, इससे क्या होता है?"

"तुम अकेली पड़ जाओगी?"

"हूँ।"

घोड़े ने अपना सर पानी से उठाया। इधर अपना घड़ा कंधे पर लिये अक्सीनिया चली। आगे-आगे अक्सीनिया, पीछे-पीछे घोड़े पर ग्रीगर। हवा उसके घांघरे की किनारी को लहरा रही थी। उसके घुँघराले बाल उसकी लम्बी खूबसूरत गर्दन पर खेल रहे थे। सर पर जरीदार टोपी चमक रही थी। गुलाबी रंग की कमीज कमर तक झूल रही थी। ग्रीगर एकटक

उसकी सौन्दर्यराशि का निरीक्षण कर रहा था। उससे बातें करने को वह छटपटा उठा।

"तुम्हारा पति तुमसे बिछुड़ रहा है—क्यों ?"

अक्सीनिया हँसते हुए मुड़ कर, बिना रुके ही, बोली—

"शादी कर लो, तब जान सको, यह बिछुड़ना क्या होता है ?"

"लेकिन कुछ औरतें पति के जाने पर खुश होती हैं। मेरी भौजाई पति के जाते ही मोटी हो जायगी—तुम देख लेना।"

"पति कोई जोंक तो नहीं होता, लेकिन वह खून चूस लेता है, इसमें तो शक ही नहीं। क्या तुम्हारी शादी अब जल्द होगी ?"

"मैं नहीं जानता—बाबू जी जानें! फौज की तालीम खत्म होने पर शायद।"

"अभी तुम छोकड़े हो—मत शादी करो।"

"क्यों नहीं ?"

"शादी से सिर्फ अफसोस हासिल होता है।"— अक्सीनिया भौहें चढ़ा कर जरा मुस्कराई। उसने अधर नहीं खोले। ग्रीगर ने देखा, उसके अधर कुछ सूजे हुए हैं। अपने घोड़े की गर्दन के बाल सुलझाते हुए वह बोला—

"मैं शादी नहीं करूँगा। इस हालत में ही मुझे कोई प्यार करती है।"

"ओ हो, कोई तुम्हें प्यार भी करने लगी है ! सच ?"

"तो क्या झूठ !—तुम्हारा स्तेपन तो अब चला ही।"

"मुझसे छेड़ मत करो—मैं स्तेपन से कह दूँगी।"

मैं स्तेपन को दिखला दूँगा..."

"तो देखना, रोना मत !"

"तुम मुझे डरा रही हो क्या ?"

"मैं तुम्हें क्यों डराने चली ? इतना ही कहती हूँ, मेहरबानी करके किसी दूसरी लड़की से अपने आँसू पुँछवाना। मेरी ओर मत रा करो।"

"मैं अब और बूरा करूँगा—और भी, हूँ !"

"देखा जायगा ।"इतना कहते, बिहँसती अक्सीनिया ने दूसरी राह पकड़ी । ग्रीगर ने अपना घोड़ा बढ़ाकर उसकी राह रोक दी

"मुझे जाने दो ग्रिश्का !"

"नहीं।"

"बेवकूफी मत करो, मुझे अपने पति को रवाना करना है ।"

ग्रीगर ने मुस्कराते हुए अपने घोड़े को उसकी ओर और बढ़ा दिया। घोड़े ने अक्सीनिया को चट्टान की ओर ढकेल दिया ।

"शैतान, मुझे जाने दो । देखते नहीं, वहाँ आदमी खड़े हैं । अगर किसी ने देख लिया, तो हमें क्या कहेंगे वे ।" अक्सीनिया ने भयभीत सा चेहरा बना लिया और पीछे देख अपने घर की ओर बढ़ गई ।

पियोत्रा घर के लोगों से विदा ले रहा था । अपने बाप को कुछ घरेलू उपदेश देकर वह उन्हें प्रणाम कर घोड़े पर चढ़ा । जीन पर अपनी कमीज की मोड़ को सम्हाला । घोड़ा दरवाजे की ओर बढ़ा । घोड़े की टाप की गत पर कमर से लटकती तलवार झनझना उठी ।

दारिया अपने बच्चे को लिये खड़ी थी । उसकी माँ इलिनिचना आँगन में खड़ी आँसू बहा रही थी । बहन दुनिया के आँसू उसके जाकेट को भिंगो रहे थे । दारिया की गीली नजरें पति की उजली कमीज पर गड़ी हुई थीं ।

कटघरे पर चढ़ कर ग्रीगर ने देखा, अक्सीनिया अपने पति को बिदा कर रही थी । हरी ऊनी कमीज से अपने को सजाये वह खुद घोड़े को बाहर लाई ।स्तेपन ने उससे कुछ जल्दी-जल्दी बातें की । फिर उसने बड़ी शानदारी से अपनी बीवी को चूमा । चूमते समय उसका हाथ अक्सीनिया के कंधे से लिपटे हुए थे । उसके उजले जेकेट पर उसके धूप जले हाथ काले दीख पड़ते थे । स्तेपन की ऊँची गर्दन, चौड़ी छाती और उमेठी मूँछ को देखकर ग्रीगर इर्षा से जल उठा ।

अक्सीनिया किसी बात पर मुस्कराई और गर्दन हिलाई । जीन पर स्थिर अचंचल बैठा, स्तेपन ने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया । रिकाब पकड़े

अक्सीनिया दरवाजे तक आई, उसकी आँखों में प्रेम और प्यार छलक पड़ती थी।

---

३

तारतास्र्क से सीत्राकौव—जहाँ फौजी ट्रेनिंग कैम्प था—चालीस मील की दूरी पर था। पियोत्रा और स्तेपन एक ही गाड़ी पर जा रहे थे। उन्हीं के साथ फीदोत क्रिस्तोनिया और इवान भी जा रहे थे। पहले पड़ाव के बाद क्रिस्तोनिया और स्तेपन के घोड़े गाड़ी में जोत दिये गये और बाकी घोड़ों को गाड़ी के पीछे रस्से से बाँध दिया गया। क्रिस्तोनिया गाड़ी हांक रहा था और पियोत्रा, स्तेपन, और खान गाड़ी में लेटे सिगरेट पी रहे थे। फीदोत पीछे पैदल चल रहा था।

सड़क पर कोलाहल था—हँसी, हाँक, गीत, घोड़ों की टाप और खाली रकाबों के झिनझिन, सब मिलकर एक हो रहे थे।

पियोत्रा के सर के नीचे बिस्कुट का थैला था। दाढ़ी पर हाथ फेरते उसने कहा—"स्टेपन, कुछ गाओ, भाई।"

"उँह ?"

"अरे, एक ही सही।"

"बड़ी गर्मी है मेरी जवान सूख रही है।"

"रास्ते में कोई सराय भी तो नहीं दीख पड़ता—पीने की आशा छोड़ो।"

"अच्छा, तो तुम भी साथ दो। लेकिन, तुम्हारा गला भी कोई गला है। हाँ तुम्हारा ग्रिश्का अच्छा गाता है, उसकी आवाज होती है या चाँदी के तार!"

स्तेपन ने सर नीचे कर गला साफ किया, खखारा—फिर धीमे स्वर में गा उठा—

"अरे, वह शरम से गाल लाल किये सूरज
आज कैसा सबेरे-सबेरे मुस्कुरा रहा है !"

"इावन ने अपनी हथेली गाल पर रखकर बैठे हुए गले से सुर भरा। पियोत्रा ने देखा, उसके ललाट की नसें इस प्रयत्न में उभड़ कर नीली बनी जा रही हैं।

"अभी वह छोकड़ी थी, वह छोटी औरत पानी का घड़ा लेकर नदी किनारे पहुँची !"

स्तेपन अभी सोये सोये गा रहा था, मुँह ऊपर कर क्रिस्तोनिया से बोला—

"जरा तुम भी सुर भरो क्रिस्तोनिया।"

"और, वह छोकड़ा उसने उसका अभिप्राय समझा
अपनी सब्जी घोड़ी पर जीन कस ली उसने।"

स्तेपन मुस्कुराता हुआ पियोत्रा की ओर मुड़ा और पियोत्रा के गले से भी आवाज निकली। भारी दाढ़ी वाले जबड़े को खोलते हुए क्रिस्तोनिया ने वह सतम सुर भरा कि सारी गाड़ी काँप सी उठी।

"अपनी सब्जी घोड़ी पर उसने जीन कस ली और उस औरत को आगे से घेर लिया।"

क्रिस्तोनिया चुप होकर पियोत्रा का मुँह इन्तजार में देख रहा था। अपनी आँखें बंद किये, चेहरा पसीने से तर बतर, स्तेपन गाये जा रहा था। कभी उसका सुर नीचा होते-होते जरा फुसकी मालूम होता, कभी ऊँचा चढ़ते-चढ़ते टंकार-सा गूँज उठता।

"ओ छोटी औरत, ओ छोटी औरत, जरा मेहरबानी—
मेहरबानी करके नदी में मेरी घोड़ी को पानी पीने दे।"

क्रिस्तोनिया फिर गला फाड़ कर चिल्ला उठा। दूसरी गाड़ियों से भी आवाजें आने लगीं, सभी इसी गीत पर अपने सुर मिलाये जा रहे थे। लोहे के ढांचे से पहिया टकराता, गर्द के मारे घोड़े हांफते। अधजले मैदान से एक उजली चिड़िया उड़कर आसमान में जाकर पड़ी। चीख रही थी और उसकी

आंखें नीचे देख रही थीं गाड़ियों का ताता, टाप से फूल उड़ाते मस्ताने उजलेघोड़े, धूलभरी उजली कमीज पहने आदमी सड़क के किनारे किनारे बढ़ रहे।

स्टेपन गाड़ी पर खड़ा होगया। एक हाथ से पाल उड़ाता, एक हाथ से ताल दिये जाता—वह गाया किया। फीदोत मुँह से सीटी बजा रहा था। पियोत्रा हँसता अपनी टोपी हाथ से हिला रहा था। स्टेपन के कंधे मस्ती से हिल रहे थे। इसी समय क्रिस्तोनिया गाड़ी पर से नीचे कूद पड़ा और अपनी लम्बी कमीज खोले, सर पर धूल का अम्बार लिये, कोजाकों का नाच नाचने लगा। उछलता, कूदता, चक्कर देता—अपनी रस्सी पैरों भी लम्बी ३ गज धूल पर छोड़ता!

---

४

अक्सीनिया सत्तरह वर्ष की थी, जब उसकी शादी स्टेपन से हुई। वह डोन के उस पार के एक गाँव में पैदा हुई थी।

शादी के एक वर्ष पहले गाँव से पाँच मील दूर, एक मैदान में वह हल चलाया करती। एक रात को उसके बाप के जिसकी उम्र पचास वर्ष की होगी उसके हाथपैर बाँध कर उसके साथ बलात्कार किया।

"आज तुमने किसी से कहा, तो मैं तेरा खून कर दूँगा—सनकी! और अगर तुम चुप रही, तो तुम्हें रेशमी जाकेट दूँगा। याद रख खून कर दूँगा, अगर...." उसके बाप ने उससे कहा।

अक्सीनिया उसी रात को अपनी कटी साया पहने गाँव की ओर भागी। वह अपनी माँ के पैरों पर गिर पड़ी और रोती-रोती सारी दास्तान सुनाई। उसके बड़े भाई और माँ ने गाड़ी में घोड़े जोते और अक्सीनिया को लिये बाप की ओर चले। इन पाँच मीलों में ऐसे जोर से घोड़े हाँके कि मालूम होता था वे जानपर दम तोड़ देंगे। उन लोगों ने बुड्ढे को नजदीक पाया।

वह अपना ओवरकोट बिछाये नशे की नींद में बेहोश पड़ा था—शराब की बोतल उसके बगल में पड़ी थी। अक्सीनिया ने देखा, उसका भाई जूये को खोल रहा है। उसने बाप के पैर में झटके देकर जगाया, दो एक सवाल पूछे और फिर पीटना शुरू किया। बेटा और माँ—दोनों बुड्ढे को लगातार पीटे जा रहे थे। डेढ़ घंटे तक यह कपाल क्रिया होती रही। हमेशा की सुधुआ बुढ़िया चंडी बन गई थी, वह पति के बाल नोच रही थी! बेटा अपने बूटों से बाप की खोपड़ी गंजा कर रहा था। अक्सीनिया गाड़ी में पड़ी थर थर काँप रही थी। भोर होते होते बुड्ढे को गाड़ी पर लाके सब घर पहुँचे। बुड्ढा कराहता हुआ बिछावना पर पड़ा था, उसकी आँखें अक्सीनिया को ढूँढ़ रही थी, जो कहीं मुँह छिपाये पड़ी थी। खून और माँस के लोंदे तकिये पर गिर रहे थे। शाम तक वह मर गया। पड़ोसियों को कह दिया गया, वह गाड़ी पर से गिर पड़ा था।

साल के अन्दर ही सजी हुई गाड़ी में चढ़कर हुल्टे की तरफ से एक जमात पहुँची और लम्बे, माँसल गर्दन और सुगठित शरीर वाले स्टेपन ने अक्सीनिया को पसंन्द किया। जाड़े में शादी होने की बात तय हो गई।

चारों ओर कुहासा छाया हुआ था और जब तक बरफ पड़ने लगती थी। अक्सीनिया ऐसे दिन स्टेपन के घर के मलकिन बनी। भोर में शादी की विधियाँ पूरी कर स्टेपन की माँ अक्सीनियाँ को रसोईघर में ले गई और यों ही चीजों को बिखेरते हुई बोली—

"नहीं, मेरी छोटी बिटिया, तुम्हें हमने प्यार के लिए नहीं बुलाया, न बिछावना पर पड़े रहने के लिए। जाओ और गाय दुह लो और खाना तैयार करो। मैं बूढ़ी और बेकाम हूँ। अब घर तुम्हें सम्हालना है, सारा बोझ अब तुम पर है।"

उसी दिन स्टेपन अपनी इस नौजवान नई बीबी को खलिहान के बैठक खाने में ले गया और वहाँ उसे खूब पीटा। उसके पेट में छाती पर, पीठ पर बुरी तरह पिटाई की, यह सावधानी रखते हुए कि कहीं निशाना न पड़े।

इसके बाद उसने उसकी सुध न ली; गाँव की बदचलन औरतों से रंगरँलियाँ करता रहा। वह रात भर अपनी बीबी को कोठरी में बंदकर, बाहर ताला दे, आप रफूचक्कर हो जाया करता।

अठारह महीने तक, जब तक कि बच्चा नहीं हो गया, वह अपनी बीबी को अपनी बेइज्जती के लिए क्षमा नहीं कर सका। तब वह कुछ शान्त हो गया, लेकिन तो भी बीबी को बहुत ही कम प्यार देता और शायद ही रात अपने घर में गुजारता।

खेती बड़ी थी। बहुत ढोर थे। अक्सीनिया काम से परेशान रहती स्टेपन आलसी था—दिन भर घूमा करता, सिगरेट पीता, ताश खेलता, नई खबरें सुनता। बुढ़िया भी किसी काम की नहीं थी। थोड़ी देर दौड़ धूप कर वह हाँफती हुई बिछावना पर गिर जाती, छत देखती रहती, कराहती रहती, छटपटाती रहती। अपना काम खतम कर अक्सीनिया कोने में जा छिपती और भय एवं दया की दृष्टि से अपनी सास को देखती।

शादी के लगभग अठारह महीने बाद बुढ़िया मर गई। भोर में अक्सीनिया प्रसूति-घर में गई और जब बच्चे को जन्म लिये एक घंटा बीता था, बुढ़िया अस्तबल के दरवाजे पर गिर पड़ी और मर गयी।

बच्चे के जन्म के बाद अक्सीनिया ने पति को प्रसन्न करने के लिए कुछ उठा नहीं रखा, लेकिन उसने पाया कि उसके प्रति उसके हृदय में सिवा स्त्री-सुलभ करुणा और आदत की लाचारी के, कोई भी भावना नहीं है। वह बच्चा एक वर्ष के बाद मर गया। स्टेपन की फिर पुरानी जिंदगी शुरू हुई। इधर जब ग्रीगर ने अक्सीनिया भी राह में आ खड़ा हुआ उसने भय के साथ अनुभव किया—वह इस नौजवान को प्यार करती है। बुलडौग की तरह हद उसके पीछे पड़ा था। उसने देखा वह स्टेपन से भी नहीं डरता और उसके कारण वह अपनी राह पर रुक नहीं सकता। चाहते हुए भी चाह को रोकते हुए भी, वह अपने को अब ज्यादा सिंगार कर रखने लगी है। यह

भी उसने पाया। वह अनायास ही अपने को ग्रीगर के रास्ते पर रख देती है। ग्रीगर की काली बड़ी आँख जब उस पर नजर उँड़ने लगतीं वह कितना सुख अनुभव करती। एक दिन जब वह भोर हीं उठकर गाय दुहने गई, न जाने क्यों उसके मुँह से निकल पड़ा—"आज का दिन कितना अच्छा है...लेकिन क्यों ? ओंह ग्रीगर ग्रिश्का !" इस अपनी नई भावना पर वह स्वयं विसमित और भयभीत हुई और जिस तरह मार्च की बर्फ़ लदी डोन पर सावधानी से चला जाता है। वह भी चौकन्ना रहने लगी।

जब स्टेपन ट्रेनिंग कैम्प में गया, उसने निश्चय किया, ग्रीगर से वह वह अब कम मिला करेगी लेकिन, क्या यह सम्भव था ?

---

## ग

### १

त्यौहार के बाद ही कटनी शुरू हो गई। भोर से ही खेतों में औरतों के घाँघरे, उनके जरीदार दुपट्टे और रंगीन रूमाल चकमक करने लगते समूचा गाँव खेतों में आ उतरा था। खेत काटने वालों ने यों अपने को सजधज कर रखा था कि मालूम होता, त्यौहार सजा हो। यही पुराना रवाज था। दोन के किनारे से पहाड़ी तक के खेतों का मैदान तरंगित और उमङ्गित हो रहा था।

मेलखोव परिवार की कटनी देर से शुरू हुई। आधा गाँव जब कटनी में जुटा था वे खेत की ओर रवाना हुए।

"पैंतेलीमन, इतना सोते हो।" उसके साथी खेतीहरों ने अवाजें कसीं।

"अरे, ऐ औरतें जो न करें। हँसते हुए पैंतेलीमन ने कहा और अपने बैलों की पीठ पर कच्चे चमड़े का कोड़ा पटका।

गाड़ी के पीछे अक्सीनिया बैठी थी। स्तेपन ने पैंतेलीमन से कह दिया था कटनी में मदद कर देना। अक्सीनिया अपने चेहरे को सूरज से आड़ करने के लिए कपड़े से ढँके हुए थी। आँख के लिए बनाये छेद से वह मुग्ध दृष्टि से ग्रीगर को देखती, जो उसके सामने बैठा था। दारिया अपनी सबसे खूबसूरत पोशाक पहने, पैर लटकाये बैठी थी। उसका ऊँघता बच्चा उसकी छाती चूस रहा था, बगल में दुनिया हँसती, नाचती, मैदान और आदमी को देख जैसे उस पर नशा चढ़ गया हो।

सूती कमीज के आस्तीन को चढ़ाते पैंतेलीमन चेहरे के पसीने को पोंछता जा रहा था। भूरे बादलों को छोड़कर सूरज की तिरछी किरणें मैदान, गाँव और दोन के उजली पहाड़ियों को जगमगा रही थीं।

दिन के वातावरण में आलस भरा हुआ था। आकाश के बादल इतने

धीमे ऊँघते से चल रहे थे कि उनकी रफ़्तार का मुकाबला पैंतेलीमन की यह सुस्त बैलगाड़ी भी कर सकती थी। बूढ़ा अपना चाबुक उठाता और हवा में फटकारता तो था लेकिन उसकी समझ में नहीं आता, बैल की पीठ पर उसे पटके या नहीं। बैल भी उसके इस असमजंस को समझ धीरे-धीरे पैर बढ़ाते जैसे अंधेरे में टटोल रहे हों। उनके ऊपर एक सुनहली मक्खी चक्कर काट रही थी।

"हमारे हिस्से खेत उधर पड़ता है—" पैंतेलीमन ने चाबूक उठाकर कहा। ग्रीगर ने झुके बैलों को जुए से हटा दिया। बूढ़ा अपने कान की कनौसी हिलाता खेत की ओर चला।

"हँसिया ला"—उसने कुछ देर बाद हाथ हिलाते हुए पुकारा।

घास को पैरों से दबाते ग्रीगर उसके पास गया। पैंतेलीमन ने गिरिजाघर की ओर मुँह किया और हाथों से हवा में सलीब का चिन्ह बनाया। उसकी लम्बी नाक चमक रही थी, उसके गालों पर पसीने की बूँदें थीं। वह मुस्कुराया, सुफेद दाढ़ी में उसके दाँत चमक पड़े। झुर्रीदार गर्दन को दाहिनी ओर मोड़ते हुए उसने हँसिया चलाई। सात फीट की ऊँची चन्द्राकार घास उसके पैर के नीचे पड़ी थी।

ग्रीगर ने उसका अनुसरण किया। उसकी हँसिया घास पर घास काटे जाती। उसके सामने औरतों के रंगबिरंगे दुपट्टों की इन्द्रधनुषी छटा थी, लेकिन उसकी आँखें गड़ी थीं सिर्फ एक पर जिसका रंग उजला था और जिसकी जरी की किनारी थी। अक्सीनिया की ओर देखते, बाप के पैर से पैर मिल गये, वह घास काटे जा रहा था।

उसके दिमाग में अक्सीनिया चक्कर काट रही थी। अपनी आधी आँखें मूँद कर कल्पना में ही उसने निर्लज्जता से उसे चूम लिया। उसके हाथ घास पर चल रहे थे—एक, दो, तीन। और वह दिमागी दुनिया में सैर कर रहा था—नदी का किनारा, ऊपर चाँद चमक रहा, पेड़ से ओस की बूँदें चू रही हैं—एक, दो, तीन।

उसी समय उसने अपने पीछे हँसी सुनी, पीछे मुड़कर देखा, दारिया

गाड़ी पर लेटी हुई है और अक्सीनिया उस पर झुकी हुई कुछ कह रही है। दारिया हाथ चमकाकर ठठा पड़ी। दोनों के मुँह से हँसी के फव्वारे निकल रहे थे।

जरा उस झाड़ी में जाकर मैं विश्राम करूँ, ग्रीगर यह सोच ही रहा था कि उसकी हँसिया की धार पर कुछ कोमल और तनुक चीज पड़ गई। झुक कर उसने देखा, एक जंगली मुरगाबी का बच्चा कें कें करता घास में भागा जा रहा है और दूसरा उसकी हँसिये के नीचे दो टुकड़ा हुआ पड़ा है। मरे हुए बच्चे को उसने अपनी हथेली पर ले लिया। वह अंडे से तुरंत कुछ दिन ही पहले, निकला था। हथेली पर जानदार गर्मी अनुभव कर वह दया से ओतप्रोत हो गया।

"क्या पाया है ग्रिश्का"—दुनिया नाचती हुई उसकी बगल में आई। उसकी चोटियाँ उसके सीने पर झूल रही थीं। ग्रिश्का झल्ला पड़ा, बच्चे को फेंक दिया और फिर घास काटने लगा।

खाने के बाद औरतें घास इकठ्ठी करने लगीं। घास सूरज की गर्मी में सूख चली थी, उससे एक अजीब मादक गंध निकलती। खाना सादा था—चर्बीदार गोश्त जीभ को भी प्यारी चीज़—खट्टा दूध।

'घर जाने की क्या जरूरत?" पैंतेलीमन ने कहा इस जंगल में बैल चर लेंगे, और कल ओस सूखते ही हम घास काटना शुरू कर देंगे, जिसमें कल खतम ही हो जायगी।"

झुटपुटे तक सब घास काटते रहे। अक्सीनिया घास की आखिरी पंक्ति को उठा रखकर गाड़ी के निकट खाना बनाने गई। दिन भर वह बुरी नज़र से ग्रीगर को देखती रही थी। मानो वह उससे कुछ बदला चुकाना चाहती है। ग्रीगर सर झुकाये डोल में बैलों को पानी पिलाने चला। दिन भर उसके बाप ने अक्सीनिया और उसकी खेलवाड़ देखी थी। वह ग्रीगर के नजदीक आकर बोला—

"रात का खाना खाकर बैल की रखवाली करना। देखना, वे घास में न जायें। मेरा कोट ले लेना।"

दारिया अपने बच्चे को गाड़ी के नीचे सुलाकर दुनिया के साथ जलावन की लकड़ी लेने जंगल की ओर चली।

काले बीहड़ आस्मान पर कृष्णपक्ष का चन्द्रमा मुश्किल से चढ़ रहा था। आग पर पतंगों के झुंड गिर रहे थे। सकरी बर्तन में ज्वार बदाबद कर रहा था। चम्मच से उसे चलाते हुए दारिया ने ग्रीगर को पुकारा—"आओ खा लो।"

बाप का कोट कांधे पर डाले अँधेरे से ग्रीगर निकला और आग के निकट आया।

"आखिर इतना गुस्से में क्यों हो?" दारिया मुस्कराई।

"यह बैल हांकना नहीं चाहते"—दुनिया हँसते हुए बोली। ग्रीगर भाई के नजदीक बैठकर कुछ बातों का सिलसिला शुरू करना चाहा। लेकिन, वह असफल रही। पैंतेलीमन शोरबा निगले जा रहा था। अक्सीनिया बिना सर उठाये खाये जा रही थी। आधे दिल से दारिया की दिल्लगी में साथ देने की चेष्टा करती। उसके जलते हुए गालों पर लाली की छेड़-छाड़ थी।

ग्रीगर सबसे पहले उठा और फिर बैलों के पास चला गया।

आग धीमी होती गई। लकड़ी के जलने से एक मीठी सुगन्ध उस जगह मँडरा रही थी।

आधी रात को ग्रीगर चुपके से वहाँ आया और दस कदम दूर पर खड़ा हो गया। उसके बाप की नाक ताल-सुर में बांसरी फूँक रही थी। राख के अन्दर से चिनगारियाँ सुनहरी आँखों से झाँक रही थीं।

एक भूरी, लिपटी सूरत गाड़ी से निकली और धीरे-धीरे ग्रीगर के नजदीक आई। दो तीन कदम दूर पर ही वह खड़ी हुई। अक्सीनिया! ग्रीगर का हृदय जोरों से उछलने लगा। वह कोट को फेंक कर झपटा और उसे छाती से दबोच लिया। उसके पैर घुटने से झुक गये, वह काँपने लगी, उसके दाँत खटखट करने लगे। जिस तरह भेड़िया मरी भेड़ को

अपनी पीठ पर लाद लेता है. जिसने उसे अपने हाथों पर उठा लिया और हाँफते हुए उसे लिये दिये भागा।

"आह, ग्रिश्का, ग्रिश्का—तुम्हारे बाबू जी... .."

"चुप!"

अपने को उसके हाथों से छुड़ाती साँस पाने के लिए हाँपती, पश्चाताप के कड़वेपन में अपनी आत्मा को डुबोती, अक्सीनिया चिल्ला पड़ी—"मुझे लिटा दो, अब क्या डर है?......जो मैं चाहूँ, करूँगी।"

## २

सीत्राकौव गाँव में छावनी डाले गाड़ियों की कतारें खड़ी थीं। थोड़े ही दिनों में वहाँ उजली छतोंवाला एक छोटा, सुन्दर शहर बस गया था। शहर में पतली गलियाँ थीं, बीच में चौक था, जिस पर सन्तरी पहरे देते थे।

लोग ट्रेनिंग कैम्प की उदास जिन्दगी बिता रहे थे। भोर में पशुओं को चरानेवाले दस्ते के कोज़ाक घोड़ों को कैम्प में ले जाते। फिर, घोड़ों की सफाई की जाती, खरहरे लगाये जाते जीनें कसी जातीं, नामों की पुकार होती, इसके बाद परेड शुरू हो जाता। पहाड़ी के नजदीक ले जाकर उनसे धावे कराये जाते, शत्रु को घेरने की तालीम दी जाती। बन्दूकों की निशाने बाजी होती। तलवार की कलायें बताई जातीं।

कैम्प टूटने के एक सप्ताह पहले इवान की बीबी उससे भेंट करने गई। कुछ सौगात के साथ गाँव की बहुत सी खबरें उसने भेंट कीं।

वह दूसरे दिन भोर को तो लौट गई। कोजाकों ने अपने घर की अभिनन्दन भेजे, दावते भेजीं। सिर्फ स्तेपन ने कोई सम्बाद नहीं भेजा। उसी शाम को वह बीमार हो गया था। तबियत अच्छी करने के लिए उसने खूब शराब पी ली थी। उसे दीन दुनिया की कोई खबर ही नहीं रह गई। वह परेड में भी नहीं गया। उसके कहने पर डाक्टर ने उसकी छाती से खून निकालने के लिए एक दर्जन जोंक लगा दिये थे। स्तेपन अपनी

गाड़ी के चक्के का सहारा लिये बैठा था और जोंक उसकी फूली छाती से खून पी पी कर काले हुए जा रहे थे।

इवान पहुँचा। उसने झेंपते हुए कहा—

"स्तेपन, मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।"

"अच्छा, कहो।"

"मेरी बीबी मुलाकात को आई थी, वह आज भोर में गई है।"

"हूँ।"

"गाँव में तुम्हारी बीबी के बारे में तरह-तरह की बातें कही जाती हैं..."

"क्या?"

"कोई अच्छी बात नहीं।"

"अच्छा!"

"वह ग्रीगर से खेलवाड़ किये जा रही है—बिल्कुल खुलेआम।"

स्तेपन का चेहरा पीला पड़ गया। उसने जोंकों को अपने सीने से खींच लिया और उन्हें पैर से दबा डाला। एक-एक को कुचल कर उसने कमीज के बटन लगा लिये, फिर जैसे भयभीत होकर फिर बटन खोल दिये। उसके सूखे होंठ लगातार हिल रहे थे। हिलते-हिलते कभी मुस्कुरा भी पड़ते। इवान को मालूम हुआ, जैसे वह कोई सख्त चीज चबा रहा हो। धीरे-धीरे उसके चेहरे पर लाली आई। होंठ को उसने दांतों से दबा लिया। अपनी टोपी उतार कर उसे साफ करते हुए उसने कहा—

"इस खबर के लिए शुक्रिया।"

"मैं सिर्फ तुम्हें चेता देना चाहता था, तुम बुरा न लेना।"

इवान अपना पाजामा पकड़े अपने घोड़े की ओर चला गया। स्तेपन कुछ देर तक अपनी टोपी के धब्बे को गौर से देखता रहा। एक अध-कुचला जोंक उसके बूट के नजदीक सरक रहा था।

## ३

अक्सीनिया पर जैसे भूत सवार था। ग्रीगर मतवाला बना हुआ था।

बूढ़े पैंतेलीमन ने दोनों को डांटा, दबाया; किन्तु, कौन किसकी सुनता है ? मैं तुम्हें घर से निकाल दूँगा, मैं तुम्हारी शादी चुड़ैल से कर दूँगा— सब तरह धमका कर वह थक गया। किन्तु ज्यों ही शाम हुई, ग्रीगर घर से गायब होता और भोर को ही लौटता।

ग्रीगर की हालत उस घोड़े की सी थी, जो बूते से ज़्यादा बोझ लगातार खींचे जा रहा हो। नींद के अभाव में उसके भूरे चहेरे पर कालिमा झाँक रही थी। धँसे हुए कोटरों से उसकी थकी आँखें घूरती-सी दीखतीं। अक्सीनिया निर्ल्लज्ज-सी चेहरा उघाड़े घूमती। उसकी आँखो के नीचे काली रेखा पड़ गई थी, उसकी काले अधरों पर चुनौती की हँसी देखी जाती।

इनकी सुहबत कुछ ऐसी पागल और अजीब थी, ऐसी बेशर्मी से वे रहते सहते, न किसी की परवाह करते, न किसी से छिपाते, कि उनसे रास्ते पर मिलने से लोगों को ही शर्म आती। ग्रीगर के जो साथी पहले उसे ताने देते, या समझाते, अब उसे देख चुपचाप दूसरी ओर निकल जाते, उसकी छाया से भी बचने की कोशिश करते। औरतें अक्सीनिया से डाह करतीं, तोभी उसे खुले आम गालियाँ देतीं और सोचती, स्तेपन के आने पर मजा चखोगी।

यदि ग्रीगर ने अपने प्रेम को छिपाया होता, अक्सीनिया ने ही पोशी-दगी से काम लिया होता, तो इतना हल्ला नहीं मच पाता। थोड़ी चर्चा होती, फिर लोग भूल जाते। लेकिन, इन्होंने तो सारी मर्यादायें तोड़ डाली थीं।

स्तेपन के सोने के कमरे में अक्सीनिया की खुली, ठंढी बाँहे पर लेटे ग्रीगर छत की ओर देख रहा था। अक्सीनिया का दूसरा हाथ ग्रीगर के सिर के मोटे बालों से खेलवाड़ कर रहा था। जिसकी अँगली से दूध की गंध आ रही थी। ग्रीगर ने सर घुमाया, और अपनी नाक अक्सीनिया की आँख में घुसेड़ दी। औरत के पसीने की तीखी और मीठी गंध से उसका दिमाग चकरा गया।

काठ की टोकरी के अतिरिक्त इस घर में, दरवाजे के निकट एक लोहे

की संदूकची थी, जिसमें अक्सीनिया के गहने आदि दहेज की चीजें रखी हुईं थीं। कोने में एक टेबुल पड़ा हुआ था और उसके सामने दो कुर्सियाँ थीं। बगल की दीवाल पर कुछ तस्वीरें टँगी थीं, जिनमें एक में कोजाक नौजवान छाती फुलाये, तलवार लटकाये पंक्ति में तने खड़े थे। इसमें स्तेपन भी था। अलगनी पर स्तेपन की वर्दी लटक रही थी। खिड़की से चाँद झाँक रहा था।

उसांस लेते हुए अक्सीनिया ने ग्रीगर की दोनों भौंहों के बीच में चूम कर कहा—

"ग्रिश्का, मेरे प्यारे!"

"क्या कहती हो?"

"अब सिर्फ नौ दिन रह गये।"

"काफी दिन बचे हैं।"

"मुझे क्या करना होगा ग्रिश्का!"

"मैं क्या जानूँ!"

अक्सीनिया ने फिर एक गहरी उसांस ली और उसके जटायें बालों में उँगुली सुलझाने लगी।

"स्तेपन मुझे मार डालेगा।"—अगर दरियाफ्त किया, अगर ऐलान किया।

ग्रीगर चुप था। उसे नींद आ रही थी। मुश्किल से उसने आखें खोली तो अक्सीनिया की नीली आँखों की गहराई देखी।

"मेरा पति आवेगा, तो तुम शायद मुझे छोड़ दोगे? क्या तुम डर रहे हो।"

"मै क्यों डरूँ? डरे तू, जो उसकी बीबी है।"

"जब तक मैं तुम्हारे साथ रहती हूँ। मुझे डर नहीं मालूम होता; लेकिन दिन चढ़ते मैं काँपने लगती हूँ।"

ग्रीगर ने जम्हाई लेते हुए कहा—

"सवाल स्तेपन के लौटने का नहीं है। मेरे बाप मेरी शादी करने पर जो तुले हैं।"

वह मुस्कुराया फिर कुछ और इसमें जोड़ने जा रहा था कि उसने अपने सर के नीचे अक्सीनिया की बाँह को सिकुड़ते और मुलायम पड़ते महसूस किया; फिर कुछ देर बाद हाथ में कड़ाई और तनाव उसने अनुभव किया।

"वह किससे कह रहे थे?" अक्सीनिया की आवाज दबी हुई थी।

"सिर्फ लोगों से चर्चा किये जा रहे हैं। माँ कह रही थी, कोरशुनोव की लड़की नातालिया पर उनकी नजर है।"

'नातालिया......वह काफी खूबसूरत है। बड़ी ही खूबसूरत। तुम उससे शादी करोगे। मैंने आज गिरजा घर में उसे देखा है। वह सजधज कर आई थी।"

"उसकी खूबसूरती की चर्चा मुझ से मत करो। मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ!"

अक्सीनिया ने झट अपनी बाँह ग्रीगर के एक सर के नीचे से खींच और खिड़की की ओर सूखी आँखों से देखने लगी। आँगन में धुँधला पीला कुहासा छाया हुआ था। घर की छाया गहरी पड़ रही थी। पतंगे उड़ रहे थे। दोन के किनारे से कलकल की आवाज आ रही थी।

"ग्रिश्का।" वह बोली।

"कुछ सोच रही हो?"

अक्सीनिया ने ग्रीगर के रुखड़े, टांट हाथों को खींच कर अपनी छाती से चिपका लिया। फिर हटा कर अपने ठण्डे, निर्जीव गालों पर रखती हुई रोपड़ी —

"मुझे लेकर तुम क्या करोगे? तुम्हारा बुरा हो। उफ, मैं अब क्या करूँगी? ग्रिश्का। मैं कहीं की नहीं रही। स्तेपन आ रहा है। मैं उसे क्या जबाब दूँगी। मेरी कौन सुध लेगा!"

ग्रीगर चुप था। अक्सीनिया उसकी लम्बी खूबसूरत नाक को गौर से

देखती रही और देखती रही, उसकी छिछली आँखों और मूक होठों को। ..
अचानक भावना के प्रवाह ने नियंत्रण का बाँध तोड़ दिया। वह पगला-सी उसके चेहरे, गर्दन, बाँह, छाती के घुँघराले बाल को चूमने लगी। फिर काँपती हुई, सांस रोके, वह बोली—

"ग्रिश्का ! प्यारे...मेरी जान—चलो, हम कहीं चल निकलें। सबको ठुकरा कर हम चलें। मैं अपने पति को, सारी दुनिया को तुम पर कुर्बान करूँगी। चलो, हम भी कहीं चल निकलें। मेरा एक चाचा है, वह पैरोमोनौव की खान में काम करता है। वह हमारी मदद करेंगे। ग्रिश्का—बोलो, एक छोटा-सा हाँ कह दो।"

ग्रिश्का कुछ सोच रहा था। अचानक उसने आँखें खोल दीं। उनमें हँसी थी, व्यंग था।

"तुम बेवकूफ हो, अक्सीनिया ! बेवकूफ ! बोलती जा रही हो, लेकिन, इसे बकने में कोई बात भी हो। खेत को छोड़कर मैं कहाँ जाऊँगा। अगले साल मुझे फौजी तालीम लेने जाना है।..मैं इस ज़मीन को छोड़कर कहीं नहीं सरक सकता। यहाँ मैदान हैं, जंगल हैं, खुली हवा है। लेकिन कहाँ ? पिछले साल मैं बाबूजी के साथ स्टेशन गया था। मेरा तो दम घुटने लगा। इंजिन चीख रहीं थी, कोयले के धुएँ से हवा बोझीला हो रहा था। कैसे लोग रहते हैं, मेरी समझ में नहीं आया। शायद उन्हें आदत बँध गई है।" ग्रीगर ने थूक फेंक कर फिर कहा—"मैं गाँव नहीं छोड़ता।"

खिड़की के बाहर रात अंधेरी हो गई—चाँद पर बादल छा गया था। आँगन से धुँधला, पीला कुहासा दूर हो गया था, घर की छाया भी धुल गई थी।

घर में भी अँधेरा घना हो चला था। उस अंधेरे में ग्रीगर की आँखें अक्सीनिया की आँखें से निकलने वाली मोतियों की लड़ी को नहीं देख सकीं। न उसकी गर्दन ने अक्सीनिया की बातों में कम्पन का अनुभव किया। जिससे तकिया तक हिल रहा था।

४

गिरजाघर का घंटा बज रहा था। कांसे की जीभ से टूटी आवाज निकल रही थी। गाँव के चरवाहे अपनी चाबुक सड़क पर फटकार रहे थे। अक्सीनिया ने अपनी गाय जल्द खोल दी और दूध घर में ले जाकर रख दिया। तौलिये से अपना हाथ पोंछ, वह विचार में डूब गई।

गाड़ी के पहियों की चरमर और घोड़ों के हाँफने की आवाज़ सड़क पर सुनाई दी। अक्सीनिया दूध छोड़कर खिड़की के नजदीक आ गई। अपनी तलवार लटकाये स्तेपन फाटक की राह आंगन में घुस रहा था। अक्सीनिया तौलिये को दबाये बेंच पर बैठ गई। आंगन में पैर की आवाज़—बरामदे में पैर की आवाज...दरवाजे के नज़दीक पैर की आवाज़।

स्तेपन दरवाजे पर खड़ा, चकित, विस्मित।

"अच्छा......" वह बोला।

अक्सीनिया का शरीर घूम रहा था। वह उससे मिलने को आगे बढ़ी।

"मुझे पीटो"—उसने पीछे से कहा और उसकी बगल में जाकर खड़ी हो गई।

"अच्छा...अक्सीनिया..."।

"मैं नहीं छिपाऊँगी, मुझे पीटो"—वह बोली।

उसका सर नीचे झुक कर जैसे उसकी छाती में समा जाना चाहता था। वह गठरी सी बनी जा रही थी सिर्फ पेट को अपने हाथो से बचाने का उपक्रम कर वह उसके सामने प्रहार की प्रतीक्षा में खड़ी थी। उसके मूक, विह्वल चेहरे में काली रेखाओं के बीच से उसकी आँखें घूर रही थीं। स्तेपन हिला, उससे आगे बढ़ गया। उसकी बिना धुली कमीज़ से मर्दाना पसीने और सड़क की धूल की गंध आ रही थी। बिना टोपी उतारे वह बिछावन पर लेट गया। अपने कंधों को हिलाते, तलवार की मूँठ फेंक, वह पड़ा था। उसकी भूरी मूँछें नीचे लटक रही थीं। अपना सर मोड़े

बिना ही अक्सीनिया ने उसकी ओर तिरछी निगाहों से देखा। स्तेपन ने अपने पैर बिस्तरे के नीचे रखे। उसके बूटों से कीचड़ नीचे झड़ने लगी। वह छत पर नज़र गड़ाये अपनी तलवार को चमड़े के म्यान से खेलवाड़ कर रहा था।

"जलपान कर चुकीं"—उसने पूछा।

"नहीं।"

"मुझे कुछ खाने को दो।"

अपनी मूँछ को भिगोते हुए उसने थोड़ा दूध पीया। धीरे-धीरे थोड़ी रोटी चबाई। अक्सीनिया चूल्हे की बगल में खड़ी थी। भय-विस्मित हो कर उसने देखा, खाते समय उसके पति के कान खड़े होते और गिरते हैं।

स्तेपन टेबल पर से उठा और अपने सामने सलीब का निशान बनाते हुए, सूखे स्वर में बोला—

"मेरी जान, ज़रा सब माजरा मुझसे कहो।"

सर झुकाये अक्सीनिया ने टेबल साफ कर दिया। वह चुप थी।

"बताओ, तुमने अपने पति की कैसी कैसी प्रतिष्ठा की? उसकी प्रतिष्ठा कैसे निभाई?

"बोलो।"

सिर पर लगे एक भयानक घुस्से ने अक्सीनिया के पैर के नीचे की ज़मीन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया—वह दरवाजे की ओर झटक दी गई। उसका सर चौखट से टकराया और वह ज़ोरों से कराह उठी।

दुबली, पतली औरत की क्या बात, हट्टा कट्टा आदमी भी स्तेपन के घुस्से पर खड़ा नहीं रह सकता था। चाहे भय ने या औरतों के सहिष्णु स्वभाव ने अक्सीनिया को उठाया—वह एक क्षण पड़ी रही, सुस्ताई। फिर हाथ पैर पर चौपाये-सी खिसकने लगी।

स्तेपन एक सिगरेट जलाकर, घर के बीच में खड़ा था, जब उसने देखा, अक्सीनिया पैर पर खड़ी हो रही है। टेबुल पर सिगरेट रखते हुए उसने

पाया। अक्सीनिया बाहर से दरवाज़ा बन्द करने की कोशिश कर रही है। उसने उसे खदेड़ा।

ख़ून की धारा बहाती, अक्सीनिया उस ओर भागी जहाँ मेलखौव परिवार का घेरा उसके आँगन के घेरे से मिलता था। स्तेपन ने उसे घेरे के नीचे पकड़ लिया। एक घूँसा, वज्रप्रहार-सा-उसके सर पर लगा। उसकी उँगुलियों में अक्सीनिया के बाल थे, जिन्हे वह झकझोर कर उखाड़ देना चाहता था।

स्तेपन को कोई अलग से देखता, तो उसे मालूम होता, जैसे कह कोज़ाको का नाच कर रहा है। जब स्तेपन उछल-कूद रहा था, ग्रीग्र ने ऐसा ही समझा, जो रसोई घर की खिड़की से देख रहा था। लेकिन, जब उसने अच्छी तरह देखा, वह अपने झोंपड़े से उछल पड़ा। घुस्सा ताने वह घेरे की ओर दौड़ा—पियोत्रा उसके पीछे लगा।

ऊँचे घेरे को चिड़िये की तरह उछल कर ग्रीगर पार कर गया। पीछे से दौड़कर उसने स्तेपन पर घुस्सा चला दिया। स्तेपन डगमगाया, फिर मुड़कर भालू की तरह उलझ पड़ा।

दोनों भाइयों ने जमकर स्तेपन का मुकाबला किया। ग्रीगर कई बार ज़मीन पर गया। स्तेपन के प्राण ऐसे ज़बर्दस्त थे। पियोत्रा स्तेपन से कहीं हट्टा कट्टा दीखता था, लेकिन स्तेपन के घुस्से से वह इस तरह कांप उठता था, जैसे आँधी में सरपत। लेकिन तो भी, वह अपने को पैरों पर खड़ा रख सका था। स्तेपन की आँखें अँगारा बन रही थीं।

क्रिस्तीनिया संयोग से कहाँ आ पहुँचा। उसने उन्हें अलग किया—

"बन्द करो, नहीं तो मैं आतामन से नालिश कर दूँगा।"

पियोत्रा अपने आधे टूटे हुए दांत को खून सहित हथेली पर उगल कर, कह उठा—

"ग्रीगर, बन्द करो—हम फिर कभी इसका बदला चुकायँगे।"

"झूठी कसमें न खाओ—क्यों इन्तजार ? आओ, फैसला कर लो।" कहता हुआ स्तेपन गुर्राया।

"अच्छा, अच्छा !"

"अच्छा नहीं—इस बार आये कि खोपड़ी भुर्ता बना दूँगा ।"

"सच ? या बातें बना रहे हो ।"

स्तेपन तेजी से अलग बढ़ा । ग्रीगर भी उससे मुकाबला करने को बढ़ना ही चाहता था कि क्रिस्तोनिया ने उसे फाटक की ओर घसीटते हुए कहा—

"ज्यादा ज़ोर लगाया, तो मुझी से निबटना होगा ।"

# घ

## १

"पियोत्रा से कहो कि गाड़ी में घोड़े जोते"—यह कहता पैंतेलीमन शोखे को दनादन निगल रहा था। उसके शरीर से बैल की तरह पसीना चू रहा था, उसकी आवाज़ में गम्भीरता थी! दुनिया ग्रीशर की हर हलचल को चौंक सी से देख रही थी। इलिनिच्चना नरंगी रंग की शाल ओढ़े अपनी ही नजरों में महत्वपूर्ण हो रही थी। होंठों के एक कोने पर माता की ममता झलकाते वह बूढ़े से बोली—

"दो कौर यदि खालो—क्यों अपने को भूखों मार रहे हो?"

"खाने की फ़ुर्सत कहाँ?" उसने जवाब दिया।

दरवाजे से पियोत्रा की गुद्मी रंग की लम्बी मूँछें झलक उठीं।

"गाड़ी तैयार है"—उसने ऐलान किया।

दुनिया हँस पड़ी। अपने चेहरे को उसने आस्तीन है छिपा लिया। इलिनिच्चना की एक चतुर चचेरी बहन थी। चाची वासिलिस्त कह कर। वह विधवा औरत पुकारी जाती। वह भी शादी के इस चुनाव में जा रही थी। वह सबसे पहले गाड़ी पर जा बैठी। वह झुकती, मुँड़ती, हँसती, अपने मैले दांतों को मोटे होंठों पर चमका रही थी।

"यों दाँत मत दिखाओ"—पैंतेलीमन ने उसे चेतावनी दी। "तुम सब गुड़-गोबर बना डालेगी। आईना न देखो, एक दांत पूरब जा रहे हैं। दूसरा पच्छिम।"

"मुझे दुलहिन नहीं बनना है, बुढ़ऊ!"

उसी समय पियोत्रा गाड़ी में आ बैठा। ग्रीगर महँकते हुए चाम की लगाम पकड़कर हाँकने वाले की सीट पर जा बैठा। पैंतेलीमन यदि इलिनिच्चना अलग बगल उन दो बच्चों की तरह जा बैठे, जिन्हें लेने देने के लिए जगह न हो।

ग्रीगर ने होंठों को दबाते, घोड़े को चाबुक लगाये। गाड़ी तेज़ी से भागी। पैंतेलीमन ने अपनी दाढ़ी जोर से पकड़ी, जैसे तेज़ हवा में वह कहीं मुड़ न जाती। इलिनिचना ने अपने ज़रीदार जैकेट के अस्तीन से हवा के झोंके के कारण आ निकले आँसुओं को पोंछा। उसकी आँखें ग्रिगर पर जमो थी। जिसकी नीली सैटिन की कमीज की छोर हवा में लहरा रही थी। सड़क के कोज़ाक आप ही रास्ता छोड़ देते। कुत्ते घरों से निकलकर घोड़ो के पीछे दौड़े जाते।

ग्रीगर की चाबुक घोड़े पर तड़पड़ पड़ रही थी। दस मिनट के भीतर गाँव पीछे छूट गया। कोरशुनौव का बड़ा घर सामने दिखाई पड़ने लगा। ग्रीगर ने घोड़े की लगाम खींची, गाड़ी रंगीन, सजीली फाटक पर जा रुकी।

ग्रीगर घोड़े के निकट रह गया। पैंतेलीमन झपट कर आगे बढ़ा। इलिनिचना यदि बाम्सेलिसा अपने घांघरे लहराती, उसके पीछे लगीं। बूढ़ा तेज़ी से बढ़ रहा था, एक बार ठोकर लगी, उसका पाँव लड़खड़ाया लेकिन थोड़ी देर में ही वह रसोई घर के निकट पहुँच चुका था! उसकी बगल में इलिनिचना खड़ी हो गई। अपने से अपनी बीबी को छः इंच बड़ा देख उसे शर्म लगी। टोपी सर से उतार, आगे बढ़, वह इधर-उधर झांका और बोला—

"कुशल तो है।"

"सब मेहरबानी!"—घर के मोटे मालिक ने बेंच से उठते जवाब दिया।

"कुछ मेहमान आये हैं तुम्हारे पास, मीख ग्रीगरोविच!"—पैंनेलीमन ने जारी रखा।

"मेहमानों का हमेशा स्वागत है। मारिया, इन्हें बैठने के लिए दो।"

उसकी बूढ़ी, चौड़ी छाती वाली स्त्री ने धूल झाड़कर तीन स्टूल रख दिये। पैंतेलीमन एक पर बैठकर रूमाल से अपनी भौंहों पर का पसीना पोंछने लगा।

"हम काम से आये हैं।" बिना बात बनाए सीधे सादे ढंग से उसने कहा। इसी समय इलिनिचना यदि वास्सोलिसा घांघरे समेटती, स्टूल पर आ बैठीं।

"ज़रूर कहिये—क्या काम है ?" घर का मालिक मुस्कुराया।

ग्रीगर ने उसी समय प्रवेश किया, चारों यदि घूर कर उसने घर के मालिक और मालकिन को सर झुका था। उसे देखते ही मीरन के चेहरे पर लाली दौड़ गई। अब उसने इस आने का रहस्य समझा। "घोड़ों को आँगन में लाकर उन्हें घास दे दो।" उसने अपनी बीबी को आज्ञा दी।

अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते और कान की कनैंमी को हिलाते पैंतेलीमन कहने लगा—"एक छोटी सी बात के लिए आया हूं। यही, छोटी बात। तुम्हारी लड़की कुँआरी है, यह मेरा लड़का है। क्यों हम लोग कोई इन्तजाम कर लें ? हम लोगों में यह रिश्ता कैसा अच्छा होगा ? तुम्हारी क्या राय ?"

"कैसे बताया जाय ?" अपने खल्वाट खोपड़ी को खुजलाते हुए वह बोला—

"हम अभी उसकी शादी करना नहीं चाहते। बहुत से काम अभी पड़े हैं। फिर वह तो अभी अठारवीं बहार पार कर सकी है, क्यों मैरिया ?"

"हाँ यही तो।"

"यही उम्र तो शादी की है—लड़कियाँ जल्द बड़ी हो जाती हैं।" वैसिलिसा बोली। वह घर में घुसते समय, दरवाजे पर से झाड़ू का तिनका चुरा कर अपने जाकेट के भीतर खोंस कर स्टूल पर बैठी थीं। यह बात प्रचलित थी कि यदि दुलहिन के घर के झाड़ू का तिनका चुरा कर रख लिया जाय तो शादी जरूर ही निश्चित हो जायगी।

"शादी की बातें तो बसन्त के शुरू से ही लोग चला रहे हैं। लेकिन, हम अपने से उसे अभी जुदा कर नहीं सकते। वही तो घर—बाहर दीखती है।" मीरन की बीबी ने कहा।

"अगर कोई भला मानस आवे तो उसे किस तरह 'न' कहोगी?" पैंतेलीमन ने बुढ़िया की ओर मुखातिब होकर कहा।"

"न कहने की बात नहीं है!" मीरन ने सर खुजलाते हुये कहा। "हम उसे कभी भी व्याह सकते हैं।"

बातें टूटने ही जा रही थीं। पैंतेलीमन उत्तेजित हो चला था। उसके चेहरे का रंग बदल रहा था। लड़की की माँ की ऊत्तेजना भी देखने लायक थी। माँ बात बिगड़ते देख, बीच में बैसिलिसा बोल उठी। मानो धधकती आग पर राख डालते—

"अरे अजीज़ों, लड़की लड़के की शादी की बात में भी लोग उत्तेजित नहीं होते। यह जिन्दगी का सौदा है। नातालिया ऐसी लड़की—खोजो, कहीं से भी मिलेगी। वहनातालिया भी नहीं उसकी पाँच पुश्त तक की बड़ाई कर गई। फिर, ग्रीगर की ओर मुड़ी—"और ग्रीगर, ऐसा जवान, ऐसा कमाऊ पूत। मेलखौन की परिश्रमशीलता और कुलमर्यादा पर किसकी आँख उठ सकती है। ऐसे घर वर के जोड़े संयोग से ही मिलते हैं।" यों ही दोनों तरफ की प्रशंसा के पुल पर पुल बाँधती रही। मामला कुछ शान्त हुआ। मौरिया बोली—

"ठीक, हम अपने बच्चे का बुरा किस तरह सोच सकते हैं।'

"सवाल सिर्फ यह है कि अभी वह छोटी है"—मीरन भी बड़ी शान्ति से, मुस्कराहट से चेहरे को रंजित करते बोला।

"यही शादी की उम्र है—छोटी नहीं रह गई मेरे दोस्त"—पैंतेलीमन ने जोर देते हुये कहा।

"आखिर आज या कल, बेटी को तो घर से विदा करना ही है।" मैरिया के आँखो में आँसू थे।

"मीरन, जरा बेटी को बुलाओ. तो हम देखें।'

"नातालिया!"

एक लड़की दरवाजे पर आकर खड़ी हुई—लम्बी, घाघरे में जैसे छिपी!

"आओ, आओ—बड़ी लजीली है।" माँ आँखों में आँसू भरे, उसे उत्साहित करती, बोली।

ग्रीगर ने उसकी ओर देखा—

काली घनी बरौनियों में उभड़ी, भूरी आँखें। चिकने गालों के बीच में छिछले गुलाबी गड्ढे। ग्रीगर की आँखें उसके हाथ की ओर गईं। लम्बी बाँहें, मेहनत से सधी। गठीले शरीर में चिपके हरे जैकेट से छोटे, बालिका सुलभ तने जोवन उठते और गिरते जिनके सिरे पर दो बटन से झाँक रहे।

एक क्षण में ही ग्रीगर की आँखें उसके सर से पैर तक घूम गईं। वह उसकी ओर इस तरह देख रहा था, जैसे खरीदार घोड़े को देखे। "है तो।" मन ही मन ऐसा कहता हुआ उसने अपनी आँखें उसकी आँखों में जबर्दस्ती डाल दीं। उसकी आँखें मानो कह रहीं थीं—"यही मैं हूँ—जैसी भी हूँ, यही हूँ, तुम मुझे जैसा समझो, मंजूर करो या....."

"सुन्दर-अति सुन्दर!" होंठों ने मुस्कराहट की उस पर मुहर लगा दी।

"अच्छा, अब जाओ!" मीरन ने बेटी को वहाँ से हटने की आज्ञा दी।

दरवाजे से जाते समय नातालिया ने ग्रीगर की ओर फिर एक बार उत्सुकता से देखा।

तय हुआ, दोनों परिवार अपने हित मित्र से एक बार फिर मिलें। "हम फिर रविवार को आयेंगे!" पैंतेलीमन ने कहा।

## २

जब इवान से खबर मिली, स्तेमन ने तब अनुभव किया कि वह अक्सीनिया को कितना प्यार करता है। हाँ उस प्यार में भयानकता और घृणा ओत-प्रोत थी, इसमें शक नहीं। लौटते दिन रास्ते में स्तेमन बराबर गाड़ी में सोया, अक्सीनिया उससे किस तरह मिलने आयगी। वह किस तरह इस बेवफाई का बदला लेगा—इसकी हजारों कल्पनायें करता रहा।

जिस दिन स्तेपन घर लौटा, तब से मानो उसके घर पर भूत का राज हो गया था। अक्सीनिया चंगुल पर चलती, फुसफुस कर बातें करती। उसकी आँखों में भय की राख थी, लेकिन उस राख से कभी कभी ग्रीगर के प्रेम की चिनगारी अचानक चमक उठती।

उसकी ओर देखते ही स्तेपन इस चिनगारी को सिर्फ देखता ही नहीं, वह अपने दिल में अनुभव करता। वह जल उठता, वह छटपटा जाता। रात में जब मक्खियाँ धरन पर बसेरे लेतीं और अक्सीनिया उसके लिये बिछावन कर देता। स्तेपन उसके मुँह पर हाथ रख कर उसे पीटने लगता। वह ग्रीगर के साथ के उसके बेशर्म व्यवहार का ब्यौरा पूछता। अक्सीनिया बिछावन पर छटपटाती और मुश्किल से साँस ले पाती। उसके कोमल शरीर को पीटते पीटते थक कर वह उसके चेहरे पर हाथ ले जाता और उसके आँसू की तलाश करता। लेकिन उसके गाल तो जैसे जलते होते।

"तू कहेगी?"

"नहीं।"

"मैं खून कर डालूँगा तेरा।"

"ईसा के नाम पर मुझे मार ही डालो—यह भी कोई जिन्दगी है।"

अपने दाँतों को पीसते हुए उसकी छाती के कोमल चमड़े को जिस पर पसीने चल रहे थे, पकड़ लेता और जोर से मसल देता। अक्सीनिया काँप उठती, कराह उठती।

"चोट लगती है?" वह हँस कर पूछता।

"लगती है।"

"क्या मुझे चोट नहीं लगती?"

बहुत रात बीते वह सो जाता। सोये सोये भी वह घूँसे तानता, दाँत पीसता। अक्सीनिया अपने पति के बदले हुये चेहरे को भयभीत होकर देखती और तकिये पर सर रख कर फुसफुसाती।

इधर ग्रीगर से उसकी मुलाकात नहीं थी। एक दिन अचानक उसकी

भेंट दोन किनारे हो गई। वह बैल को पानी पिला कर लौट रहा था। यह पानी लेने जा रही थी। अचानक उसे मालूम हुआ, उसके घड़े बर्फ के जैसे ठंडे हो गये। उसकी नसों में खून उबलने लगा। जब पानी के किनारे पहुँची, तब उसे ऐसा होश हुआ कि उसने ग्रीगर को देखा है। इधर घड़े की आवाज सुन ग्रीगर ने सर उठाया, उसकी भौंहे तनीं, वह मूर्ख की तरह मुस्करा पड़ा।

"अक्सीनिया!" उसने पुकारा।

"अक्सीनिया उसके निकट आई।" वह बोला—

"स्तेपन कब जौ काटने जा रहा है?"

"अभी वह तैयारी में लगा था।"

"उसे बिदा कर के जरा सूर्यमुखी की कुञ्ज में आना—मैं वहाँ तुरन्त पहुँचता हूँ।"

घड़ा लिये अक्सीनिया दोन में घुसी। हरी लहरों पर सूर्य की पीली किरणें खिलवाड कर रही थीं। जहाँ तहाँ उनके झाग दिखाई दे रहे थे। पानी के ऊपर टिटहरी चक्कर काट रही थीं। छोटी मछलियाँ जब तब उछल कर चाँदी की बूँदें बरसा देतीं। बलुई किनारे के ऊपर पुराने पेड़ दर्प से सर हिला रहे थे। पानी में घुसने के लिये अपना घांघरा घुटने के ऊपर उसने लपेट लिया था। उसकी सुडौल, सफेद पंडलियों से पानी की धारा टकराती, शब्द करती, उछलती। स्तेपन के लौटने के बाद वह पहले पहल वह मुस्कराई।

उसने सर उलट कर ग्रीगर को देखा। वह दोन के ढालुये पर चढ़ रहा था। आँखों में पानी भर कर उसने उसकी सुदृढ़ टाँगो को देखा। उसकी पीठ पर की कमीज जरा फट गई थी। उसकी फांक से उसकी पीठ का एक हिस्सा दिखाई दे रहा था। अक्सीनिया के मन ही मन अपने प्यारे के उस प्रगट अङ्ग का चुम्बन किया। उसके होंठों पर आँसू की बूँदें चूने लगीं।

जब पानी लेकर चली, उसने ग्रीग्रर के बूटों का निशान नदी किनारे

गीले बालू पर देखा। उसने इधर उधर देखा, कोई नहीं—सिर्फ दूर पर कुछ लड़के खेल रहे हैं। वह घड़ा रख कर उस निशान के निकट गई और दोनों हथेलियों से उस पद-चिन्ह को ढँक लिया। फिर उठी, घड़ा लिया और हँसती हुई घर की ओर चली।

मलमली कुहासे से छन कर सूरज की किरणें घरों की छतों पर क्रीड़ा कर रहीं थीं। आसमान में एक कोने पर बादल का दल उमड़ा पड़ता था। जब अक्सीनिया घर पहुँची, उसने देखा, काटने की मशीन में घोड़ा जोते स्तेपन जाने को तैयार है। अपना कोट सीट पर डाल, लगाम पकड़ उसने अक्सीनिया से कहा—

"दरवाज़ा खोल दे।"

उसके हुक्म का तामील कर उसने पूछा।

"आते कब तक हो?"

'शाम तक। खाना खेत में ही लाना।"

धूल उड़ाते, मशीन की पहिये चें चें करते, वह खेत की ओर रवाना हुआ। आक्सीनिया घर में घुसी। सर पकड़े थोड़ी देर वह खड़ी रही। फिर एक रूमाल सर में बाँध, वह नदी की ओर चली।

"लेकिन, कहीं वह लौट पड़ा तो? उफ, वह क्या कर बैठेगा? उसने अनुभव किया, जैसे उसके पैर के आगे एक दरार फट गई हो। उसने पीछे मुड़ कर देखा और फिर बड़ी तेज़ी से दौड़ती एक ही साँस में, नदी किनारे होते वह मैदान में जा पहुँची।

बगीचे। सूर्यमुखियों का एक पीला समुद्र उमड़ रहा। आलू के मटमैले हरे पत्ते। ग्रीगर की बताई सूर्यमुखी कुंज में पहुँच कर, अपना घांघरा सम्हाल, सर में सूर्यमुखी की कणिकायें झाड़ती, वह बैठ गई। अभी सन्नाटा था। उसके सर से ऊपर कहीं एक भौंरा भनभन कर रहा था। वह आधा घंटे वहाँ बैठी प्रतीक्षा करती रही। "क्या उसने धोखा दिया?" जाने के लिए वह तैयार हो रही थी कि पुकार हुई —

"अक्सीनिया!"

"इस रास्ते, इधर!"

"अच्छा, तो तुम आ ही गई"—पत्तों को सरसराते आकर ग्रीगर उसकी बगल में बैठ गया।

दोनों की आँखें मिलीं! ग्रीगर के मूक प्रश्न ने अक्सीनिया की आँखों को दो झरने बना दिये।

"अब मुझमें ताक़त नहीं रह गई......ग्रिश्का, मैं मर चली।"

"वह क्या करता है?"

गुस्से में उसने अपने जैकेट को फाड़ डाला। उसकी गुलाबी, बच्चों की सी, सूजी हुई छाती पर कितने ही काले जामुन के से दाग़ थे।

"तुम नहीं जानते? वह रोज़ मुझे पीटता है? वह मेरा खून चूसे जा रहा है।···और एक तुम हो?....कुत्ते की तरह मझे, गन्दा कर आप कपड़े झाड़ चले .. यही हो तुम।" उसने जाकेट के बटन को उंगलियों से लगा लिये और फिर भयभीत नज़र से ग्रीगर को देखने लगी कि कहीं वह नाराज़ न हो जाय। ग्रीगर गरदन घुमाये सुन रहा था। सब सुन दाँतों से तिनका चबाते, वह धीरे से बोला—

"तो सारा दोष तुम मुझी पर थोपना चाहती हो?"

"क्या तुम्हारा दोष नहीं है?" वह ज़ोर से चिल्ला पड़ी।

"कुत्ता अनिच्छुक कुत्तिया के पास कभी नहीं फटकता।"

अक्सीनिया ने अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा लिया। उसे मालूम हुआ, जैसे किसी ने अचानक उसके सर पर एक जबर्दस्त घूँसा लगा दिया।

कंधे हिलाते ग्रीगर ने उसकी ओर देखा। उसकी तर्जनी और मध्यमा उँगलियों के बीच आँसू चमक रहा था। एक टूटी, धूलभरी सूर्य-किरण उस पारदर्शी पदार्थ पर चमक रही और उसकी तरी को चमड़े पर से सुखा रही थी।

ग्रीगर आँसुओं को नहीं बर्दाश्त कर सका। अपने पाजामे पर चढ़ते हुए एक कीड़े को पकड़ कर निर्दयता पूर्वक फेंक, उसने फिर

अक्सीनिया पर नज़र डाली। वह उसी आसन से बैठी थी। लेकिन अब आँसू की धारा उसके दोनो हाथों को अपनी बाढ़ में डुबो चुकी थी।

"क्या बात है ? मैंने तुम्हें चोट पहुँचाई ? अक्सीनिया, माफ करो। चुप रहो। सुनो, मुझे तुमसे कुछ कहना है ?"

उसने चेहरे से हाथ हटाये और कहा—"मैं यहाँ तुमसे सलाह लेने आई थी। अब बर्दाश्त नहीं होता। लेकिन तुम...मैं अपने को तुम पर लादने नहीं आई थी। डरो मत"—वह हाँफ रही थी।

"ओ, तो हमारा प्रेम खत्म हो गया !" ग्रीगर ने पूछा।

"खत्म क्यों हो गया ?"—अक्सीनिया चौंकी। "कैसे ?" उसने उसकी आँखों में अपनी आँख डालनी चाही। उसने आँखें मोड़ लीं।

सूखी जमीन से नमी और धूप की गंध आ रही थी। हवा सूर्यमुखी के पत्तों से सरसराती बह रही थी। एक क्षण के लिए बादलों के एक दल ने सूर्य को ढँक लिया था। मैदान पर, गाँव पर, अक्सीनिया के भावप्रवेश पर धुँआसी छाया छा गई।

ग्रीगर ने लम्बी उसाँस ली—जैसे कंठ में घाव हुए घोड़े ने साँस छोड़ी हो। वह चित्त जमीन पर पड़ रहा।

"सुनो, अक्सीनिया।" उसने धीरे से कहना शुरू किया—"मैंने... एक बात...सोची..."

उसी समय कुंज के किनारे से एक गाड़ी आ रही थी उसकी आवाज़ सुन अक्सीनिया कांप उठी—ज़मीन पर लेट गई। ग्रीगर ने सर उठाकर कहा—"अपना रूमाल उठालो,...शायद उन्होंने हमें देखा हो।"

रूमाल उठाकर उसने रख लिया। धीरे धीरे गाड़ी निकल गई। ग्रीगर ने कहना जारी किया।

"मैं यही सोच रहा था। जो हो चुका हो चुका। अब किसी पर दोष मढ़ने से क्या फायदा ? अब किसी तरह हमें ज़िन्दगी तो गुजारनी है ही।"

अक्सीनिया ध्यानपूर्वक सुन रही थी। उसने ग्रीगर के चेहरे की ओर देखा, वहाँ रूखापन झलक रहा था।

"मैं सोच रहा था, अब हम लोग......खत्म करें!

अक्सीनिया के चेहरे पर आग और भय की घुड़दौड़ हो रही थी। उसका मुँह सूख रहा था। उसने सोचा, शायद ग्रीगर कह रहा है 'हम स्तेपन को खत्म करें'' लेकिन ग्रीगर के मुँह से निकला—

"अब हम इस किस्से को खत्म करें।"

वह झट खड़ी हो गई। सूर्यमुखी के फूल को ढकेलते वह आगे बढ़ी।

"अक्सीनिया!" ग्रीगर ने पुकारा। वह बढ़ती गई। ग्रीगर अपनी टोपी पटक दौड़ा। उसने देखा, वह जो जा रही है, वह पुरानी अक्सीनिया नहीं है। न अक्सीनिया है, न उसकी वह मस्तानी चाल। जैसे कोई दूसरी औरत एक अजीब ढंग से ढिलमिलाती बढ़ती जा रही है।

## २

तारतारस्क गाँव में कोरशुनौव-परिवार सबसे धनी था। चौदह घोड़े घोड़ियाँ, पन्द्रह गायें, अनेक चौपाये, एक झुण्ड भेंड़। घर लोहे से छाया। जिसमें पाँच बड़े कमरे, पशुशाला पर नये खपड़े। तीन एकड़ का बगीचा। और क्या चाहिये भला?

इसीसे पैंतेलीमन को उस परिवार में शादी का पैग़ाम ले जाते हुए संकोच हुआ था। कोरशुनौव अपनी बेटी के लिए ग्रीगर से कहीं धनी और अच्छा दुल्हा पा सकते थे। पैंतेलीमन इसे समझता था और इसी से डरते-डरते गया था। अब वह सोचता, कहीं वे अस्वीकार कर दें। वह असमंजस में पड़ा था। लेकिन, इलिनिचना जो उसे बैठने दे। बूढ़े को बुढ़िया की हठ के नजदीक झुकना पड़ा। ग्रीगर यदि इलिनिचना को कोसते वह एक दिन पूछने को रवाना हुआ।

इधर कोरशुनौव के रंगीन लोहे के फाटक वाले घर में एक अजीब मतभेद पैदा हो चुका था। जब मेलेखौव-परिवार के लोग उसे देखकर रवाना हुए। नातालिया ने अपने माँ-बाप से कहा—

"अगर ग्रीगर चाहता है, तो मैं दूसरे से शादी नहीं करूँगी।"

"देखो, इसने खुद दुल्हा पा लिया; बेवकूफ कहीं की !" बाप बोला।

"वाह, क्या रूप है ! बंजारों की तरह तो वह काला है। मेरी छोटी चिड़िया, मैं ऐसा दामाद नहीं होने दूँगा।"

"मैं दूसरे से शादी नहीं करूँगी।" शर्म से लाल होती, वह रो पड़ी। "बाबूजी, मुझे किसी मठ में रख आइये।"

"वह गलियों में गश्त लगाता है, वह छोकड़ियों के पीछे पड़ा रहता है, वह औरतों की तलाश में मारा मारा फिरता है।" बाप ने मानो आखिरी ताना फेंका।

"वह जैसा भी हो, मैं तो..."

नातालिया अपने बाप की सबसे बड़ी और सबसे प्यारी बेटी थी। उसकी शादी के लिए धन के पैगाम आ चुके थे—दूर के गाँवों के प्रतिष्ठित परिवारों से की। लेकिन, नातालिया ने उनमें से किसी दुल्हे को पसन्द नहीं किया, फलतः शादी तय नहीं हो पाई। बाप अपनी प्यारी बेटी पर कोई दबाव डालना नहीं चाहता था।

मन में मीरन ग्रीगर को पसंद करता था। वह चतुर कोजाक था, खेतों में घुड़सवारी में सब से चतुर, परिश्रमी। घुड़सवारी में जब उसने पहला इनाम सब कोज़ाक नौजवानों को हरा कर लज्जित किया था, मीरन उस पर रीझ गया था। किन्तु, एक गरीब के हाथों वह बेटी के सौंपने से झिझकता था। फिर, ग्रीगर ने अपने को बदनाम भी कर रखा था।

"बड़ा मेहनती है, खूबसूरत भी काफी है।" रात में उसकी बीवी ने कहा। "फिर नातालिया तो उस पर न्योछावर हो गई है।"

मीरन अपनी पीठ अपनी बीवी के गलित छाती की ओर करके, नाराजी से गरज उठा—

"तू भी मर, तेरी भी अकल चरने चली गई। खूबसूरत !" झल्लाहट में कहा—"क्या उसके लोटे का तू पानी भी पीयेगी। एक तुर्क के साथ मैं अपनी बेटी ब्याहूँ ! मैं इतना पतित हो गया।"

"वे अच्छे परिवार से हैं, अच्छे खाते पीते।"—अपनी पति की पीठ को सहलाते हुए उसकी बीबी बोली।

"शैतान, हट, नहीं हटेगी ! तू क्या पीठ सहला रही है ! क्या मैं गाय हूँ कि सहलाने से दूध दे दूँगी। तू नाबालिया को नहीं जानती क्या ! वह तो हर नौजवान पर कुर्बान हो सकती है।"

"अपने बच्चे की भावना पर ध्यान तो देना ही चाहिये।" वह उसके कानों में फुसफुसाई। लेकिन मीरन हटकर दीवाल से सटकर नाक बजाने लगा। जैसे कि वह गाढ़ी नींद में सो गया हो।

मेलेखोव पहुँचे, कोशुलौवों में फिर गड़बड़ी मच गई। इलिनिच्ना गाड़ी से उतरते समय उसे बता हो चुकी थी, किन्तु पैंतेलीमन इस तरह सीट से उतरा जैसे वह शिकारी कुत्ता हो।

"वह, वे आ गये ! शैतान उन्हें यहाँ खींच लाया।" खिड़की से झाँकते हुए बोला।

"कुशल-आनन्द ?"—जोर से पुकारते पैंतेलीमन दरवाज़े पर लड़खड़ाते देखा। अपनी ऊँची आवाज़ पर .खुद झिझक कर अपनी दाढ़ी पर हाथ फेर रहा था।

कुशल-समाचार के आदान प्रदान के साथ ही वह कह उठा—

"हम आपके हैं, मीरन ग्रीगरविच ! उम्मीद है, आप लोग आपस में अब तय कर चुके होंगे।

"आइये तो, बैठिये तो"—कहते मैरिया उन्हें अगात-स्वागत से बिठाने लगी।

इलिनिच्ना अपने कोट को सरकाती बैठ गई। मीरन टेबुल पर कुहनी गड़ा कर बैठ गया। टेबल पर के फ्रांसिसी कपड़े पर जार और जरीना की तस्वीरें बनी हुई थीं। मीरन ने निस्तब्धता भंग की—

"हाँ, हमने तय किया है, अपनी लड़की आप को देंगे। अब सिर्फ दहेज के बारे में तय कर लेना है।"

इसी समय अपने जाकेट की किसी रहस्यमयी जगह से इलिनिच्ना ने एक

उजली पावरोटी निकाल कर टेबल पर रख दी। पैंतेलीमन ने उँगली से सलीब बनाते कोट की जेब में हाथ डाली और एक लाल बोतल टेबल पर पड़ा था। उसने अपनी पपनियों को अजीब ढंग से गिराते-उठाते कहा—

"अब, दोस्तों, हम अपने बच्चों के नाम पर भगवान से प्रार्थना कर लें, जिसमें उनका विवाहित जीवन आनन्द से कटे।"

एकाध घंटे के अन्दर ही दोनों इतना नजदीक बैठे थे, कि दोनों की दाढ़ियाँ एक-दूसरी से सट रही थीं। टेबल के फ्रांसीसी कपड़े पर शराब और खीरे के पानी बह रहा था। आँखों में नशे का कुहासा लिये पैंतेलीमन दांत निकाले गिड़गिड़ाते कह रहा था—

"मेरे कुटुम्बी, मेरे सजन, यह मुझसे न होगा। इतना क़ीमती दहेज़—रेशमी मोजे—एक; एक पश्मीने का कोट, दो; दो ऊनी पौशाकें ती.; ज़र का रूमाल, वाह। नहीं नहीं, मैं तो बिक जाऊँगा!

## ४

हरी सूई से गेंहूं के अंकुर ज़मीन को फोड़कर निकलते हैं। थोड़े ही दिनों में उनके भीतर सूपावेनी उड़ जाय यदि दिखाई नहीं पड़े। अंकुर झाड़ बन जाते हैं। झाड़ ज़मीन से रस खींचकर बड़ा बनता यदि लम्बी लम्बी बालियाँ देता। बालियों से मीठा, सुगंधित दूध भर आता। फिर उन पर सुनहली धूल का रंग चढ़ आता। किसान खेत में पहुँचता है, किन्तु उसे आनन्द नहीं आता। जहाँ उसकी नज़र जाती है, वह देखता है, दुष्ट पशुओं ने गेहूं को बर्बाद कर दिया है, पैरों से कुचल कर मिट्टी में मिला दिया है। किसान गुस्से में आ जाता है, उसकी नज़रों में क्रूरता झलकती है।

अक्सीनिया की वही हालत थी। जब उसकी भावनायें पककर सुनहले फूल ले चुकी थी, ग्रीगर ने अपने भारी, कच्चे चमड़े के बूटों से उसे बुरी तरह कुचल डाला था। मसल डाला था, जलाकर खाक बना डाला था।

जब वह उस सूर्यमुखी कुंज से लौटी उसका हृदय सूना और भयावना था—उस खेत की तरह जहाँ घास-फूस आपसे आप उग गये हों। अपने रूमाल की खूंट को दाँतो से कुचलते वह वहाँ से लौटी—उसके गले में रुलाई रुँधी पड़ी थी। घर में पहुँच कर वह ज़मीन पर गिर पड़ी और आँसुओं में, पीड़ा में भयानक शून्यता में छटपट करने लगी—मानों उसके सर पर करोड़ों कोड़े बरस रहे हों। लेकिन इन सबको वह पी गई। मर्मान्तिक पीड़ा को अगाध अन्तस्थल में लेकर उसने गाड़ दिया।

पशुओं के पैर से कुचले पौधे फिर खड़े होते हैं। ओस और धूप खाकर कुचले डंठल फिर लहराने लगते हैं। कुछ दिनों झुके से, जैसे भारी बोझ लिये कोई आदमी। फिर, तनते हैं यदि सर ऊँचा करते हैं। सूरज की किरणें उन्हें चमकाती हैं, पश्चिमी हवा के झोंके उन्हें झूले झुलाते हैं।

रात में वह बड़े स्नेह ने स्तेपन की देह सहला रही थी, लेकिन उसका मन कहीं दूसरी जगह था—मन जिसमें प्रेम के साथ घोर घृणा भरी हुई थी। वह मन ही मन दूसरी बेशर्मी की योजना बना रही थी—नई बदनामी की। वह निश्चय कर चुकी कि वह नातालिया से ग्रीगार को छीन लेगी—बेचारी नातालिया, जिसने न प्रेम का तीखापन जाना न उसका आनन्द। स्तेमन का भारी सर उसकी बांहों पर पड़ा था, लेकिन वह रात भर कुछ दूसरा ही प्रपंच सोचती रही। वह ग्रीगर को किसी से भी छीन लेगी, उसे प्रेम की बाढ़ में बहा देगी, उसे बिल्कुल अपने कब्जे में कर रखेगी।

दिन भर अक्सीनिया घर के कामों और चिन्ताओं में फँसी रहती। कभी-कभी उसकी भेंट ग्रीगर से हो जाती। उसे देखते ही वह पीली पड़ जाती, फिर अपने खूबसूरत बदन को शोखी से उभाड़ती, मानो उसे चुनौती देती, उसकी आँखों में आँखें डाल देती।

ऐसे हर मुलाकात के बाद ग्रीगर उसके लिए व्याकुल हो उठता। वह अकारण ही क्रुद्ध हो जाता, अपना क्रोध दुनिया या माँ पर उतारता, लेकिन ज्यादा यह होता कि वह अपनी टोपी उतार कर घर के पिछले

आँगन में चला जाता और कुल्हाड़ी से तबतक लकड़ी चीरता रहता, जब तक कि वह पसीने से तबतर नहीं हो जाता।

५

चार सजीली गाड़ियाँ दुलहन को लेने चलीं। मेलेखोव-परिवार के दरवाज़े पर गाँव के सजे सजाये लोगों की भीड़ लगी थी।

पियोत्रा काला कोट और नीली धारी का पजामा पहने हुए था। उसके बायें हाथ में दो रूमाल बँधे थे और गदंगी रंग की दाढ़ी के बीच उसके होंठ मुस्कुराहट से लदे थे। बड़े भाई की हैसियत से उसे ही दुलहन का निरीक्षण करना था न?

"लजाओ मत ग्रीगर" उसने भाई से कहा "अरे, जवान मुर्गे की तरह सर उठाकर चलो।"

पतली, छुमछुम करती, ऊनी रंगीन कमीज़ पहने, दारिया ने पियोत्रा को ताने दिये—

"ज़रा अपनी याद करो....कैसे गड़े जा रहे थे।"

"अच्छा अपनी जगह पर बैठो। मेरी गाड़ी पर पाँच आदमी और दुल्हा। लाल पोशाक पहने, विजयी-सी इलिनेचना ने दरवाज़ा खोला, चारो गाड़ियाँ सड़क में तोड़ करती, भगीं।

पियोत्रा ग्रीगर की बगल में बैठा था। उनके सामने दारिया कामदार रूमाल चमका रही थी। सब मिलकर गाने गाये जा रहे थे। कज़ाकों की कामदार टोपियाँ, नीली और काली पोशाकें, हाथ में बँधे उजले रूमाल, खूबसूरत घांघरे, उनके सतरंगी रूमाल—सब मिलकर एक अजीब समा पैदा कर रहे थे।

ग्रीगर का चचेरा भाई दुलहन वाली गाड़ी को हाँक रहा था। घोड़े की पूँछ पर झुका, सीर से उठा वह लगातार चाबुक फटकारता जा रहा था और घोड़े पसीने से तर बेतर भागे जाते थे। दूसरी गाड़ी पर दुलहिन के मामा के साथ दुनिया बैठी थी। उसने चाहा, वह अपनी गाड़ी बढ़ा

ले जाय। बड़े ज़ोरो से दौड़ हुई—दोनों गाड़ियों के घोड़े इस तरह दौड़ रहे थे कि मालूम होता, गिर पड़ेंगे। दारिया दुनिया को देख मुस्कुरा रही थीं। बाकी दो गाड़ियाँ भी अगल बगल दौड़ी जा रही थीं।

घोड़े भी सजे थे। लाल, नीले, गुलाबी फूल उनपर डाल दिये गये थे। उनके सर और गर्दन के बालों में कमल के फूल अदि तागों के झब्बे लटक रहे थे। जब वे दौड़ रहे थे, उनके मुँह से साबुन के झाग से निकलते, पसीने से तर पीठ पर झूले, लहराते।

कोरशुनोव-परिवार के दरवाज़े पर गाँव के लड़के बारात के इन्ज़ार में थे। धूल उड़ती—देख वे आँगन में दौड़ आये और चिल्लाये—

'वे आ रहे हैं!"

गाड़ियाँ फ़ाटक तक आईं। ग्रीगर और पियोत्रा सबसे पहले उतरे। दूसरे उनमें पीछे हो लिये।

रसोईघर का दरवाज़ा, बन्द था। "इसी के नाम पर, हम पर दया कीजिये।" पियोत्रा ने खटखटाते हुए कहा।

"आमीन"—भीतर से अवाज़ आई।

तीन बार पियोत्रा के आरज़ू करने पर दरवाज़ा खुला। नातालिया की ओर से उसकी धर्म की माँ ने इनका स्वागत किया। फिर दोनों ओर से शराब का आदान-प्रदान हुआ। दोनो पक्ष में आमोद-प्रमोद और दिल्लगियों का सिलसिला भी जारी था।

शादी की पोशाक में नातालिया टेबल के किनारे बैठी थी। उसकी दोनों बहनें उसे दोनो ओर से घेरे हुई थीं। उसकी माँ भभियां भी वहीं खड़ी थी। पियोत्रा शराब के इतने नशे में, पसीना बहाते, उस ओर बढ़ा और एक तस्तरी में पचास कोपेक रख कर उन्हें भेंट दिया। मैरिया ने कहा—

'नहीं, इतने में तुम्हें दुलहन नहीं मिलेगी।"

पियोत्रा ने चाँदी के कुछ नये सिक्के तस्तरी में रखे।

"नहीं, इतने से तुम्हें यह मिलेगी।" बहनों ने जोर से ऐलान किया। नातालिया सर झुकाये बैठी रही।

"अरे यह क्या ? हमने तकशुआ से ज्यादा ही दिया !" पित्रोचा ने कहा।

"बच्चियों, पीछे हटो"—मीरन ने हँसते हुये आज्ञा दी। थोड़ी ही देर में दोनों पक्ष के लोग टेबुल को घेर कर बैठ गये।

पियोत्रा ने शाल की एक छोर ग्रीगर के हाथ में देकर फिर नातालिया के पास गया, जो सलीब के चिन्ह पर बैठाई गई थी। शाल की दूसरी छोर को नातालिया ने अपने भीगे और काँपते हाथ से पकड़ा। ग्रीगर उसकी बगल में बैठ गया।

"मेज पर अब दाँतों की आवाज हो रही थी। मुर्ग-मुसल्लम को अतिथि वृन्द अपने हाथों से चीरते और दांतों से चबाते। एक मेहमान एक छोटे मुर्गमुसल्लम को समूचा मुँह में रख लिया—शोरवा और चरबी उनकी दाढ़ी को भिगोती कालर पर आ गिरी।

ग्रीगर तृषित और क्षुधित दृष्टि से देख रहा था, उसकी और उसकी दुलहिन का चम्मच एक रूमाल से बांध कर एक शोरवे से भरे कटोरे में रख दिये गये थे। भूख से उसका पेट कुलबुल कर रहा था, लेकिन शादी के नियम के मुताबिक उसका खाना हो गया था।

मेहमानों ने खूब खाया। मर्दों के पसीने की गन्ध से औरतों की गन्ध मिल रही थीं। कोट, जाकेट, शाल, कमीज सब से एक मादक सुगन्ध निकल कर सर को चकरा रही थी।

ग्रीगर ने नातालिया को बगल से देखा। यह पहली बार उसने महसूस किया कि उसका ऊपर का होंठ सूजा हुआ है। और नीचे के होंठ पर वह गिरा-सा चाहता है। उसके दाहिने गाल पर एक मसा है, जिस पर दो सुनहले बाल हैं, यह भी उसने पहली बार देखा। इससे वह कुछ उत्तेजित हुआ। उसी समय उसे अक्सीनिया की पतली गर्दन और उसके घुंघराले बालों की याद आ गई इसे मालूम हुआ, जैसे किसी ने उसके सर पर एक मुट्ठी भूसी घास डाल दी हो। वह कुछ अनमना-सा हो चला और अपनी दुर्भावनाओं को दबाने की चेष्टा करते हुये वह मेहमानों को देखने लगा जो गोश्त को काटते, चबाते और निगलते जा रहे थे।

## ३

### १

मेलखौव परिवार ने नातालिया को बड़े काम का पाया। यद्यपि वह बड़े घर में पैदा हुई थी। उसका बाप हमेशा अपने बच्चों से बहुत काम लिया करता था। नातालिया ने अपने मेहनती स्वभाव से अपने पति के मां-बाप को मोह लिया। इलिनिचना अपनी बड़ी पतोहू दारिया को नापसन्द करती थी। वह नातालिया को शुरू से ही अति प्यार करने लगी।

"बिटिया जा, अब सो जा।" वह मीठे शब्दों में कहती—"हम तुम्हारे बिना भी काम चला लेंगे।"

पैंतेलिमन घर के काम काज के बारे में बहुत सख्त था। वह भी एक दिन अपनी बीबी से कह रहा था—

"सुनो, नातालिया को भोर में ही मत जगा देना। वह मेहनती है, वह खूब काम करेगी ही। वह ग्रीश्का के साथ हल जोतने जा रही है। लेकिन दारिया पर नजर रखना, उसे चेताते रहना। वह आलसी औरत है, बहुत ही खराब। उस चुड़ैल को चेहरे पर पाउडर लगाने और भौहों को रँगने से ही फ़ुरसत नहीं है।"

ग्रीगर अपने विवाहित जीवन से सामंजस्य नहीं स्थापित कर सका था। दो तीन सप्ताह के अन्दर ही उसने देखा, वह अक्सीनिया को पूरा भुला नहीं सका है। जिस भावना को उसने दबाने की कोशिश की, विवाह की प्रथम तरंग में जिसे डुबो भी चुका था। अब उसने पाया वह भावना फिर सर उठा रही है। वह चाह कर भी उसे भूल नहीं पाता था। याद आते ही घाव बहने लगता। शादी के पहले एक दिन उसके बड़े भाई—पित्रोचा ने पूछा था—

"ग्रिश्का, लेकिन अक्सीनिया का क्या होगा ?"

"उसका क्या होगा, भला ?"

"उसे इस तरह फेंक देना !—क्या तुम्हें दया नहीं आती।"

"मैं फेंक दूँगा, तो कोई दूसरा उठा लेगा।"—ग्रीगर मुस्करा पड़ा था।

लेकिन, जैसा उसने सोचा था, वैसा नहीं हुआ। उसका उबलता यौवन खौलता कड़ाह चाहता था, उसे मिला शीतल जल का झरना। नातालिया शारीरिक आनन्दों से जैसे सिकुड़ जाती। उसमें उसकी माँ का धीमा ठंडा खून था। ज्यों ही ग्रीगर अक्सीनिया का वह विद्युत-प्रवाह याद करता, वह उसासें लेने लगता :—

"नातालिया, मालूम होता है, तुम्हारे पिता ने तुम्हें बर्फ से बनाया।"

एक दिन वह अक्सीनिया से राह पर मिला। वह हँसती हुई चिल्ला पड़ी—

"ओ हो, ग्रिश्का, कहो नई बीबी के साथ किस तरह कट रही है ?"

"कट रही है।" ग्रीगर ने टालते हुए जवाब दिया और अक्सीनिया की जलती निगाहों से अपने को बचाकर भागा।

## २

स्तेमन ने अपनी बीबी से कुछ-कुछ सुलह करली थी। अब वह भट्टीखाने में बहुत कम जाता और एक दिन शाम को जब वह खलिहान में दौनी कर रहा था, उसने झगड़े के बाद पहली बार अपनी बीबी से कहा—

"अक्सीनिया, आओ, हम एक गीत गायें।

दोनों गेहूँ की भूसी भरी रास पर पीठ सटाकर बैठ गये। स्तेमन ने एक फौजी गीत शुरू किया। अक्सीनिया खुले कंठ से उसके सुर में सुर भरने लगी। ग्रीगर का खलिहान सटा था। उसने दोनों की सम्मिलित ध्वनि सुनी। उसने अनुभव किया, अक्सीनिया के सुर में वही पिछली आत्म-निर्भरता और प्रत्यक्ष प्रसन्नता है।

स्तेपन मेलखोव-परिवार से बोलता तक नहीं। वह खलिहान में काम करता और जब-तब अक्सीनिया से चुहलें कर लेता। वह चुहल का जवाब मन्द मुस्कान और तिरछी चितवन से देती। उसका हरा घांघरा ग्रीगर की आँखों में चक्कर काटता रहा था। कोई अज्ञात शक्ति उसकी गर्दन मरोड़ कर स्तेपन के खलिहान की ओर कर देती। वह अपनी मूर्खता में यह अनुभव नहीं करता था कि खलिहान में पँतेलीमन की मदद करती हुई नातालिया उसकी इन चोरी की नजरों को घूर घूर कर देख रही है और घोड़ों को गेहूं पर चक्कर घुमाता पियोत्रा बार-बार भाई की इन हरकतों पर मुस्कुरा पड़ता है।

निकट और दूर में दोनों का धूमधड़ाका छाया हुआ था। हाँकने वाला ललकारता हुआ घोड़ों को गेहूं की डंठल पर चक्कर दिलाता, जब तब चाबुक और सूप की फटकार भी सुनाई पड़ती। गाँव भर फसल बिटोरने की धुन में मस्त था। दोन के किनारे खलिहानों की पंक्ति लगी थी। हर खलिहान में खड़े झोपड़े में लोग अलग अलग मीठी-कड़वी ज़िन्दगी बिता रहे थे। किसी के दांत में दर्द था। किसी के सर में। स्तेपन के किस में दर्द था— वह बदले के नशे में सोते हुए अपने कम्बल को टुकड़े टुकड़े कर देता। बेचारी नातालिया—जैसे पेड़ से अलग की गई लतिका सिमटी, मुस्काई। ग्रीगर सोते समय अक्सीनिया के सपने देखता, अक्सीनिया अपने पति का सर सहलाती हुई जगे में ग्रीगर का सपना देखती। गाँव के बगल में जो एक मिल खड़ी की गई थी, उससे निकाला हुआ डेविड नामक एक मजदूर अपने दुखड़े सुना रहा था, तो वैलेट नामक एक पुराने मजदूर ने उससे कहा—

"चुप रहो! रोने से क्या होता है? ये लोग अपनी गर्दन आप काट रहे हैं। एक क्रान्ति से इनको होश नहीं हुआ। फिर १९०५ दुहराया जायगा और तब इन्हें आटे दाल का भाव मालूम होगा। हाँ, तब!" वह अपनी तर्जनी उँगली से मानो दुनिया के पूँजीपतियों को धमकाये जा रहा था।

और, उधर गाँव में दिन बीतते, रातें आतीं। सप्ताह बीते, महीने गये। हवा का हाहाकार, सूर्य किरणों की आँख मिचौनी और दोन बड़ी शान्ति से समुद्र की ओर भागी जा रही।

## ३

साहूकार मोखौव का इतिहास कुछ अजीब रहा है।

बादशाह पहले पीटर के ज़माने में एक बार एक बेड़ा बिस्कुट यदि बारूद से भरा दोन में जा रहा था। जब चिगोनाक गाँव में बेड़ा आया रात में लुटेरों ने उसे लूट लिया। ज़ार आग बबूला हो गया। उसने कोज़ाको को सबक सिखाने को वोरोनेज़ से फौजी दस्ता भेजा। चिगोनाक गाँव को धूल में मिला दी गई—चालीस कोज़ाको को फाँसी के तख्ते पर झुला दिया गया।

दस वर्षों के बाद उस गाँव के भग्नावशेष पर एक रूसी किसान मोखौव आकर बसा। उसने भी तो जाहिरा पेशा रखा खेती का, किन्तु वह जारपार्टी का खुफिया था। इसी मोखौव से यह परिवार चला आता है। कोज़ाकों की उपजाऊ ज़मीन का असर उस परिवार पर भी पड़ा। वह बढ़ा, फैला। थोड़े दिनों के बाद खेती से वह व्यापार पर आया। थोड़े दिन हुए, एक आटा मिल भी उसने खड़ी कर ली थी।

वह तारतारस्क गाँव और उसके दूसरे पड़ोसी गाँवों को खूब चूस रहा था। एक भी ऐसा घर नहीं, जो सरगी मोखौव का कर्जदार न हो। नौ मज़दूर मिल में काम करते, सात दुकान में और चार चौकीदार थे। बीस मुँह अपनी रोटी के लिए सिर्फ उसी पर निर्भर करते थे।

उसका बेटा दुबला-पतला, ब्लाडिमीर था। बेटी लीज़ा बड़ी फाहशा और बदचलन थी।

ब्लाडिमीर एक दिन मिल की ओर निकला। वहाँ उसने देखा, तीन मज़दूर खाली पैर से कीचड़ खाँध रहे हैं। "यह क्या कर रहे हो"—उसने मुस्कराते हुए पूछा। डेविड नामक मज़दूर ने कहा—

"कीचड़ मिला रहा हूँ, और क्या ? तुम्हारे बाप हैं, जो इन कामों के लिए औरतें नहीं रखते। मक्खी चूस······"

ब्लाडिमीर का चेहरा सुर्ख़ हो गया। डेविड के हँसते चेहरे को देख कर तो वह और आगबबूला बन गया। गुस्से में चूर उसने कहा—

"क्या कहते हो—मक्खी चूस ? इसका मानी ?"

"इसका मानी यह कि तुम्हारे बाप पहले दरजे के सूम और नीच हैं।" डेविड के चेहरे की हँसी अब दोनों समर्थकों पर भी थी। बेइज्जती अनुभव करता हुआ, ब्लाडिमीर डेविड की ओर मुखातिब होकर बोला—

"हाँ तुम लोग असन्तुष्ट हो ?"

"ज़रा इस कीचड़ में आओ और खाँधो, तब तुम्हें मालूम पड़े। कौन बेवकूफ इससे संतुष्ट होगा ? तुम्हारे बाप खुद करें, तब उन्हें मालूम पड़े। बच्चू के पेट में हरिन कूदने लगे !" डेविड ने कहा।

डेविड इतना कह कर फिर कीचड़ को अपने भारी पैरों से मिला रहा था। पाजामा घुटने से ऊपर उठा हुआ था। उसके चेहरे पर अब भी मुस्कुराहट खेल रही थी। इस मुस्कुराहट ने ब्लाडिमीर के दिल में बदले की भावना भर दी। मन ही मन अच्छा-सा जवाब सोच कर उसने कहा—

"अच्छा, मैं बाबू जी से कहूँगा, तुम्हें यह काम पसंद नहीं।"

उसने बगल से तीनो के चेहरे को देखा, तीनों के चेहरे फक थे। डेविड हँसने की चेष्टा कर रहा था, किन्तु उस हँसी में अरुणा झांक रही थी। उसने पैरों को कीचड़ में पटकते हुए कहा—

"हम सिर्फ़ दिल्लगी कर रहे थे, वोलोडिया !"

"मैं बाबू जी से कह दूँगा, जो तुम कहते थे"—ब्लाडिमीर की आँखों में अपने लिए और अपने बाप के लिए आंसू झलक आये थे। वह वहाँ से चल दिया। डेविड झट कीचड़ से निकला, अपना पाजामा गन्दे पैर पर खिसकाते, ब्लाडिमीर की ओर दौड़ा और बड़ी आज़िज़ी से बोला—

"बाप से यह मत कहना, बबुआ जी ! माफ़ करो, मैं बेवक़ूफ़ हूँ। बिना सोचे मेरे मुँह से निकल गया।"

"अच्छा नहीं कहूंगा।"—यह कह कर ब्लाडिमीर चला, तो लेकिन, घर पहुँच कर उसका आहत अपमान फिर जाग पड़ा। डेविड की हँसी की याद तो जैसे उसके दिल में छुरे का काम कर रही थी। वह सीधे अपने बाप के कमरे में गया, जो गद्देदार पलंग पर लेटा एक पुरानी मासिक पत्रिका के चित्र देख रहा था। बेटे को देखते ही उसने पूछा—

"क्या बात है?"

"मैं आज मिल में गया था। वहाँ डेविड नामक मजदूर कह रहा···"

सरगी मोखौव ने अपने बेटे की पूरी कहानी सुनी और अन्त में कहा—"अच्छा, उसे आज ही निकाल दिया जायगा!"

उसी रात मोखौव के परिवार में एक तमाशा और हुआ। उसकी बेटी लीज़ा चुपके-चुपके नातालिया के भाई मतिका को घर में बुलाकर उसके साथ मछली मारने चली।

वे दोन के किनारे पहुँचे। रात में बाढ़ का पानी आ गया था। जो नाव शाम को सूखे में बाँध दी गई थी, अब उसके चारो ओर पानी था और वह उसके बीच तरंगों के थपेड़े खा रही थी।

"मैं अपने जूते उतार लेती हूँ।" लीज़ा ने कहा।

"नहीं, मैं तुम्हें उठा कर रख देता हूँ।" मितका ने प्रस्ताव किया।

"नहीं, मैं जूते उतार ही लेती हूँ, यही अच्छा होगा।"

"अच्छा होगा तुम्हें उठा कर ले चलना।" इतना कह, बिना किसी आगे के तर्क वितर्क के मितका ने अपने बायें हाथ से उसके घुटनों के ऊपर पकड़ कर उसे उठा लिया और छपछप करता पानी में घुस गया। वह अनायास ही उसकी गर्दन से लिपट गई और मन ही मन हँसने लगी।

थोड़ी दूर पर धोबी का एक पत्थर का पाट रखा था। उसी पाट से मितका का पैर टकराया। वह सम्हालते-सम्हालते भी झुक गया। झुकते ही उसके होंठ लीज़ा के अधरों पर जा बैठे। लीज़ा चीख उठी और अपने अधरों को ज़ोर से दबा दिया, दो कदम पर मितका खड़ा हो गया। नीचे उसके पैर से टकरा कर पानी हर हर करने लगा और ऊपर उसके होंठ···।

नाव खोल कर उसने धक्का दिया और उछल कर चढ़ गया। खड़े-खड़े वह खेने लगा। नाव तरंगों को छाती से दबाती, धीरे-धीरे उस पार जा लगी। बालू पर नाव का मुँहड़े आप-आप चढ़ गया। बिना पूछे ही उसने उस लड़की को गोद में उठा लिया और निकट की एक निकुंज में ले गया। वह उसके चेहरे को काट रही थी, नखों से खसोट रही थी, धीरे धीरे चीख रही थी, और अपनी ताकत कम होती देख वह रो भी पड़ी—लेकिन, उसकी आँखों में आँसू नहीं थे।

भोर में एक लाल मछली लिये वह नाव से उतरी, उस समय उसकी ललाई कहाँ गायब हो चुकी थी?

"लीज़ा! सुनो।"

वह आश्चर्य और उत्तेजना में पीछे मुड़ी। "क्यों—क्या?" वह पूरा वाक्य बोल नहीं सकती थी।

"तुम्हारी पोशाक;........पीछे एक छेद हो गया है, छोटा-सा।"

वह चिनगारी सी बन उठी। गर्दन तक लाल हो गई। एक क्षण के बाद मितका ने कहा—"पिछले दरवाजे से जाना।"

"किसी तरह मुझे चौराहा होकर तो जाना ही है।"

"तो क्या पत्तियों से उसे हरा कर दूँ।" मितका ने सलाह दी और उसने आश्चर्य से देखा, उसकी आंखों में आंसू छल-छल कर रहे हैं!

## ४

एक रविवार को फियोदोन जिले के सदर गाँव में गया। वह चार जोड़े मांसल बतख भी लेते गया था, जिसे बेचकर उसने अपनी बीबी के लिए सूती छींट के कपड़े खरीदे। सौदा-सुलफा करके वह अपनी गाड़ी जोत रहा था कि एक अपरिचित आकर अभिनन्दन के बाद उससे पूछ बैठा—

"आप गाँव से आते हैं।"

"तारतारस्क से!"

अपरिचित ने अपनी जेब से चाँदी का सिगरेट केस निकाला और फियोदोन को एक सिगरेट बढ़ाते हुए फिर पूछा—

"क्या आपका गाँव बड़ा है?"

"काफ़ी बड़ा, लगभग तीन सौ परिवार रहते हैं।"

"वहाँ कोई लोहार है?"

"हाँ" कह कर फियोदोन ने अपने घोड़ों की बागडोर सम्हाली और उसकी काले हैट की ओर अविश्वास की नज़र से देखते हुए बोला—"आप किस लिए घर पूछताछ कर रहे हैं?"

"मैं आपही के गाँव में रहूँगा। मैंने जिले के अधिकारी से आज्ञा ले ली है। क्या आप मुझे अपनी गाड़ी पर आज्ञा दे सकेंगे? मेरे साथ मेरी बीबी और दो संदूक हैं।"

"क्यों नहीं।" कह कर फियोदोन ने अपरिचित को उसकी बीबी और सामान के साथ गाड़ी पर चढ़ा लिया। वह बड़ी शान्ति से उसके पीछे बैठा था। एक सिगरेट माँगते हुए उसने पूछा—

"आप कहाँ से आ रहे हैं।"

"रोस्तोव से।"

"वहीं पैदा हुए।"

"जी हाँ।"

फियोदोन घूम कर उसे अच्छी तरह देखता जा रहा था। अपरिचित की ऊँचाई साधारण थी, लेकिन वह दुबला था। उसकी धँसी आंखों से अक़्लमंदी टपकती थी। वह बातचीत करते समय प्रायः मुस्कुराता था। उसकी बीबी शाल ओढ़े ऊँघ रही थी।

"तुम मेरे गाँव में क्यों जा रहे हो?"

मैं वहाँ एक छोटा सा कारखाना खोलना चाहता हूँ। मैं बढ़ई का काम भी जानता हूँ। और, मैं सिंगर की सिलाई मशीन का एजेंट भी हूँ।"

"तुम्हारा नाम?"

"स्तोकमैन"

"तब तुम रूसी नहीं हो।"

"हाँ, मैं रूसी हूँ। लेकिन मेरे परदादा जर्मन थे।"

बात की बात में फियोदोन को मालूम हो गया कि स्तोकमैन पहले किसी कारखाने में काम करता था, फिर कहीं दूकान में, तब दक्षिणी पूरबी रेलवे में। धीरे धीरे बात का सिलसिला टूटा। फियोदोन ने घोड़े को झरने में पानी पिलाया, फिर घोड़े-गाड़ी को सड़क पर स्वयं चलने को छोड़, बागडोर को गाड़ी के बल्ले में बाँध वह झपकियाँ लेने की तैयारियों में ही था कि अपरिचित ने सवालों की झड़ी लगा दी।

"आप लोगों की तरफ़ ज़िन्दगी कैसे कट रही है।"

"बुरी नहीं, खाने-पीने की कोई कमी नहीं।"

"कोजाकों की जिन्दगी साधारणतः कैसी है? क्या वे सन्तुष्ट हैं?"

"कुछ हैं, कुछ नहीं। तुम सबको सन्तुष्ट कर नहीं सकते।"

"ठीक, ठीक"—सर हिलाते हुए, अपरिचित ने सवाल जारी रखा—"आपकी मजे में कट रही है न"

"खूब मजे में।"

"लेकिन हर साल की यह फौजी ट्रेनिङ्ग तो काफ़ी परेशानी में डाल देती होगी।"

"फौजी ट्रेनिङ्ग?—अरे, हम तो उसके आदी हैं।"

"लेकिन अफसर तो बुरे होते हैं।"

"हाँ, बिल्कुल हरामज़ादे!" फियोदोन उत्तेजित हो उठा, और भयभीत दृष्टि से औरत की तरफ़ देखते हुए बोला—"अफ़सर तो सब के सब बुरे हैं।.....मैंने ट्रेनिङ्ग के लिए अपना बैल बेच कर घोड़ा खरीदा और उस घोड़े को इन गधों ने रद्द कर दिया।"

"रद्द कर दिया?" स्तोकमैन ने आश्चर्य से कहा।

"बिल्कुल! वह कहते थे, उसके पैर ठीक नहीं हैं। मैंने कितना समझाया, किन्तु कौन सुनता है? कितनी शर्म की बात?"

बातें ज़ोरों से चलने लगीं। फियोदोन गाड़ी से उतर गया और गाँक

के बारे में ब्योरेवार बातें खुलकर करने लगा। गाँव के आतायन को उसने खेतों के बँटवारे में मनमानी करने के लिए गालियाँ सुनाईं। और पोलैंड की तारीफ़ की, जहाँ वह एक बार फौज में गया था। स्तोकमैन सिगरेट पीता बराबर मुस्कुरा रहा था। लेकिन उसके उजले मस्तक पर जो शिकनें बार-बार आती थीं, वे तुरन्त गुप्त विचारों को सूचित करती थीं।

शाम को वे गाँव में पहुँचे। फियोदोन की राय से स्तोकमैन ने लुकीश्का नामक विधवा से दो कोठरियाँ किराये पर लीं।

दूसरे दिन स्तोकमैन गाँव के आतमन से मिला, अपना पासपोर्ट दिखलाया। पासपोर्ट को उलट पुलट कर आतामन ने कहा—"तुम रह सकते हो।"

एक सप्ताह तक स्तोकमैन लुकीश्का के घर से नहीं निकला। वह कुछ खुटखुट करता अपना कारखाना और रसोईघर की तैयारी कर रहा था। औरतों का कुतूहल तो दो दिनों में ही शान्त हो गया, लेकिन बच्चे दिन भर झांक-झांक कर देखा करते।

## ५

खेती के दिन आये। ग्रीगर और उसकी बीबी मैदान में खेत जोतने चले। पैंतेलीमन की तबीयत अच्छी नहीं थी; जब वे जा रहे थे, लाठी लिये दरवाजे पर झुके-झुके वह उन्हें देख रहा था। इलिनिचना नातालिया के जैकेट को सुधारते धीरे के बोली—

"ज्यादा दूर मत जाना, तुरन्त लौट आना।"

अपनी पतली कमर को कपड़े के भारी गट्ठर से लचकाते दुनिया दोन के किनारे उन्हें धोने जा रही थी। जाते-जाते उसने नातालिया को पुकार कर कहा—

"नातालिया, मैदान में सोरेल खूब होता है, थोड़ा उखाड़े आना।"

तीन जोड़े बैल हल लिये आंगन से निकले। मछली मारते समय ग्रीगर को सर्दी लग गई थी। वह गले में रूमाल बाँधे खाँसता हुआ

सड़क पर आ रहा था ।। नातालिया एक झोले में खेती का सामान पीठ पर लटकाये जिसके पीछे चल रही थी ।

मैदान पर एक पारदर्शी निस्तब्धता फैली थी । पहाड़ी के नीचे तक की परती जमीन को लोग हल से जोते जा रहे थे । हलवाहों से तरह तरह की आवाज आ रही थी ।

भर दिन खेती में लगे, जब गाँव से पांच मील दूर रात में दोनों मैदान में लेटे थे, ग्रोगर ने अपने फलालेन; के कोट को सम्हालते हुए । नाता-लिया से कहा—

"तुम अजीब-सी मालूम होती हो । तुम चाँद की तरह हो, जो न गरमी देता है, न जाड़े से सिकुड़ा डालता है । नाताश्का, माफ करो, मैं तुम्हें प्यार नहीं कर पाता । नाराज़ मत होना । मैं इस बारे में ज़्यादा बहुत नहीं कहना चाहता लेकिन जो बात है वह छिपाई भी नहीं जा सकती । हम इस तरह से जिन्दगी नहीं गुज़ार सकते । मुझे तुम्हारे लिए अफसोस है; अभी शादी के इतने दिन हुए और तुम्हारे लिए मेरे दिल में कोई भावना नहीं पैदा हो सकी । मेरा दिल-हाय; यह सूना है, रात में इस मैदान की तरह ।"

नातालिया ने आस्मान के तारों-भरे चमचम करते नीले मैदान को देखा, जहाँ इधर उधर बादल के टुकड़े थे । अस्मान के उस नीलेपन सारस-जोड़े के शब्द सुनाई दे रहे थे, जैसे मन्दिर में चाँदी की घंटी बज रही हो । नीचे की घास से मौत की गन्ध आ रही थी । पहाड़ी पर जलने वाली कौन की ललाई धीमी पड़ती जा रही थी ।

भोर में ग्रीगर उठा । उसके कोट पर तीन इंच बर्फ जम गई थी । सारा मैदान ताजी कुँआरी बरफ से लिपटा सोया पड़ा था । जहाँ वह सोया हुआ था, उसकी जगह से एक खरहा गया था, जिसके पैर के निशान बर्फ पर स्पष्ट दिखाई पड़ते थे ।

## च

### १

जाड़ा धीरे-धीरे आ पहुँचा। बहुत दिनों के बाद बरफ पिघली और जानवर फिर मैदान में आने जाने लगे। एक सप्ताह तक दक्खिणी हवा बहती रही, पृथ्वी में गरमी आई और पौधे मैदान में सर उठाने लगे। सेंट माइकेल के दिन तक पाला पड़ता रहा, फिर बरफ का दौरदौरा हुआ। सड़कें सूनी हो गईं। जहाँ-तहाँ खरहे के पद-चिन्ह लोग देखते।

बरफ गिरने के बाद कोजाकों की एक सभा जलावन की लकड़ी काटने के लिए हुई। हर परिवार के लिए जंगल के भिन्न भिन्न भाग निश्चित कर दिये गये।

बृहस्पतिवार की भोर में, दो घंटे रात रहते ही इलिनिचना उठी और दारिया को पुकारा—"उठो, आग जला दो।"

दमकते चूल्हे के नजदीक जाकर गरम पत्थर से आग जला दी। "ज़रा, मेरे सिगरेट में भी।" पियोत्रा ने पुकारा।

"लोग नातालिया को नहीं उठाते! क्या मैं अकेली दो हो जाऊँ?" दारिया की आवाज़ में झल्लाहट थी।

"जाओ फिर तुम्हीं उसे उठा दो?" पियोत्रा ने उसे सलाह दी। लेकिन, यह सलाह फिजूल थी, क्योंकि नातालिया तब तक आप ही उठ चुकी थी। और जलावन लेने जा रही थी।

रसोईघर से आग, भोजन और आदमी के शरीर की गंध आ रही थी, दारिया चहक-सी रही थी। उसके गुलाबी जाकेट से उसकी छोटी छाती; स्पंदित हो रही थी। विवाहित जीवन से उसके यौवन में ज़रा

भी अन्तर नहीं आया था। पतली, चपल, चुस्त—वह बिल्कुल लड़की लगती।

सूर्योदय के पहले ही खाना तैयार हो गया। पैंतेलीमन शोरबे का सब रस पीता जा रहा था। ग्रीगर धीरे धीरे खा रहा था, उसके चेहरे पर उदासी थी। पियोत्रा खाता और दुनिया को चिढ़ाता जा रहा था; दुनिया के दांत दर्द कर रहे थे।

सड़कों पर स्लेज के दौड़ने की आवाज़ आ रही थी। बैल से खींचे जानेवाले स्लेज दोन की ओर जा रहे थे। ग्रीगर और पियोत्रा स्लेज में बैल जोतने चले। ग्रीगर के गले में उनकी बीबी को दिया हुआ कोमल रूमाल बंधा हुआ था। एक कौआ काँव-काँव कर सर से उड़ गया। पियोत्रा ने उसकी उड़ान देखी और कहा—

"दक्षिण ओर उड़ रहा है—गरमी की ओर।"

एक छोटे से गुलाबी बादल के पीछे तिरछा चाँद कुँआर हँसी हँस रहा था। धुआँ चिमनियों से निकल कर, मानो सुनहले चाँद को छूने के लिए, बस रहा था। दोन का पानी अभी पूरा जमा नहीं था। आधी धार के उस पार, काली चोटी के निकट, बरफ के छेद भयावने मुँह बाये निगलने को तैयार से दीखते थे।

बूढ़े बैलों को लेकर पैंतेलीमन ने अपना स्लेज सबसे आगे बढ़ाया। उसके पीछे उसके दोनों बेटे थे। उनकी बगल में अनीकुश्का अपने स्लेज पर अपनी मोटी, बीमार बीबी को लिये जा रहा था। पियोत्रा ने पूछा—

"क्या, पड़ोसी, तुम अपनी बीबी को अपने साथ नहीं ले जा रहे?"

अनीकुश्का मुस्करा कर दोनों भाइयों से बोला—

"हाँ, हाँ, लिये जा रहा हूँ! वह मुझे गरम रखेगी!"

"लेकिन उससे गरमी नहीं पा सकोगे? वह इतनी दुबली है!"

"ठीक तो, लेकिन क्या कहूँ? इतनी नई खिलाई लेकिन ज़रा भी चर्बी इसमें नहीं आई।"

तीनों साथ ही चले। जंगल में कुमारी श्वेतता का साम्राज्य छाया

हुआ था। अलिकुश्का ने स्लेज के अगले हिस्से पर बढ़ कर पेड़ पर अपनी चाबुक चला दी। बरफ की छड़ी उसकी बीबी पर लग गई!

"मुझसे खेलवाड़ मत करो—शैतान कहीं का।" बरफ को झाड़ते हुए उसने कहा।

"अरे, उसे बरफ पर ढकेल दो।" पियोत्रा ने सलाह दी।

सड़क की मोड़ पर स्तेपन से भेंट हुई। वह अपने दो बैलों को गाँव की तरफ हाँके जा रहा था। उसकी टोपी नीचे उसके जो घुँघराले बाल लटक रहे थे उन पर बरफ के टुकड़े सफेद अंगूर से मालूम होते थे।

"हैं, स्तेपन, क्या राह भूल गये?"

"राह भूले शैतान। मेरा स्लेज एक चट्टान से टकरा कर टूट गयी। इसीलिए फिर घर लौटना पड़ रहा है।"

ज्योंही स्तेपन की नज़र पियोभा पर पड़ी, उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया।

"स्लेज पीछे ही छोड़ दिया?" अनिकुश्का ने घूम कर पूछा।

स्तेपन ने हाथ हिलाया, चाबुक फटकारी और ग्रीगर की ओर छूते हुए आगे बढ़ गया। जब वे लोग कुछ आगे बढ़े, बीच रास्ते पर स्लेज के पास अक्सीनिया को खड़ा देखा। भेड़ की खाल का किनारा पकड़े वह इन्हीं की ओर देख रही थी।

"रास्ता छोड़ो, नहीं तो मैं तुम पर से स्लेज हाँक दूँगा"—अनिकुश्का ने कहा। अक्सीनिया हंस कर बगल में हो गई और उलटे हुए स्लेज पर बैठ गई।

पियोभा के नज़दीक आने पर वह खड़ी हो गई और जब ग्रीगर निकट आया, आगे बढ़कर कहा—"ग्रीगर, मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूँ।"

पियोभा को अपने बैल कुछ देर देखने के लिए कहकर ग्रीगर उसकी ओर बढ़ा। पियोत्रा मुस्कराया और स्लेज हांकता आगे बढ़ गया।

दोनों चुपचाप एक दूसरे को देखते थे। अक्सीनिया ने चारों ओर सर घुमा कर देखा। फिर ग्रीगर के चेहरे को छूने लगी। उसके गाल

लज्जा और आनन्द से उद्दीप्त थे और उसके होंठ सूख रहे थे। उसकी सांस उसास के रूप में निकल रहे थे।

सड़क के घुमाव पर अनिकुश्का और रियोबा दोनों एक ओर पेड़ की ओट में पड़ गये।

"ग्रिश्का, तुम जो चाहो, लेकिन मैं अब तुम्हारे बिना जिन्दा रह नहीं सकती।" उसने दृढ़ता से कहा और उत्तर को प्रतीक्षा में अपने होंठों को ज़ोरों से दबाया।

ग्रीगर ने जवाब नहीं दिया। जंगल पर निस्तब्धता का कब्ज़ा था। ग्रीगर के कानों में शून्यता का गुंजार हो रहा था। बरफ से लदी सड़क पर स्लेज के चलने से जैसे पालिश हो चुका था। आस्मान भूत था। जंगलऊँघता सा मालूम पड़ता था। एक काग ग्रीगर के सर पर बोल उठा—मानो, उसे इस नींद से जागा रहा हो। उसने सर उठाया और पंछी थी उड़ान देखी। अचानक उसने आप-आप कहा—

"मालूम होता है, इस बार अच्छी गरमी रहेगी, यह गरम दिशा की ओर उड़ा जा रहा है।" फिर वह ज़ोर से हंस पड़ा। "तो अच्छा..." उसने अपनी नशीली आँखें अक्सीनिया की ओर फेरीं और अकस्मात जैसे घसीट कर छाती से लगा लिया।

## २

जाड़े की शाम को गाँववालों की एक छोटी-सी मंडली लुकीश्का के झोपड़े में स्तोकमैन के पास एकत्र होती। निस्संदेह वहाँ क्रिस्तोनिया था, मिल से वैलेट आया था, तीन महीने से बेकार बना सदा हँसमुख डेविड था, इंजिन ड्राइवर इवान कोटलिया कोव और चमार फिल्का थे। मीशा कोशेवाई तो रोज जरूर ही आता—नौजवान कोज़ाक जो कभी फौजी ट्रेनिंग में नहीं गया था।

पहले सब ने ताश खेला। फिर स्तोकमैन एक कविता की पुस्तक लाय

बड़े चाव से सब ज़ोरों से पढ़ने लगे। कविता-पुस्तक के बाद एक पुरानी, बेजिल्द की किताब पढ़ने की चेष्टा मीशा करने लगा।

"इसमें इतना तेल लगा है कि इसकी शोरबा बनाया जा सकता है।"

क्रिस्तोनिया जोरों से हँसने लगा। डेविड की हँसी तरंगे ले रही थी। लेकिन, जब आनन्द का वेग धीमा पड़ा, स्तोकमैन ने कहा—

"मीशा, इसे, ज़रूर पढ़ जाओ। बड़ी दिलचस्प किताब है। यह कोज़ाकों के बारे में है।"

टेबल पर सर झुका कर एक-एक अक्षर का हिज्जे करते कोशेवाई ने किताब का नाम पढ़ा—"दोन कोज़ाकों का संक्षिप्त इतिहास।"

"पढ़ो"—कोटलियारोव, इंजिन ड्राइवर ने कहा।

तीन साल तक वह किताब पढ़ी जाती रही। पहले वह स्वच्छन्द जीवन पुगोचोव,, स्तेन्का और वासिली बुलोविन की वे चमत्कारिक करतूतें। फिर आज की ज़िन्दगी। अज्ञात लेखक ने कोज़ाकों की बुरी हालत पर जैसे कलेजा निकाल कर रख दिया था उसने सरकारी अमलों और वर्तमान पद्धति, जारशाही सरकार और कोज़ाकों की पतित अवस्था की तस्वीर सी खींच दी थी। कोज़ाक, जो कभी स्वतंत्र थे, अब जार के शरीर-रक्षक बनने में फख मानते हैं। सुनने वालों में काफ़ी उत्तेजना थी, वे आपस में झगड़ पड़ते। स्तोकमैन दरवाजे पर सिगरेट पीता मुस्कराता रहता।

"इसने ठीक लिखा है—बिलकुल सही बात है।" क्रिस्तोनिया चिल्ला उठता।

इंजिन ड्राइवर कोतलियारोव की हड्डियों में कोज़ाको का पुराना खून दौड़ रहा था। कोज़ाकों की शिकायत वह सुन नहीं सकता था। क्रोध से आँखें निकाले, जोरों से उसने कहा—

"तुम किसान के बेटे हो क्रिस्तोनिया; घड़े में एक बूँद की तरह तुममें कोज़ाको का खून है। तुम्हारी माँ ने तुम्हें वोरोनेज़ के एक किसान से पैदा किया था।"

"तुम बेवकूफ हो, नादान हो, ओ मेरे भाई।"

"चुप ; ज़बान पकड़ो, ओ किसान के बेटे !"

"और क्या किसान तुम्हारे ऐसा आदमी नहीं होते।"

"किसान ! छीः मिट्टी के बने, लकड़ी से पले ! वे भी आदमी होते हैं।"

"खैर, जो कह लो। लेकिन कुछ बातें ऐसे होती हैं, जिन्हें आदमी भूल नहीं सकता।" क्रिस्तोनिया कहता गया—"मैं उन दिनों ज़ार के महल में पहरे देता था। घोड़े पर चढ़े दो इस ओर से जाते, दो उस ओर से आते। चारो जब मिलते, पूछते—सब शान्ति है न ? कहीं बलवा तो नहीं शुरू हुआ। और फिर पहरे देने लगते। घोड़ों को रोकने और बातचीत करने का हमें हुक्म नहीं था और पहरेदारों का चुनाव चेहरा देखकर होता था। वे ऐसे जोड़े चुनते थे, जिनके चेहरे मिलते-जुलते हों। एक बार इसी के चलते मुझे अपनी दाढ़ी रंगानी पड़ी थी। समुचे रेजिमेंट में मेरी सूरत का कोई नहीं था। इसलिये मुझे दूकान पर जाकर दाढ़ी रंगा लेनी पड़ी। जब मैंने आईने में अपने को देखा, क्रोध से मैं जल उठा, हाँ, जल उठा।"

"हाँ, तो इससे तुम क्या मानी निकालना चाहते हो क्रिस्तोनिया ?" कोतलियारोव बीच में ही बोल उठा।"

"मैं लोगों के बारे में कह रहा था। मैं तुमसे कहना चाहता था कि इसी मौके पर एक बार मुझे महल के बाहर ड्यूटी देनी पड़ी। हम घोड़े पर गश्त लगा रहे थे कि कुछ विद्यार्थी दौड़ते हुए हमारे निकट आये। जब तक हम उन्हें रोकें, उन्होंने हमें घेर लिया और बोले—भाई कोज़ाको आप किसलिये यह कर रहे हैं। मैंने तमक कर कहा—मैं पहरे दे रहा हूँ, मेरे घोड़े की लगाम छोड़ो। मेरा हाथ मेरी तलवार पर जा रहा। कोज़ाक भाई, मुझ पर सन्देह मत करो। मैं खुद कामीनस्का ज़िले का हूँ, मैं यूनिवर्सिटी में पढ़ रहा हूँ।' उनमें से एक ने कहा हम अपने घोडों को बढ़ाने जा रहे थे कि उसने अपनी जेब से दस रुपया का एक नोट निकाला और मुझे देते हुए कहा—'मेरे स्वर्गीय पिता के नाम पर इससे शराब पी लेना।' और फिर उसने एक तस्वीर निकाल कर मुझे दी और कहा, यही मेरी

पिताजी हैं, इन्हें याददाश्त के लिए रख लेने की मेहरबानी करना !' हमने ले लिया, हम कैसे अस्वीकार करते। वे चले गये। उसी समय एक अफसर कुछ आदमियों को लिये दौड़ते हुए आये और चिल्लाया—"वे कौन थे?" मैंने बताया कि कुछ विद्यार्थी थे, जो हमसे बातें करना चाहते थे, लेकिन जब हुक्म के मुताबिक हमने उन्हें धमकाया, तो वे भाग गये। छावनी में पहुँच कर हमने उस रूबल-नोट से दो दिनों तक खूब शराब उड़ाई। पीछे पता लगा, यह तस्वीर जर्मनी के किसी विद्रोही की है। मैंने उसे अपने बिछावन के ऊपर लटका रखी थी, उसकी बड़ी बड़ी भूरी दाढ़ी थी, काफी भलामानस मालूम होता था, व्यापारी ऐसा लगता था। ग्रुप कमान्डर ने देखा और पूछा—"यह तस्वीर कहाँ से ले आये हैं?" मैंने सारा दास्तान बताया। वह गरज उठा—"तुम जानते हो, यह कौन है? यह उन छोकरों का आतामन है—कार्ल··उफ़, मैं उसका नाम भूल रहा हूं। क्या नाम था··"

"कार्ल मार्क्स" हँसते हुए स्तोकमैन ने कहा।

"हाँ. हाँ. कार्ल मार्क्स"—क्रिस्तोनिया आनन्द में चिल्ला पड़ा। "लेकिन उस दस रुपये की हमने खूब शराब पी। उस दाढ़ीवाले कार्ल के नाम पर खूब शराब पी—खूब पी।"

अपने सिगरेट को हिलाते हुए स्तोकमैन ने मुस्करा कर कहा—

"वह वैसा ही आदमी है, उसके नाम पर शराब पीना फ़ख्र की बात है।"

"क्यों? उसने कौन सी भलाई की है?" इंजिन ड्राइवर ने कहा।

"मैं कभी बताऊँगा, अभी तो देर हो रही है।" कह कर स्तोकमैन ने अधजली सिगरेट फेंक दी।

काफी परीक्षा और छटाँव के बाद दस कोजाकों की एक मंडली स्तोकमैन के कारखाने में इकट्ठी होने लगी। स्तोकमैन इस मंडली का हृदय और प्राण था वह उनके हृदयों में वर्तमान स्थिति से असन्तोष और भविष्य के लिये आशा पैदा करने लगा। बड़ी चौकसी से वह धीरे-धीरे आगे बढ़ता

पहले तो उसे अविश्वास की इस्पाती दीवार को पार करने में बड़ी कठिनाई हुई, लेकिन इससे वह अपने लक्ष्य से मुकुरा नहीं। सफलता की एक झलक उसे स्पष्ट दिखाई देने लगी।

## ३

आस-पास के पन्द्रह सौ कोज़ाक नौजवानों के साथ, चर्च के सामने ज़ार के प्रति राजभक्त बने रहने की क़सम खाकर ग्रीगर गाँव लौटा। पुरोहित ने किन शब्दों में कसम पढ़ाई, ग्रीगर ने ध्यान भी नहीं दिया। जिस समय वह चाँदी के सलीब को चूमने की विधि पूरी कर रहा था, उसके ध्यान में अक्सीनिया के होंठ थे!

घर लौटते शाम हो गई। खिड़की से घर की पीली रोशनी को उसने देखा। बूट पर पड़ी बर्फ को झाड़ू से झाड़कर वह रसोईघर में घुसा।

"आ गये? बर्फ से तो कँपकँपा गये होंगे?—"पियोत्रा ने उसे देखते ही कहा।

अपनी कुहनियों को घुटनों पर रखे, हाथों पर सर उठाये पैंतेलीमन बैठा हुआ था। दारिया रीं रीं की आवाज़ में चर्खे चला रही थी। नाटालिया टेबल की ओर रुख किये खड़ी थी उसने ग्रीगर के पहुँचने पर सर नहीं मोड़ा। रसोईघर पर एक नज़र जल्दी से डाल ग्रीगर पियोत्रा की ओर देखने लगा। भाई के चेहरे से भी उसने भाँपा, आज ज़रूर कोई नई बात हुई है।

"क़सम ले ली?"

"हाँ।"

ग्रीगर ने अपने कपड़े उतारे। वह कुछ समय तक अपने को बहला कर इस रहस्य को जानना चाहता था। इलीनिचना घर में घुसी—उनके चेहरे पर भी उत्तेजना थी।

"इसे कुछ खाने को दो।" उसकी माँ ने दारिया से कहा। दारिया चरखे का गीत बन्द कर खाना परोसने चली। रसोईघर की निस्तब्धता की

सिर्फ उसमें बँधी बकरी और उसके सुस्त बच्चे की भारी साँसों से भंग होती थी।

शोरबा चखते समय ग्रीगर ने नाटालिया की ओर देखा, लेकिन वह उसका चेहरा नहीं देख सका। वह उनकी ओर पीठ करके बैठ गई थी और मौज़ा बुनने के लिए तागा-सुई सम्हाल रही थी। पैंतेलीमन बहुत देर तक अपने को जप्त नहीं रख सका। झूठी खखार करते हुए उसने कहा—

"नाटालिया अपने बाप के घर जाने की बात चला रही थी।"

रोटी से पोंछकर ग्रीगर ने तश्तरी को साफ कर दिया, लेकिन बोला कुछ नहीं।

"इसका क्या सबब है?" उसके बाप ने पूछा। बूढ़े का निचला होंठ काँप रहा था, जो बताता था, अब वह भड़कने वाला है।

"मैं नहीं जानता।" उठकर ग्रीगर ने कहा।

"लेकिन मैं जानता हूँ।" बूढ़े की आवाज़ ऊँची हो रही थी।

"चिल्लाओ मत; मत चिल्लाओ।" इलिनिचना बीच में बोल उठी।

"ठीक तो, चिल्लाने की तो कोई बात नहीं।" पियोत्रा खिड़की के नजदीक से घर के बीच में आकर बोला। "सब प्रेम पर निर्भर करता है। अगर चाहे, तो साथ रहें; नहीं चाहें, हो चुका,......भगवान उन्हें भला करें।"

"मैं इस बेचारी के बारे में कुछ नहीं बोलूँगा। अगर यह चंचल, चटक मटक वाली या बदचलन होती, तो भी इससे कहने का मेरा कोई हक़ नहीं। लेकिन मैं तो सूअर......"पैंतलीमन की उँगली ग्रीगर की ओर उठी थी, जो गरमाने के लिए चूल्हे के नज़दीक जा बैठा था।

"मैंने किसका क्या बिगाड़ा है?" ग्रीगर ने पूछा।

"तुम नहीं जानते? तुम नहीं जानते शैतान!"

"नहीं; नहीं जानता।"

पैंतेलीमन उछल पड़ा। उसके उछलते ही बेंच उलट गया। वह सीधे ग्रीगर के पास आया। नाटालिया ने अपने हाथ से मोजा-सुई झटक दिया।

एक बिल्ली का बच्चा चूल्हे के नजदीक से कूद कर आया और उनके गोले से खेलने लगा।

"मैं तुमसे सिर्फ यह कहना चाहता हूँ"—बूढ़ा धीरे-धीरे बोलने लगा—"यदि तुम नाटालिया के साथ नहीं रहना चाहते, तो तुम्हारे लिए इस घर में जगह नहीं है। जाओ, निकल जाओ, जहाँ भी जाओ। मुझे तुमसे यही कहना है। जाओ—जहन्नुम में जाओ।" उसने बड़ी शान्ति से इसे दुहराया और बेंच को सीधा कर उस पर जा बैठा।

"बाबूजी मुझे जो कुछ कहना है, मैं बिना किसी गुस्से से कह रहा हूँ" ग्रीगर की आवाज में खोखलापन था—"मैंने अपनी इच्छा से शादी नहीं की। आपने यह शादी कराई। नाटालिया के लिए मेरे दिल में ज़रा भी प्रेम नहीं है। अगर वह बाप के घर लौटना चाहती है, तो उसे लौट जाने दीजिये।"

"तुम घर से निकलो—निकल जाओ।"

"मैं निकल रहा हूँ।"

"और जहन्नुम में जाओ!"

"मैं जा रहा हूं, जा रहा हूं। जल्दी मत कीजिये।" ग्रीगर ने हाथ फैला कर बिछावन पर से अपना ऊनी कोट उठाया। उनके नथुने हिल रहे थे, बाप की ही तरह वह गुस्से में जल रहा था। टर्क और कोज़ाक के खून मिलने से ऐसा होता है, दोनों बाप-बेटे इस समय उसके प्रत्यक्ष प्रमाण बने थे।

"कहाँ जा रहे हो?" इलिनिचना ने रूँधे गले से कहा और बेटे का हाथ पकड़ लिया। ग्रीगर ने धक्का देकर उसे गिरा दिया और अपनी ऊनी टोपी सर पर रख ली।

"जाने दो, इस हरामज़ादे को, जाने दो! जाओ, निकलो, भागो।" बूढ़े ने गरजते हुए दरवाज़ा खोल दिया।

ग्रीगर दौड़ता हुआ निकल चला। उसने घर में जो आखिरी आवाज़ सुनी, वह नाटालिया के रोने की आवाज़ थी।

## ४

भोर में ग्रीगर साहूकार मोखोव के पास पहुँचा। सरगी मोखोव दुकान से लौट कर अभी चाय पी रहा था कि ग्रीगर की ओर उसकी नज़र पड़ी।

"आप से कुछ कहना है?"

"कौन? प्रैंतेलीमन का बेटा—क्यों? क्या चाहते हो?"

"क्या आप मेहरबानी करके मुझे अपने कारखाने में मजदूरी करने देंगे।"

ज्योंही ग्रीगर यह कह रहा था हरी वर्दी पर ट्रूप कमांडर का बिल्ला लगाये एक नौजवान अफसर उस घर में घुसा। ग्रीगर ने उसे पहचाना. उसे एक बार मितका से घुड़दौड़ में होड़ लगाते वह देख चुका था। सारगी साहूकार ने उसे कुर्सी दी और ग्रीगर की तरफ मुंह करके बोला—

"क्या तुम्हारे बाप इतना गिर गये कि अपने बेटे को मजदूर बनाना चाहते हैं?"

"मैं अब उनके साथ नहीं रहता।"

"उन्हें छोड़ दिया?"

"हाँ।"

"तो जरूर मैं तुम्हें रख लूँगा। तुम्हारा परिवार काफी मेहनती है। लेकिन. दिक्कत यह है कि शायद इस समय कारखाने में कोई काम न हो।"

"क्या बात है?"—लिस्तनित्स्की ने दरयाफ्त किया।

"यह लड़का काम चाहता है?"

"क्या तुम घोड़े की देखभाल कर सकते हो? क्या घोड़ागाड़ी हाँक सकते हो?"—अपनी चाय को हिलाते हुए नौजवान अफसर ने पूछा।

"कर सकता हूँ। मेरे खुद ही छः घोड़े हैं।"

"मुझे एक सईस की जरूरत है—तुम क्या मुशाहरा लोगे?"

"मुझे ज्यादा नहीं चाहिये।"

"तो मेरी ज़मीदारी पर कल मेरे बाप से मिलो। तुम मेरा बँगला जानते हो? यहाँ से आठ मील पर है—यागोद्दनो में।

"हाँ जानता हूँ।"

ग्रीगर दरवाज़े तक गया। लेकिन, फिर मुड़ कर बोला—

"आपसे कुछ प्राइवेट में कहना है।"

लिस्तनिस्की ग्रीगर के साथ चला। बरामदे पर गुलाबी रोशनी थी। "बोलो, क्या बात है"—उसने पूछा।

"मैं अकेला नहीं हूँ। एक औरत भी है।" ग्रीगर के चेहरे पर लज्जा की लाली थी। "शायद आप उसके लिए भी कोई काम निकाल सकें।"

"तुम्हारी बीबी?" लिस्तनिस्की ने भौंहें चढ़ाते, मुस्कुराते हुए पूछा।

"दूसरे की बीबी!"

"अच्छा, यह बात है! ख़ैर, हम उसे नौकरों की रसोई बनाने का काम देदेंगे। लेकिन उसका पति कहाँ है?"

"यहीं, इसी गाँव में।"

"तो तुमने किसी की बीबी चोरी की है?"

"वह अपनी मर्ज़ी से आई है।"

"अच्छी प्रेम-कहानी! ख़ैर, कल जरूर आना। अब जा सकते हो।"

५

भोर-भोर ही अक्सीनिया ने खाना पका लिया। आग बुता कर तस्तरियाँ साफ कर लीं। और खिड़की की राह आँगन में देखने लगी। स्तेपन आँगन में खड़ा एक टूटे हुए घेरे के लिए खम्भे चुन रहा था।

अक्सीनिया के गालों पर दो गुलाब खिल रहे थे। उसकी आँखों में दो चिराग जल रहे थे। स्तेपन ने इस परिवर्तन को भाँप लिया, जलपान करते हुए उसने कहा—

"आज क्या हुआ है?"

"क्या हुआ है?" अक्सीनिया ने उसी के कथन को दुहरा दिया।

"तुम्हारा चेहरा ऐसा चमक रहा है, जैसे तुमने मक्खन मल दिया हो।"

"आग की गरमी से ऐसा लगता है।"—कहती हुई उसने खिड़की की ओर झांका। वह सोचने लगी, अब तक मीशा कोशेवाई की बहन क्यों नहीं आई।

लेकिन वह लड़की दोपहरिया तक नहीं आई। इन्तजार से व्याकुल हो वह रवाना हुई और पुकारा—"माशुत्का, क्या तुम मुझे बुला रही हो।"

"हाँ, हाँ, ज़रा आना तो।" वह सधी हुई लड़की बोली।

स्तेपन अपने बालों में कंघी कर रहा था। अक्सीनिया ने उनकी ओर घबराहट से देखा।

"क्या तुम बाहर नहीं जाते; जा रहे हो?" वह बोली।

उसने जल्द जवाब नहीं दिया, कंघी को पाजामें के पाकेट में रख लिया और हाथ में ताश और चुरुट का पाइप लेकर बोला—

"मैं थोड़ी देर के लिए अनीकुश्का के पास जा रहा हूं।"

"और लौटते कब हो? तुम रातों को ताश में बिता देते हो।"

अक्सीनिया घर से बाहर हुई। माशुत्का ने मुस्कुराहट और पपनी मार कर उसका स्वागत किया।

"मिश्का लौटा है।"—उसने बताया।

"सच?"

"हाँ जी! उसने कहा है, ज्यों ही अँधेरा हो, तुम मेरी झोपड़ी में आ जाना।"

उसका हाथ पकड़ कर अक्सीनिया उसे बाहरी दरवाज़े के निकट ले गई।

"धीरे-धीरे, मेरी प्यारी सखी। क्या उसने कुछ और भी करने को बताया है?"

"उसने कहा है! तुम अपनी सभी चीजें लिये दिये आना।" अक्सीनिया ने घूम कर रसोई घर के दरवाज़े की ओर देखा।

"या भगवान; मैं कैसे करूँगी·····इतनी जल्द·····अच्छा, ठहरो...

उससे कह दो, मैं जल्द आने की कोशिश करूँगी।···लेकिन, मैं उनसे मिलूँगी कहाँ ?"

"तुम मेरे झोपड़े में आ जाना।"

"अंहँक, ठीक नहीं।"

"ख़ैर, मैं कह दूँगी, वह बाहर ही तुम्हारी प्रतीक्षा करे।" जब अक्सीनिया घर में गई, स्तेपन अपना कोट उतार रहा था। "वह क्या कह रही थी," उसने सिगरेट की दो फूँकों के बीच में कहा।

"यही, अपने घाँघरों की काट और सिलाई की बात पूछ रही थी।"

सिगरेट से राख झाड़ते हुए उसने कहा—"मेरा इन्तजार न करना—" और चलता बना।

अपने दहेज के संदूक से वह चीजें निकालने लगी—जाकेट, घांघरे, रूमाल—और उन्हें एक शाल में बाँधने लगी। हाँफती, चौकन्नी आँखों से देखती। आखिरी बार वह रसोई घर में आई और वहाँ रोशनी बुता कर दरवाजे तक दौड़ गई। घर के दरवाजे पर उसने ज़ंजीर लगा दी। इसी समय किसी के पैर की आहट मिली। वह डर कर खड़ी हो गई। आहट मरते ही वह जैसे भागी। दोन के किनारे आई। बाल के लट खुलकर उसके गालों पर झूल रहे थे। गली की राह वह मीशा के झोपड़ी की ओर बढ़ी। उसकी ताक़त जैसे खोई जा रही हो, उसके पैर जैसे पत्थर के हुए जा रहे हों। झोपड़े के फाटक पर ही ग्रीगर खड़ा था। उसने उसकी पोटली ले ली और मैदान की ओर बढ़ा।

झोपड़े से आगे बढ़ते ही अक्सीनिया ने लपक कर उसका आस्तीन पकड़ लिया और कहा, "ज़रा ठहरो।"

"क्यों ? आज चाँद देर से उगेगा, हमें जल्दी करना चाहिये।"

"ठहरो, ग्रीश्का"—बड़ी पीड़ा में वह बोली।

"बात क्या है ?" मुड़कर उसने पूछा।

"अरे,···मेरे पेट में···मैंने ज्यादा बोझ ले लिया। सूखी जीभ से होंठ

चाट कर उसने पेट पकड़ लिया कुछ मिनट वह खड़ी रही, झुकी, पीड़ा में। फिर, अपने बाल को रूमाल से बाँध वह आगे बढ़ी।

"तुमने पूछा नहीं कि मैं तुम्हें कहाँ लिये जा रहा हूं। मैं तुम्हें पहाड़ी की चोटी पर ले जाकर धकेल भी सकता हूं।" अँधेरे में भी ग्रीगर मुस्कराया।

"सब का मतलब अब मेरे लिए एक ही है। मैं लौट नहीं सकती।" उसकी आवाज़ काँप रही थी।

---

# छ

## १

यूजेन लिस्तनिस्की 'आतमन लाइफगार्ड' रेजिमेंट में ट्रुप कमान्डर था। घुड़सवारी की बाजी में घोड़े पर से गिर जाने के कारण उसकी बाईं बाँह टूट गई थी। छुट्टी लेकर वह अपने बाप के पास आया था।

उसका बाप भी फौज में एक जनरल था। १६ वीं सदी के ८०-९० के बीच जब वह वारशा में था। क्रान्तिकारियों ने इस कोज़ाक जनरल को गोली से उड़ा देना चाहा। यह तो बच गया लेकिन इसकी बीबी और कोचवान मारा गया। उस समय यूजेन की उम्र सिर्फ दो साल थी। इस घटना के बाद जेनरल ने इस्तीफा दे दिया और यागोदनों में आकर रहने लगा।

ज्योंही लड़का सयाना हुआ, उसे सेना में भेज बूढ़ा लिस्तनिस्की खेती बारी में जुट पड़ा। खेती बारी के साथ वह घोड़े भी पालता। रूसी घोड़े और अँगरेजी घोड़ी के संयोग से बहुत अच्छे घोड़े उसने पैदा किये। कुत्तों को लेकर जाड़े में शिकार खेलना उसका व्यसन था। जब तक वह अपने को बड़े कमरे में एक-एक सप्ताह के लिए बंद कर लेता और लगातार शराब पीया करता। उसके पेट में गड़बड़ थी, इसलिए डाक्टरों ने किसी चीज को निगलने के लिए उसे मना किया था। वह खाद्य पदार्थों को चबाकर रस ले लेता और सिही चांदी की तश्तरी में उगल देता, जिसे उसका नौकर बेन्यामिन पकड़े रहता।

बेन्यामन एक कूढ़म्ग़ज़ लम्बा-तगड़ा किसान था, जिसके सर पर घने बालों का गुच्छा था, लिस्तनिस्की के सेवा में वह छः वर्षों से था। पहले तो बूढे जनरल द्वारा खाने को यों तश्तरी में उगला जाना उसे बरदास्त न

था लेकिन कुछ बाद में वह आदी होने लगा। कुछ महीनों के बाद जब उसका मालिक बढ़िया, गोश्त को यों चबा-चबा कर उगलता जाता, वह सोचने लगा—भोजन की यह कैसी बर्बादी है ! वह खा नहीं सकता इधर मैं भूखों मरता हूँ। खैर, जरा देखूँगा।" और उसने देखना शुरू किया—उगले हुए भोजन को ले जाकर वह स्वयं निगल जाता। इस भोजन ने उसे फायदा भी किया। थोड़े दिनों में वह काफी मोटा हो गया। उसका चिबुक दोहरा हो गया।

इस जमात के तीन और सदस्य थे—चेहरे पर चेचक के दाग़ वाली रसोई दारिन लुकेरिया, पुराना सईस शारका और चरवाहा तिखन। शुरू से ही लुकेरिया ने अक्सीनिया को रसोई नहीं बनाने दिया। वह हफ़्ते में तीन दिन घर का सहन धोती, मुर्गियों को चारा देती और मुर्गी घर को साफ रखती। ग्रीगर का ज्यादा समय ग्रिश्का के साथ अस्तबल में ही गुज़रता। बूढ़े के सर के सारे बाल सन हो चुके थे। तो भी वह बचपन के नाम पर ही 'शाश्को' कहा जाता। बढ़े लिस्तनिरकी की खिदमत में वह बीस वर्षों से था। मोटा, नाक चिपटी, वह हमेशा बच्चों-सा हँसता रहता। वह शराब का बड़ा शौकीन था। प्याले में शराब ढाल-कर आँगन में इस तरह घूमता कि वही इस घर का मालिक है। वह मालिक सा हो सब पर रोब गाँठता, बूढ़े सेनापति से भी बदजबानी कर देता जेनरल मुस्कुरा पड़ता, उसके हाथ में कुछ पैसे रख सोने का आदेश दे देता, वह जाकर सो जाता।

उसके ऐसा दूसरा सईस मिलना मुश्किल था। वह हमेशा अस्तबल में ही सोता। जाड़ा हो, या गर्मी। वह घोड़े को नरल भी दे लेता, ज़ीन की मरम्मत भी कर लेता घोड़े के लिए बसंत भर घास काट-काट कर सुखाया करता। तरह-तरह की जड़ी बूटियाँ वह एकत्र किये रहता, जिससे घोड़े की हर बीमारी छूमंतर हो जाती। तख्ते पर घास बिछा, उस पर घोड़े के पसीने से भींगा कोट डाल कर वह सोजाता। कोट और भेड़ की र ह. - ३ द उसके दो धन थे।

तिखन एक तन्दुरुस्त और बेवकूफ कोज़ाक था, जो लुकेरिया के साथ रहता। उसे हमेशा यह सन्देह बना रहता कि लुकेरिया और शाश्का में कोई गलत सम्बन्ध है। वह महीने में एक दिन बूढ़े से झगड़ता, मार डालने की धमकी देता। बूढ़ा शाश्का उसे चिढ़ाता, लुकेरिया को भगा ले जाने की धमकी देता। "बुड्ढे जरा धरम भी देखो।" तिखन कहता।" "यह लुकेरिया को समझाओ" बूढ़ा पपनी मारते, हँसते, कहता।

यागोदनो में ज़िन्दगी का प्रवाह इस तरह बहा जाता। यह जगह सड़क से काफी दूर, उपत्यका में बसी हुई थी। शरद से ही बगल के गाँवों से भी सभी सम्बन्ध कट जाते। जाड़े में भेड़ियों के झुण्ड रात में आते और अपनी चिग्घार से घोड़ों को डराते। तिखन अपने मालिक की दुनाली बन्दूक लेकर मैदान में जाता और गोलियों की आवाज़ से उन्हें डराकर भगाना चाहता। जब वह बन्दूक चलाता होता, लुकेरिया उसकी प्रतीक्षा में बैठी, कल्पना की नजरों से देखती, तिखन एक सुन्दर नौजवान हो चला है और जब वह फाटक बन्द कर लौटता, वह उसके बरफ से ठंडे होंठ पर चुम्बनों की वर्षा कर देती।

गर्मी के दिनों में यागोदनो भोर से शाम तक कोलाहलमय बना रहता। बूढ़ा जेनरल सौ एकड़ में तरह तरह के अन्न करता। कभी-कभी यूजेन घर लौटता, तो वह हमेशा बगीचे या खेतों में टहलता रहता या झील के किनारे जाकर पूरा प्रातःकाल गुज़ार देता। यूजेन मँझोले क़द का, चौड़ी छातीवाला नौजवान था। वह अपने बालों को कोज़ाकों की तरह दाहिनी तरफ कंघी करता। उसकी अफ़सरी वर्दी हमेशा चुस्त रहती।

## २

अपनी छुट्टी के आखिरी दिन यूजेन ने ज़्यादातर ग्रीगर के कमरे में ही गुजारे। अक्सीनिया उस छोटे से कमरे को बेदाग़, साफ़-सुथरा रखती और औरताना सजावटों से उसे खूबसूरत बनाये रहती। जब ग्रीगर घोड़े की देखभाल में लगा होता, तभी वह आता। पहले वह रसोईघर में जाता,

वहाँ लुकेरिया से दो चार चुहलें कर लेता, फिर अक्सीनिया के कमरे में आता। एक दिन वह एक तिपाई पर बैठ गया और बेशर्मी की निगाहों से अक्सीनिया को घूरने लगा। अक्सीनिया की बुनने वाली सुई उसकी अंगुलियों में काँप रही थी, वह बेचारी उसकी उपस्थिति से परीशान-परीशान हुई जाती थी।

"क्यों, तुम्हारे दिन किस तरह कट रहे हैं, अक्सीनिया"—सिगरेट के धुयें से सारे कमरे को अंधकारमय बनाते उसने पूछा।

"बहुत अच्छी तरह—आपके हम शुक्रगुज़ार हैं।" अक्सीनिया ने अपनी आँखें ऊपर की ओर, ग्रीगर की आँखों से, जो लालसा छलकी पड़ती थी, उसकी कल्पना से लाल हो उठी। उसने उसके सवालों के असम्बद्ध उत्तर दिये, उसकी आँखों को बचाती रही और कमरे से निकल जाने का बहाना ढूँढ़ती रही।

"मैं जाके बतखों को खिला दूँ"—उसने कहा।

"थोड़ी देर बैठो। बतख खायेंगे न?" वह मुस्कुराया और उसकी पिछली ज़िन्दगी के बारे में सवाल पर सवाल करता रहा। उसकी साफ आँखों में अश्लीलता झलक रही थी।

जब ग्रीगर पहुँचा, यूजेन ने उसे एक सिगरेट दी और जल्दी बाहर चलता बना।

"हज़रत किस लिए आये थे?" बिना नज़र उसकी ओर उठाये ग्रीगर ने अक्सीनिया से पूछा।

"मैं क्या जानूँ?" कह कर फिर यूजेन की नज़रों की याद कर हँसने की चेष्टा करते हुए उसने कहा—"वह आया और यहाँ इस तरह बैठ गया (तिपाई पर बैठकर बताते हुए) और बैठा रहा, बैठा रहा, जब तक कि मैं परीशान नहीं हो गई।"

"तो तुम उसकी आँखों में खुशनुमा जँचने लगी हो।" ग्रीगर ने गुस्से में अपनी आँखें चढ़ाते हुए कहा—"तुम उसे बाहर ही देखा करो, नहीं तो एक दिन मैं उसे ठोकरों से लुढ़काकर निकाल बाहर करूँगा।"

अक्सीनिया अपने होंठों पर मुस्कुराहट लाकर ग्रीगर को देखती रही—उसकी समझ में नहीं आया, ग्रीगर दिल्लगी में कह रहा है या गम्भीरता से।

## ३

नाटालिया अपने बाप के घर चली आई थी, किन्तु, उसे अब भी आशा थी, ग्रीगर एक दिन लौटेगा और उसका होकर रहेगा। लोगों ने उसे समझाना चाहा, दलीलें दीं, मिसालें दीं, लेकिन वह टस से मस नहीं हुई। वह रात अजीब बेकली में काटती—बिछावन पर छटपटाती, करवटें बदलती, आहें भरती। एक ऐसी लज्जा उसे कुचल रही थी, जिसकी वह पात्री नहीं थी, जिसकी उसने आशा नहीं की थी। इधर बहुत दिनों से एक और पीड़ा उसे परीशान किये रहती। जब से वह लौटी है, उसका भाई मित्का उसे घूर-घूरकर देखता रहता है। एक दिन तो वह कह उठा—

"अब भी ग्रिश्का के लिए छटपटा रही हो?"

"इससे तुम्हारा क्या?"

"मैं तुम्हारा दर्द कम करने में मदद करना चाहता हूँ।"

नाटालिया ने उसकी आँखों की ओर देखा और जो पाया, उससे वह काँप उठी। मित्का की बिल्ली सी हरी आँखें मशाल बन रही थीं। नाटालिया भागी और अपने दादा के कमरे में जाकर अपनी छाती की धड़कन गिनने लगी। दो दिनों के बाद फिर वह उससे मिला। वह बोला—

"नाटालिया—यों अपने को मत सता।"

"मैं बाबू जी से कह दूँगी"—कहती हुई उसने अपनी रक्षा के लिए अपना हाथ भी उठा लिया।

"तू बेवक़ूफ़ है—चिल्लाती क्यों है?"

"भागो, हटो। नहीं तो मैं बाबूजी से बोली। तुम मुझ पर बुरी नज़र डालते हो। यह ज़मीन क्यों नहीं फट जाती? मुझसे दूर रहो।"

"मैं दूर नहीं रह सकता. मैं रात में आऊँगा। भगवान की क़सम जरूर आऊँगा।"

काँपती हुई नाटालिया आँगन में भागी। वह रात में अपनी बहन को संग में लेकर सोई। रात भर वह चौकन्नी रही, उसे नींद नहीं आई।

ईस्टर के कुछ पहले मोखोव की दुकान के सामने ,नाटालिया की भेंट पैंतेलीमन से हुई। बूढ़े ने पुकारा—"ज़रा ठहरो।"

वह खड़ी हो गई। उसके हृदय की व्यथा ताज़ा हो गई, जब उसने अपने बूढ़े ससुर के मुँह में ग्रीगर के चेहरे का प्रतिबिंब देखा।

"क्यों नहीं कभी-कभी हम लोगों से मिलती ?" बूढ़े ने आँखें नीची किये कहा। उसे ऐसा लगता था मानो उस लड़की को दुख पहुँचाने में उसका हाथ है। "तुम्हारी सास तुम्हें देखने को लालायित है···शायद कभी तुम आओगी ?"

नाटालिया अजीब असमंजस में पड़ी थी। थोड़ी देर ठहर कर, आत्मसंयम लाकर, वह बोली—

"शुक्रगुज़ार हूँ ! लेकिन···इधर काम बढ़ गये हैं।"

"हमारा ग्रिश्का"—बूढ़े ने सर हिलाते हुए कहा—"उसने हम सबको धोखा दिया। उफ़, हम सब कैसे मज़े में एक साथ रहते थे।"

"हाँ," नाटालिया का स्वर ऊँचा हो रहा था—"लेकिन, शायद ऐसा बदा नहीं था।"

पैंतेलीमन ने देखा नाटालिया की आँखों से आँसू छलछला रहे हैं। उसके होंठ को होंठ दबाये हुए हैं—मानो वह अपने को रोने से रोक रही हो।

"भगवान तुम्हें खुश रखें बेटी। उसके लिये मत शोक करो—वह पक्का शैतान था। तुम्हारी उँगलु के नख का मोक़ाबला भी वह क्या कर पाता ? हो सकता है, वह लौटे। मैं सोचता हूँ। एक बार जाकर उससे मिलूँ. लेकिन मुश्किल मालूम होता है।"

अपना सर छाती में डुबाये नाटालिया धीरे-धीरे चली गई।

पँतेलीमन खड़ा इस पैर से उस पैर पर नाच रहा था। मालूम होता, वह भागने का उपक्रम कर रहा है। नाटालिया ने मोड़ पर जाकर पीछे देखा—बूढ़ा अपनी लाठी पर बोझ दिये धीरे-धीरे जा रहा था।

## ४

बसंत शुरू होने पर स्टोकमैन के कारखाने में अब बैठकें बहुत कम हो पातीं। किसान अपनी खेतीबारी में जुटे थे। सिर्फ इंजिनड्राइवर इवान और बैलेट मिल से आते। उनके साथ डेविड भी ज़रूर पहुँचता। एक दिन वे सब पहली शाम को ही वहाँ आ जुटे। स्टोकमैन एक सिकरी बना रहा था। सूर्य की डूबती हुई किरणों की एक झलक खिड़की से आ रही थी। इंजिनड्राइवर एक सँड़सी उठाकर उसे देखते हुए बोला—

"मेरी इंजिन का एक पुर्जा टूट गया है। मालिक से कह कर उसे मिलटोवो ले जाना पड़ेगा।"

"मिलटोवो में एक अच्छा कारखाना है—क्यों?" स्टोकमैन ने अपना काम जारी रखते हुए पूछा।

"लोहा ढालने का कारखाना। पिछले साल वहाँ कुछ दिनों मुझे रहना पड़ा था।" इवान ने जबाब दिया।

"बहुत मज़दूर होंगे।"

"पाँच सौ के क़रीब।"

"वे कैसे हैं?" स्टोकमैन के मुँह से जानबूझ कर यह सवाल निकला।

"बड़े मज़े में। वे तुम्हारे सर्वहारा नहीं हैं—वे काफ़ी खुशहाल दीख पड़े।"

"ऐसा क्यों?"—बैलेट ने पूछा।

"क्योंकि वे खूब मज़दूरी पाते हैं। हर को अपना घर है, बीवी है, सब आराम है आधे तो उनमें पक्के धर्मध्वजी बने बैठे हैं। उनका मालिक ही उनका धर्मोपदेशक है।"

इवान ने अपनी कहानी जारी रखी—

"मेरे साथ हमारा साहूकार सरगीमोखोप भी गया था। वह उस मालिक से जाकर बातें करने लगा। मैंने उन्हें बातचीत करते सुना। वे कह रहे थे—"जर्मनी से लड़ाई होने वाली है क्योंकि जर्मनी को रूस का अन्न चाहिये। एक यह कह रहा था—नहीं, जर्मनी और फ्रांस में लड़ाई होगी। क्यों, स्टोकमैन, तुम क्या सोचते हो ?"

"भविष्यवाणी करना मेरा पेशा नहीं।" स्टोकमैन ने कहा।

"एक बार जहाँ लड़ाई शुरू हुई, घमासान मचकर रहेगा। और वे उसमें हमलोगों को बाल पकड़ कर खींचे बिना न छोड़ेंगे।" वैलेट ने ऐलान-सा किया।

"ये बातें इस तरह होती हैं, साथियो !" स्टोकमैन ने इवान के हाथों से सँड़सी लेते हुए कहना शुरू किया। उसकी मुद्रा गम्भीर थी। वह सब बातों को साफ-साफ देखने की कोशिश कर रहा था। वैलेट बेंच पर मस्त बना बैठा था। डैविड का चेहरा इन बातों को सुनकर गोल हुआ जा रहा था। रह-रह कर उसके दांत निकल पड़ते थे।

चुने हुए साफ़ शब्दों में स्टोकमैन ने बताया कि किस तरह पूँजीवादी देश बाज़ार और उपनिवेश की तलाश में एक दूसरे से भिड़ पड़ते हैं और संसार में लड़ाइयाँ मच जाती हैं। जब उसने खत्म किया, इवान पूछ बैठा—

"हाँ, तो फिर उसमें हम क्यों फँसें ?"

"और करे अपराध कोउ और पाव फल-भोग !"—इसी को कहते हैं न ! स्टोकमैन के चेहरे पर हँसी थी।

"बच्चों की सी बात मत करो इवान"—वैलेट ने तीखे स्वर में कहा—"तुम यह कहावत जानते हो न—'मालिक तो सिर्फ ललका देता है, शिकार तो करता है कुत्ता।' लड़ाई छेड़ेंगे ये पूँजीपति और उसमें कटेंगे मरेंगे ग़रीब, मज़दूर।

## ५

एक दिन बूढ़ा लिस्तनिस्की भेड़िये की शिकार में ग्रीगर के साथ निकला। दोनों घोड़े पर थे, साथ में शिकारी कुत्तों का गिरोह था। एक झाले में एक भेड़िया दीख पड़ा। बूढ़े ने उस पर अपना घोड़ा छोड़ा ग्रीगर ने अनुसरण किया। जब भेड़िया पकड़ा जा चुका, ग्रीगर ने जब चारों ओर दृष्टि दौड़ाई उसने देखा, अरे, यह तो उसका अपना गाँव तारतास्कं है। "और, वह, उसके बूढ़े मालिक के पास हाथ में लोहे का छड़ लिये कौन खड़ा है ?—स्टेपन !"

"तुम किस गाँव के हो"—बूढ़े ने पूछा।

"तारतारस्क का"

"तुम्हारा नाम ?"

"स्टेपन आस्ताखोव !"

"देखो, वह सामने जो भेड़िया मरा पड़ा है," बूढ़े ने पैर से उस ओर इशारा करते हुए कहा—"उसे हमारे पास पहुँचा देना। हम तुम्हें इसकी मजदूरी देंगे।" अपने चेहरे से पसीना पोंछते बूढ़े ने अपने घोड़े को बढ़ा दिया।

ग्रीगर ने देखा, स्टेपन काँपते हुए उसकी ओर आ रहा है। अपने मज़बूत और भारी हाथों से उसने अपनी छाती दबा रखा है। वह घोड़े तक आया और उसकी रकाब पकड़ घोड़े की बगल में खड़ा हुआ।

"तुम तो अब भले दीखते हो ग्रीगर"—स्पेटन बोला।

"ईश्वर की कृपा !"

"तो तुम उस बारे में क्या सोच रहे हो ?"

"मुझे क्या सोचना है ?"

"तुम इसके की बीबी को उठा ले गये हो...और उससे मनमानी कर रहे हो !"

"जाने दो रकाब छोड़ो।"

"डरो मत, मैं तुम्हें पीटने नहीं आया।"

"मैं क्यों डरूँ ? चुप रहो।' ग्रीगर के चेहरे पर ख़ून दौड़ आया, उसकी आवाज़ ऊँची उठ रही थी।

"मैं तुमसे आज नहीं लड़ूँगा—मैं लड़ना नहीं चाहता......लेकिन मेरी बात याद रखो, ग्रिश्को, एक-न-एक दिन मैं तुम्हारा खून पीकर रहूँगा।"

"देखा जायगा !"

"नहीं, मेरी बात गांठ पार लो। तुमने मुझे बेइज़्ज़त किया है। तुमने सूअर की तरह मुझे बधिया बना छोड़ा है। तुम वहाँ देखो..." अपनी हथेली ऊपर की तरह फैलाते उसने कहा—"मैं खेत जोत रहा हूँ, भगवान जानें, किसलिए ? क्या मुझे इसकी ज़रूरत है ? मैं तो एक मुट्ठी अन्न में कहीं भी गुज़र कर ले सकता हूँ। इन्हीं बातों की चिन्ता मुझे गिराये जा रही है। तुमने मुझे भयानक लज्जा में रख दिया ग्रीगर !"

"मुझसे मत कहो—मैं तुम्हारी बात समझ नहीं सकता। पेट-भरा आदमी भूखे की बात नहीं समझता है।"

"यह ठीक है—तुमने ठीक कहा।" स्टेपन ने ग्रीगर की ओर देख कर सर हिलाया। अचानक उसके झुर्रीदार चेहरे पर बच्चों की सी मासूम हँसी खेल गई।" मुझे अफ़सोस है—बच्चे, मुझे अफसोस है, मैंने उसी दिन तुम्हें मार क्यों नहीं डाला।"

स्टेपन ने ग्रीगर को उस दिन की याद दिलाई जब दो साल पहले दोनों में घुस्सेबाज़ी की होड़ हुई थी। ग्रीगर अभी छोकड़ा था, स्टेपन ने चाहा होता, तो उसको जान हँसी-हँसी में ले ली होती।

"अफ़सोस मत करो, अब भी होड़ के मौके आ सकते हैं।"

स्टेपन अपने हाथ से ललाट को मलने लगा, जैसे कि वह कुछ याद करना चाहता हो। ग्रीगर ने उसके चेहरे को ध्यान से देखा। उसकी मूँछें सन-सी लटक रही थीं, दाढ़ी बुरी तरह बढ़ आई थी। चेहरे पर मैला-पन था, जिसे पसीने ने और भी बदसूरत बना रखा था। एक भारी थकावट

और रक्तहीन शून्यता उसके चेहरे पर क्रीड़ा कर रही थी। ग्रीगर ने अपना घोड़ा बढ़ाया, कुछ क़दम वह रेकाब पकड़े बढ़ा, फिर बिना किसी आदाब-बन्दगी के रुक गया।

"ज़रा रुको...हाँ, हाँ, वह...अक्सीनिया कैसी है?"

अपने बूट की धूल को चाबुक से उड़ाते ग्रीगर ने जवाब दिया -

"वह ख़ूब मजे में है।"

घोड़े को रोककर मुड़कर ग्रीगर ने देखा। स्टेपन दोनों पैरों को अलग-अलग किये खड़ा एक पतली डाली को चबा रहा था। उसकी दशा पर एक क्षण के लिये ग्रीगर को दया आई; किन्तु फिर ईर्षा का ज़ोर हुआ और ज़ीन पर घूमते हुए उसने कहा—

"वह तुम्हारी चिन्ता नहीं करती—तुम भी निश्चिन्त हो जाओ।"

"सच?"

ग्रीगर ने घोड़े को ज़ोर से चाबुक लगाया और नौ दो ग्यारह हो गया।

६

ईस्टर के शुक्रवार को औरतों की एक मंडली पलागिया के घर में जुटी। पलागिया का पति आने वाला था। उसने घर की दीवाल पर चूना पोतवाया था; घर सजा रखा था, बार-बार वह घर से निकल कर रास्ते को देखती थी। उसके चेहरे पर गर्भ के स्पष्ट चिन्ह थे। दिन भर रास्ता देखकर थक गई, तो शाम को हमजोलियों को दिल बहलाव के लिए बुलवाया था।

नाटालिया भी आई थी। वह अपने बूढ़े दादा के लिये ऊनी मोज़ा बुन रही थी। आज उसमें अस्वाभाविक उत्साह दीख पड़ता था। वह दिल्लगियों पर ज़ोरों से हँसती थी, मानो इस हँसी में अपने वियोग-दुख को डुबो देना चाहती हो। पलागिया ने उससे अपने गर्भ की दिलचस्प कहानी सुनाई। किस तरह उसका पति फौज से छुट्टी में आकर उसे यह बवाल-जान देकर फिर चलता बना। "कहाँ मेरे तीन वर्षों का वह आनन्दमय विवाहित

जीवन और कहां यह..." पलागिया अपने पेट में उँगली घुसेड़ती, हँसती हुई बोली और फिर तुरत फ्रोसिया की ओर मुड़ कर कहा—

"अरे, क्या सचमुच तुमने अपने पति को पीटा, फ्रोसिया ?"

"हाँ पीटा और .खूब पीटा। सर पर, पीठ पर, जहाँ भी हाथ पड़ सके, वहाँ-वहाँ।"

"अरे, यह क्या किया ?"

"और क्या करती ? आज तुम अपने पति को किसी औरत के साथ देखो, तब तुम्हें मालूम हो।" एक विदग्ध पड़ोसिन ने कहा !

"जरा इस बारे में ब्यौरे से बता"—फ्रोसीनिया

"इसमें कहने को क्या है ?"

"डरो मत, हम सखी हैं, हम किसी से कहेंगी क्या ?"

सूर्यमुखी के बीज को चबाकर फेंकते हुए, ज़रा सा मुस्कराकर फ्रोसिया ने कहा—

"अच्छा ! तो मैंने उसकी यह बहक बहुत दिनों तक देखा किया। एक दिन किसी ने खबर दी कि वह डोन-पार की एक औरत के साथ मिल की ओर जा रहा था। मैं खोज में निकली और उन दोनों को....."

"और तुम्हारे शौहर का कोई पता है, नाटालिया ?" बीच में ही रोक कर एक स्त्री ने पूछा।

"वह यागोदनो में है"—धीमे से नाटालिया ने कहा।

"क्या तुम उसी के साथ रहोगी ?"

"यह तो चाहे; लेकिन वह जो नहीं चाहता !" बात काट कर पालागिया ने कहा। नाटालिया ने महसूस किया, गरम .खून उसके चेहरे की ओर दौड़ा जा रहा है। अपना सर, बुनते हुये मोजे पर झुका कर पपनियों से उसने औरतों की तरफ़ देखा। अपनी शरम अब मैं छिपा नहीं सकती—यह समझ कर नाटालिया ने ऊन के गोले को घुटने से गिरा दिया और उसे लेने को अपनी उँगली ठण्डे सहन की ओर बढ़ाई।

"सुन री बेवकूफ, उस पर थूक फेंक, वह तुम्हारी गर्दन का हमेशा जुआ ही बना रहेगा।" एक अर्द्धवयस्का ने करुणा के स्वर में कहा।

नाटालिया की बनावटी खुशी और चहक पर जैसे पाला पड़ गया। औरतें तरह-तरह की बातें करती रहीं। नाटालिया सर झुकाये मोज़ा बुनती रही। जब वे चली गईं, नाटालिया भी अपने घर आई। आज तक उसे यकीन था ग्रीगर एक दिन आयेगा उसे अपनायेगा। आज की बातों ने उसे एक डग और आगे बढ़ने को प्रेरित किया। उसने चुपचाप एक खत उसके पास भेजने का तय किया। अपने बूढ़े दादा से कागज़ मांग कर बड़ी मुश्किल से अपनी भावनाओं को केन्द्रित कर शब्दरूप देने की चेष्टा करते हुए उसने लिखा—

ग्रीगर, प्यारे,

बताओ, बताओगे? मैं किस तरह ज़िन्दा रहूँ या मेरी ज़िन्दगी हमेशा के लिये खत्म हो चुकी? तुम घर से चल दिये, लेकिन एक शब्द मुझसे नहीं कहा। मैंने कोई कसूर नहीं किया; मैं आज तक इन्तज़ार में रही कि तुम लौटकर मेरी जञ्जीर काटोगे लेकिन तुम तो पत्थर बन गये।

मैं समझती रही, गुस्से में तुम चले गये हो, और जल्द ही लौटोगे। मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकती। मिट्टी में मिल जाना अच्छा, लेकिन दो के बीच अच्छा नहीं। मुझ पर मेहरबानी करो, एक खत तो भेजो। तब मैं अपने बारे में कुछ सोच सकूँगी, अभी तो मैं बीच राह पर खड़ी हूँ।

मुझसे नाराज़ मत हो, ग्रिश्का, भगवान के नाम पर मेरी तुमसे यह प्रार्थना है।

नाटालिया।

दूसरे दिन अपने घरेलू नौकर को शराब की लालच देकर उसने ग्रीगर के पास रवाना किया। दोपहरिया को वह लौटा। खत का जवाब चीनी लपेटने के एक नीले कागज की चिट पर था। पढ़ते ही उसका चेहरा भूरा पड़ गया। कागज़ के चार शब्द उसके हृदय में चार लाल शलाखें से घुस गये—

"अकेली रहो—ग्रीगर मेलेखोव"

दौड़ कर, जैसे उसको अपने बूते पर विश्वास न हो, नाटालिया अपने कमरे में घुस गई और बिछावन पर जा पड़ी। उसकी माँ रात के लिये चूल्हे जला रही थी। ईस्टर के रविवार के लिये कुछ चीजें भी तैयार कर लेनी थीं। "नाटालिया, ज़रा इधर आ", सटक कर बूढ़ी ने पुकारा। "माँ, ज़रा सर दर्द कर रहा है!" नाटालिया ने अपनी सूखी जीभ से यों ठण्डे होंठ चाटते हुए कहा।

७

शाम तक वह लेटी रही—सर को ऊनी शाल से ढाँपे, समूचे शरीर में कँपकँपी। जब उसके दादा और बाप गिरजाघर जाने लगे, वह उठी, रसोईघर में गई। महीन कंघी किये गये बालों पर पसीने की बूँदें मोती-सी चमक रही थीं। आँखों के कोयों पर एक बीमार मैली झिल्ली पड़ी हुई थी।

मीरन ने अपने पाजामा के बटन लगाते बेटी की ओर देखा और कहा—"अचानक बीमार पड़ गई बेटी। आओ, हम साथ ही गिरजा चलें।"

"आप जाइये, मैं पीछे से आती हूँ।"

मर्द चले गये। रसोईघर में लुकोनिचना और नाटालिया रह गईं। वह कभी अपने ट्रंक को खोलकर कपड़ों को देखती, कभी बिछावन पर आकर धम्म से गिर जाती। माँ बेटी की परेशानी को न समझ, यह जानकर कि शायद कपड़े के चुनाव में मुश्किल हो रही है, बोली—

"मेरा वह नीला घाघरा क्यों नहीं पहनती? अब तो वह तुम्हें आ जायगा और खूब फबेगा।"

"नहीं, मैं यह पहन रही हूँ।" कहकर उसने अपना हरा घाघरा निकाला। लेकिन इस घाघरे को लेते ही उसे याद आया, जिस दिन पहले पहल ग्रीगर दुलहिन देखने आया था, वह इसी घाँघरे में थी और चलते

समय इसी घाँघरे में उसने उसे चुपके से चूम लिया । रुदन की सिसिकारियाँ भरते वह काँप उठी और ट्रंक पर छाती के भर गिर गई ।

"यह क्या...नाटालिया ।" माँ दौड़कर आई और बेटी को छाती से लगा लिया । नाटालिया ने फूट-फूटकर रोने की अपनी इच्छा को जप्त किया, अपने को सँभाला और बनावटी हँसी हँसते हुए कहा—

"आज मेरी तबीयत अच्छी नहीं है, माँ ।"

"मैं देख रही हूँ बेटी..."

"क्या देख रही हो, माँ ।" वह अयाजित उत्तेजना में चीख पड़ी, हरा घांघरा उसकी मुट्ठियों में बँधा था ।

"तुम्हारी तबियत अच्छी नहीं—तुम्हें एक दुलहा चाहिये ।"

"बस कर, एक दुलहा देख लिया न ?"

वह झट अपने कमरे में गई । पहन कर रसोईघर में लौटी । वह बिलकुल लड़की सी मालूम हो रही थी—लम्बी, पतली. और मक्खन-से ताज़े गालों पर लाली !—शर्म की या अफसोस की ?

"तुम जाओ, अभी मैं तैयार नहीं"—माँ ने कहा ।

अपने आस्तीन में रुमाल दिये नाटालिया बाहर हुई । डोन्में बहती हुई बरफ की गड़गड़ाहट की आवाज हवा उसके कानों में भर रही थी । उसकी नाक में कुहासे की सीली गंध घुस रही थी । अपने बायें हाथ से घांघरे को पकड़े, मोती से लदी घासों में रास्ता निकालते, वह गिरजा पहुँची । त्योहार की हँसी खुशी में उसने अपने दुख को भुलाने की चेष्टा की, लेकिन रह रहकर चीनी बेचने वाले उस नीले कागज की चिट पर लिखे चार शब्दों की याद उसे बेचैन कर देती, जिस चिट को वह इस समय भी छाती में छुपाये हुए थी ! चारों ओर आनन्द में इतराती औरतों की भीड़ उसकी पीड़ा को भी हरी-भरी कर देती । और जब वे नाटालिया की ओर सहानुभूति की निगाह से देखतीं, तब तो वह जैसे कट जाती ।

गिरजाघर के घेरे के अन्दर वह घुस रही थी, तो उसने बहुत बच्चों को फुसफुसाते देखा—

"वह कौन है ? जानते हो ?—नाटालिया ! वह बाँझ है, इसलिए पति ने छोड़ दिया है !—नहीं, नहीं, कहते हैं, वह अपने ससुर से फँसी थी !—हाँ, हाँ, तभी तो ग्रीगर घर से भागा....."

बेहोश-सी गिरती-पड़ती वह गिरजा में घुसी। वहाँ लड़कियों की खिलखिलाहट थी। वह नशे में चूर-सी घर की ओर भागी। अपने फाटक पर आकर ही वह रुकी और अपना होंठ काटती वह घर में घुसी। होंठ से खून निकल पड़ा। अपनी रही सही ताकत समेट, दृढ़ निश्चय से वह आगे बढ़ी। कोने में एक हँसिया पड़ी थी। उसने उसकी मूँठ निकाल दी। फिर अपनी गर्दन पीछे की ओर ले जाकर, आनन्दमय निश्चय से, पूरी ताकत लगाकर उसने उस हँसिये के सिरे को अपनी गर्दन में घुसा दिया। एक जलन, दर्द और पीड़ा से कम्पित हो वह गिर पड़ी। दुख के साथ वह महसूस करती हुई कि वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हुई, वह हाथ-पैर के सहारे चौपाये सी खड़ी हुई, फिर घुटने पर बैठ गई। उसकी छाती पर खून की धारा बही जा रही थी। जल्द से उसने अपने जाकेट के बटन तोड़ डाले और एक हाथ से अपने कठोर स्तनों को एक ओर करती दूसरे हाथ से हँसिये के दूसरे सिरे को सहन पर ठीक किया। फिर अपने घुटनों के बल वह मिट्टी की दीवाल के निकट खिसक कर गई, हँसिये के भोथरे सिरे को दीवाल से लगा दिया और अपने हाथों को सर के पीछे से ले जाकर अपनी छाती जोरों से दबाने लगी। वह छाती को दबाये जा रही थी और साफ-साफ सुन रही थी उस आवाज़ को जो मांस के काटे जाने के कारण हँसिये से बन्दरकोषो की सी निकल रही थी। छाती से लेकर कण्ठ तक एक असह्य पीड़ा दौड़ रही थी और कानों में सुई चुभोने की अनुभूति हो रही थी.....

रसोईघर का मुँह खुला। लुकीनिचना ने उसमें प्रवेश किया। गिरजाघर की घंटी अब तक बज रही थी। डोन में बरफ के बहने से अजीब भड़भड़ाहट हो रही थी। प्रसन्न, प्रवाहित, उन्मुक्त डोन अपनी ज़ञ्जीरों को समुद्र में डुबोने जा रही थी और इधर इस घर में.....!

# ज

## १

आखिर अक्सीनिया को अपने गर्भ की बात ग्रीगर से कहनी पड़ी। अब यह छठा महीना जा रहा था और उसे छिपाया नहीं जा सकता था। वह अब तक छिपाये रही—पहले तो इसलिए कि कहीं इसके चलते ग्रीगर का प्रेम उस पर कम न हो जाय और अब इस डर से कि कहीं वह ऐसा न समझे कि गर्भ का बच्चा उसका नहीं था।

एक शाम को बड़ी उत्तेजना में यह बात उसने ग्रीगर से कही। कहते समय वह ग्रीगर के चेहरे को देखते जाती थी कि उसमें क्या-क्या परिवर्तन हो रहे हैं। लेकिन उसने चेहरा खिड़की की ओर कर लिया और खाँसने लगा।

"तुमने मुझसे पहले क्यों नहीं कहा ?" उसने माँग की।

"मैं डर रही थी, ग्रीगर। मैं सोचती थी कि तुम कहीं मुझे छोड़ न दो...?"

बिछावन पर अगुलियों को पटकते उसने पूछा—

"क्या जल्द होने वाला है ?"

"अगस्त के शुरू में, मेरा ख्याल है।"

"क्या यह स्टेपन का है ?"

"नहीं, तुम्हारा।"

"तुम्हारे कहने के मुताबिक।"

"तुम खुद गिन कर देखो.....उस दिन जब हम लोग कटनी में गये थे।"

"झूठ मत बोलो अक्सीनिया। अगर स्टेपन का भी हो, तो अब तुम जाओगी कहाँ ?"

क्रोध के आँसू बहाती अक्सीनिया बेंच पर बैठ गई और जलती हुई फुसफुसाहट में कहने लगी—

"मैं इतने साल उसके साथ रही और कुछ न हुआ। तुम्हीं सोचो।" मैं कोई बीमार औरत नहीं हूं......। यह तुम से मुझे मिला होगा...... और तुम...!

ग्रीगर ने इस बारे में और कोई बात नहीं की। अब अक्सीनिया के प्रति उत्सुकता से भरे अलगाव और उपेक्षा भरी करुणा के भाव उसके मन में थे। अक्सीनिया ने भी अपने को परिस्थिति के अनुसार ढाला। वह उससे कोई कृपा नहीं चाहती। गर्भ ने उसकी अच्छी सूरत में काफी परिवर्तन कर दिया था, लेकिन उसके चेहरे पर एक नई रौनक और उसकी आँखों में एक नई चमक दीख पड़ती। इस हालत में भी रसोई घर के सब काम वह किये जाती।

## २

भूजने के प्रबन्ध से बसन्त की फौजी ट्रेनिंग से ग्रीगर को छुटकारा मिल चुका था। वह या तो खेतों पर काम करता या बूढ़े लिस्तनिस्की के साथ शिकार में जाता। आराम और चैन की जिन्दगी उसे खराब करने लगी वह आलसी और मोटा हो गया और अपनी उम्र से ज्यादा बूढ़ा दीख पड़ता। उसे एक चिंता थी, अपनी फौजी सर्विस की। उसके पास न तो घोड़ा था और न असबाब थे और यह उम्मीद भी नहीं थी कि उसके बाप देंगे। अपने और अक्सीनिया के मुसाहरे के पैसे वह सूम की तरह इकट्ठा कर रहा था—उसमें से तम्बाकू भी नहीं खरीदता। बूढ़े जेनरल ने भी मदद करने का वादा किया था। उसका बाप कोई मदद नहीं करने जा रहा है, इसका पता भी चल गया। जून के आखिर में पियोत्रा उससे मिलने आया और

बताया कि बूढ़ा बाप बहुत ही नाराज़ है और कहता है, "मैं उसे घोड़ा नहीं दूँगा, वह जाय जिससे भी माँगे।"

"कह दो, वह मेरी चिन्ता न करें, मैं अपने घोड़े पर सर्विस में जाऊँगा।" "अपने घोड़े पर"—इस शब्द पर उसने काफी ज़ोर दिया।

"तुम कैसे हासिल करोगे?" पियोत्रा ने पूछा।

"मैं भीख माँगूगा, मैं नाचूँगा और इस पर नहीं हासिल कर सका, तो चोरी करूँगा।" ग्रीगर के शब्दों में निश्चय और गम्भीरता थी।

पियोत्रा बठा अपनी मूँछ का सिरा दांतों से कुतर रहा था। भाई के बारे में पूरी पूछताछ कर चुकने के समय उसने कहा—

"तुम्हें अब घर लौट जाना चाहिए। ईंट की दीवाल में सर टकराने का मानी?"

"मैं नहीं लौटता!" ग्रीगर ने उत्तर दिया। पियोत्रा आगे बढ़ा। वह अपने घोड़े पर चढ़ने का उपक्रम कर रहा था, तो ग्रीगर ने पूछा—"घर का क्या हाल है?"

"घर?" पियोत्रा हँस पड़ा। कौन घर? जितने चूहे के लिए बिल होते हैं, उतने तो तुम्हारे घर हैं। खैर, वहाँ सब मजे में हैं। माँ तुम्हारे लिए व्याकुल रहती हैं। फसल इस साल अच्छी आई है।"

ग्रीगर ने उसांसें भरीं—"गांव के लिए मैं भी कुछ कम व्याकुल नहीं रहता, पियोत्रा।" उसने कहा—"हाय' डॉन के लिए मैं छटपट करता रहता हूं। यहाँ बहता पानी तो तुम देख नहीं सकते। अजीब रूखी-सूखी जगह है।"

अपना शरीर घोड़े की पीठ पर उछालते हुए पियोत्रा ने कहा—

"तो आओ न एक दिन।"

"आऊँगा!"

सलाम बन्दगी के साथ पियोत्रा आंगन के आगे बढ़ा था कि कुछ चीज की याद से वह रुक गया और ग्रीगर को पास बुलाकर बोला—

"नाटालिया......मैं भूल गया था......एक दुर्भाग्य......"

मैदान में बहती हुई तेज हवा में अन्तिम वाक्य उड़ गया। पियोत्रा और उसका घोड़ा धूल में छिप गया और ग्रीगर अपने कंधे हिलाता अस्तबल की ओर चला गया।

३

यागोदनो का चौरस सपाट मैदान—उसमें लाल आंखों वाले काले बतख के झुन्ड कलरव कर रहे थे। मुर्गियों ने अपनी उछलकूद और कों-कां से उसे और गुलजार कर रखा था। अस्तबल पर बैठे मयूर अपनी पूछों के रंग और कंठ के स्वर से उसमें जान डाल रहे थे। बूढ़े जेनरल को तरह-तरह की चिड़ियां पालने का शौक था। एक सारस भी उसने पोसुआ बनाकर रखा था। नवम्बर में जब सारस की पंक्तियाँ आकाश में उड़ती, बोलती दक्षिण की ओर जातीं यह अपने बेकाम डैने को फटफटाता, गर्दन उठाये, उछलता-कूदता शोर करने लगता। बूढ़ा जेनरल खिड़कियों से यह क्रीड़ा देखता और अट्टहास कर उठता।

ग्रीगर के आने के बाद यागोदनो में दो ही घटनायें हुईं—एक अक्सीनिया को बच्ची पैदा हुई और दूसरी एक हंसिनी को लोमड़ी उठाकर ले गई।

दिसम्बर पहुँचते ही ग्रीगर की बुलाहट जिले की फौजी कचहरी में हुई और उसे घोड़ा खरीदने को एक सौ रुपया दे दिया गया। उस रुपये में अपनी कमाई के पैसे मिलाया। साश्का की सहायता से उसने १४० रूबल में एक घोड़ा खरीदा। घोड़ा अच्छा था, लेकिन उसमें एक छोटा-सा छिपा ऐब था। साश्का ने इत्मीनान दिलाया, यह ऐब फौज वाले नहीं जान सकेंगे, काफी सस्ता माल है, ले लो।

बड़े दिन के त्यौहार के एक सप्ताह पहले एक दिन अकस्मात पैंतेलीमन यागोदनो पहुँचा। अपने घोड़े और स्लेज को फाटक के बाहर ही

छोड़कर दाढ़ी पर की बर्फ को झाड़ते वह भीतर घुसा। खिड़की से ही बाप को आते देख ग्रीगर चिल्ला उठा—"बाबूजी, मैं यहाँ......"

किसी कारण से अक्सीनिया दौड़ी और पालने को ढँक दिया।

तिकोनी टोपी पहने, सर्द हवा के झोंके लिये बूढ़ा घर में घुसा। ग्रीगर ने प्रणाम किया। बूढ़े ने ठंडा हाथ बढ़ा दिया। बेंच पर बैठते हुए, भेंड़ के चमड़े को सँभालते, अक्सीनिया की ओर से आँख बचाते वह बोला—

"सर्विस की तैयारी कर रहे हो!"

"जी हाँ!"

पैंतेलीमन बेटे की ओर घूर रहा था। ग्रीगर ने उससे चीज़ों को उतार कर बैठने की विनती की, जिसमें चुल्हे जलाकर उसे गर्म करने का आयोजन हो। बूढ़े ने अपने कोट पर पड़े कीचड़ के धब्बे को खुरेचते, धन्यवाद देते, कहा—"मैं तुम्हारे असबाब लेता आता हूँ—दो कोट हैं, एक ज़ीन है और कुछ पाजामे। सब वहाँ स्लेज पर रखे हैं।"

ग्रीगर स्लेज पर से दो बोरों में रखे ये सामान उतार लाया। जब वह पहुँचा। बूढ़ा बेंच पर से खड़ा हो गया और बेटे से पूछा—"तुम कब जा रहे हो?"

"बड़े दिन के दूसरे दिन। और क्या आप चलने की तैयारी कर रहे हैं।"

"हाँ, मुझे सबेरे घर पहुँचना है।"

ग्रीगर से बिदा लेकर वह चला। फिर अक्सीनिदा को अपनी नज़रों से बचाते हुए, वह दरवाज़े पर गया। अचानक उसने नज़र पालने की ओर घुमाई और बोला—

"तुम्हारी माँ ने तुम्हें बधाई भेजी है। वह बीमार है, पैर में दर्द से परीशान है।" फिर कुछ सोच कर बोला—"मैं भी मैनकोवो की छावनी तुम्हारे साथ चलूँगा। मैं आऊँ, तो तैयार रहना।"

ऊनी दस्ताने में अपने हाथ घुसेड़ते वह चलता बना। अक्सीनिया अपमान से पीली पड़ी जा रही थी। वह कुछ नहीं बोली। ग्रीगर अपने बाप के पीछे चला, अक्सीनिया से नज़र बचाते, बग़ल की ओर देखते।

४

जब देर से दोनों सोने गये, अक्सीनिया ने अपने को ग्रीगर से चिपका लिया और अपने आंसुओं से उसकी कमीज भींगो डाली।

"मैं तुम्हारे बिना कैसे जीऊँगी। प्रतीक्षा में ही मर जाऊँगी। लम्बी रातें......बच्चा जग जायगा। ज़रा सोचो, ग्रीश्का। चार साल!"

"पहले तो लोगों को २५ वर्ष की सर्विस करनी पड़ती थी।"

"पहले से मेरा क्या लेना-देना! इस सर्विस पर वज्र गिरे!"

"मैं बीच-बीच में छुट्टी में आऊँगा।"

"छुट्टी में!" अक्सीनिया को हिचकियाँ आने लगीं। वह अपनी नाक रूमाल से पोंछने लगी। "तब तक न जाने दोन में कितना पानी बह जायगा।"

"यों मत चिलाओ! तुम तो जाड़े के मेघ की तरह हो—घनवरत रिमझिम, रिमझिम!"

"मेरी हड्डी में जो तुम समाये हो"—अक्सीनिया ने जवाब दिया।

भोर होने में थोड़ी ही देर थी कि ग्रीगर सो गया। अक्सीनिया उठी, बच्चे को पिलाया। फिर लेट गई। कुहनी पर टेक दिये निर्निमेष दृष्टि से वह ग्रीगर को देखती रही। उस रात की याद आई, जब उसने उसे कुबन भाग चलने को कहा था। आज ही की तरह उस रात भी चाँदनी से समूचा आँगन जगमग कर रहा था। उस दिन भी दोनों यों ही सोये थे। ग्रीगर वही है और लेकिन बीच में अतीत का एक व्यवधान भी तो पड़ा हुआ है।

भोर हुई, खा पीकर ग्रीगर तैयार हुआ। दरवाज़े पर बूढ़ा पैंतेलीमन

घोड़ों को कसे खड़ा था। अक्सीनिया के भावनामय चुम्बनों की वर्षा से अपने को जबर्दस्ती छुड़ाकर ग्रीगर साश्का आदि नौकरों से मिल आया।

बच्चे को गरम कपड़े में लपेटे अक्सीनिया ग्रीगर से अन्तिम विदा लेने चली। ग्रीगर बेटी के छोटे गीले कपाल पर धीरे से चुम्बन देकर घोड़े की ओर बढ़ा। पैंतेलीमन ने कहा—आओ, स्लेज पर बैठो!" "नहीं मैं अपने घोड़े पर आता हूं, आप चलिये,"—कह कर वह घोड़े पर सवार हुआ। अक्सीनिया बार बार कह रही थी—

"ग्रीश्का, ठहरो...मुझे कुछ कहना है।" किन्तु, क्या कहना है, उसे खुद याद नहीं था। ग्रीगर ने कहा—"मस्त रहो, बच्चे को देखना, अब मैं चला। बाबूजी दूर निकल गये होंगे!"

"ठहरो, प्यारे!" कहकर अक्सीनिया बढ़ी. बायें हाथ से रकाब उसने पकड़ लिया, दाहिने हाथ से बच्चे को छाती से चिपकाये थी। उसके और हाथ नहीं था, जिससे वह अपनी अपलक आँखों से झरझर करती आँसू की बूंदों को पोंछ सके।

बेन्यामिन ने आकर कहा—मालिक तुम्हें बुला रहे हैं।

ग्रीगर इस पर भिन्ना उठा, अपना चाबुक फटकारते आँगन से हुआ। अक्सीनिया उसके पीछे दौड़ी, बरफ से रह-रहकर टकरा जाती।

बूढ़े मालिक ने उसके बाप-दादों की राजभक्ति और बहादुरी की याद दिलाई, उससे वैसी ही आशा प्रगट की। उसका आशीर्वाद ले वह अपने बाप को पहाड़ी के निकट जा पकड़ा। तब उसने पीछे नज़र की। अक्सीनिया फाटक पर खड़ी थी, बच्ची उसकी छाती से चिपकी थी, उसकी शाल की छोर हवा में लहरा रही थी।

बाप के स्लेज की बगल में अपने घोड़े पर वह चल जा रहा था। थोड़ी देर के बाद बूढ़े ने निस्तब्धता भंग की—

"तो तुम अपनी बीवी के साथ नहीं रहना चाहते?"

"फिर वही पुरानी बात—मैंने पहले कह दिया..."

"उस पर पुनर्विचार की ज़रूरत नहीं ?"

"नहीं !"

"तुमने यह सुना—उसने 'आत्म-हत्या की चेष्टा की थी ?"

"हाँ, मैंने सुना। गाँव के एक आदमी से अचानक एक दिन भेंट हो गई थी, उसने सारा दास्तान सुनाया।"

"और, भगवान के सामने उसने यह चेष्टा की !"

"इन बातों से अब क्या बाबूजी...जो सामान गाड़ी से गिरा, वह गया।"

"शैतान की बातें मुझ से मत करो, मैं जो कुछ कर रहा हूं, तुम्हारी भलाई की नज़र से कर रहा हूं।" पैंतेलीमन गुस्से में बोला।

"आपने तो देखा ही, अब तो मुझे एक बच्चा हासिल हो चुका। अब इस पर क्या सोचा जा सकता है, भला। अब आप मेरे गले में दूसरी नहीं बाँध सकते...।"

"लेकिन देखो, कहीं दूसरे के बच्चे को न पाल रहे होओ !"

यह सुनते ही ग्रीगर पीला पड़ गया, उसके बाप ने जैसे घाव को छू दिया हो। जब से पुत्री पैदा हुई, हमेशा उसके मन में शक रहा, यद्यपि यह शक वह अक्सीनिया से छिपाये हुए रहा। रात में जब अक्सीनिया सो जाती, वह चुपचुप उठ कर पलने के नज़दीक जाता और बच्ची के गुलाबी चेहरे में अपने को ढूँढने की कोशिश करता और हर बार ही बहुत निश्चय करने में असफल होता। स्तेपन का रंग भी तो कालापन लिए हुए लाल है, उसकी चमड़ी पर भी तो कालिमा की झलक है, फिर वह कैसे निर्णय कर पाये कि इस बच्चे की नसों में किसका खून दौड़ रहा है। कभी वह सोचता, बच्ची मेरी तरह है, कभी सोचता, नहीं यह स्तेपन-सी है। ग्रीगर का उसके प्रति शत्रुता का ही भाव रहा है। उसके दिल में एक बहता हुआ भाव था, जिसे आज बूढ़े ने बुरी तरह कुरेद दिया। ग्रीगर ने उदास भाव से कहा—

"जिसकी भी हो, मैं उसे नहीं छोड़ सकता।"

पैंतेलीमन ने घोड़ों को चाबुक लगाया और बोला—

"नातालिया ने अपने चेहरे को खराब कर लिया। उसका स॰ एक तरफ को हमेशा झुका रहता है, जैसे कि लकवा मार गया हो। मालूम होता है, उसने कोई प्रमुख नली काट ली है।" वह चुप हो गया।

"अब उसकी तबीयत कैसी है?" घोड़े के अयाल से एक बाल खींचते हुए उसने कहा।

"किसी तरह बेचारी बच गई। सात महीने तक अस्पताल पर रही! एक दिन तो वह करीब-करीब चल बसी थी। पादरी ने अन्तिम क्रिया की विधि भी समाप्त कर दी थी। तब वह अचानक फिर अच्छी होने लगी। उठी, चलने लगी। उसने हँसिये को छाती में घुसेड़ ली थी, लेकिन शायद हाथ कांप गया, वह बच गई।"

"पहाड़ी पर हम तेज़ी से बढ़ें।" कह कर ग्रीगर ने ज़ोरों से घोड़े को चाबुक मारा। वह दौड़ने लगा। "हम नातालिया को फिर अपने घर बुला रहे हैं।"—पैंतेलीमन ने उसका पीछा करते हुए ज़ोरों से कहा। "वह अपने नैहर में रहना नहीं चाहती। उस दिन उससे मेरी भेंट हुई और मैंने आने को कह दिया है।"

ग्रीगर ने कोई जवाब नहीं दिया। बाप ने भी पूछताछ न की। दोनों चुपचाप रास्ता तय करते रहे।

## ५

पहले दिन ४५ मील की दूरी तय कर दूसरे दिन शाम को वे मानकोवो पहुँचे। अपने ज़िले के रंगरूटों को साथ ये ठहराये गये। ग्रीगर ने वहाँ अपने गाँव के नौजवानों को भी देखा। मिट्का कोरशु नौवमी था। उसने ग्रीगर को देख कर साहब-सलामत नहीं की।

दूसरे दिन डाक्टरी जाँच हुई। एक घर में ले जाकर ग्रीगर को नंगा कर दिया गया। अपने ओक ऐसे बदन और बालों से भरे पैरों को

देख कर उसे खुद आश्चर्य हुआ। डाक्टर लोग अजीब नंगापन से परीक्षा ले रहे थे। एक बूढ़े डाक्टर ने उसकी छाती की परीक्षा ली, एक नौजवान डाक्टर ने उसकी आँख की देखभाल की और जीभ देखी। चश्मा लगाये हुए एक डाक्टर ने उसको चारों ओर हाथ मलते घूर रहा था।

जब उसकी तौल ली गई, 'नेरूट...तीन और आधा' सुन कर बूढ़े डाक्टर को कम आश्चर्य नहीं हुआ। आश्चर्य!' नौजवान डाक्टर के मुँह से निकला।

"क्यों, इसे 'लाइफगार्ड' में लिया जाय?"—ज़िले के फौजी अफ़सर ने टेबल पर झुक कर अपने साथी अफसर से कहता। वह कर्नल का बिल्ला लगाये हुए था।

"लुटेरे के ऐसी इसकी सूरत है...... बिल्कुल जगली..." टेबल पर हाथ पटकते हुए उसने कहा। ग्रीगर ने कैफियत देना चाहा, लेकिन, कौन सुनता है। परीक्षा के अन्त में उससे कह दिया गया—वह बारखें रेजिमेंट में भरती किया गया है। दरवाज़े पर जाते हुए उसने फुसफुसाहट सुनी—

"नामुमकिन बात। सोचिये, अगर बादशाह ने सारा चेहरा देखा, तो क्या होगा! अरे सिर्फ उसकी आँखें..."

"मालूम होता है, यह दोगला है, इसमें पूरब का खून है।"

"देह भी साफ़ नहीं, बे निशान..."

कोट का बटन लगाते वह भागा। आँगन में घोड़े इकट्ठे किये जा रहे थे। गर्मी लिए हुए हवा बह रही थी। सड़क जगह-जगह बर्फ से साफ़ हो गई थी। गलियों में मुर्गियाँ दौड़ रही थीं; एक खड्ड में बतख पंख फटफटा रहे थे।

दूसरे दिन घोड़ों की जांच हुई। घोड़े कतार में खड़े थे और एक मवेशी डाक्टर अपने सदस्यों के साथ उन्हें देख रहा था। ग्रीगर के घोड़े को तौल कर उसकी जांच की जाने लगी। डाक्टर ने ऊपर की ठोड़ी, कंठ,

छाती देख कर पैर की ओर उँगली बढ़ाई। पैर के जोड़ों को देखा, सूम को ठोंका, उस ओर जाँच पड़ताल कर लम्बे कोट से कारबोलिक की गंध उड़ाता चलता बना।

ग्रीगर के घोड़े को रद्द कर दिया गया। चतुर डाक्टर ने उसके ऐब को भाँप लिया। साश्का की बात गलत साबित हुई। ग्रीगर ने अपने बाप से जल्द-जल्द सलाह की और आध घन्टे के अन्तर पियोत्रा का घोड़ा तौला जा रहा था। डाक्टर ने उसे तुरन्त ही पास कर दिया।

उसके दूसरे ही दिन एक ट्रेन लाल डब्बों वाला, जिनमें कोज़ाक, घोड़े और इसमें फौजी सामान थे, लोरोनेज़ की ओर जा रहे थे। उनमें से एक में ग्रीगर खड़ा था। डब्बे के बाहर नीली मुलायम जङ्गल की रेखा थी। उसके पीछे घोड़े घास चबा रहे थे, और डब्बे में बार-बार पैर पटक रहे थे।

---

## झ

### १

बसंत के एक गरम और प्रसन्न दिन को नातालिया अपने ससुर के घर लौटी। पैंतेलीमन उस दिन टूटे घेरे की मरम्मत कर रहा था। सूर्य की गरम किरणें पिघलते हुए पहाड़ को थपकियाँ दे रही थीं और तरह-तरह की घासों से पृथ्वी का वक्षस्थल फूल रहा था।

नातालिया ने पीछे से प्रवेश कर बूढ़े को नमस्कार किया। बूढ़ा काम छोड़ उठा, उसे आशीर्वाद दिया, बोला—"भले आ गई, तुम्हारी सास तुम्हें देख कर निहाल हो जायगी।"

"अगर आप मुझे झाड़ू से निकाल न दें, अब मैं यहीं रहूँगी, बाबूजी।"

नातालिया की बोली सुन बूढ़ा आनन्द-मुग्ध हो रहा। "यह तुम्हारा ही घर है—ग्रीगर ने भी तुम्हारा हाल अपने खत में पूछा है।" कहते नातालिया को वह रसोईघर में लिवा ले गया। नातालिया को छाती से लगाते, बूढ़ी इलीनिचना रो पड़ी। दुनिया हँसती हुई आई और भाभी को गरदन से लगा लिया। "तू हमें भूल गई थी—मेरी शैतान भाभी।" दुनिया उलाहना पर उलाहना दिये जा रही थी।

वे बैठ कर गप करने लगीं। इलिनिचना नातालिया की बदली हुई सूरत देख, हाथ पर गाल रखे, मन ही मन रो रही थी।

बहुत आगा-पीछा करने के बाद नातालिया ससुराल आई थी। जब उसने अपने माँ बाप पर यह इरादा प्रगट किया, वे बहुत बिगड़े झल्लाये, उसे बहुत तरह समझाया-बुझाया। लेकिन, नातालिया अपने

इरादे से नहीं डिगी। नैहर में वह अपने को अजनबी महसूस करती थी। बूढ़ा पैंतेलीमन जब तब उससे मिलकर उसे निमंत्रण दे आता था।

नातालिया घर में परिवार के सदस्य की तरह रहने लगी। पियोत्रा उसे भाई की स्नेह भरी नज़र देखता। दारिया में असन्तोष की कुछ झलक दिखाई पड़ती थी, लेकिन दुनिया का उससे चिपक जाना और बूढ़ों का पितृप्रेम पाना कमी की पूर्ति कर देता था।

नातालिया के आने पर पैंतेलीमन से दुनिया से ग्रीगर को यह खत लिखवाया—

"मस्त रहो, मेरे प्यारे बेटे, ग्रीगर पैंतेलीविच ! तुम्हें माँ का आशीर्वाद और भाई-भौजाई का प्यार मिले। दुनिया प्रणाम कर रही है। तुम्हारा खत मिला। घोड़ा ठेस खा जाया करता है, तो उसके पैर में सूअर की चर्बी का लेप करो और पिछले पैर में नाल मत लगाओ। तुम्हारी बीवी नातालिया मीरनोवना तुम्हारे घर आगई है। और अब मज़े में है। तुम्हारी माँ कुछ सूखी हुई चेरी और गर्म ऊनी मोज़े भेज रही है। अफसोस है कि दारिया की बच्ची चल बसी। पियोत्रा का हुक्म है, तुम घोड़े की पूरी देखभाल रखना। तुम्हारे अफसर तुमसे खुश रहते हैं, तुम सर्विस में अच्छा कर रहे हो, यह जान कर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। हमेशा याद रखना—ज़ार की सेवा कभी कही नहीं जाती। ज़्यादा क्या लिखूँ—भगवान तुम्हें आनन्द-मंगल में रखें। अपनी बीवी को मत भूलना—यह मेरा हुक्म समझो। वह भली औरत है, तुम्हारी कानूनी बीवी है। मत भटको, बाप की बात मानो—

तुम्हारा बाप, सीनियर सरजैंट,
पैंतेलीमन मेलेखोव"

जिस समय यह खत पहुँचा, ग्रीगर का कैंप आस्ट्रिया की सरहद पर पड़ाव डाले था। उसे ऐसे और भी खत मिले, लेकिन सबका जवाब वह इस तरह बच के देता रहा कि हाँ, ना का पता न चले। आखिर बूढ़े

ने बिगड़ कर लिखा कि साफ बताओ तुम लौटकर अपनी बीवी के साथ रहोगे या उस चुड़ैल अक्सीनिया के साथ। अन्त में एक संक्षेप पत्र मिला, जिसे पढ़ते समय दुनिया काँप रही थी और बूढ़ा पसीने पसीने हो रहा था। उसमें लिखा था—

"आपने पूछा है, कि मैं नातालिया के साथ रहूंगा या नहीं, तो मैं कहता हूं, बाबूजी, जो कट चुका, उसे आप जोड़ नहीं सकते! फिर मेरे तो बच्चा हो चुका है। मैं कोई भी वादा नहीं कर सकता। कल एक यहूदी गैर कानूनी माल ले जाने के कारण पकड़ा गया था, वह कह रहा था कि आस्ट्रिया के साथ लड़ाई तुरन्त छिड़ेगी और इसीलिए खुद तशरीफ लाये थे कि लड़ाई कहाँ पर की जाय। लड़ाई छिड़ने पर कौन कहे कि मैं जिन्दा ही लौटूँगा। इसलिए अभी से कोई निर्णय करना कठिन ही नहीं व्यर्थ भी है।"

लेकिन नातालिया इन पत्रों के बावजूद वीतराग की तरह घर का काम और ससुर-सास की सेवा किये जाती। उसने ग्रीगर के पास कोई पत्र नहीं भेजा, लेकिन घर के सभी लोगों से ज़्यादा उत्सुक ग्रीगर का ख़त पाने के लिए वही रहती—उसे आशा थी, उसका पति एक दिन उसे जाकर अपनायेगा।

## २

ग्रीष्म खूब सूखा रहा। गाँव के नज़दीक दोन छिछला पड़ गया। जहाँ तीव्र धारा रहती, वहाँ अब बैल बिना पीठ भिगोये पार कर जाते। रात में पहाड़ी की ओर से गरम हवा का झोंका आता। मैदान से सूखी घास की गंध निकलती। रात में बादल के दल दोन के ऊपर मँडराते। दीखते, उनके ठनक भी सुनाई पड़ती, लेकिन वर्षा नहीं आती, नहीं आती।

हर रात घन्टाघर पर एक उल्लू आकर चिल्ला जाता। उसकी चीख

से गाँव काँप उठता। उल्लू घन्टाघर से उड़कर कब्रगाह की ओर जाता और वहाँ कब्रों पर बैठ कर भयानक ढंग से चीखता।

कब्रगाह से उल्लू की चीख सुन कर बूढ़ों ने कहा—"मालूम होता है, कोई संकट आने वाला है।"

"मालूम होता है लड़ाई छिड़ेगी। टर्की से उस लड़ाई के पहले इसी तरह उल्लू चिल्लाया करता था।"

"जब गिरजाघर से कब्रगाह की ओर उल्लू उड़े, तब समझो कोई बुराई होकर रहेगी।"

बाजार में बूढ़े लोगों से बातचीत करते हुए पैंतेलीमन ने प्रमाण भरे शब्दों में कहा—

"मेरे ग्रीगर ने लिखा है, आस्ट्रिया का ज़ार सरहद पर आया था और उसने अपने सैनिकों को हुक्म दिया है कि मास्को और पिट्सबर्ग पर चढ़ दौड़ो।"

"लेकिन, इस साल लड़ाई नहीं होगी, फसल जो अच्छी आई।"

"फसल से लड़ाई का क्या वास्ता! मेरा ख्याल है, विद्यार्थी लोग उपद्रव मचा रहे हैं।"

लड़ाई से बातें होते-होते दिल्लगी पर खत्म हुईं। बूढ़े लोग अपने अपने कामों में जा लगे।

मार्टिन शेमिल का घर कब्रगाह की बगल में था। दो रातों तक वह उस चिड़िये की निगरानी में रहा। लेकिन वह उल्लू बिना शब्द किये गुपचुप उड़ता हुआ कब्रगाह की दूसरी छोर पर एक सलीब पर जा बैठता और अपनी चीख से सोये हुए गाँव को प्रकाशित करता। गुस्से में मार्टिन ने उल्लू के सौ पुश्तों को गालियाँ दीं और बादल के एक लटकते काले टुकड़े को गोली मार अपने घर में आया। उसकी बीबी उस पर बिगड़ी—"तुम यह क्या कर रहे हो, उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, भगवान् तुम्हारे ऊपर नाराज़ हों तो।" मार्टिन ने उसे डांट दिया—"तू

क्या जाने कहीं लड़ाई, छिड़ेगी तो आटे-दाल का भाव मालूम होगा; जब मैं लड़ाई में पकड़कर भेज दिया जाऊँगा और ये बच्चे तुझे खोद-खोद कर खायेंगे !

## ३

लोग घास इकट्ठी कर रहे थे कि एक ऐसी घटना हुई, जिसने समूचे गाँव को हिला डाला। ज़िले का हाकिम वर्दी पहने एक हाकिम और एक पुलिस के जाँच अफसर को लेकर गाँव में आया। गाँव के आतामन को बुलाकर, कुछ गवाहियों को इकट्ठा कर वह लुकिश्का के झोपड़ों में आया। जांच अफसर ने उससे पूछा—

"यहाँ स्टोकमैन है ?"

"जी हाँ, हजूर।"

"वह यहाँ क्या करता है ?"

"मिस्त्री का काम।"

"उसके पास कुछ मुलाक़ाती भी आते हैं ?"

"हाँ, आते हैं ताश खेलते हैं।"

"वे कौन होते हैं ?"

"यही, मिल के कुछ मज़दूरे।"

"उनके नाम बताओ।

"वह इंजिन ड्राइवर, तौलने वाला, डेविड और कभी-कभी कुछ गाँव के कोज़ाक थी।

जांच-अफसर रुक गया। वर्दी वाला अफसर पीछे पड़ गया था। उसने उससे धीमे से कुछ बातें कीं। अफसर ने अपनी वर्दी के बटन को घुमाते हुए आतामन को इशारा किया। वह पंजों पर दौड़ता उसके नज़दीक पहुँचा—

"लो दो पुलिस के जवानों को लेकर उन आदमियों को गिरफ़्तार करके गाँव की कचहरी में लाओ। समझे? जाओ—"

आतामन पुलिस को लेकर मिल की ओर चला।

स्टोकमैन दरवाज़े की ओर पीठ किये, अपनी जाकेट का बटन खोले कुछ काम में लगा था। इन अफसरों को अचानक घर में घुसता देख कर इनकी ओर घूर कर देखा और होंठ काटने लगा।

"मेहरबानी करके उठिये, आप गिरफ़्तार कर लिए गये।"

जांच अफसर ने कहा।

"क़सूर क्या है?"

"तुम इन दो कोठरियों में रहते हो?"

"हाँ"

"हम इनकी तलाशी लेंगे।

वर्दी वाला अफसर घर में घुसा और टेबल पर पड़ी किताब उठाकर बोला—"बक्से की कुँजी लाओ।"

"मैं जानना चाहता हूँ, यह सब किस लिये?"

"पीछे तुमसे बातें होंगी।"

स्टाकमैन की बीवी भीतर से झांक रही थी। एक आदमी उसकी ओर बढ़ा। अफसर ने पीली जिल्द की एक दूसरी किताब उठाकर स्टाकमैन से पूछना शुरू किया। स्टाममैन जिस तर्ज़ से जवाब दे रहा था, अफसर गुस्से में आ गया। "अपनी वाक् चातुरी का प्रदर्शन पीछे करना, बताओ और किताबें कहाँ हैं?" इस पर सूखी हँसी हँसते हुए स्टोकमैन ने जवाब दिया, "जो है, आपके सामने है।"

"तुम झूठ बोल रहे हो।"

"मैं कहता हूं, ज़रा तमीज़..."

"कमरे की तलाशी लो।"

ज़िले के हाकिम ने अपनी तलवार हिलाते घर के कोने-कोने को

छान डाला। एक कोज़ाक सिपाही स्टोकमैन के ट्रंक को खोलकर उसमें रखा चीजों—कपड़े वग़ैरह को बेतरतीब उधेड़े जा रहा था। घर के बाद मिस्त्रीखाने की भी तलाशी हुई—दीवालों पर ठोकरें दे और इत्मीनान कर लिया गया कि उसके भीतर कोई चीज़ नहीं है।

तलाशी के बाद स्टोकमैन को कचहरी की ओर ले चले। वह सड़क के बीच में चल रहा था—एक हाथ को कोट की जेब में रखे दूसरे को इस तरह फटकारते जैसे वह कीचड़ झाड़ रहा हो। और लोग उसके अगल-बगल चल रहे थे। कचहरी में ईवान एलेक्शीविच, डेविड, वैलेट और मीशा कोशवाई गिरफ़्तार करके लाये जा चुके थे। इनसे पूछताछ के बाद स्टोकमैन से पूछा जाने लगा—

"यहाँ तुम कब आये?"

"पिछले साल।"

"अपनी संस्था के हुक्म से?"

"बिना किसी के हुक्म से—अपनी इच्छा से!"

"कितने दिनों से तुम अपनी पार्टी के मेम्बर हो।"

"यह क्या पूछ रहे हैं आप!"

"मैं पूछ रहा हूँ कितने दिनों से तुम रूसी सोशल डिमोक्रेटिक लेबर पार्टी के सदस्य हो?"

"मैं समझता हूँ कि..."

"मुझे इससे कोई मतलब नहीं कि तुम क्या समझते हो। साफ़ जवाब दो। नकारने से कोई मतलब नहीं सधेगा, उल्टे और फँसोगे।" जाँच-अफसर ने अपने फायल से एक कागज निकाला और उसे टेबल पर रख दिया। "यह रिपोर्ट मुझे रोस्टव से मिली है कि तुम उस पार्टी के मेम्बर हो।"

स्टोकमैन ने जल्द से अपनी निगाह उस कागज की ओर दौड़ाई, एक क्षण तक उसे देखा फिर घुटने पर थपकियाँ देते बोला—

"१३०७ से।

"यह ! क्या अब भी कहोगे कि तुम्हारी पार्टी ने तुम्हें यहाँ नहीं भेजा है।"

"हाँ यह बात गलत है ?"

इसके बाद काफी देर तक सवाल जवाब होते रहे। जाँच-अफ़सर की जिरह पर जिरह करने पर भी स्टोकमैन ने यही बताया कि उसे न तो पार्टी ने भेजा है, न पार्टी के सदस्यों से उसका खत किताबत है, यहाँ वह रोज़गार खोजने आया था और अपना रोज़गार चला रहा है।

"तो ये मज़दूर तुम्हारे घर पर क्यों इकट्ठे थे ?"

स्टोकमैन ने इस तरह कंधे हिलाया, मानो उसे इस बेवकूफी के सवाल पर आश्चर्य हो रहा है।

"जाड़े के दिनों में अपनी शाम गँवाने वे आते थे—हम लोग ताश खेला करते थे।"

"और जब्त किताबें भी पढ़ते थे ?"

"गलत बात—उनमें से कोई भी पढ़ा-लिखा नहीं था।"

इस पर जाँच-अफ़सर बिगड़ा और बताया—"छिपने से अब काम नहीं चलने का। यह साफ हो चला है कि तुम्हें पार्टी ने भेजा था कि कोज़ाकों में रहकर उन्हें सरकार के खिलाफ भड़काओ। बहानेबाज़ी से क्या होगा भला ?" स्टोकमैन ने इस पर लापरवाही से कहा—

"आप ख़ुद अँधेरे में टटोल रहे हैं। ख़ैर, टटोलिये। मैं सिगरेट पीऊँ—इज़ाज़त होती है।"

"अच्छा तुम यह किताब पढ़कर मज़दूरों को सुनाते थे ?"—जांच अफसर के हाथ में एक किताब थी जिसके नीचे लिखा था—"प्लेखनोव।

"हम कवितायें पढ़ा करते थे"—कहकर स्टोकमैन ने सिगरेट की एक लम्बी कश ली और धुआँ छोड़ा।

दूसरी ओर में डाक ढोने की गाड़ी पर चढ़ाये वे स्टोकमैन को गाँव से लिये जा रहे थे और एक स्त्री आँसुओं में नहाई चिल्ला रही—

"ओसिप ! ओसिप डेविडोविच ! तुम्हें ये कहाँ..."

४

ग्रीगर और उसके साथी कोजाकों के लिए फौजी छावनी के दिन अजीब रूखे-सूखे ढङ्ग से कट रहे थे। अपने खेतों से हटाये जाने के कारण वे तुरत ही थक जाते और अपना ज्यादा वक्त गपशप में गुजारते। ग्रीगर की छावनी के मकान खपरैल के थे और वे खिड़की के नीचे चौकियों पर सोते थे। ग्रीगर अन्तिम छोर की खिड़की के नजदीक सोता। रात थी हवा खिड़की से साटे गये कागज़ से टकरा कर ऐसी आवाज़ पैदा करती कि मालूम होता चरवाहे अपने सींगे फूँक रहे हों। वह आवाज ग्रीगर को व्याकुल कर देती। कई दिन उनके मन में आया, वह उठे, अस्तबल में जाये और घोड़े खोल कर चल दूँ—घोड़े पर चलता जाय, जब तक घर न पहुँच जाय।

पहली घंटी पांच बजे बजती और पहला काम अस्तबल और घोड़े को साफ करना होता। सफाई बाद आधे घंटे तक जब तक घोड़े चारा खाते, बातों का सिलसिला बँध जाता।

" भई, यह तो घर की ज़िन्दगी है।"

" मुझसे तो बर्दाश्त नहीं होती।"

"और वह सर्जेन्ट मेजर; पूरा हरामज़ादा ! वह घोड़े की रूम धोने का भी फरमान निकलता है।

"आज घर पर सेवइयाँ बन रहे होंगी·······आज ओब मंगल ही का त्यौहार है न ?"

"मेरी बीबी····मैं बाजी लगा सकता हूँ कि वह इस समय कह रही होगी—"न जाने मेरा माइकेल इस समय क्या कर रहा होगा।"

कसरत के वक्त अफसर लोग आंगन में खड़े सिगरेट पीते होते, पर बीच बीच में टोकटाक करते। ग्रीगर उन अफसरों की खूबसूरत फटी वर्दी देखता, चमचमाते बूट और चमकाते बिल्ले देखता, तो उसे यह समझने में देर नहीं लगती कि उसमें और अफसरों के बीच में एक लम्बी खाई पड़ी है। एक तरफ उनकी भिन्न, सुव्यवस्थित जिन्दगी और एक तरफ कोज़ाकों की जिन्दगी, जहाँ कीचड़ है, मक्खी है और है सरजेंट मेजर के घूंसे का डर। एक ही जगह जैसे दो विभिन्न धारायें बह रही हों।

रैद्दजिविलोवो पहुँचने के तीसरे ही दिन एक घटना होगई जिसने ग्रीगर और उसके साथी कोज़ाकों के दिल पर गहरा असर डाला। वे घोड़े पर ड्रिल कर रहे थे कि प्रोखर ज़ीकोव के घोड़े ने संयोगवश सरजेंट मेजर के घोड़े पर टांग चलादी। चोट हलकी, थी, ज़रा-सा चमड़ा घोड़े के पिछले बायें पैर का कट गया। लेकिन, सरजेंट मेजर ने झट अपनी चाबुक प्रोखर के चेहरे पर जमा दी और अपना घोड़ा उसके सामने लाकर कहा—

हरामजादे, दीखते नहीं कि कहाँ कौन है ? मैं तुम्हें मजा चखाऊँगा'' ''' 'आज से तीन दिन तुम्हें मेरे साथ रहना पड़ेगा।''

कम्पनी का कमान्डर कहीं खड़ा देख रहा था। लेकिन, उसने इस पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया, अपनी तलवार की मूँठ पर हाथ फेरते जम्हाई लेते वह दूसरी ओर घूम गया। प्रोखर के होंठ हिल रहे थे, वह अपने गाल से निकलती हुई खून की पतली धारा को पोंछता जा रहा था। ग्रीगर जब अपने घोड़े पर अफसरों के नजदीक से गुज़र रहा था, उसने देखा वे इस तरह हँस-हँस कर बातें कर रहे थे, मानो यहाँ कोई बात हुई ही नहीं।

———

# युद्ध के झकोरे में

## क

### १

जुलाई की धूप समूचे मैदान पर छाई हुई थी। गेहूँ के पके बालों से पीली धूल उड़ रही थी। नीलापन लिये हुए पीले, जलते आसमान की ओर देखना दुखदाई मालूम होता था।

समूचा तातारस्कं गाँव मैदान में उतर आया था। काटने की मशीन को खींचते हुए घोड़े धूप और धूल से व्याकुल हो रहे थे। उसने किनारे से आती हवा मैदान पर धूल का बादल बना रही थी। सूरज मटमैला हो रहा था।

*भोर से ही काम में जुता पियोत्रा आधी बाल्टी पानी पी चुका था।* पानी पीते ही फिर गला सूखने लगा था। उसकी कमीज पसीने से भींग कर लथपथ हो चली थी, चेहरे से पसीने की धारा बह रही थी। चेहरे को रूमाल से ढाँके, कमीज के बटन खोले दारिया अन्न बिटोरने में जुटी हुई थी। उसके दोनों पुष्ट स्तनों के बीच से पसीना बहा जा रहा था। नाटालिया घोड़े हाँकती थी; उसके गाल सूखे चुकन्दर से होगये थे और सूर्य की किरनों की चकाचौंध से उसकी आँखों में आँसू भरे थे। पैंतेलीमन की दाढ़ी से चू चू कर पसीने की काली बूँदे उसकी छाती पर गिर रही थीं।

अन्त में दारिया से नहीं रहा गया। वह बोली—"पियोत्रा, अब रहने दो।"

"ज़रा ठहरो—यह पाँत खत्म कर लेने दो।"

"ठंडा होने पर काट लेंगे, अब मुझ से नहीं होगा।"

नातालिया ने घोड़े की रास खींच ली। उसकी छाती फूल रही थी, जैसे वह खुद मशीन को खींचे जा रही हो। दारिया पियोत्रा की बगल में जाकर बोली—

"यहाँ से झील नजदीक ही है पियोत्रा।"

"ज़रा नहा लेना कितना अच्छा होता।"

"जब तक जाओगी और लौटोगी तब तक……नातालिया ने सासें लीं।

"हम पैदल क्यों जायँगे; घोड़ों को मशीन से खोलकर उन्हीं पर चढ़ कर हम चल चलें।"

पियोत्रा ने बाप की ओर नजर की, फिर बोला—

"अच्छा, घोड़ों को खोलो!"

दारिया ने झट जोत खोल दी और फुर्ती से उछल कर घोड़ी पर चढ़ गई। नातालिया हँसती हुई घोड़े को काटने की मशीन के नज़दीक ले गई और उसके सहारे चढ़ने की कोशिश की। पियोत्रा उसकी मदद में पहुँचा और उसकी टांग पकड़ कर उसे घोड़े की पीठ पर उछाल दिया। आप भी एक घोड़े पर चढ़ा सबके सब रवाना हुए। आगे आगे दारिया कोजाकों की तरह घोड़े दुलकाये जा रही थी—उसके खुले घुटनों पर कमीज़ लहरा रही थी, रूमाल कस कर उसके सर के पीछे बँधा हुआ था।

खेतों के बाहर होते ही पियोत्रा ने देखा, बाईं ओर धूल का एक छोटा-सा अम्बार आस्मान में है जो तेजी से सड़क की राह गाँव की ओर बढ़ा जा रहा है।

"शायद कोई गाँव में घोड़े पर जा रहा है।" पियोत्रा ने नातालिया से आंख मींचते हुए कहा?

"और बड़ी तेजी से—धूल देखिये तो ?" नातालिया ने आश्चर्य से उत्तर दिया।

"दारिया जरा रास थाम्हो! देखो, वह कौन गाँव की ओर जा रहा है।"

धूल उड़ाते सवार पर पियोत्रा की नज़र गई। उसके चेहरे पर उत्तेजना का भाव छोड़ गया। अब सवार नज़दीक आ चुका। वह बड़ी तेजी से घोड़े को उड़ाये आ रहा था। एक हाथ से वह अपनी टोपी को पकड़े था; दूसरे हाथ में लाल झंडा था। लाल झंडा—खतरे की सूचना।

"खतरा!" वह चिल्ला रहा था।

मैदान की हर ओर से कोज़ाक गांव की ओर दौड़ने लगे उनके घोड़ों की टापों से उड़ी धूल आसमान में घना बादल की तरह छाये जा रही थी।

"यह क्या है ?'—नातालिया भयभीक स्वयं बोली। उसकी आंखों में वह भावना थी, जो फंदे में फँसी चुहिया की होती है। पियोत्रा चौंक पड़ा। वह अपने घोड़े को अपने खेत की ओर वहाँ से अपना पाजामा पहन कर फिर गाँव की ओर घोड़े को उड़ाया—उसके पीछे भी धूल का वैसा ही एक अम्बार आसमान में लटकता जा रहा था।

## २

पियोत्रा ने देखा, मैदान में एक घनी भूरी भीड़ इकठी है। कुछ लोग तो अपनी फौजी वर्दी पहन ही रहे थे। आतामन रेजिमेंट के लोगों की नीली टोपियाँ सबसे एक बालिश्त ऊँची थीं—वे बताखों में हंस ऐसे गाते थे।

गाँव का शराब खाना बन्द हो चुका था। ज़िले के फौजी अफसर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। औरतें त्योहार की तरह रंग-बिरंगे कपड़े पहने गलियों में कतार से खड़ी थीं। सब के मुँह पर एक ही आवाज़ थी—फौजी बुलाहट! उन्मत्त, उत्तेजित चेहरे। लोगों की इस चाल का असर

घोड़ों पर भी पड़ चुका था—वे पैर पटकते। टांग चलाते और रह रहकर हिनहिना उठते। सस्ती मिठाइयों के कागज़ और खाली बोतलों से मैदान भरा था। हवा पर धूल का अम्बार टंगा था।

पियोत्रा घोड़ा लिए बढ़ रहा था कि उसने देखा, आतामन रेजिमेंट का एक नौजवान कोज़ाक अपने नीले पाजामे के बटन लगा रहा था। और उसकी बगल में एक मोटी औरत—उसकी पत्नी या प्रिया—खड़ी उसे रह रह कर छाती से लगा लेती। नज़दीक ही लाल दाढ़ी वाला एक सरजेंटमेजर कारखाने में काम करने वाले नौजवान से बहस किये जा रहा था—

"नहीं, कुछ नहीं होगा। घबराहट की ज़रूरत नहीं। चन्द दिनों के लिए ही हम बुलाये जा रहे हैं। फिर शीघ्र ही हम लौटेंगे।"

"लेकिन, अगर लड़ाई हो तब..."

"वाह दोस्त। अरे किसमें ऐसी हिम्मत होगी जो हमारे खिलाफ खड़ा हो।"

बगल में जो गिरोह था उसमें एक खूबसूरत जवान कोज़ाक गुस्से में कह रहा था—

"हमें इससे क्या वास्ता ? वे अपना लड़ें झगड़ें, हमने अभी अपने अन्न भी नहीं सहेजे।"

"क्या तमाशा है ? हमें यहाँ खड़ा किया गया है, इस एक दिन में ही हम साल भर के लिए अन्न इकठ्ठा कर लिए होते।"

"जानवर खेत का सत्यानाश कर देंगे।"

"अभी मई की कटनी तो शुरू ही हुई है।"

"अभी बारह ही महीने तो हुए हैं कि मैं रिज़र्व की तीसरी पाँत से बाहर हुआ हूँ।"—एक बूढ़ा कोज़ाक अफसोस की आवाज़ में कह रहा था।

"घबड़ाइये मत बूढ़े बाबा, हम जवानों को क़त्ल कराके वे आप बूढ़ों पर भी नज़र इनायत करेंगे।"

इसी समय एक शराब में चूर, खून में लतपथ कोज़ाक लाया गया। वह चित्त गिर पड़ा, अपनी कमीज़ फाड़ ली और लाल आँखों को घुमाता बोलने लगा—

"उन किसानों को मैं बता दूँगा, । मैं उसका खून पिऊँगा, वे जानेंगे, दोन कोज़ाक किसे कहते हैं।"

चारों ओर लोग हँस रहे थे। वह कहता जा रहा था—

'१६०५ वे भूल गये! उन्हें कुचलने में मेरा भी हाथ था। अहा हा, वे देखने के दिन थे!"

"घबराओ मत यार, फिर लड़ाई शुरू हो गईं, फिर उन्हें कुचलने को तुम्हें मौका आ जायगा।"

इधर साहूकार मोखोव की दुकान के नज़दीक भी एक बड़ी भीड़ थी। बीच में तो इवान मोलिन शराब में चूर कह रहा था—

"तुमने हमें आज तक चूसा किया! चूसा—सूद से, मुनाफे से,! लेकिन' अब, काले सांप, अब कहाँ जाओगे? तुम्हारे सर हम कुचलेंगे! कुचल देंगे।"

गाँव के आतामन की परीशानी का क्या पूछना! वह उत्तेजित कोजाकों को शांत करने के लिए कह रहा था—

"लड़ाई! नहीं, लड़ाई हो नहीं सकती। कोई ऐसी जरूरत आ गई है, जिससे यह फौजी बुलाये हुए हैं। डरने या घबराने की कोई बात नहीं।"

## ३

चार दिनों के बाद एक लाल ट्रेन कोज़ाकों को लिए हुए आस्ट्रिया की सरहद की ओर जा रही थी।

"लड़ाई... !"

ट्रेन के डब्बों में गपशप और गीत के स्वर गूँज रहे थे। स्टेशनों

पर लोग कोज़ाकों को उत्सुकता और सहानुभूति की दृष्टि से देखते। कोज़ाकों के धारीदार पाजामे दर्शकों पर पूरा असर डालते।

"युद्ध...!"

स्टेशनों पर औरतें रूमाल हिलातीं, मुस्कुरातीं, सिगरेट और मिठाइयाँ देतीं। सिर्फ एक बार जब ट्रेन वोरेनज पहुँची, एक बूढ़े रेल वे मज़दूर ने पियोत्रा के डब्बे में सर घुसाया और कोज़ाक नौजवानों को लक्ष्य कर कहने लगा—

"तुम लोग जा रहे हो?"

"हाँ, आओ न बूढ़े दादा, तुम भी चले चलो।" एक ने हँसते हुए कहा।

"आह मेरे बेटे......कसाईघर के लिए मोटे बैल!" बूढ़ा सर हिला रहा था।

४

नकली लड़ाइयों के लगातार रियर्सल से परीशान ग्रीगर और फोर्थ कम्पनी के उसके सभी साथी अपने तम्बू में लेटे पड़े थे कि कम्पनी कमान्डर अपने रेजिमेंटस स्टाफ से घोड़े उछालता हुआ दिखाई पड़ा।

"मालूम होता है, दूसरी चढ़ाई होगी"—प्रोखर ज़ीकोब के मुँह से अनायास निकला।

अपने पाजामे को दुरुस्त करने के लिए निकाली गई सुई को टोपी के नीचे खोंसते हुए ट्रूप सर्जेंट ने कहा—"यही मालूम होता है—ये लोग हमें एक क्षण भी विश्राम करने नहीं देंगे।"

मिनट लगते ही बिगलची ने अलार्म फूँका। कोज़ाक उछल कर खड़े हो गये। झट घोड़े पर जीन कसके तैयार खड़े थे। ग्रीगर अपने तम्बू के खूँटे उखाड़ रहा था, तब सरजन्ट उसके नज़दीक धीमे से बोला—

"इस बार असली लड़ाई मालूम होती है, पट्ठे!"

"झूठी बात।" ग्रीगर को विश्वास नहीं हुआ।

यह ब्रह्मा की लकीर बता रहा हूँ! मुझसे सर्जेंट मेजर ने बताया है।'

सड़क पर पूरी कम्पनी पंक्तिबद्ध खड़ी हुई। आगे कमान्डर था। उसने कमान्ड के बोल दिये। घोड़े के सूम से जमीन थर-थरा उठी। दूसरी ओर से पाँचवीं और पहली कम्पनी के सवार भी स्टेशन की ओर जाते दीख पड़े।

५

एक दिन बाद, आस्ट्रिया की सरहद से बीस मील दूर के एक स्टेशन पर रेजीमेंट को ट्रेन से उतारा गया। अभी भोर में थोड़ी देर थी। कोज़ाक अपने घोड़ों को डब्बे से निकाल पांत में खड़े कर रहे थे। घोड़ों और घुड़-सवारों के चेहरे पर उदासी थी कालिमा छाई हुई थी।

स्टेशन के बाहर उन्हें थोड़ी देर रुकना पड़ा। कोज़ाकों ने वहीं धीमे स्वरों में अपनी तान छेड़ी। नीले भरे आस्मान के विरुद्ध उनकी प्रतिच्छाया काली रोशनाई से बनी तस्वीर-सी मालूम होती थी। उनके बर्छों की फलियाँ सूर्यमुखी के बाल के ऐसे लग रही थीं। कभी-कभी घोड़ों की रेकाबें झनझना उठतीं और जीने चर्रमर्र करने लगतीं।

प्रोखर जीकोव ग्रीगर की बगल में ही अपने घोड़े ले जा रहा था। ग्रीगर के चेहरे की ओर घूरते हुए उसने पूछा—

"मेलखोव, तुम्हें डर नहीं मालूम होता?"

"डरने की क्या बात?"

"हो सकता है, हमें आज ही लड़ाई में जूझना पड़े।"

"जूझ लेंगे।"

"लेकिन मुझे तो डर लग रहा है", प्रोखर की उँगली लगाम पर काँप रही थी। "पिछली रात मैं एक झपकी भी नहीं सो सका।"

कम्पनी बढ़ती गई। घोड़ों की टापों से बँधे हुए शब्द होते। बच्छे ताल से आगे-पीछे हिलते-डुलते। लगाम छोड़कर ग्रीगर झपकियाँ लेने लगा। उसे मालूम होता, ये घोड़े के पैर नहीं हैं जो उसे ढोये जा रहे हैं, बल्कि वह खुद किसी गरम, अँधेरी सड़क से मौज और आनन्द में बढ़ा जा रहा है।

एक भारी गड़गड़ाहट की आवाज़ ने उसे जगा दिया।

'बन्दूक की आवाज़!" ज़ीकोव चिल्ला उठा, उसकी आँखों में आँसू भरे थे। ग्रीगर ने अपना सर उठाया। उसके सामने सरजेंट मेजर का भूरा कोट घोड़े की ताल पर नीचे ऊपर हो रहा था। दोनों तरफ जई के खेत लहरा रहे थे। समूची कम्पनी जग पड़ी थी। बन्दूक की आवाज़ ने बिजली की धारा का काम किया था। कम्पनी कमान्डर ने हुक्म दिया, घोड़े तेज़ी से भागे।

थोड़ी दूर जाने पर उन्हें तरह-तरह के लोग दिखाई पड़ने लगे। कहीं पैदल सैनिक थे, कहीं तोपखाने की ढुलाई हो रही थी, कहीं सामानों की गाड़ियाँ थीं, कहीं चलते-फिरते अस्पताल के सामान थे। जब ग्रीगर की कम्पनी एक गाँव में घुस रही थी, रेजिमेंट के कमान्डर कार्नल कालदीन दिखाई पड़ा, जो अपने नायब को एक नक्शा दिखा कर कह रहा था—

"यह गाँव तो इस नक्शे में नहीं है वासिली। कहीं हम लोग झंझट में नहीं पड़ जायँ।"

इसका जवाब ग्रीगर नहीं सुन सका।

रेजिमेंट लगातार बढ़ा जा रहा था। घोड़े पसीने-पसीने हो रहे थे। थोड़ा आगे गाँव के कुछ झोपड़े दिखाई दे रहे थे। गाँव की दूसरी तरफ एक जंगल था। नीले आस्मान में हरे-हरे पेड़ सर ताने खड़े थे। जंगल के पीछे से बन्दूक और रायफल की आवाज़ आ रही थी। घोड़ों ने कान खड़े किये। आस्मान में बारूद के धुएँ छा गये। रायफल की आवाज़ दाहिनी ओर से आ रही थी।

ग्रीगर उस आवाज़ को चौकन्ना होकर सुन रहा था। उसकी नसों में सनसनी थी। प्रोखर ज़ीकोव ज़ीन पर छटपट कर रहा था।

"ग्रीगर, आवाज कैसी मालूम हो रही है! जैसे लड़के लोहे के छड़ पर डन्डे पीट रहे हों।"

"चुप रहो—बुज़दिल!"

कम्पनी गाँव में घुसी। रूसी सैनिक आँगनों में घुस रहे थे और घर वाले डर और दहशत से व्याकुल भागे जा रहे थे। वे गाड़ी पर अपने बिस्तरे, फरनीचर, आदि लाद रहे थे। ग्रीगर को औरतों की बेवकूफी पर हँसी आई जो ज़रूरी और कीमती सामानों को छोड़ कर गाड़ियों पर जंतर-मंतर के तख्तों और सलीबों को लादे जा रही थीं।

## ६

"बर्छी को तैयार.....धावे पर.....घोड़े बढ़ाओ!"—अफसर ने कमान्ड दिया और अपने घोड़े को आगे कुदा कर हवा से बातें करने लगा।

सैकड़ों घोड़ों के नाल से कुचल कर, कट कर पृथ्वी जैसे जोरों से कराह रही थी। ग्रीगर आगे की पाँत में था। उसने अपने बर्छे को सम्हाला ही था कि पीछे के घोड़ों के प्रवाह में उसका घोड़ा भी जैसे बह चला—पूरी गति में सरपट भागा जा रहा। उसके आगे कमान्डर था, कमान्डर के आगे जोती हुई भूरी जमीन। पहली कम्पनी ने चिल्लाहट की आवाज की; चौथी कम्पनी ने प्रतिध्वनि की। इस चिल्लाहट की आवाज के बीच बीच दूर में चलने वाली गोलियों की आवाज भी ग्रीगर के कान में आकर टकराती थी।

पहला गोला उनके सर ऊपर आस्मान को चीरता हुआ निकल गया। ग्रीगर ने अपने बर्छे को बगल में ज़ोरों से दबाया, उसका हाथ दुखने लगा, उसकी हथेली पसीने से तर हो गई। गोले की आवाज़ सुनते ही ग्रीगर ने सर झुकाकर घोड़े की गर्दन में सटा दी। घोड़े के पसीने की गंध उसकी नाक में घुसने लगी। जैसे उसकी आँखों में दूरबीन लगी है, उसने देखा

सामने खाइयों का मझिला किनारा है और उससे निकल कर भूरी पोशाक वाले सैनिक भागे जा रहे हैं। एक मशीनगन लगातार कोजाकों की ओर कारतूस उगल रही है, उनके सामने और घोड़ों के पैरों के नीचे धूल पर धूल वह उड़ा रही है।

जिस डर से पहले उसका खून तेजी से दौड़ने लगा था, अब उसने उसकी नसों को पत्थर ऐसी दृढ़ बना दिया था। कानों में एक अनवरण साँय-साँय आवाज़ सुनने से कोई भावना बच नहीं रही थी। उसकी विचार-शक्ति भय से सिमट कर उसके सर में सिर्फ एक भारी ढोका ऐसी बन गई थी।

सबसे पहले एक अफसर घोड़े पर से गिरा। प्रोखर उसके ऊपर से अपने घोड़े सहित बढ़ा। ग्रीगर घूम कर जो देखा, उसकी स्मरण शक्ति पर उसने वह असर किया जो शीशे पर हीरे से काटने से होता है। गिरे हुए अफसर को लांघ कर कूद कर निकलने की चेष्टा में, प्रोखर का घोड़ा ठेस खा गया। उसके ठेस खाते ही प्रोखर अपनी ज़ीन पर से फेंका गया, वह सर के बल आगे जा गिरा। तब तक पिछले घोड़े के सुम ने उसे बुरी तरह कुचल डाला। ग्रीगर ने कोई चीख नहीं सुनी, लेकिन प्रोखर के खुले मुँह और बैल सी निकली आँखों को देख कर उसने मान लिया, वह अति पीड़ा में चीख रहा है। उसके बाद तो एक-पर-एक घोड़े और कोज़ाक गिरने लगे। हवा के झोंके के कारण निकले आँसुओं से तर अपनी आँखों से ग्रीगर आगे भागते हुए आस्ट्रिया के सैनिकों को देख रहा था।

गाँव से कम्पनी पांत में चली थी, अब वह कई टुकड़ों में बँट कर खाई की ओर बढ़ी जो लोग सब से पहले खाई के नज़दीक पहुँचे, उनमें ग्रीगर सबसे पहला था।

एक लम्बे उजली भौं वाले आस्ट्रियन, ने अपने टोपी से आँख छिपाये, एकदम उठ कर ग्रीगर पर गोली छोड़ दी। गोली ग्रीगर के गाल को झुलसाती ऊपर निकल गई। उसी समय ग्रीगर ने, एक हाथ से अपने

घोड़े की लगाम खींचते, दूसरे से अपना बर्छा ऐसे जोर से उस पर चलाया कि उसकी देह को छेदते उसकी पीठ में बर्छे की फली जा निकली। ग्रीगर जल्द बर्छे को खींच नहीं सका। उसने हाथ में कम्पन और तनाक अनुभव किया और देखा तो वह आस्ट्रियन दाहने घूम कर बर्छे को अंगुलियों से जोर से पकड़े हुये है। ग्रीगर ने बर्छा छोड़ दिया और अपनी तलवार की मूँठ पर हाथ रखा।

आस्ट्रिया के सैनिक शहर की ओर भागे जा रहे थे। उनके पीछे कोज़ाक घोड़े छोड़े जा रहे थे।

ग्रीगर अपने घोड़े पर तलवार निकाले चिपका था—घोड़े ने गर्दन हिलाते उसे ढोकर शहर में पहुँचा दिया। एक बगीचे के रेलिंग के पास ग्रीगर ने देखा कि एक आस्ट्रियन सैनिक बिना राइफल का ही, हाथ से अपनी टोपी दबाये भागा जा रहा है। उसने उसके पीछे अपना घोड़ा डाला, उसके नजदीक पहुँचा और आवेश में आकर अपनी तलवार उसके सर पर चला दी। बिना चीखे-चिल्लाये आस्ट्रियन ने अपने हाथों से अपने जरक को पकड़ लिया। ग्रीगर ने देखा, उसका चेहरा भय से चौड़ा हो गया है, लोहे सा काला पड़ गया है। उसके होंठ काँप रहे हैं। तलवार उसकी खोपड़ी से फिसल गई थी, चमड़े का एक टुकड़ा लाल लत्ते की तरह उसके गाल पर लटक रहा था। खून की धारा उसकी वर्दी को लाल बनाये जा रही थी। ग्रीगर की आँखें भयभीत आस्ट्रियन की आँखों पर पड़ीं। वह बेचारा तुरन्त घुटने पर झुक गया और उसके कंठ से गल-गल करती कराह निकलने लगी। अपनी आंखों को मींच कर ग्रीगर ने अपनी तलवार फिर उस पर चला दी—इस वार ने उसके मस्तक को दो टुकड़ों में बांट दिया। बाँह फटकारते वह मुँह के बल ज़मीन पर आ रहा। सड़क के पत्थर से उसका सर जोरों से टकराया। उस आवाज से ग्रीगर का घोड़ा चौंका और उसे लेकर भागा।

शहर की गलियों में लगातार गोलियाँ चल रही थीं। ग्रीगर की

बगल से एक घोड़ा अपने मरे हुए कोज़ाक सवार को घसीटे भागा जा रहा था उसका एक पैर रेकाब में उलझा था और सर और शरीर सड़क पर टकराते, रौंदाते, जा रहे थे।

ग्रीगर का सर शीशे की तरह भारी मालूम पड़ता था। वह घोड़े से उतर कर सर ज़ोरों से हिलाने लगा। उसी समय कुछ कोज़ाक एक घायल अफसर को लादे, आस्ट्रियन कैदियों का एक बड़ा झुंड लिये उसकी बगल से निकल गये। घोड़े की लगाम उतारे वह कहां से उस जगह आया। जहां उसने आस्ट्रियन सैनिक को मारा था।

वह आदमी कहीं पड़ा हुआ था उसने इस तरह हाथ फैला दिए थे, मानो वह भीख मांग रहा हो। ग्रीगर ने उसके चेहरे को देखा छोटा-सा चेहरा, जैसे बच्चे का हो—यद्यपि उसकी बड़ी-बड़ी मूँछें थीं और उसके मुँह से कठोरता झलकती थी।

"हैं—तुम हो!" एक कोज़ाक अफसर ने उसकी ओर पुकारा।

ग्रीगर ने उसकी ओर देखा और अपने घोड़े को लेकर वहां से चल दिया। उसके पैर में जैसे किसी ने बोझे बांध दिये हो, जैसे वह अपने सर पर बहुत बड़ा गट्ठर लिये हुए हो—उसके पैर उठते न थे। पश्चाताप और भौंचक्कापन उसकी आत्मा को जैसे कुचले जा रहे हो। घोड़े के रेकाब को उसने हाथ से पकड़ा, लेकिन बड़ी देर तक वह अपना पैर उस पर नहीं दे सका!

७

कोज़ाकों की एक तीसरी कम्पनी तैयार की गई थी, जिसमें मिटका कौरशुनौव की भर्ती हुई थी। वह कम्पनी भिलना ले जाई गई थी। एक दिन शाम को उस कम्पनी के कोजाक सैनिक गा रहे थे—

"एक कोज़ाक दूर देश में गया।
अपने घोड़े पर चढ़े, मैदानों को कुचलते।

"हाय, उसका अपना गांव कितना पीछे छूट गया।" चांदी-सी आवाज़ हवा पर वृक्ष-सी झर रही थी—

"आह, अब फिर वह गांव न लौटेगा!" स्वर में तेजी से चढ़ाव होने लगा—

"व्यर्थ ही उसकी युवती कोज़ाक प्रेयसी।

उत्तर पश्चिम की ओर सुबह और शाम को टकटकी लगाये रहती है।

इस आशा में कि उसका प्यारा कोज़ाक लौटेगा,

लौटेगा उस अज्ञात भूमि से और फिर उसे नहीं छोड़ेगा।"

कई आवाजें मिलकर अब गीत को घरेलू स्मरण की तरह भारी और तेज़ बना रही थीं—

"लेकिन उस पहाड़ी के उस पार, जहाँ गहरी बर्फ है, जहाँ बर्फ के मैदान कड़कते हैं और आँधियाँ चलती हैं जहाँ चीड़ और देवदार के पेड़ झुकते और हिलते हैं कोज़ाक की हड्डियाँ बर्फ के नीचे दबी हुई हैं।"

वे आपस में कोज़ाकों की जिन्दगी की सरल कहानियाँ कह रहे थे और उनकी स्वर लहरी अप्रील की बर्फ-छुटी जमीन से बहुत ऊँचे उड़ने वाली लवा-चिड़ियों की आवाज़-सी दर्दीली हुई जा रही थी—

"जब कोज़ाक दम तोड़ रहा था; उसने आजिज़ी से कहा कि उसके ऊपर कब्र की जगह एक ऊँचा स्तूप बनाना और एक हैज़ल का पौधा उसकी जन्मभूमि से लाकर उसपर रोप दिया जाय—जो हमेशा कलियों और फूलों से लदा रहे।"

---

# ख

## १

पहली लड़ाई के बाद ग्रीगर एक भयानक भीतरी पीड़ा से परीशान रहता। वह दुबला होता जा रहा था, उसका वज़न कम हो रहा था, और हमेशा, चाहे चढ़ाई करते समय या आराम करते समय, सोते समय या जागते समय, उस आस्ट्रियन की तस्वीर उसकी आँखों में घूमा करती, जिसे उसने बगीचे के रेलिंग के नजदीक मारा था। सोते समय वह पहली लड़ाई के ही सपने देखता और उसे ऐसा लगता कि दूसरे आस्ट्रियन के कलेजे में क्यों अपने बर्छे को पकड़े हुआ है। जग कर वह आँखें मींच सर हिलाता और उस सपने को जल्द भुलाने की कोशिशें करता।

घुड़सवारों ने फसल से भरे खेतों को बुरी तरह रौंद डाला था। मालूम होता था, मानो समूचे गैलीसिया में बड़े बड़े ओले गिरे हों। गोले-गोली ने ज़मीन के चेहरे को शीतला के दाग़ से भर दिये थे। जगह-जगह लोहे और इस्पात के टुकड़े ख़ून के प्यासे दीखते। रात में ज्वालायें धधक उठतीं—पेड़, खेत, गाँव, शहर सब पर बिजली दौड़ती सी मालूम होती।

अगस्त महीना खत्म हो रहा था। बगीचों के पत्ते पीले पड़ रहे थे, खेतों के बाल गमगीन भूरापन लिये हुए थे। आत्मा से देखने पर मालूम होता पेड़ों में ज़ख्म ही ज़ख्म है घावों से खून की धारा बह रही है।

ग्रीगर ने अपने दोस्तों में हुए परिवर्तन को महसूस किया। प्रोखर जीकोव अस्पताल से अपने गाल पर घोड़े के सुम का दाग़ और होठों पर पीड़ा और अस्तव्यस्तता की छाप लिये लौटा। उसकी पपनियाँ बार-बार गिरतीं। ग्रीगर ज़ारखौव कसमें खाता, गालियाँ देता और हर चीज़ में

बुराइयाँ ढूँढता। थमेलियन ग्रीगर के ही गाँव का एक काफी संजीदा कोज़ाक था—मालूम होता उसे किसी ने झुलसा दिया हो, वह काला पड़ गया था और बात बात पर हँस देता था, ऐसी हँसी जिसमें आनन्द की जगह करुणा होती।

उसके हृदय में लड़ाई ने जो लोहे के बीज बोये थे, उसके स्पष्ट चिह्न हर चेहरे पर दिखाई देते थे। नौजवान कोज़ाक कटी घास की तरह झुकते और सूखते जा रहे थे।

२

इस रेजिमेंट को तीन दिन की छुट्टी मिली और इसकी जगह डोन से आये नये कोज़ाकों ने ली। ग्रीगर और उसके साथी एक झील में इत्मीनान से नहाने जा रहे थे कि घुड़सवारों की एक पल्टन स्टेशन से गाँव की ओर जाती दिखाई पड़ी। जब वे लोग झील के बाँध पर पहुँचे, पल्टन पहाड़ी के नीचे उतरी। प्रोखर जीकोव अपनी कमीज उतारते हुए चिल्ला पड़ा—

"ओहो, वे तो कोज़ाक मालूम होते हैं, डोन कोज़ाक !"

ग्रीगर ने ध्यान से देखा सरकते हुए सांप की तरह घुड़सवारों की पाँत सड़क पकड़े उस ओर जा रही थी जहाँ चौथी कम्पनी के अड्डे थे।

"कमी पूरी करने को शायद नई पल्टन बुलाई गई है—" ग्रीगर ने कहा।

"देखो, देखो लड़के—जरूर वह स्टेपन अस्तोखोव है; वह अगली कतार की तीसरी रैंक में।" प्रोशेव चिल्लाया, हँसते हुए।

"और वह अनीकुश्का है !"

"ग्रीगर वह तुम्हारा भाई भी तो है, तुम नहीं देख रहे हो ?"

ग्रीगर आँखें फाड़कर उस घोड़े को पहचानने की कोशिश में था, जिस पर पियोत्रा सवार था। "शायद नया घोड़ा खरीदा है।" उसने

सोचा और अपनी आंखें भाई के चेहरे पर डालीं, उफ, वह कितना बदल चुका था !

ग्रीगर उससे मिलने चला—अपनी टोपी उतारे, उसे हिलाते। उसके पीछे अधनगे कोजाकों की पांत चली।

एक भारी भरकम कप्तान आगे-आगे उनका पथ प्रदर्शन कर रहा था। जब बगीचे से वे निकले, ग्रीगर अपने भाई को देखकर आनन्दमय हो गया और हँसते हुए चिल्ला पड़ा—

"अरे, पियोत्रा, भैया !"

"तुम्हें भगवान खुश रखें। कैसे हो ग्रीगर ? शायद कुछ दिनों हम लोग साथ रह सकें !"

"बहुत मज़े में !"

"तुम अभी तक ज़िन्दा हो !"

"हाँ, किसी तरह।"

"घर के लोगों ने तुम्हें आशीर्वाद-प्रणाम कहा है।"

"वे कैसे हैं ?"

"अच्छी तरह।"

पियोत्रा अपनी हथेली घोड़े की पीठ पर रखकर अपनी पूरी देह जीन पर से घुमाकर ग्रीगर को देखता रहा जब तक कि वह आगे बढ़ न गया, और पीछे के कोज़ाक सवारों से छिप न गया।

थोड़ी ही देर में ये लोग भी झील में नहाने पहुँचे। झील के किनारे कीचड़ में बैठे, अपनी कमीज़ के चीलड़ों को मारता ग्रीगर बोला—

"पियोत्रा, मैं मर चुका, मेरी रूह मर चुकी। समझ लो, मैं क़त्ल कर दिया गया। मालूम होता है, मैं चक्की के दो पाटों के बीच में हूं, उन्होंने मुझे कुचल डाला है और थूक डाला है।" उसकी आवाज़ भर्राई भरी हुई थी। उसके ललाट पर गहरी रेखायें बनती और बिगड़ रही थीं।

"क्यों क्या बात है ?" पियोत्रा ने अपनी कमीज उतारते हुए पूछा।

"बात यों है", ग्रीगर की आवाज़ में कटुता आ रही थी और वह तेज़ी से बोल रहा था। "उन लोगों ने हमें तो लड़ने और एक दूसरे की गर्दन काटने को छोड़ दिया है, लेकिन, वे खुद दिखाई नहीं देते। आदमी भेड़िये से भी बदतर बनता जा रहा है। चारों ओर बुराई ही बुराई नज़र आती है। मालूम होता है, अगर किसी आदमी को मुझे मुँह से काटना पड़े, तो वह पागल हो जायगा।"

"क्या तुमने किसी की...हत्या की है!"

"हाँ"—ग्रीगर चिल्ला उठा और अपनी कमीज़ ज़मीन पर पटक दी। वह अपनी उँगलियों से अपने कंठ को यों बार बार पकड़ रहा था, जैसे उसकी बोलती बन्द हुई जा रही हो।

"बोलो।" पियोत्रा ने बिना उसकी ओर आँख उठाते हुए कहा।

"मेरी अन्तरात्मा मुझे मारे डालती है। मैंने अपना बर्छा एक के कलेजे में घुसेड़ दिया।...ज़रूर ही उत्तेजना में! दूसरा कोई चारा नहीं था। लेकिन मैंने दूसरे को क्यों क़त्ल कर दिया?"

"अच्छा?"

"अच्छा नहीं है, भाई! मैंने उसे क़त्ल तो कर दिया, लेकिन वह मेरी जान खाये जा रहा है, वह सूअर! वह काला नाग!! मेरे सपने में मेरे नज़दीक आता है। इसमें मेरा क्या कसूर था भला?"

"तुम्हें इसका अभ्यास नहीं था; गलती कहाँ थी?"

"क्या आप लोग हमारी कम्पनी में ही रहेंगे?"—ग्रीगर ने तुरत बात बदलते हुए कहा।

"नहीं, हम लोग २७ वीं रेजिमेंट में रखे जायँगे।"

"खैर हम लोग नहा तो लें।"

ग्रीगर ने जल्द अपना पाजामा उतार दिया। पियोत्रा ने देखा, वह अपनी उम्र से ज्यादा का मालूम हो रहा है। दोनों हाथ उठा कर वह बाँध से झील में कूद पड़ा। हरी तरंगें चारों ओर उठने लगीं। वह शान से

तैरता बीच में चला गया, जहाँ और कोज़ाक नहा रहे थे। पियोत्रा को अपनी गर्दन से सलीब और प्रर्थना के जंत्र मंत्र निकालने में देर हुई। फिर वह भी तैरकर ग्रीगर की ओर चला। दोनों तैरते झील के उस पार पहुँचे। पानी की ठंडक ने असर किया था, ग्रीगर बड़े संयम से बोला—

"चीलड़ों ने जान ले ली है। आह, मैं घर पर होता! इच्छा होती है, पंख होते तो उड़कर घर चला जाता। सिर्फ एक झलक के लिए! अच्छा, वे लोग कैसे हैं?"

'नाटालिया हम लोगों के साथ रह रही है।"

"मां और बाबूजी कैसे हैं?"

"बहुत मज़े से, लेकिन नाटालिया तुम्हारे इन्तज़ार में है। उसे अब भी उम्मीद है, तुम उसे अपनाओगे।"

ग्रीगर ने लम्बी सांस ली और पानी उछालने लगा। पियोत्रा ने अपने भाई की आँखें देखीं—

"तुम अपने खत में उसके लिए भी चंद अलफाज़ लिख देना। वह बेचारी तुम्हारे लिए ही जी रही है।"

"क्या टूटी गांठ भी जुड़ सकती है?"

"तुमने सुना नहीं—आशा की हद नहीं होती!...वह बड़ी भली लड़की है। काफी संयमी। वह किसी को अपने से खेलवाड़ नहीं करने देती।"

"वह क्यों नहीं दूसरी शादी कर लेती?"

"यह क्या बोल रहे हो?"

इसके बाद दुनिया के बारे में ग्रीगर ने पूछा। पियोत्रा ने बताया "वह तो जवान हो चली, तुम पहचान भी नहीं सकते। पारसाल उसकी शादी होगी, और हम एक बूँद शराब भी उसमें नहीं चख सकेंगे!" पियोत्रा ने आह भरी।

दोनों किनारे पर अगल-बगल लेट गये और धूप तापने लगे। अचानक ग्रीगर ने पूछा—"अक्सीनिया के बारे में कुछ सुना?"

"लड़ाई की घोषणा के पहले एक दिन गाँव में देखा था।"

"वहाँ क्या कर रही थी?"

"अपने पति से अपनी चीजें लेने आई थी।"

"आपकी उससे बातें हुईं?"

"हाँ, वह दिन भर रही। अच्छी और खुश दीख पड़ती थी, उसके दिन वहाँ मजे से कट रहे हैं, ऐसा लगता था।"

"और स्टेपन?"

"उसने उसकी चीजें एक-एक करके दे दीं। बड़ा ही शिष्ट बर्ताव किया। लेकिन तुम उसपर नजर रखना। मैंने सुना है, शराब पीने पर वह एक दिन तुम्हारे बारे में कसम खाकर कह रहा था कि लड़ाई के पहले ही मोर्चे पर मेरी गोली का वह शिकार होगा। वह तुम्हें क्षमा नहीं कर सकता।"

"मुझे मालूम है।"

इसके बाद घरेलू बातें फिर होने लगीं। बैल, घोड़े, फसल सब आये। ग्रीगर बड़ी उत्सुकता से खबरें सुनता रहा—एक बार फिर वह पुराना आनन्दी और सरल लड़का-सा मालूम पड़ने लगा।

जब वे कोज़ाकों के साथ लौट रहे थे, बगीचे के नज़दीक स्टेपन से भेंट हो गई। ग्रीगर को देखते ही वह बोल उठा—

"अच्छा, दोस्त!"

"हाँ, दोस्त!"—ग्रीगर ने अपना अपराधी चेहरा मुश्किल से उसके सामने किया।

"तुम मुझे भूल गये—क्यों?"

"करीब-करीब!"

"लेकिन मैं तुझे नहीं भूला हूँ।"—स्टेपन यह कहता, मुस्कुराता, बिना रुके, चलता बना रहा।

शाम को टेलीफोन से खबर आई—ग्रीगर की कम्पनी फिर मोर्चे की ओर चली। बिदाई के समय पियोत्रा ने अपने भाई की गर्दन में एक जंत्र-मंत्र बाँध दिया और ग्रीगर के हँस देने पर उसे डांटते हुए कहा—

"खबरदार, लड़ाई में सबसे आगे कूदने से अपने को रोकना। गरम खून वालों को मौत खोजती रहती है। अपने पर खयाल रखना।"

## ३

ग्रीगर की कम्पनी शहर के बाद शहर पर कब्ज़ा किये जा रही थी। अगस्त के अन्त में वह कामेंका शहर में डेरा डाले थी कि खबर हुई, दुश्मन की घुड़सवार सेना बढ़ी आ रही है। सड़क के किनारे के जंगलों में कई मुठभेड़ें भी हुईं जिनमें कुछ कोज़ाक भी काम आये।

भाई से मिलने के बाद ग्रीगर धीरे धीरे अपने को शान्त करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन, वह अब तक असफल रहा। इसी दरम्यान एक दिन उसकी सेना में रिक्तस्थान की पूर्ति के लिए कजान जिले का एक कोज़ाक आया। एलेक्सी यूरिपिन उसका नाम था—काफी लम्बा, गोल कंधे, नीचे का जबड़ा भारी, लम्बी दाढ़ी, आखों में निर्भीकता की मुस्कराहट और सर गंजा। आते ही उसका नाम लोगों ने 'मुस्तंग' रख दिया।

एक दिन ग्रीगर और यूरिपिन एक ही झोपड़े में बैठे थे। सामने के मैदान में कटी हुई लाशें पड़ी थीं। तुरत ही लड़ाई खतम हुई थी। अचानक यूरिपिन ने पूछा—

"ग्रीगर, तुम गलते क्यों जा रहे हो?"

"क्या मतलब?"

"देखते नहीं, तुम मुर्दे-सा दीख पड़ते हो, तुम बीमार हो?"

"नहीं, मैं अच्छा हूँ"—ग्रीगर ने थूक फेंकते हुए कहा।

"तुम झूठ बोल रहे हो! मैं साफ देखता हूँ, तुमपर भय का भूत सवार है, तुम मौत से डर रहे हो!"

"बेवकूफ!" ग्रीगर के मुँह पर घृणा थी।

"तुमने किसी को मारा है?"

"हाँ।"

यूरिपिन हँस पड़ा। उसने बताया कि उसी का यह असर है। फिर उसने अपनी तलवार ग्रीगर के सर पर उठाते हुए कहा कि मैं तुम्हारा प्राण ले सकता हूँ और मुझपर ज़रा भी इसका असर नहीं होगा। तुम्हारा दिल नाज़ुक है और हाथ भी साफ नहीं। सामने एक पेड़ था। वह झट अपनी तलवार लिये उस ओर बढ़ा और ऐसा तौलकर तिछीं करके तलवार मारी कि पेड़ के साफ दो टुकड़े हो गये! वह बोला—

"यह हाथ जानते हो? मैं तुम्हें सिखला दूँगा! तुम एक ही बार में घोड़े को दो टुकड़े कर सकते हो।"

यह हाथ सीखने में ग्रीगर को वक्त लगा। "तुम मजबूत हो, लेकिन तलवार चलाने में बेवकूफी हो।"—यूरिपिन उसे बता रहा था—"आदमी को ज़रा हिम्मत से काटो! आदमी तो मक्खन से भी ज्यादा कोमल होता है। उसका कत्ल—सबसे आसान। क्यों और किसलिए पर मत सोचो। तुम कोज़ाक हो—तुम्हारा काम है सिर्फ कत्ल किये जाना। दुश्मन को मैदान में कत्ल करना, यह सबसे बड़ा पुण्य है। जिस तरह साँप के मारने से भगवान खुश होते हैं, उसी तरह जितने आदमी का कत्ल करोगे, भगवान तुम्हारे उतने अपराध क्षमा कर देंगे। जानवर को बिना ज़रूरत मत मारो—लेकिन आदमी का नाश करो। आदमी अपवित्र होता है, ईश्वर-द्रोही होता है, वह संसार में जहर बोता है, उसकी ज़िन्दगी ज़हर की पुड़िया है! उसका नाश करो!"

ग्रीगर भयभीत हो उसकी बातें सुनता रहा। जब उसने विरोध ज़ाहिर किया, यूरिपिन ने मौन धारण कर लिया।

ग्रीगर ने आश्चर्य से देखा, यूरिपिन को देखकर घोड़े डर जाते हैं। ज्योंही वह उनके नज़दीक पहुँचता, घोड़े कान खड़े कर लेते और एक दूसरे से सट जाते, जैसे कोई खूंखार जानवर उनपर टूटने को है। अपने घोड़े पर यूरिपिन बड़ी मेहरबानी रखता, तो भी ज्योंही यह उसके नज़दीक जाता वह कांप उठता, आप ही आप अपनी पीठ नीचे कर देता।

"बताओ, ये घोड़े तुमसे क्यों डरते हैं?" ग्रीगर ने एक बार पूछा।

"मुझे मालूम नहीं, मैं उनसे बड़ी मेहरबानी से पेश आता हूं।"

"घोड़े शराबी आदमी को पहचानते और उनसे डरते हैं—लेकिन, तुम तो काफी संजीदा हो।"

"मेरा दिल कठोर है और शायद उन्हें इसका अहसास हो जाता है।"

"दिल तो तुम्हारा भेड़िये का है। शायद तुम्हारे पास दिल नहीं, पत्थर है।"

"हो सकता है!" यूरिपिन ने बेमन से कबूल किया।

४

भोर से ही अगले शहर पर चढ़ाई करने की बात थी। घुड़सवार सेना के संरक्षण में तोपखाने को सबसे से पहले ही जंगल से रवाना हो जाना चाहिये था। किन्तु, कहीं किसी से कुछ भूल हो गई और समूची योजना खाक में मिल गई।

बारहवीं रेजिमेंट की पांचवीं और चौथी कम्पनी जंगल में मुस्तैद की गई थी। लड़ाई की घनघोर आवाजें आ रही थीं। सबके कान खड़े थे। दाहिनी ओर से आस्ट्रियन तोपें वज्रनाद कर रही थीं। मशीनगन की ठाँय ठाँय बीच बीच में सुनाई पड़ती थी।

ग्रीगर ने अपनी कम्पनी की। ओर नज़र की कोज़ाकों के चेहरे पर

चंचलता थी, घोड़े चंचल थे, जैसे उन्हें बर्रें डँस रहे हों। यूरिपिन अपनी टोपी जीन पर रख कर गंजे सिर को पोछ रहा था। ग्रीगर की बगल में मीशा कोशेवाई तम्बाकू फूँके जा रहा था। रात भर के जागरण के बाद हर चीज़ में अधिक वास्तविकता मालूम पड़ती थी।

तीन घंटे तक कम्पनियाँ प्रतीक्षा में खड़ी रहीं। सिगरेट का स्टाक खत्म हो गया। दुपहरिया के कुछ पहले एक अफसर कुछ हिदायतें लाया। चौथी कम्पनी के कमान्डर ने अपने घुड़सवारों को एक तरफ कर लिया। ग्रीगर को लगा, जैसे धावा नहीं करके, पीछे हटने की तैयारियाँ हो रही हैं। बीस मिनट तक उसकी कम्पनी जंगल होकर घोड़े बढ़ाती गई। युद्ध की ध्वनि नज़दीक होती जा रही थी। उनसे थोड़ी दूर पर एक बैटरी आग उगल रही थी। कारतूस और गोले उनके सिर से ऊपर विकट शब्द कर रहे थे। जंगल की सँकरी राह में पांत तोड़ देनी पड़ी। वे अलग अलग चल कर जंगल से बाहर हुए। आधी मील पर हंगेरियन घुड़सवार रूसी तोपखाने के लोगों को तलवार के घाट उतार रहे थे!

'कम्पनी पाँत में"—कमाण्डर ने आवाज दी।

कोजाक इस हुक्म को अच्छी तरह पूरा भी नहीं कर पाये थे कि दूसरी आवाज सुनाई पड़ी—

"कम्पनी, तलवार निकालो, धावे पर, आगे बढ़ो।"

तलवार की काली वर्षा! तेज़ थी दुलकी—फिर छांदक में कोजाकों ने घोड़े दौड़ाये।

छः हंगेरियन घुड़सवार बैटरी की दाहिनी आखिरी छोर पर एक फील्डगन के घोड़ों से उलझे हुए थे। एक तोपखाने के घोड़ों को घसीटने की कोशिश कर रहा था, दूसरा अपनी तलवार को उलटकर उनकी पीठ पर मार रहा था, और बाकी गाड़ी के पहियों में जोर लगा रहे थे। एक अफसर लाल रंग की घोड़ी पर चढ़ा इनके कामों की निगरानी कर रहा

था। कोजाकों को देखते ही अफसर ने हुक्म दिया और सभी सवार अपने घोड़ों पर जा चढ़े।

ग्रीगर अपना घोड़ा दौड़ाये उनकी ओर बढ़ रहा था कि उसने अनुभव किया उसका एक पैर रकाब से निकल गया है। भय से झुककर उसने जब तक अपना पैर रकाब में ठीक किया, कि सर उठाते ही उसने उन छः सवारों और फील्डगन को अपने सामने देखा। उनमें से जो सबसे आगे था, वह खून से लतपथ अपने घोड़े की गर्दन पकड़े लेटा हुआ था। ग्रीगर के घोड़े का सुम एक मरे हुए तोपची के शरीर पर कच से पड़ा। दो और आगे मरे पड़े थे। एक तोप-गाड़ी पर सर लटकाये दम तोड़ रहा था। ग्रीगर की कम्पनी का एक कोजाक घुड़सवार उसकी बगल में ही था। हंगेरियन अफसर ने अपना रिवाल्वर उसपर नजदीक से चलाया—हाथ फैलाकर, जैसे वह हवा का आलिंगन ले रहा हो, कोजाक गिर पड़ा। ग्रीगर ने लगाम खींच ली और दाहिनी ओर से उस अफसर के नजदीक जाने की कोशिश की, जिसमें अपनी तलवार तौलकर वह चला सके। लेकिन उस अफसर ने ग्रीगर की चाल समझ ली और उसपर अपने रिवाल्वर से दनादन गोलियाँ चलाने लगा। फिर उसने अपनी तलवार खींच ली और बड़ी फुर्ती से उसके तीन वार किये। ग्रीगर रिकाब पर खड़ा था तो भी उसके आगे बढ़ा। दोनों के घोड़े अगल-बगल उछल रहे थे। ग्रीगर ने हंगेरियन अफसर की सफाचट, भूरी ठुड्ढी देखी और उसके कालर में टँका अफसरी का बिल्ला भी देखा। उसने मुगालता देकर अफसर का ध्यान बँटाया और झट अपनी तलवार उसकी गर्दन में घुसेड़ दी; फिर दूसरा वार उसकी गर्दन के पीछे रीढ़ की जोड़ के नजदीक किया। अफसर के हाथों से उसकी तलवार और लगाम गिर गई। वह जीन पर आगे झुक गया। झट ग्रीगर ने एक तलवार उसके सर पर भी लगा दी, जिसने उसके कान के ऊपर की हड्डी के दो टुकड़े कर दिया।

उसी समय उसके सिर पर पीछे से ऐसी चोट हुई कि उसका होश

काफूर होने लगा। उसने अपने मुँह में खून का जलता नमकीन स्वाद अनुभव किया और उसे लगा कि वह गिर रहा है। एक तरफ से जमीन उठती और उसकी ओर बढ़ती मालूम पड़ी। जब उसका मोटा शरीर जमीन पर धम्म से आ रहा, तब उसे यथार्थता मालूम हुई। उसने आँखें खोलीं— खून उनमें भरने लगा। कानों के नजदीक कुचलन और घोड़े की भारी साँस की आवाज! जब आखिरी बार उसने आँखें खोलीं एक घोड़े का नथुना और रेकाब पर किसी का पैर दिखाई पड़ा। 'बस, खत्म'—यह विचार उसके दिमाग में साँप की तरह रेंग गया। एक चिल्लाहट—फिर काली शून्यता!

---

## ग

### १

अगस्त के मध्य में यूजेन लित्सनिस्की ने तय किया कि वह आतापन लाइफगार्ड से किसी बाजास कोज़ाक फौज की रेजिमेंट में अपनी बदली करवाये। उसने दरखास्त दी, तीन सप्ताह के अंदर मंजूरी आ गई। उसने अपने बूढ़े बाप को इसकी खबर कर दी और उनका आशीर्वाद माँगा।

पीटर्सबर्ग से जो गाड़ी वार्सा को जाती थी, उसपर वह रवाना हुआ। स्टेशन पर सैनिकों की भीड़ लगी थी। उसके पीछे धुँधली रोशनी में पीटर्सबर्ग जम्हाई-सा ले रहा था।

गाड़ी में अपनी वर्दी उतार, एक कोज़ाक कम्बल बिछाकर वह लेट गया। उसके सामने के बेंच पर एक पादड़ी बैठा था, दुबला-पतला, साधु जैसा चेहरा। उसकी बगल में एक लड़की बैठी थी, लम्बी, खूबसूरत। आँखें मूँदने पर लित्सनिस्की के कानों में आवाज़ आ रही थी—

"मेरे परिवार की आमदनी बहुत ही थोड़ी है। इसी से मैंने फौज में पादरी का काम लिया है। रूस की जनता बिना धार्मिक विश्वास के लड़ नहीं सकती। और ज्यों ज्यों वर्ष बीतते हैं, उसका विश्वास भी बढ़ता जाता है। हाँ, बहुत लोग हैं, खासकर पढ़े लिखे लोग, जो नास्तिक हो जाते हैं, लेकिन किसान तो भगवान से चिपके रहते हैं।"

धीरे धीरे पादड़ी की सुरीली आवाज़ नहीं सुनाई पड़ने लगी। दो रात तक वह जगा हुआ था। लेटने के बाद तुरंत नींद आ गई। उसने जब आँखें खोलीं गाड़ी पीटर्सबर्ग से २५ मील आगे निकल आई थी। गाड़ी

के पहिये से खट्खट्, खट्खट् की ताल-युक्त, आवाज़ आ रही थी। डब्बे इधर उधर हिल रहे थे। पड़ोस के कमरे से गाने की आवाज़ सुनाई पड़ती थी।

२

जिस रेजिमेंट में लित्सनित्स्की की भर्ती हुई थी उसके काफी लोग मर चुके थे। वह मोर्चे से अलग कर ही गई थी और आदमियों की पूर्ति की जा रही थी। एक नाम-रहित स्टेशन पर वह गाड़ी से उतरा। वहीं एक फौजी अस्पताल के लोग भी उतरे थे। जब लित्सनित्स्की उसके डाक्टर से मिला, वह अपने अफसरों की शिकायतें कर रहा था। अपनी दाढ़ी को हाथों से चीरता, चश्मे के भीतर से जलती आंखों से घूरता इस नवीन परिचित पर वह अपना क्रोध उतार रहा था।

लित्सनित्स्की जब रेजिमेंट के हेडक्वार्टर की ओर जा रहा था, उसने रास्ते में एक घोड़े को सड़क के किनारे खड्ड में पड़ा देखा। वह उलट गया था, उसका एक सुम आस्मान की ओर उठा था, जिसकी नाल सूर्य की रोशनी पड़ने से चमक रही थी। लित्सनित्स्की उसे घूर कर देखने लगा। उसके साथ जो अर्दली जा रहा था, उसने कहा—

'इसने ज्यादा खा लिया था। अनाज में पड़ गया होगा। यह पड़ा है और किसी ने इसे गाड़ भी नहीं दिया। यही रूसी आदत है। जर्मनी में ऐसा नहीं होता।"

यूजेन को इससे बड़ा क्रोध हुआ। अर्दली के चेहरे पर बड़प्पन और अपमान की भावना देख तो वह और जल उठा। घिसे पैसे की तरह उसका चेहरा था, बिलुल किसान! "तुम यह कैसे जानते हो"—लित्सनित्स्की ने गुस्से में पूछा। उसने बिल्कुल लापरवाही से जवाब दिया—"लड़ाई से पहले मैं तीन वर्ष जर्मनी रह चुका हूं।"

"चुप रहो"—कह कर लित्सनित्स्की ने उसे डांट दिया। दोनों अपने

घोड़ों पर चुपचाप जा रहे थें, लेकिन घोड़ों की चमकती नाल जैसे यूजेन की आंखों को रह रह कर चौंधिया देती थी।

रास्ते में घायल कोज़ाको का एक काफला मिला। एक बूढ़ा कोज़ाक सिर पर पट्टी बाँधे, कमीज को खून से लतपथ किये, गालियाँ और शाप बकता जा रहा था। एक डब्बे में तीन नौजवान बैठे थे, उन्होंने यूजेन को देखकर, उसे अफसरी वर्दी में रहते हुए भी, ज़रा भी सम्मान नहीं दिखलाया, उल्टे उनके चेहरे खिंच गये।

लित्सनिस्की की नई रेजिमेंट के कमाण्डर एक गाँव में एक पादड़ी के घर में डेरा डाले हुए थे। टेबुल पर फिरानी बैठे थे। एक अफसर फोन पर हँस रहा था। घर में मच्छर भन्न भन्न कर रहे थे। कमाण्डर ने बताया कि उसकें आने की सूचना उसे मिल चुकी थी। उससे राजधानी की खबर पूछ, बहुत और बातें की। किन्तु उसकी बातों में एक अजीब उदासी, थकावट और मुर्दापन दिखाई पड़ता था। मालूम होता है, मोर्चे पर इसे बड़े बुरे दिन दीखने पड़े हैं, यूजेन ने सोचा। इसी समय वह जम्हाई लेते बोल उठा—

"अच्छा, लेफ्टिनेन्ट, अब तुम अपने साथी अफसरों से मिलो। माफ करना मैं तीन रोज से सोया नहीं हूँ। इस काल कोठरी में सिवा ताश खेलने और शराब पीने के और कुछ नहीं हो सकता।"

लित्सनिस्की सलामी देकर अपने अपमान को हँसी में छिपाने की कोशिश करता वहाँ से चलता बना।

## ३

एक रात एक घमासान के बाद वह रेजिमेंट एक गाँव में ठहरा। बारह अफसर एक ही झोपड़े में कसे हुए थे। थकावट से चूर, भूखे ही, वे सो गये। बारह बजे के लगभग जब खाना पहुँचा, सब निगलने लगे। दो दिनों की गहरी लड़ाई के बाद यह खाना कितना मीठा लग रहा था!

पेट भरने पर गपें चलने लगीं। कालमिकोव नामक एक अफसर, जिसकी बोली और चेहरा बताते थे कि वह मंगोल है, बोला—

"भई, यह लड़ाई मेरे लिए नहीं है। मैंने चार सदी पीछे जन्म लिया है। लड़ाई के अखीर तक मैं ज़िन्दा नहीं रह सकता।"

"ज्योतिष की बातें बन्द करो।"

"यह ज्योतिष की बात नहीं, मैं अपना अन्त देख रहा हूं। जब मैं आज गोलियों के बीच में था, मैं थरथर काँप रहा था। मैं दुश्मन को नहीं देखूँ, और खड़ा रहूँ, यह मुझसे हो नहीं सकता। वे कई मील दूर से तुम पर आग बरसाये जा रहे हैं और तुम निरीह शिकार की तरह भुन रहे हो। पिछले ज़माने की लड़ाई अच्छी थी।" लित्सनित्स्की की ओर मुख़ातिब होकर उसने कहा—"जब तुम दुश्मन के आमने-सामने खड़े होओ और तुममें जो बहादुर और चतुर हो वह दूसरे के दो टुकड़े कर दे। यही लड़ाई मैं समझ सकता हूँ। लेकिन आज की लड़ाई—शैतान ही इसे समझे!"

"लेकिन भविष्य में घुड़सवार सेना का नामनिशान न रहेगा।" दूसरे अफसर ने कहा।

"लेकिन मशीन आदमी की जगह नह ले सकता। तुम कुछ बहक गये।"

"मैं आदमी के बारे में नहीं कहता, घोड़े के बारे में कहता हूँ। मोटर साइकिल और मोटर कार घोड़ों की जगह लेंगे।"

"मैं मोटर-सेना की भी कल्पना करता हूँ।"

"यह सब फालतू बातें हैं।" कालमिकोव ने उत्तेजित होकर कहा। झूठी कल्पना! दो तीन सदी में लड़ाई का रूप क्या होगा, मैं नहीं जानता, लेकिन आज तो घुड़सवार..."

"जब चारों ओर खाइयाँ होंगी, घुड़सवार सेना क्या कर लेगी? बताओ!"

"वे खाइयों को पार कर जायँगे, तड़ग जायँगे और दुश्मन के पीछे पहुँचकर उनका खात्मा कर देंगे।"

"एकदम गलत !"

"चुप रहो, और सोने चलो।" एक ने कहा।

बातें बन्द हुईं। नाकें बजने लगीं। लित्सनिस्की चित्त लेटा था, नीचे प्रघाल से तीखी गंध आ रही थी। कालमिकोव उसकी बगल में ही पड़ रहा।

"तुम जरा बालैंटियर बंचक से बातें करना, "उसने यूजेन के कान में कहा "वह तुम्हारे ही दस्ते में है, बड़ा ही दिलचस्प आदमी।"

"किस तरह ?"

"वह एक कोजाक है जो रूसी हो गया है। वह मास्को में मजदूर का काम करता था। लेकिन मशीन से उसकी खास दिलचस्पी है। वह फर्स्ट क्लास का मशीनगन चलाने वाला है।"

"अच्छा, हम सोयें। लित्सनिस्की ने कहा।

## ४

यूजेन लित्सनिस्की बंदूक के बारे में कही, कालमिको की बात भूल ही गया था कि संयोग ने उसे उसका साथ करा दिया। रेजिमेंट के कमान्ड ने उसे हुक्म दिया कि सबेरे वह उठकर दुश्मन का पता लगाने के काम पर जाय और यदि हो सके तो पैदल रेजिमेंट से सम्बन्ध स्थापित करे जो बायें बाजू बढ़ रही थी। यूजेन ने सारजेंट को सोते से उठाया और आज्ञा दी कि शीघ्र पाँच घुड़सवारों को मेरे साथ जाने को तैयार करो, एक मेरे घोड़े को भी तैयार करके मँगाओ। जब वह उन आदमियों की प्रतीक्षा में था, एक मोटा कोज़ाक उसके नजदीक आया और कहा—"हूजूर, मुझे भी आप साथ ले चलिये। मेरी बारी नहीं है इसलिए सर्जेंट शायद मुझे न जाने दे, कृपया आप खास हुकुम दीजिये।"

"क्या तुम तरक्की के लिए उतावले हो ? या और कोई बात है ?" अंधेरे में भी उसके चेहरे को पहचानने की चेष्टा करते हुए लित्सनिस्की ने कहा।

"मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया है।"

"अच्छी बात, तुम चल सकते हो।" यूजेन ने कहा। जब वह कोज़ाक चलने को मुड़ा, उसने पुकारा—

"ऐ, सर्जेंट से अपना···"

"मेरा नाम बंचक है हजूर !"

"वालेंटियर ?"

"हाँ !"

अब यूजेन जैसे चौंका। उसने उसे दूसरे ढंग से कहा—"अच्छा बंचक; मेहरबानी करके सरजेंटसे···खैर, मैं खुद ही कह दूँगा।"

लित्सनिस्की आदमियों के साथ बाहर निकला। जब वे कुछ दूर निकल जा चुके ! उसने पुकारा—

"वालंटियर बंचक !"

"हजूर !"

"तुम अपने घोड़े को मेरी बगल में ले आओ।"

बंचक जब उसके नजदीक आया, उसने पूछा—"तुम किस जिले से आये हो।"

"नेवो चेरकास से।"

"तुम क्यों वालंटियर में भर्ती हुए, क्या मुझे बता सकोगे ?"

"जरूर"—बिना किसी मुस्कराहट के बंचक ने जवाब दिया। उसकी हरी अपलक आँखें कठोर और दृढ़ थीं। "मुझे युद्ध विद्या से अनुराग है, मैं उसे अच्छी तरह जानना चाहता हूँ।"

"इसके लिए तो फौजी स्कूल हैं ही।"

"मैं पहले उसे कार्य रूप में समझ लेना चाहता हूँ, उसके सिद्धान्त पीछे पढ़ लूँगा।"

"लड़ाई के पहले तुम क्या काम करते थे?"

"मजदूर था।"

"कहाँ पर?"

पिटर्सबर्ग, रौस्टव और तुला के शास्त्रागार में। मैं चाहता हूं, अपनी बदली मशीनगन के विभाग में करा लूँ।"

"मशीनगन के बारे में कुछ जानते हो?"

बार्रिचर, मेडसन, मैक्सिम, हौचकिस, वीकर्स, लुइस और कई दूसरी तरह की मशीनगनों को चलाना जानता हूँ।"

"ओहो; मैं कमान्डर से इस बारे में कहूँगा।"

"आपकी मेहरबानी होगी।"

लित्सनिस्की ने फिर एक बार वंचक की ओर गौर से देखा। वह तगड़ा और मोटा था, लेकिन उसमें कोई खूबी और खासियत नहीं दिखाई पड़ती थी। सिर्फ उसके कसे हुए जबड़े और उसकी आँखें उसे दूसरे कोज़ाकों से भिन्न करती थीं। वह कम मुस्कुराता था, सिर्फ उसके ओंठ धनुषाकार हो जाते थे। आंखों में कोमलता का सर्वथा अभाव था—वे हमेशा चमकती-सी दीखती थीं। दोन के किनारे के धौर्क-एम पेड़ की तरह उसमें रुखाई और इस्पातपन स्पष्ट आभासित होता था।

दोनों अब चुपचाप अगल बगल जा रहे थे। सामने चीड़ का जंगल था, जिस पर भोर की किरणें जगमगाकर रही थीं। घास पर की ओस अभी सूखी नहीं थी। दूर से आस्ट्रियन तोपों की गड़गड़ाहट सुनाई पड़ती थी। लित्सनिस्की दूरबीन लगाकर निरीक्षण कर रहा था कि एक गोली ऊपर के वृक्ष की डाल पर लगी और वह टकरा कर उसकी गर्दन पर गिर पड़ी। दोनों घोड़े उछालते गाँव की ओर भागे।

५

इसके बाद लित्सनिस्की को वालेंटियर बंचक से कई बार मिलने का मौका मिला। हर बार उस साधारण सूरत के आदमी की आँखों में चमकने वाली असाधारण इच्छा-शक्ति से वह प्रभावित हुआ। पर्दे में क्या चीज थी, वह चाह कर के भी जान न सका। वह हमेशा अपने होंठ दाब कर बोलता और हमेशा ही अपने को खतरे की राह पर रखने की कोशिश करता। एक दिन जब रेजिमेंट विश्राम कर रहा था, उसने बंचक को एक जले झोपड़े के नजदीक टहलते हुए पाया।

"आहा—वालंटियर बंचक।" वह बोला।

कोज़ाक ने सर घुमाया और उसे सलामी दी।

"कहाँ जा रहे हो?"—यूजेन ने पूछा।

"चीफ कमांड के पास।"

"मैं भी उसी तरफ चल रहा हूँ।"

दोनों उस उजाड़ गाँव की गली से चुपचाप चलते रहे। फिर लित्सनिस्की ने अपने पीछे पीछे चलने वाले बंचक की ओर जरा मुड़कर पूछा—"क्यों युद्ध-विद्या सीख रहे हो।"

"हाँ, सीख रहा हूँ।"

"लड़ाई के बाद तुम क्या करने का सोच रहे हो?"

"जो बोया जा रहा है, उसे कोई काटेगा...लेकिन मैं तब देखूँगा।"

"इसका क्या मानी?"

"आप यह कहावत तो जानते ही हैं—'जो आँधी बोता है, वह तूफ़ान काटता है।"

"यह तो बुझौवल हो गई।"

"इतने में ही बात साफ है। माफ कीजिये, मुझे अब बाईं ओर जाना है।"

वंचक ने अपनी टोपी के सिरे पर अपनी उगली रखी और सड़क से मुड़ गया। अपने कंधे हिलाता लिस्तनिस्की उसकी ओर घूर कर देख रहा था।

"यह आदमी अपने को मौलिक दिखाने की कोशिश करता है, या इसके भीतर कोई रहस्य छिपा है?" वह चिड़चिड़ाता हुआ सोच रहा था।

---

## घ

### १

सुरक्षित सेना की दूसरी और तीसरी पाँत भी युद्धभूमि में बुला ली गई। डोन किनारों के जिलों और गाँवों में मर्दों की इस कदर कमी थी कि मालूम होता था वे खेत की कटनी करने गये हों।

लेकिन सबसे बुरी कटनी तो उस साल मोर्चे पर हो रही थी। पकी फसल की तरह कोज़ाक काटे जा रहे थे उनकी बीवियाँ बाल खोले सर पीटती और चिल्लातीं—"प्यारे मेरे, मुझे छोड़ कर कहाँ चल दिये?" प्यारे सर कटा रहे थे, कोज़ाक खून जमीन को लाल बना रहा था, चमकती आँखें हमेशा के लिए मुड़कर आस्ट्रिया, पोलों और रूसिया में तोप के ढूहों के नीचे पड़ रही थीं। पूर्वी हवा उनकी माँ और बीबी की क्रन्दनध्वनि उनके कानों में पहुँचाने से असमर्थ हो रही थीं।

सितम्बर का एक सुहावना दिन था। तातारस्क गाँव के ऊपर धुँधला धुँधला सुफेद कुहरा सा छाया हुआ था। बेन्दर सूरज रँडुआ की हँसी हँस रहा था; कुँभारे नीले आसमान की स्वच्छता और घमंड मन में वितृष्णा पैदा करती थी। डोन के उस पार के जँगल को जैसे पियरी रोग हो हो गया था—पीले पीले बदसूरत पत्ते झड़ रहे थे।

उसी दिन पैंतलीमन को फौजी दफ्तर से एक खत मिला। दुनिका उस खत को डाकघर से लाई।

"किसके पास से,—ग्रीगर का या पियोत्रा का?"

"नहीं बाबूजी, मैं इसकी लिखावट नहीं पहचानती।"

"पढ़ो—"इलिनियता ने बेटी से कहा। उसके पैर में इन दिनों जोरों

का दर्द था। आगन से नाटालिया दौड़कर आई और चूल्हे के नज़दीक एक ओर सर झुकाये बैठ गई—कुहनी से अपनी छाती दबाये उसके होठों पर मुस्कराहट काँप रही थी। वह अपनी भक्ति और पवित्रता के पथ पर अपने पति से अपने बारे में कुछ चर्चा सुनने की शाश्वत आशा में थी।

"दारिया कहां है ?"—इलिनियना ने धीमे से पूछा।

"चुप रहो"—पैंतेलीमन चिल्लाया।" पढ़ो"—उसने दुनिका को हुक्म दिया।

"मैं आपको खबर देता हूँ" उसने शुरू किया, फिर जिस बेंच पर बैठी थी, उससे नीचे लुढ़क कर, वह चीख उठी—

"बाबूजी ! भैया......छोटा, भैया...हमारा ग्रिश्का......! आह! हमारा...ग्रिश्का...मारा गया।"

एक भय नाटालिया के चेहरे पर कौंध गया यद्यपि उसके होठों पर अब तक कम्पित मुस्कान थी। अपना सर उठा कर, लकवे की तरह जिसे हिलाता, पैंतेलीमन भौंचक होकर दुनिका को घूर रहा था, जो सेहन पर बेतरह लोट रही थी।

वह सूचना भी थी—

"मैं आपको खबर देता हूँ कि आपका बेटा ग्रीगर, जो कोज़ाकों की बारहवीं रेजिमेंट में था, २९ अगस्त को कामेंस्का शहर के नजदीक मारा गया। आपका बेटा बहादुर की मौत मरा, आशा है, इसकी कल्पना आपको इस असहनीय दुख को बर्दाश्त करने में मदद देगी। उसकी व्यक्तिगत चीजें उसके भाई पियोत्रा को दे दी जायँगी। उनका घोड़ा रेजिमेंट के साथ रहेगा।

कमान्डर, चौथी कम्पनी,......११ अगस्त, १९१४।

( २ )

चिट्ठी मिलने के बाद पैंतेलीमन की अजीब हालत हुई। वह रोज़

रोज़ बूढ़ा होता जाता। उसे कोई बात याद नहीं रहती; उसके दिमाग में धुआँ छाया रहता। वह झुक कर चलता, चेहरे पर लोटे की निर्जीविता। आँख का धुँधलापन दिमाग की उलझनों को प्रगट करता उसके बाल जल्द जल्द उजले होने लगे—दाढ़ी सुफेद। बढ़ने लगी। वह बहुत खाता और निगलता जाता।

उस चिट्ठी को किताबों के बीच सलीब के नीचे वह रखे रहता। कई बार वह दुनिका को उस चिट्ठी को पढ़ने की आज्ञा देता। लेकिन हर बार अपनी बीबी पर नज़र रखता कि कहीं वह नहीं देख व सुन ले 'धीरे धीरे पढ़ो, जैसे तुम खुद पढ़ रही हो!" अपने आंसूको को जब्त किये दुनिया उसका पहला वाक्य पढ़ती, पैंतेलीपन झट अपना भूरा हाथ उठा कर कहता—

"बस, हो गया! मैं समझ गया। तुम उसे कहीं रख आओ। जल्द जाओ, नहीं हो तुम्हारी माँ......" फिर उसकी पलकें जल्द-जल्द गिरने लगतीं।

हर व्यक्ति पर इस प्रहार का अपने ढंग का असर हुआ—हर अपने घाव को अपनी तरह से चाटता।

जब नाटालिया ने दुनिया को चिल्लाकर कहते सुना: ग्रीगर मारा गया, वह आंगन में दौड़ गई। "अब मैं अपने को खत्म कर लूगी। अब मेरे लिए कुछ इस दुनिया में नही रह गया।"—यह खयाल उसके दिमाग में आग सी धूधू करने लगा। दारिया ने उसे पकड़ लिया, वह निकलने की कोशिश करने लगी। इसी समय उसे बेहोशी आ गई—ऐसी बेहोशी जिसकी इच्छा सभी पीड़ित करते हैं—थोड़ी देर तक सभी दुख भुला देने वाली बेहोशी! जब उसे होश हुआ, भयानक विचार हूहू करने लगे। फिर बेहोशी का एक सप्ताह तक वह इसी तरह होश और बेहोशी के झूले में झूलती रही। फिर एक करुण शान्ति उस पर छा गई।

मालूम होता था, मेलेखोव के झोपड़े पर कोइ अलक्षित प्रेतात्मा

सवार हो गई है। जो जिन्दा थे, उनका भी दम जैसे घुटा जा रहा था।

( ३ )

ग्रीगर की मौत की खबर के बारह दिन बाद पैंतेलीमन के नाम दो खत आये। दुनिया ने दोनों खतों को डाक घर में ही पढ़ लिया था। पियोत्रा ने उन्हें लिखा था पढ़ते ही दुनिया पतंगे की तरह यहाँ से उड़ी—दौड़ती, हाँफती, गिरती पड़ती वह अपने घर के घेरे के नजदीक रुकी। उसकी इस हरकत से गाँव में खलबली मच गई। ग्रिश्का जिन्दा है -मेरा प्यारा भाई जिन्दा है।"—वह सिसकारियाँ भरती, चिल्लाये जा रही थी। पियोत्रा ने लिखा है—"ग्रिश्का घायल हो गया था, वह मरा नहीं था, वह जिन्दा है, जिन्दा है!"

अपने खत में पियोत्रा ने लिखा था—

"अभिवादन, समूचे पत्र परिश्क को! मुझे आपको यह खबर देते खुशी हो रही है कि ग्रिश्का ने अपनी जान भगवान के हाथों में दे दी थी, लेकिन वह मरा नहीं। भगवान ने उसे बचा दिया, वह जिन्दा है, भला चंगा है। एक लड़ाई में उसके साथियों ने देखा कि एक हंगेरियन अफसर ने उस पर तलवार चलाई, वह गिर गया और तब से मान लिया गया कि वह मर गया। लेकिन, उसके बाद, मिशा कोशवाई ने मुझे बताया है, कि बाद में होश आये पर वह कहाँ से रेंगता हुआ आगे बढ़ा और तारे देख कर अपनी छावनी की ओर चला रास्ते में एक अफसर घायल पड़ा था जिसे भी वह चार मीलों तक ढोकर छावनी तक ले आया। इस बहादुरी पर उसे सेंटजोजी का तमगा मिला है और वह कप्तान बना दिया गया है। उसका घाव भी भर रहा है और शीघ्र ही वह फिर मोर्चे पर जायगा। यह खत जीन पर से लिख रहा हूँ, इसलिए भूलचूक के लिए क्षमा।"

दूसरे खत में उसने घर से कुछ सौगात की चीजें मांगी थीं और बताया था कि ग्रीश्का अपने घोड़े को ठीक से नहीं देखता; वह कप्तान हो गया

तो क्या, एक दिन वह उसे धौल लगायगा।

बूढ़े पैंतलीमन की दशा करुणाजनक थी। वह आनन्द में जैसे विक्षिप्त हो चला था। दोनों खतों को लेकर वह गांव में निकला और जिससे भी भेंट होती उसे दोनों खतों को पढ़ने के लिए आरजू करता। जब पढ़ने वाले ग्रीश्का की बहादुरी की पंक्ति तक पहुँचते, वह हाथ उठाकर कहने लगता—

"आहा, आप ग्रीश्का के बारे में क्या सोचते हैं। गांव में उसने सबसे पहले सैंटजार्ज का तमगा पाया है।

फिर खत लेकर अपनी टोपी की तह में रखकर वह आगे बढ़ता। इसी तरह वह चला जा रहा था कि साहूकार सरगी मोखोव की नज़र उस पर पड़ी। पैंतलीमन को देखते ही साहूकार ने अपनी टोपी उतार ली और उसे आदर के साथ अपनी स्थान पर बुलाया। अपने उजले कोमल हाथों से उसने उससे हाथ मिलाया और कहा—

"मैं तुम्हें बधाई देता हूँ, भाई बधाई देता हूँ। ऐसे बेटे पर तुम्हें घमंड होना ही चाहिए। मैंने अखबारों में उसकी अभी-अभी बहादुरी की कहानी पढ़ी है"

"क्या अखबार में भी छप गई है ?" पैंतलीमन का चेहरा खिंचा हुआ था।

"हाँ, हाँ, मैंने तुरत पढ़ा है।"

मोखोव ने एक पैकेट बढ़िया टर्किश तम्बाकू आलमारी से निकाली और फिर बहुत कीमती चाकलेट कागज पर उड़ेला। तम्बाकू और मीठाई पैंतेलीमन को देते हुए उसने कहा—

"जब ग्रीश्का को पार्सल भेजना, तब यह मेरा उपहार भी भेज देना।"

"मेरे भगवान, ग्रीश्का को कितना सम्मान दे रहे हो! समूचा गांव उसी के बारे में सोच रहा है। मैं इसी दिन के लिए ज़िन्दा था।"—बूढ़ा

आदमी दुकान से नीचे जाते हुए बड़बड़ा रहा था। उसने अपनी नाक साफ की और गाल पर के आंसुओं को आस्तीन से पोंछते हुए, सोचे जा रहा था—

मैं क्या हुआ जा रहा हूँ। अब आसानी से आंसू आ जाते हैं। आह, पैतेलीमन, ज़िन्दगी ने तुझे क्या-क्या दिखाया। कभी तुम चकमक पत्थर की तरह सख्त थे डेढ़ मन बोझ तुम पीठ पर फूल की तरह उठा लेते थे। लेकिन अब·······ग्रिश्का की बात ने तुझे बिलकुल झकझोर डाला है।

४

जब ज़िन्दगी अपनी मुख्य धारा से निकलती है, तब फिर वह कितने नालों से होकर कटेगी, कहा नहीं जा सकता है। वह अजीब टेढ़ीमेढ़ी और धोखे भरी राह पकड़ती है। जहाँ आज वह छिछली, बालू पर झरने की तरह, बहती है, कि उसके नीचे के घोंघें-सेवार देख लो, कल वहीं कितनी गहरी हो जायगी, कल्पना नहीं की जा सकती।

अचानक नाटालिया ने तय किया, वह यागोदनो जायगी और अक्सीनिया से बिनती करेगी कि वह उसका पति बख्श दे। वह सोचती कि अब उसका सुख अक्सीनिया की मुट्ठी में है, और बिना कुछ ज़्यादा विचार किये उसने निर्णय कर लिया, वह तुरत उसके पास जायगी।

महीने की आख़ीर में ग्रीश्का का एक ख़त आया। उसने इस ख़त में नाटालिया को भी अपना सम्मान और अभिवादन भेजा था। अब क्या था, तय हो गया, वह इसी एतवार को यागोदनो जायगी।

"यह क्या तैयारी हो रही है, नाटालिया।" दारिया ने कहा, जब कि वह आईने के सामने चेहरा सम्हाल रही थी। "कुछ नहीं, ज़रा अपने मां बाप से मिलने जा रही हूँ।" नाटालिया ने जवाब देते हुए पहली बार यह अनुभव किया, वह एक घोर अपमान की ओर, एक भीषण नैतिक परीक्षा की ओर जा रही है।

"क्यों न एक शाम को हम लोग साथ बाहर चलें।" दारिया ने प्रस्ताव किया। "शाम तक लौट आओ न?"

"शाम तक लौटने का वादा मैं नहीं कर सकती।"

"ओ मेरी छोटी चाची! पति के बाहर रहने पर ही तो हमारी बारी आती है।" दारिया आँखों का चमका कर फिर नीचे अपने लँगे के पाड़ की जरी का काम देखने लगी। इधर दारिया का व्यवहार नाटालिया से बहुत ही सीधा सादा और मित्रता का हो चला था। पियोत्रा के जाने के बाद वह काफी बदल चुकी थी। उसकी आँखों, चाल और गति में असन्तोष झलकता। वह रविवार के दिन बन ठन कर निकलती और देर से शाम को लौटकर नाटालिया से कहती—

"भयानक है, सच कहती हूँ नाटालिया; वे लोग सभी जवान कोजाक को गाँव से ले गये, सिर्फ छोकड़े और बूढ़े बचे हैं।"

"लेकिन इससे तुम्हारे साथ क्या अन्तर आ जाता है?"

"क्यों? शाम को कोई कोज़ाक नहीं दिखाई पड़ता, जिसके साथ जरा दिलबहलाव किया जाय।" फिर अजीब साफगोई से वह बोली "तुम कैसे बर्दाश्त करती हो मेरी बहन। —उफ इतने दिन बिना कोज़ाक के हो गये।"

"तुम पर कलंक गिरे!—अही, तुम में आत्मा नहीं रहा गई?"

"तुम कोई इच्छा नहीं महसूस करती?"

"मालूम होता है, तुम्हें होती है।"

दारिया हँस पड़ी। जिसकी भौंहें कमान-सी तन गईं। बोली—"मैं छिपाऊँ क्यों? मैं किसी बूढ़े को चित्त गिरा दे सकती हूँ, इसी समय। जरा सोचो, पियोत्रा को गये दो महीने हो गये।"

"तुम अपने लिए दुख का बीज बो रही हो।"

"चुप! मेरी बूढ़ी नानी! हम तुम्हारी शान्ति जानते हैं? हाँ, स्वीकार नहीं करोगी।"

"मेरे पास कुछ छिपाने को नहीं है।"

दारिया ने एक गर्हित नजर नाटालिया पर डाली और अपने होंठों को काटते हुए एक किस्सा सुनाने लगी किस तरह एक कोजाक छोकरे ने उस पर नजर डाली, उसके नजदीक आ उसके घाँघरें देखने लगी, वस्त्रादि आदि। नाटालिया वहाँ से रवाना हुई। गाँव में आकर उसने दूसरी गली पकड़ी। पहाड़ी पर पहुँच कर उसने पीछे, गाँव की ओर देखा, समूचा गाँव सूर्य की सुनहली किरणों में नहा रहा था!

५

यागोदनो पर भी लड़ाई का प्रभाव पड़ चुका था। वेन्यासिन और तिखोन लड़ाई में जा चुके थे। अक्सीनिया अब बूढ़े जेनरल की सेवा बन्दगी में रहती और लुकारिया लोगों का खाना पकाती। एक नया बूढ़ा कोजाक कोचमान की हैसियत से लिया गया था। बूढ़े सेनापति ने अपने बीस घोड़े फौज में दे दिये थे। अब वह खेती कम करता और शिकार और शूटिंग में वक्त गुजारता।

अक्सीनिया के पास ग्रीश्का के छोटे, संक्षिप्त पत्र आते। उसके खत से ठंडक टपकती, एक बार सैनिक जीवन से ऊब भी झलकती थी। खतों में अपनी बेटी के बारे में वह बार बार पूछता, मानो अब उसका खरा प्रेम बेटी में ही केन्द्रित हो चुका हो। वह लड़की ज्यों ज्यों बढ़ने लगी, उसमें ग्रीश्का की झलक स्पष्ट होती जाती, उसकी मुस्कुराहट तक ग्रीश्का के जैसी थी।

जैसे-जैसे दिन बीतते गये, अपने प्रेमी की जुदाई उसकी छाती में डंक मारने लगी। दिन भर तो काम में फँसी रहती, रात में बाँध टूट जाती, वह छटपटाती, रोती, अपना हाथ काटती। बेटी कहीं जाग न जाय, वह फूटकर रोने भी नहीं पाती। ऐसी रातों के बाद जब वह उठती, मालूम होता, जैसे किसी ने उसे निर्ममता से पीटा है। समूची देह में पीड़ा होती। दिन-

दिन उसकी जवानी इस कराह और पीड़ा से ढलती जाती।

उस शनिवार को वह मालिक को नास्ता कराकर खड़ी थी कि किसी औरत को उसने घेरे के अन्दर आते देखा। उसका चेहरा बहुत पहचाना-सा मालूम होता था। नज़दीक आने पर नाटालिया को देख, वह पीली पड़ गई। बढ़कर उसका बनावटी स्वागत किया।

'मैं तुम्हें ही देखने आई हूँ अक्सीनिया—वह बोली।

अक्सीनिया उसे अपने घर में ले गई। दरवाजा बन्द कर दिया। जब बीच घर में आई, धीरे से बोली—"किस काम से यह मेहरबानी ?"

"जरा पानी पिलाओगी ! नाटालिया ने घर में चारों ओर देखते हुए कहा। अक्सीनिया कुछ देर चुप रही। नाटालिया बड़ी मुश्किल से अपनी आवाज ऊँची करती बोली—

"तुमने मेरा पति छीन लिया।......मेरा ग्रीश्का मुझे दे दो। तुमने मेरी ज़िन्दगी खराब की। देखो मुझे......"

"तुम्हारा पति !" अक्सीनिया दांत पर दांत चढ़ाकर बोली। उसके शब्द ऐसी तेजी से और स्वच्छन्द गिर रहे थे, जैसे पत्थर पर वर्षा की झड़ी "तुम्हारा पति ? तुम कौन होती हो पूछने वाली ? तुम क्यों आई ? तुमसे बहुत देर हो गई। बहुत ही देर !"

उसने व्यंग्य की हँसी हँसी। उसका समूचा शरीर हिल रहा था। वह नाटालिया के नजदीक चली आई और अपने दुश्मन के चेहरे को घूरने लगी वहां खड़ी थी धर्म की, लेकिन धर्मत्यका पत्नी—अपमानित की गई, कुचली गई। वह स्त्री जो ग्रीश्का और अक्सीनिया के बीच एक दिन आ कूदी थी, उसकी छाती पर कोदों दलने के लिये ! अक्सीनिया ! अक्सीनिया क्रोधाविभूत बोली—

"तुम आए हो, मुझसे कहने कि उसे छोड़ दो। हरी घास की सांपिन ! तुम्हीं ने तो पहले ग्रीश्का को मुझ से छीना। तुम जानती थी, वह मुझ से प्रेम कर रहा है, फिर क्यों शादी की तुमने ? जो मेरी चीज़ थी, मैंने

उसे वापस किया—सिर्फ इतना हो तो। वह मेरा है। उससे मुझे एक बच्चा हो चुका है; लेकिन तुम..."

एक तूफानी घृणा से उसने नाटालिया को देखा। फिर हाथ हिलाती वह गरम जल की धारा सी उँड़ेलने लगी—

"ग्रिश्का मेरा है। मेरा! मेरा! मेरा! सुनती हो? मेरा! भाग, डायन! तू एक बच्चे से उनका बाप छीनने आई है।"

नाटालिया सरक कर बेंच के नज़दीक गई और उस पर बैठ गई। अपनी हथेलियों से अपना मुँह ढाँकती हुई उसने कहा—

"तुमने अपना पति छोड़ा—यों चिल्लाओ मत!"

"ग्रीश्का के अलावा मेरा कोई पति नहीं था, न है।" वह गुस्से में चूर बोलने लगी—

"और जरा अपना चेहरा देख, वह तुझे चाहेगा? यह ऐंठी गर्दन जब अच्छी थी तब तो उसने तेरी ओर देखा नहीं; और अब? मैं ग्रीश्का को तुझे नहीं देता। निकल, भाग!"

अक्सीनिया अपने घोंसले की रक्षा में खूंखार बनती जा रही थी। उसने देखा, गर्दन ऐंठने के बावजूद वह अक्सीनिया से ज्याद सुन्दरी है। उसके होंठ, उसके गाल ताज़ा थे; आँखों में चिन्ता थी रेखायें हैं ज़रूर—लेकिन अक्सीनिया ही के चलते तो।

"क्या समझती हो, मैं तुमसे उसकी भीख मांगने आई हूँ?"—नाटालिया ने अपनी मस्त आंखों को ऊपर किया।

"फिर क्यों आई?" अक्सीनिया पूछ बैठी।

"मुझे यहाँ प्रेम घसीट कर ले आया है।"

इस वादविवाद से अक्सीनिया की बेटी कुनमुनाई और जग पड़ी। मां ने बच्ची को उठा लिया। कांपती हुई नाटालिया ने बच्ची को देखा। किसी ने जैसे उसके गले को दाब दिया। बच्ची के चेहरे से ग्रीश्का की आंखें उसकी ओर घूर रही थीं।

रोती, डोलती वह बरामदे पर निकल आई। अक्सीनिया ने उसकी बिदाई भी नहीं की।

नाटाशिया तारतारस्क की ओर चली। दो मील चलकर वह एक कांटेदार झाड़ी के नीचे लेट गई। वह कुचल दी गई थी, उसे कुछ समझ में नहीं आता था। ग्रीश्का की काली उदासीन आंखें उस बच्ची के चेहरे से घूरती हमेशा उसकी आंखों में नाच रही थीं।

---

# ड

## १

लड़ाई के बाद भी वह भयानक रात, अंधा बना देने वाली पीड़ा की तरह, हमेशा ही ग्रीगर के स्मृति-पटल पर स्पष्ट अंकित रहती। भोर होने के पहले ही उसे होश आया। उसके हाथ हिलने लगे। पीड़ा से वह कराह उठा। बड़ी कोशिश से उसने अपना हाथ उठाया, भौंह के नज़दीक ले गया और खून में सने अपने बालों का अनुभव किया। अपनी अंगुली से घाव के कटे मांस को छुआ। फिर दाँत पीसते चित्त लेट गया। उसके ऊपर पेड़ की बर्फ-लदी पत्तियाँ जब तब सिहर उठती थीं। पेड़ के पत्तों और डालों को छोड़ कर तारों की झिलमिल दिखाई पड़ती थी। वे तारे, ग्रीगर को मालूम होते थे, वृक्ष की डालियों से लटकते पीले पीले फल हैं।

क्या हो चुका, इसका अनुभव करते और इसके बाद क्या भयानक बातें हो सकती हैं, इसे सोचते ग्रीगर दाँत पीसते अपने हाथ और पैर के बल चौपायों की तरह घिसकने लगा। रह-रह कर पीड़ा की अधिकता से वह सर के बल गिर जाता। इसी तरह, अपने जानते, वह बहुत देर तक चलता रहा। जब रुक कर पीछे देखा, वह पेड़ अभी उससे पचास गज के फासले पर ही था। एक बार यों घिसकते हुए उसने एक मुर्दे को पार किया, उसके फूले हुए कठोर पेट पर किहुनी रख कर उसने थोड़ा आराम किया। इतना खून उससे निकल चुका था कि वह ज़रा भी ताकत अपने में महसूस नहीं कर रहा था। वह बच्चों-सा रो पड़ा। ओस पड़ी घास को वह चबाता, जिसमें वह फिर बेहोश न हो जाय। फिर बड़ा मुश्किल से गोले के एक केस के नजदीक वह खड़ा हुआ। कुछ देर तक तो लड़खड़ाता रहा, फिर डगमगाता हुआ चलता बना। मालूम

हुआ कि जैसे उसमें ताकत फिर लौट आई है। उसके पैर दृढ़ता से पड़ने लगे और सप्तर्षि-मंडल को देख कर अब वह दिशा भी जान सका। वह पूरब की ओर बढ़ने लगा।

जंगल की सीमा पर किसी की चेतावनी की आवाज़ सुन कर अचानक रुक गया।

"खड़े रहो, नहीं तो मैं गोली मारूँगा।"

रिवाल्वर की आवाज़ भी उसने सुनी और वह देखने लगा। चीड़ के पेड़ से उंठग-कर एक आदमी बैठा दिखाई पड़ा।

"तुम कौन हो?" उसने पूछा और अपनी आवाज़ उसे इस तरह मालूम हुई, जैसे वह किसी दूसरे की आवाज़ है।

"मैं रूसी हूँ! या खुदा, ज़रा नज़दीक आओ।" कहते हुए वह आदमी चीड़ के पेड़ से घिसक कर ज़मीन पर आ रहा। ग्रीगर उसके नज़दीक गया।

"नीचे झुको।"—उस आदमी ने हुक्म दिया।

"झुक नहीं सकता।"

"क्यों?"

"झुकते ही मैं गिर जाऊँगा और फिर उठ नहीं सकूँगा। मेरे सर पर चोट है।"

"किस रेजिमेंट के हो?"

"बारहवीं डोन कोज़ाक।"

"कोज़ाक, ज़रा मदद कर।"

"हुज़ूर, मैं गिर जाऊँगा।" ग्रीगर ने उसके बिल्ले को देख कर पहचाना कि वह अफ़सर है।

"कम से कम अपना हाथ बढ़ाओ।"

ग्रीगर ने हाथ बढ़ाया, वह अफ़सर भी खड़ा हुआ। दोनों साथ चले। लेकिन हर कदम पर वह अफ़सर ग्रीगर के कंधे पर ज्यादा से ज्यादा

बोझ देता गया। एक नाले को पार करने के बाद उसने ग्रीगर से कहा—

"अब मुझे लेट जाने दो, कोज़ाक ! मुझे भी एक घाव लगा है—सीधे पेट में।"

वह मूर्छित होकर गिर पड़ा। ग्रीगर अब उसे ढोकर ले चला—थोड़ी-थोड़ी देर पर गिरता और उठता। दो बार परेशान होकर उसे छोड़ कर वह आगे बढ़ गया; लेकिन हर बार वह फिर लौट आता, उसे उठा लेता और लुढ़काते ठुकराते इस तरह आगे बढ़ता, जैसे वह नींद में चल रहा हो। ग्यारह बजे पहरे के सैनिकों ने उन्हें देखा और अस्पताल पहुँचाया।

## २

दूसरे दिन ग्रीगर चुपचाप अस्पताल से रवाना हो गया। रास्ते में उसने अपने सर का बैंडेज खोल लिया और उसे हिलाते, हवा में उड़ाते चलता रहा। खून के सने उस बैंडेज को खींचने से उसने कुछ राहत महसूस की।

"तुम कहाँ से आ गये ? रेजिमेंट की छावनी में कमांडर ने पूछा।

"मैं अपनी ड्यूटी पर वापस आया हूँ।" उसने जवाब दिया।

यूरोपिन दौड़ा हुआ आया और बोला—"मेलखोव, तुम अब तक जिन्दा हो।"

"थोड़ा—बहुत।"

"तुम्हारे सर से अब तक खून बह रहा है ! लाओ तो देखूँ।" घाव देख कर उसने डाक्टरों को चार गालियाँ सुनाईं और खुद चिकित्सा में जुट गया। एक कारतूस तोड़ कर बारूद निकाली, उसमें मकड़े का जाल मिलाया फिर तलवार की नोक से मिट्टी निकाल तीनों को मिला कर दाँत से चबाया। और उसे पट्टी की तरह बहते हुए घाव पर रख कर मुस्कुराते हुए कहा—

"यह तीन दिनों में तुम्हें आराम कर देगा। काफी गहरा घाव है। आस्ट्रियन अपनी तलवार नहीं पिजाते, नहीं तो तुम गये थे !"

जब ग्रीगर अपने घोड़े के नजदीक पहुँचा, वह हिनहिना उठा—उस की आँखों का पूरा उजला कोया दिखाई पड़ रहा था।

"यह तुम्हारे लिए परीशान था।" मीशा को शेवाई ने कहा। "वह खाता नहीं था, हर वक्त हींस रहा था।"

"बहुत ही अच्छा घोड़ा है।"

"मुश्किल से हम इसे पकड़ सके।"

झोपड़े में आकर ग्रीगर ने देखा, वहाँ जल्दी में भाग गये घरवालों के सामान तीतर-बीतर पड़े हैं—बर्तन, किताबें, खिलौने, आटा आदि। एक कोने में येगर झारखौव चटाई पर खुर्राटे ले रहा है। प्रोखर जीकोव घर के बीच में जगह बनाकर खा रहा था। ग्रीगर को देखते ही उसकी आँखें चमक उठीं, वह चिल्ला उठा—"ग्रिश्का, तुम कहाँ से टपक पड़े !"

"दूसरी दुनिया से !"

"अरे, थोड़ा शोरवा इसे भी ला दो।" यूरिपिन बोला।

प्रोखर जब शोरवा लाया, सवाल उठा, रखा किस बर्तन में जाय। एक ने उस घर के कोने में पड़े पेशाब का बर्तन उठा कर, जिसका प्रयोग वह नहीं जानता था, कहा—

"इसी में रख दो।"

"अरे, इससे गंध आती है।"

"रहने दे; इसी में रख ! देखा जायगा।

सब खा रहे थे तो यूरिनिन ने बताया, किस तरह आज कम्पनी कमांडर हमें धन्यवाद देने आया था और बोला था—"कोज़ाको, ज़ार और पितृभूमि तुम्हारी सेवाओं को कभी नहीं भूल सकते।"

खा ही रहे थे कि बाहर से गोली की आवाज आई। मशीनगन दनादन चल रही थी। खाना छोड़कर सब बाहर निकले, तो देखा उनके सर पर

एक हवाई जहाज जोर से आवाज करता, नीचे से, चक्कर काट रहा है।

'धीरे से सटकर लेट जाओ; एक मिनट के अन्दर वे बम गिरायेंगे।" यूरिपिन ने कहा। "और जाओ, एक आदमी येगर को उठा दो; नहीं तो वह गया।"

सड़क पर सैनिक दौड़ रहे थे। झुके हुए। आँगन से घोड़े की हिनहिनाहट और कोई अस्पष्ट हुक्म सुनाई दिया। घेरे के आगे एक तोपची तोप का पहिया घुमा रहा था। आसमान में हवाई जहाज गरज रहा था। उसकी ओर नजर करते ही ग्रीगर ने देखा उससे कोई चीज गिर रही है, जो सूर्य की रोशनी में चमक उठी।

यूरिपिन भागा, उसके पीछे ग्रीगर। टट्टी के बगल में वे दोनों लेट गये। लौटते हुए वायुयान का एक पंख चमक उठा। गली से गोलियों की आवाजें आ रही थीं। ग्रीगर अपनी रायफल में कारतूस दे रहा था कि एक विस्फोट ने उसे घर से छः फीट बाहर उछाल कर फेंक दिया। उसके सर पर बहुत-सी मिट्टी आ गिरी, उसकी आँखों में धूल-धूल थी और वह मिट्टी के बोझ से दब गया।

यूरिपिन ने उसे उठा लिया। बाईं आँख में ऐसी पीड़ा हुई कि ग्रीगर के लिए देखना मुश्किल था। दाहिनी आँख मुश्किल से खोलकर उसने देखा कि वह घर आधा गिर गया है। ईंटें बिखरी हुई हैं। गुलाबी धूल उसे ढँके हुए है।

ग्रीगर ने खड़ा होते ही देखा, येगर झारखौव सरक कर सीढ़ी के नजदीक आकर चिल्ला रहा है। आह! उसका चेहरा—मूर्तिमान रुदन। कोटर से निकली आँखों से खून भरे आँसू झर झर गिरे जा रहे हैं। उसका सर दोनों कंधों के बीच लटका है और चिल्लाते हुए सरक रहा है। मृत्यु ने जिन्हें नीले बना दिये हैं, ऐसे होंठों को बिना खोले ही वह चीख रहा है—

"आ-ई-ई-ई-ई,··आ-ई-ई-ई-ई··आ··ई··ई··"

उसके पीछे उसका एक पैर, जाँघ से बिल्कुल कटा लेकिन जरा-सी

चमड़ी से अभी तक जुटा हुआ, घिसट रहा है। दूसरे पैर का तो कहीं पता नहीं है। सिर्फ हाथों के बल वह सरक रहा था और बच्चों सी आवाज उस के मुँह से निकल रही थी। आवाज बन्द हो गई और वह करवट में गिर गया। उसका चेहरा कठोर और निर्मम ईंट से जा टकराया।

"उसे उठा लो।" बाईं आँख को हाथ से मींचते ग्रीगर बोला।

उसी समय तोपखाना आँगन में घुसा। टेलीफोन के साजमात दरवाजे पर रुके। दो औरतें और एक बूढ़ा आदमी आये। झारखौव के चारों ओर एक छोटी भीड़ थी। ग्रीगर ने देखा, वह अब तक साँस ले रहा, कराह रहा और जोरों से काँप रहा है। उसकी भौंहों पर पसीने की बूँदें चमक रही हैं।

"जरा उसे उठा लो। तुम आदमी हो या राक्षस?"

"कौन चिल्ला रहा है?" एक फ्रेंच तोपची बोला—"उठा दो उठा दो। लेकिन उसे उठाकर हम ले जायेंगे कहाँ? देखते नहीं वह मर रहा है।"

यूरिपिन ने पीछे से ग्रीगर का कंधा दबाया—"अरे, उन्हें उत्तेजित मत करो! उस तरफ चलकर देखो।"

वह ग्रीगर की आस्तीन पकड़कर बाहर ले गया और भीड़ को हटा कर देखने लगा। ग्रीगर ने एक नजर डाली थी कि उससे देखा न गया, वह दरवाजे की ओर चला। झारखौव के पेट के नीचे लाल और नीली अँतड़ियाँ धुआँ उठा रही थीं। अँतड़ियों का सिरा बालू और गोबर में सन रहा था। वह मर रहा था, उसका हाथ उसके बगल में पड़ा था।

"मुँह ढाँप दो।" किसी ने प्रस्ताव किया।

झारखौव तुरत अपने हाथ पर उठा अपना सर पीछे फेंककर एक तीक्ष्ण अमानवीय स्वर में चिल्ला उठा—

"भाइयो, मुझे मार दो.....भाइयो.....हाय,.....तुम क्या खड़े

खड़े देख रहे हो······आह,······आह······भाइयो, मुझे मार डालो।"

३

रेलगाड़ी खटखट, हड़हड़ करती भागी जा रही थी। उसकी हिल-डुल, उसकी आवाज़ सोने का निमंत्रण दे रही थी। लालटेन से पीली रोशनी छा रही थी। बूट निकालकर, पैरों को स्वच्छन्द रूप से पसारकर ग्रीगर लेटा हुआ था। अब न कोई जिम्मेवारी है और न कोई खतरा—वह मौत से दूर हुआ जा रहा है, यह कल्पना उसे आनन्द दे रही थी। नये फलालैन के कपड़े उसकी देह को अजीब सुख और शान्ति दे रहे थे।

इस सुख और शान्ति को भंग कर देती थी रह-रह कर आँख की पीड़ा। कुछ देर पीड़ा बन्द हो जाती, फिर वह जल उठती, आँख से अनवरत आँसू निकल कर बैंडेज को भिगोने लगते।

अन्ततः उसकी अस्पताल-ट्रेन मास्को पहुँची, जहाँ वह आँख की चिकित्सा के लिए भेजा जा रहा था। स्टेशन पर डाक्टर ने ग्रीगर को पुकारा और उसे एक नर्स के हाथों सुपुर्द किया।

कपड़ों को सरसराती आगे-आगे नर्स चली, पीछे ग्रीगर। स्टेशन से एक घोड़ागाड़ी की गई। इस बड़े शहर का शोर, ट्राम के घंटों का टनटन, बिजली की जगमग रोशनी—सब उसकी आत्मा को जैसे कुचल रहे थे। फिर बगल में एक स्त्री बैठी है, इसकी याद तो उसे और भी बेचैन कर रही थी

शहर की एक सूनी गली में, एक तिमंजले मकान के सामने उसकी गाड़ी रुकी। नर्स ने उसका हाथ पकड़कर सीढ़ी पर चढ़ने में मदद की।

"तुम्हारे शरीर से सिपाही के पसीने की गंध आती है।" नर्स ने कहा।

"कुछ दिनों तक लड़ाई के मैदान में रहो, तब आटे दाल का भाव मालूम हो।"—ग्रीगर गुस्से में बोला।

भीतर उसे नंगा कर गरम पानी और साबुन से अच्छी तरह नहलाया गया और बिल्कुल नये कपड़े पहनने को दिये गये। कपड़े पहनकर वह दीवाल में लगे आईने के सामने से गुजर रहा था, तब अपनी सूरत उसमें उसने पहचानी। लम्बा, काला चेहरा, गालों पर जहाँ तहाँ लाल निशान, मूँछ और दाढ़ी बढ़ी हुई, टोपी के नीचे लम्बे बाल!—"मैं फिर नौजवान हो चला!" वह मन ही मन मुस्काया।

४

आँख के अस्पताल से सटा एक बगीचा था, अजीब सूखा रूखा, जिसे जाड़े ने और भी बदरूप बना रखा था। इस बगीचे में रोगी टहलते, मौसम खराब होने पर एक कमरे से दूसरे कमरे में घूमते।

अस्पताल में ज्यादा नागरिक रोगी ही थे, घायल सैनिकों के लिये एक कमरा था, जिसमें पाँच रोगी थे। ग्रीगर भी इसी में था। सितम्बर के आखिर में एक नया रोगी पहुँचा। दोपहर में वह पहुँचा, वहीं शाम को उसका आपरेशन हुआ। आपरेशन से लौटने के बाद ही रोगियों ने सुना, वह गा रहा है। जब बेहोशी की दवा लगाकर उसकी आँख से गोली का एक टुकड़ा सर्जन निकाल रहा था, उस समय भी वह गाता और अभिशाप देता था। ज्योंही बेहोशी दूर हुई, उसने इन पाँच साथियों से बताया कि वह जर्मनी के मोर्चे पर था, उसका घर युक्रेन में है, उसे गराँजा कहकर पुकारा जाता है। उसकी खाट ग्रीगर के बगल में पड़ी। दोनों काफी घुल-मिल गये। दिनभर दोनों में बातें होती रहतीं।

ग्रीगर का यह रक्तहीन रोगी साथी दुनिया की हर चीज पर असन्तुष्ट था। वह सरकार को गालियाँ देता, लड़ाई को कोसता, अपनी तकदीर, अस्पताल का खाना, रसोइया, डाक्टर—कोई भी उसकी ज़बान की कैंची

के नीचे आने से नहीं बचते। एक दिन उसने ग्रीगर से पूछा—

"अच्छा बताओ, हम किसानों को इस लड़ाई से क्या फायदा है जो हम इसमें लड़ रहे हैं?"

"जिस लिए सब लड़ रहे हैं, उसी लिए हम लोग भी।"

"अहा! तुम बेवकूफ हो! मुझे सब चीजें तुम्हें समझा देनी पड़ेगी। हम लोग पूँजीपतियों के लिए लड़ रहे हैं—क्या तुम्हें यह नहीं दिखाई पड़ता? ये पूँजीपति क्या हैं? फलवाले पेड़ के पंछी!—खाओ, मौज करो, उड़ो, बिहरो!"

वह अपने कड़ुवे शब्दों में कसमों का मसाला लगाकर ग्रीगर को समझाने की कोशिश करने लगा। "जरा धीरे धीरे बोलो, तुम्हारी यूक्रेनी भाषा समझने में मुझे दिक्कत होती है।"

"मैं उतनी तेजी से नहीं बोल रहा, मेरे छोटे दोस्त! तुम समझते हो, तुम ज़ार के लिए लड़ रहे हो। लेकिन यह ज़ार क्या है? ज़ार की कोई हस्ती नहीं है और ज़ारीना तो छोटी-सी मुर्गी है। लेकिन उनके बोझ से हमारी पीठ धनुही हुई जा रही है। तुम नहीं देखते। कारखाने के मालिक शराब उड़ा रहे हैं और हम सैनिक चीलड़ मार रहे हैं। पूँजीपति नफा मारता है, मजदूर खाली हाथ निकलते हैं। हम इसी प्रणाली में पिस रहे हैं। सेवा किये जाओ, कोज़ाक, उनकी सेवा किये जाओ। कुछ और तमगे ले लो, ऐ मेरे पट्ठे भाई!"

दिन-ब-दिन वह ऐसे सत्य ग्रीगर पर प्रकट करने लगा, जिसकी उसने कल्पना नहीं की थी। वह लड़ाई के यथार्थ कारणों पर प्रकाश डालता और अनियंत्रित राजतंत्र की बुराइयों पर प्रहार पर प्रहार किये जाता। जब ग्रीगर कोई प्रतिवाद उठाता, वह ऐसे सीधे साधे शब्दों में उससे नये सवाल पूछ देता कि उसे उस बात को मान लेने को लाचार होना पड़ता।

ग्रीगर के लिये सबसे भयंकर बात यह थी कि वह सोचने लगा, मैं गलत हूँ और गराँजा सही है। वह बुद्धिमान और तीखा यूक्रेनियन धीरे-धीरे

उसकी सभी पुरानी धारणाओं को चूर-चूर करने लगा। ज़ार, देश और कोज़ाक होने के कारण उसके सैनिक कर्तव्य आदि पर जो कुछ पहले सोचता, अब वह बात नहीं रही। एक महीने के अन्दर अन्दर उसने महसूस किया कि उसका पुराना जीवन धुआँ का धरहरा था। जिस प्रणाली पर उसकी जिन्दगी निर्भर थी, वह सड़ चुकी है, उसे कीड़े खा चुके हैं, अब सिर्फ एक धक्का उसके गिराने के लिए काफी है।

५

एक रात जब सब निस्तब्ध हो चले थे, ग्रीगर अपने बिछावन से उठा और गराँजा को जगाया और उसी के बिछावन पर बैठ गया। सितम्बर के चाँद की हरी रोशनी खिड़की से छनकर भीतर आ रही थी। गराँजा जम्हाई लेते उठा और बोला—

"तुम अब तक नहीं सोये।"

"मुझसे सोया नहीं जाता।" ग्रीगर ने जवाब दिया। "मुझे एक बात बताओ। लड़ाई एक के लिए अच्छी और दूसरे के लिए बुरी है, है कि नहीं?

"क्या?" गराँजा ने फिर जम्हाई ली।

"ठहरो।" ग्रीगर गुस्से में फुसफुसा रहा था। "तुमने कहा कि हम लोग पूँजीवादियों के नफे के लिए अपनी गर्दनें कटा रहे हैं। लेकिन, यदि यह बात है, तो फिर जनता क्यों मदद दे रही है। क्या वह भी नहीं समझती? क्या उसे बतानेवाला कोई नहीं है?"

"कौन बतावे? ज़रा सोचो, तुम किस तरह धीरे धीरे बातें कर रहे हो। खुल के बोलो, फिर तमाशा देखो। तुम गोली के घाट उतार दिये जाओगे। यही हालत है। लेकिन यह लड़ाई जनता को नींद से जगाएगी। आँधी आकर रहेगी और आंधी के बाद अच्छे दिन आयेंगे।"

"लेकिन उसके लिए हमें क्या करना चाहिये। दुष्ट, जरा खुल कर कहो। तुमने तो मेरा सब कुछ उलट-पुलट कर दिया।"

"जिसे मैं उलट सकता हूँ, उलट दूँगा। तुम भी अपने राइफल के निशाने को उलट दो। उन साँपों को गोली से उड़ा दो, जो जनता को नरक में घसीटे जा रहे हैं। तुम उन्हें पहचान गये हो।" गराँजा अपने बिस्तरे पर बैठ गया, दाँत पीसते, हाथ फैलाते उसने कहा—"एक बड़ी लहर उठेगी और उन सबको बहाकर ले जायगी।"

"तो, तुम्हारी राय है कि सब चीजों को उलट-पुलट कर देना चाहिये।"

"बिल्कुल यही। सरकार को सड़े चीथड़े की तरह उठा फेंकना चाहिए। जमीदारों और पूँजीपतियों की चमड़ी उधेड़ लेना चाहिये। वे बहुत दिनों तक जनता को जिबह कर चुके।"

"और नई सरकार होने पर लड़ाई के बारे में क्या होगा? लड़ाइयाँ तो होती ही रहेंगी, हम न लड़ेंगे, हमारे लड़के लड़ेंगे। युगों से लड़ाइयाँ होती चली आई हैं, फिर हम कैसे लड़ाई की जड़ खोद कर उसे सदा के लिए खत्म कर सकते हैं?"

"ठीक है, लड़ाइयाँ हमेशा से होती आई हैं और तब तक चलती रहेंगी, जब तक हम बुरी सरकार को नेस्तनाबूद नहीं कर देते। लेकिन जब सभी सरकारें मजदूर की सरकारें होंगी, वे आपस में क्यों लड़ेंगीं? हमें यही करना है। जब जर्मनी में, फ्रांस में सब जगह मजदूरों और किसानों का ही राज होगा, तो फिर हम आपस में क्यों लड़ेंगे? देश की सीमाओं को तोड़ो क्रोध की जड़ को काटो? समूचे संसार में एक-सा स्वाधीन, सुन्दर, सुखी जीवन! अहा...!" गरांजा की एक आँख चमक उठी, होठों पर मुस्कुराहट खेल गई। "मिश्का! मैं अपने खून का एक-एक क़तरा इस आदर्श की प्रतिष्ठा के लिए अर्पण करने को तैयार हूँ।

भोर तक वे बातें करते रहे। धुँधली छाया में ग्रीगर अशान्त निद्रा लेने लगा।

६

दो महीने बीत गये। पड़े पड़े दिन काटना दूभर होने लगा। भोर में नौ बजे पाव रोटी के दो पतले टुकड़ों पर नाखून में सामने लाकर मक्खन रखकर उन्हें घमंड के साथ दिया जाता। दिन के खाने के बाद भी उन्हें भूख लगी रहती। शाम को फिर चाय—कभी एक-एक गिलास पानी से ही सब्र करना पड़ता।

फौजी वार्ड के रोगी भी बदलते रहते। एक दिन सर्जन ने ग्रीगर की आँख की जाँच की और बताया कि अब दृष्टि अच्छी हो गई है। लेकिन उसे दूसरे अस्पताल में बदल दिया गया, क्योंकि अचानक उसके सर के घाव में पँप भर आया था। जब वह गराँजा से विदा ले रहा था, उसने उससे पूछा—

"क्या हम फिर मिलेंगे ?"

"दो पहाड़ कभी नहीं मिलते ?"

"खैर, तुमने मेरी आँखें खोल दीं, इसके लिये शुक्रिया।"

"जब तुम अपनी रेजिमेंट में जाना—अपने साथी कोज़ाकों को भी ये बातें बताओ।"

"ज़रूर कहूँगा।"

दोनों गले मिले और विदा हुए। उस एक आँख वाले यूक्रेनियन की तसवीर ग्रीगर के सीने पर हमेशा के लिए गड़ गई।

दूसरे अस्पताल में उसको गये दस दिन ही हुए थे कि ज़ार के शाही खानदान की एक महिला उस अस्पताल का निरीक्षण करने आईं। उनकी अवाई से धूमधाम का क्या कहना ? लोगों के बिस्तरे बदले गये और यहाँ तक बताया गया कि अगर वह कुछ पूछें, तो किस तरह ज़वाब दिया जाय। दोपहर को वह अपने परिचारिकों के साथ आईं। वह ल.कद.क, वह सुगंध की बहार—ग्रीगर जैसे जल उठा—

ये ही लोग वे हैं। इन्हीं लोगों के आनन्द के लिए हमें घर से छुड़ा-कर मौत के मुँह में झोंक दिया गया है। ये विषैले कीड़े! इनका नाश हो! इन्हीं के लिए हमने दूसरों के खेतों को घोड़ों से रौंदा, दूसरों को कत्ल किया। इन्होंने हमारा घर छुड़ाया और बैरकों में भूखों मारा। क्या चमक-दमक है? खैर, हम इन्हें भी मोर्चे पर भेजेंगे, घोड़े पर चढ़ायेंगे, राइफल उठवायेंगे, चीलड़ से कटवायँगे, सूखी रोटी और पिल्लूदार गोश्त खिलायँगे!

जब वह ग्रीगर के नज़दीक पहुँची, एक अफसर ने कहा—

"डोन का कोज़ाक, सेंटजौर्ज का तमग़ा पाये हुए!"

उसने जब पूछा कि किस काम में यह तमग़ा मिला, ग्रीगर ने जवाब में जो कुछ कहा, सब स्तब्ध रह गये—

"याद कीजिये......मैं बहुत परीशान हूँ......हजूर......बस, जरा......"

और यह कहते हुए उसने बिस्तरे के नीचे इशारा किया।

अफसरों ने इसकी व्याख्या करके बात सम्हाली। लेकिन उसके जाने के बाद तीन दिनों तक ग्रीगर को इस अशिष्टता के लिए खाना नहीं दिया गया। सर्जन जब बिगड़ा, तब ग्रीगर ने कहा—

"मोर्चे पर रहो, तब मालूम हो! मुझे घर जाने की छुट्टी क्यों नहीं देते?"

## च

### १

जब ग्रीगर छुट्टी में, घर लौट रहा था, अपने ज़िले के पहले गाँव में पहुँचते ही कोज़ाक संगीत सुनकर वह आनन्द-विह्वल हो गया। नदी के किनारे बच्चे गा रहे थे—परिचित शब्दों ने उसके हृदय को पकड़ लिया, उसकी आँखों को पथरा दिया। वह धीरे-धीरे गाँव से जा रहा था और संगीत उसका पीछा करता मालूम होता था।

"एक दिन मैं भी ये गीत गाता था, लेकिन न मुझमें वह स्वर रह गया, न ज़िन्दगी में कोई रस। आज मैं दूसरे की बीबी के साथ रहने जा रहा हूँ। न मेरा कोई घर है, न घर का कोई कोना। मैं भेड़िये की तरह जी रहा हूँ।" इस तरह सोचता, थके पैर को धीरे धीरे बढ़ाता, अपने विहंगम जीवन पर व्यंग से मुस्कुराता, वह चल दिया। रात हो जाने पर एक गाँव में ठहर गया। पर ज्योंही ऊषा की लाली हुई, वह फिर चलता बना। दूसरे दिन शाम को वह यागोदनो पहुँचा। घेरे को तड़प कर वह अस्तबल में आया। साश्का की खाँसी सुनाई पड़ी। वह चिल्ला उठा—

"साश्का, बूढ़े बाबा, जगे हो?"

"कौन? ठहरो, मैं आवाज पहचानता हूँ। कौन हो?"

साश्का बाहर आया। अपना पुराना कोट कंधे पर डालते, वह बोल उठा—

"या भगवान! ग्रीश्का? अरे, शैतान तुम कहाँ से टपक पड़े?"

दोनों छाती से मिले। ग्रीगर के चेहरे की ओर देखते साश्का ने कहा—"भीतर चलो, जरा तम्बाकू पीलो।"

"नहीं, अभी माफ करो। कल...मैं कल..."

"भीतर चलो, मैं कहता हूँ।"

ग्रीगर अनिच्छा से उसके पीछे लगा। घर के अन्दर जाकर बिस्तरे के तख्ते पर वह जा बैठा। बूढ़ा खाँसते खाँसते परीशान था।

"बूढ़े बाबा, तुम अब तक ज़िन्दा हो!"

"हाँ, भाई; मैं चकमक पत्थर हूँ जो न घिसे और न टूटे।"

"अक्सीनिया कैसी है?"

"अक्सीनिया? या भगवान, वह अच्छी तरह है।"

बूढ़ा फिर जोरों से खाँसने लगा। ग्रीगर ने अनुमान किया, बूढ़ा किसी चीज़ को छिपाने के लिए यह खाँसी का बहाना कर रहा है।

"बेचारी टानिया को कहाँ दफनाया?

"बगीचे में।"

"खैर, और समाचार कहो।"

"खाँसी मुझे परीशान कर रही है।"

"अच्छा।"

"हम लोग सभी मज़े में हैं। बूढ़ा मालिक शराब पीकर बुत बना रहता है!"

"अक्सीनिया कहाँ है?"

"वह नौकरों के क्वार्टर में होगी! तुम जरा तम्बाकू पीओ—बहुत बढ़िया है।

"मैं इस समय पीना नहीं चाहता। बात करो या मैं चला। मुझे मालूम हो रहा.....।" ग्रीगर जोर से घूमा, नीचे का तख्ता चर्रा उठा।" "मुझे मालूम हो रहा है, तुम लोग कुछ छुपाये हुए हो। मुझसे साफ कहो।"

"कहूँगा। चुप रहने की मुझमें ताकत नहीं रही, ग्रिश्का चुप रहना तो शर्म की बात होगी।"

बूढ़े के कंधे पर हाथ फेरते हुए ग्रीगर ने कहा—"मुझसे साफ कहो, मेरे बूढ़े बाबा।"

"तुम सांपिन पाल रहे थे।" साश्का की आवाज में रुखाई और तेज़ी थी। "वह बिल्कुल सांपिन है। वह तो यूजेन से खेलवाड़ कर रही है।"

बूढ़े के मुँह से खखार की एक धारा ठुड्डी पर बह आई। वह उसे पोंछने लगा।

"तुम सच कह रहे हो?" ग्रीगर ने पूछा।

'मैंने अपनी आँखों से देखा है। हर रात वह उसके पास आता है। मेरा ख्याल है, इस समय भी उसी के साथ रम रहा होगा।"

"अच्छा।" ग्रीगर अपनी उँगुली का नाखून काटने लगा। वह कंधों को नीचे किये बहुत देर तक बैठा रहा। उसके चेहरे की मांसपेशियाँ अजीब ढंग से काम कर रही थीं।

## २

बात यों है।

नाटालिया के आने और लौट जाने के थोड़े दिनों के बाद ही अक्सीनिया की नन्हीं-सी बेटी टानिया बीमार पड़ी और यद्यपि बूढ़े लिस्तनिस्की ने दवा-दारू में कोई कसर नहीं दी, वह चल बसी। उसके मरने के बाद अक्सीनिया की अजीब परीशान हालत थी। वह खुल कर खूब रोना चाहती थी, लेकिन रो नहीं सकती थी। रुलाई गले तक आती थी किंतु आँखों में आँसू नहीं आते। इस सूखे शोक से वह इतनी परीशान होती। अपने को निद्रा-देवी की भुला देने वाली गोद में डाल देने के लिए वह सोने का प्रयत्न करती, किन्तु, बच्चे की पुकार नींद में भी वह सुनती। 'मामा-मामा' की पुकार सुन वह बिछावन पर उसे ढूँढने लगती, तकिये को उँगुलियों से खोदने लगती। 'मेरी बिटिया'—कह कर वह चीख पड़ती।

जाते हुए भी उसे लगता कि बच्ची उसकी गोद में है और हाथ फैलाकर वह उसके बालों को सुलझाने की कल्पना कर लेती।

इसी समय यूजेन लिस्तनित्स्की युद्ध में घायल होने के बाद छुट्टी में घर लौटा।

आने के तीसरे दिन शाम को बड़ी देर तक वह साश्का के नज़दीक बैठा कोज़ाक-जीवन की कहानियाँ सुनता रहा। ६ बजे वह वहाँ से चला। आँगन से तेज़ हवा बह रही थी। उसके पैर के नीचे मुलायम कीचड़ थी। बादल के बीच में नया पीला चाँद झाँक रहा था। उसकी रोशनी में घड़ी देख यूजेन नौकरों के क्वार्टर की ओर घूम गया। बरामदे के नज़दीक खड़ा हो सिगरेट जलाई, थोड़ी देर कुछ सोचा, कंधे हिलाये और अक्सीनिया के कमरे की चिटख़नी हटा कर उसमें घुस गया। भीतर एक दियासलाई जलाई—

"कौन?"—अपने को कम्बल में लपेट, वह बोली।

"मैं हूँ—लिस्तनित्स्की।"

"कपड़े पहन कर मैं एक मिनट में आई।"

"उसकी ज़रूरत नहीं—मैं एक दो मिनट में ही जाता हूँ।"

अपना ओवर कोट फेंक कर वह बिछावन के किनारे बैठ गया। फिर बड़ी सहानुभूति के स्वर में बोला—"तो तुम्हारी बिटिया चल बसी...!"

"चल बसी।" प्रतिध्वनि की तरह वह बोली।

"तुम कितनी बदल गई हो। बेटी का मरना माँ के लिए क्या होता है, मैं कल्पना कर सकता हूँ। लेकिन मैं समझता हूँ, तुम व्यर्थ ही अपने को ज्यादा सता रही हो। वह फिर लौट नहीं सकती और तुम अभी नौजवान हो, बच्चे पैदा होंगे ही। अपने को सम्हालो; उसे भूल जाओ। तुम सब कुछ नहीं खो बैठी हो। तुम्हारे लिए पूरी जिन्दगी अभी पड़ी हुई है।"

उसने उसका हाथ पकड़ लिया और उसकी पीठ सुहलाने लगा। अपनी आवाज़ धीरे करते-करते फुसफुसाने-सा लगा और यह देखकर कि अक्सीनिया रोये जा रही है, उसने उसके गीले गालों और आँखों को चूमना शुरू कर दिया।

स्त्रियों का हृदय दया और सहानुभूति का भूखा होता है। निराशा से चूर अक्सीनिया ने, यह नहीं महसूस करते कि वह क्या कर रही है, अपने को उसकी मर्जी पर बिल्कुल छोड़ दिया। हाँ, जब एक अवांछित आनन्द की लहर उसके नस-नस में दौड़ी, तब वह जैसे होश में आई और जोर से चिल्ला उठी। सभी विचार और लाज को तिलांजलि दे वह अधनंगी, सिर्फ सफा पहने, बरामदे पर भाग गई। यूजेन जल्दी उसके पीछे दौड़ा और अपना ओवरकोट गर्दन पर रख, दरवाजा खुला छोड़ चलता बना।

जब वह बिछावन पर गया, अपनी मुलायम छाती पर हाथ फेरते उसने सोचा—"आज मैंने जो कुछ किया, भले मानस की हैसियत से, यह लाज और पाप की बात है। मैंने अपने पड़ोसी को लूटा है। लेकिन, आखिर मोर्चे पर मैंने अपनी जान अर्पित कर रखी है। गोली लग गई होती, तो मेरे मांस पिल्लू खा गये होते। ऐसे दिनों में आदमी के लिए थोड़ी माफी मिलनी ही चाहिये।"

दूसरे दिन जब अक्सीनिया रसोईघर में अकेली थी, वह उसके नजदीक गया। अपराधी की हँसी उसके होंठो पर थी। उसे देखते ही वह गुस्से में चूर चिल्ला उठी—"बदमाश, अलग रह।"

लेकिन जिन्दगी अपना नियम आदमी पर लादती ही है। तीन दिन के अन्दर ही जब एक रात को यूजेन उसके कमरे में गया, वह उसे दुत्कार नहीं सकी। फिर बाद का क्या पूछना?

## ३

ग्रीगर ने साश्का की दी हुई सिगरेट से दो फूँक छोड़ी, फिर उसे उँगली से दबाकर बुता दिया। एक शब्द भी बोले बिना, वह वहाँ से चल दिया। नौकरों के क्वार्टर के नजदीक जाकर खिड़की के पास वह खड़ा हो गया। वह हाँफता। कई बार दरवाजा खटखटाने को उसने हाथ उठाया, लेकिन, हर बार उसका हाथ वापस आता। आखिर, पहले उसने अँगुली से खटखटाया, फिर घूँसे से धक्के देने लगा। शीशा खड़खड़ा उठा।

डरा हुआ चेहरा लिये अक्सीनिया खिड़की पर आई, फिर दरवाज़ा खोला। ग्रीगर को देखते ही चीख़ पड़ी। उसने उसे छाती से लगा लिया।

"तुमने इतने ज़ोर से धक्के दिये कि मैं डर गई। मुझे तुम्हारे आने की कहाँ खबर थी। मेरे प्यारे......

"मैं ठंड से मरा जा रहा हूँ।"

अक्सीनिया ने देखा, उसका शरीर ज़ोरों से काँप रहा है, गर्चे उसका हाथ बुख़ार की तरह गरम था। वह झूठमूठ उत्कंठा दिखाने लगी, रोशनी जलाई, घर में इधर-उधर दौड़ी। उसके कंधे से शाल झूल रहा था। अन्त में उसने चुल्हा जलाया।

"मुझे ख़बर न थी कि तुम आओगे। कितने दिनों से तुमने कोई खत भी नहीं लिखा। मैं समझे बैठी थी, तुम नहीं लौटोगे? मेरी चिट्ठी मिली? मैं तुम्हें पार्सल भेजने जा रही थी।"

बिना ओवरकोट उतारे ग्रीगर बेंच पर बैठा रहा। उसका गाल जल रहा था। जेब से तम्बाकू और कागज़ निकालकर सिगरेट बनाते हुए अक्सीनिया को वह अच्छी तरह देख रहा था।

उसके परोक्ष में वह कितनी अच्छी हो चली थी। उसके सर से रोबदार तर्ज़ टपकता था, आँखें और बालों की कुंडलियाँ वही थीं। उसकी वह जलाने-वाली खूबसूरती अब ग्रीगर की नहीं है—उस पर उसके मालिक के बेटे का कब्ज़ा है।

"तुम रसोई बनानेवाली सी नहीं दीखती, घर की मालकिन सी मालूम पड़ती हो" ग्रीगर ने कहा।

अचम्भे की नज़र से उसकी ओर देखती अक्सीनिया ज़ोर देकर हँसने लगी।

अपने साथ लाये सामान का गट्ठर लिए ग्रीगर दरवाजे की ओर बढ़ा। "कहाँ जाते हो?" अक्सीनिया ने पूछा।

"सिगरेट पीकर आ रहा हूँ।"

बाहर जाकर ग्रीगर ने गट्ठर खोला और उसके भीतर से एक रूमाल निकाला। यह रूमाल उसने एक यहूदी सौदागर से ख़रीदा था। कितनी उमंग से! उसके इन्द्रधनुषी रंग देखकर अक्सीनिया उस पर टूट पड़ेगी। लेकिन, अब? अब एक धनी के बेटे से उपहार देने में "वह" क्या बाज़ी ले सकेगा? उसने रूमाल को टुकड़े टुकड़े करके फाड़ डाला और गट्ठर को वहीं बेंच पर ही छोड़कर भीतर घुसा।

"बैठो, मैं तुम्हारा बूट खोल दूँ।" अक्सीनिया ने कहा।

किसी कठोर काम के नहीं करने से मुलायम बने अपने सुफेद हाथों से वह भारी फौजी बूट को खोलने की कोशिश करने लगी। उसके घुटनों पर गिर कर वह बड़ी देर तक चुपचाप रोती रही। ग्रीगर ने उसे मन भर रोने दिया, फिर पूछा—

"क्या बात है? क्या मुझे देखकर तुम्हें खुशी नहीं हुई?"

बिस्तरे पर जाते ही वह जल्द सो गया। अक्सीनिया कपड़े उतार कर बरामदे पर गई और वहाँ ठंडे खम्भे को पकड़े, उस ठंडी चुभनेवाली हवा में, उत्तर दिशा से मौत का पैग़ाम लाने वाले उस झोंके में वह एक ताल से तब तक खड़ी रही, जब तक उषा का प्रकाश नहीं फैल गया।

## ४

भोर में अपना ओवरकोट कंधे पर डाले ग्रीगर बँगले की ओर चला। बरामदे पर बूढ़ा मालिक खड़ा था। वह ग्रीगर को देखते ही चिल्ला उठा—"वह! वह सेंट जौर्ज का घुड़सवार आ रहा है।" और फौजी सलाम देकर ग्रीगर से हाथ मिलाने को हाथ बढ़ा दिया।

"कुछ दिनों ठहरते हो न?"—उसने पूछा।

"सिर्फ़ दो सप्ताह, हुजूर।"

"तुम्हारी बिटिया—उफ़! हमने उसे दफनाया!...करुण...करुण...!

ग्रीगर चुप था। यूजेन अपना दस्ताना पहनते बाहर निकला।

"कौन ?—ग्रीगर ! कहाँ से टपक पड़े !"

ग्रीगर की आँखें काली पड़ गईं, लेकिन उसने मुस्कराने का स्वांग किया।

"तुम्हारी आँख में चोट आई थी न ? मैंने ऐसा ही सुना था। उफ़ तुम कितने बहादुर निकले ?—क्यों बाबूजी !"

फिर अस्तबल की ओर नज़र कर कोचवान को पुकारा। कोचवान हल्की गाड़ी में घोड़ा जोतकर वहाँ पहुँचा। घोड़े की टाप से बर्फीली ज़मीन धँसी जा रही थी।

"हुजूर, मैं ही आज आपकी गाड़ी हाँकू !" ग्रीगर ने यूजेन से हँसते हुए प्रार्थना की।

"बेचारे को पता नहीं चला।" यूजेन ने सोचा। होंठो पर सन्तोष की हँसी थी, चश्मे के नीचे उसकी आँखें चमक रही थीं। उसने कहा—

"बहुत अच्छा—चढ़ो !"

"अभी पहुँचे और जवान बीबी को छोड़ चले।" बूढ़ा लिस्तनिस्की ने मुस्कुरा कर कहा।

ग्रीगर हँसने लगा। "बीबी कोई भालू तो नहीं है, जो जंगल में भाग जाय।" उसने जवाब दिया।

वह कोचवान की जगह पर जा बैठा। लगाम थामी और चाबुक हाथ में लिया।

"अच्छी तरह हाँको—इनाम दूँगा।" यूजेन ने कहा।

"आपने आज तक जो किया, वही क्या कम है ?......मैं आपका शुक्रगुज़ार हूँ।...आपने मेरी बीबी......अक्सीनिया को खिलाया पिलाया, उसे..."

ग्रीगर की आवाज़ रुँध गई। यूजेन के मन में सन्देह पैदा हुआ। "क्या यह जान गया ? नहीं, कैसे जान सका होगा ?" वह गाड़ी पर बैठ गया और सिगरेट जलाई।

"दूर मत जाना !" बूढ़े जेनरल ने पुकार कर कहा ।

ग्रीगर ने ज़ोर से लगाम खींची और घोड़ा तेज़ी से उड़ा । पन्द्रह मिनट के अन्दर वे घर से बहुत दूर थे । जब पहाड़ी की पहली तलहटी में गाड़ी पहुँची, ग्रीगर उसे रोक कर नीचे उतर पड़ा और अपनी सीट के नीचे से चाबुक निकालने लगा ।

"क्या कर रहे हो ?"—यूजेन ने झुँझलाहट से पूछा ।

"अभी बताता हूँ !"

ग्रीगर ने चाबुक को हवा में फटकारा, फिर अचानक तेज़ी से उसे यूजेन के चेहरे पर जमा दिया । फिर उसकी मूँठ से यूजेन के चेहरे और शरीर पर दनादन प्रहार करने लगा । यूजेन स्तम्भित था । चश्मे का एक शीशा चूर होकर भौं में गड़ गया, जिससे खून की पतली धारा उसकी आँख में बही जा रही थी । पहले उसने हाथ से चेहरे को ढाँकना चाहा, लेकिन प्रहार लगातार होता देख, वह गाड़ी से कूद पड़ा और अपनी रक्षा को सन्नद्ध हुआ । लेकिन ग्रीगर ने उसकी कलाई पर एक ज़बर्दस्त चोट देकर उसके हाथ को जैसे बेकाम कर दिया ।

"यह अक्सीनिया के नाम पर ! यह मेरे हिस्से का । यह अक्सीनिया के लिए ! फिर अक्सीनिया के लिए ! मेरे लिए !"

चाबुक दनादन यूजेन पर पड़ रहा था । चाबुक भी चटाक से उसका समूचा शरीर शून्य हुआ जा रहा था । अन्त में यूजेन को उसने ज़मीन पर पटक दिया और बूटों से खूब रौंदा । जब उसमें मारने की ताक़त नहीं रही, वह गाड़ी पर जा चढ़ा और उसे दौड़ा कर ले चला । गाड़ी फाटक पर छोड़ वह नौकरों के क्वार्टर की ओर बढ़ा । दरवाज़े पर धक्का लगते ही उसे खोलकर अक्सीनिया ने चारों ओर देखा !

"साँपिन, ! चुड़ैल !" चाबुक की चोट उसके चेहरे पर सड़ाक सड़ाक पड़ रही थी ।

हाँफता हुआ ग्रीगर आँगन में आया । साश्का के प्रश्न का जवाब दिये बिना वह आगे बढ़ा और फाटक से निकल चला । एक मील निकल आने पर

देखा, अक्सीनिया उसके पीछे दौड़ी चली आ रही है। वह हाँफ रही है और चिल्ला रही है—

"ग्रीगर, माफ करो!"

उसने गुस्से से उसकी ओर देखा। फिर चलता बना। उसके पीछे अक्सीनिया हाथ पसारे खड़ी थी!

५

तारंतारस्क के नजदीक पहुँचकर उसने अचरज से देखा, चाबुक अब भी उसके हाथ में लटक रहा है। उसने उसे फेंक दिया और गाँव में घुसा। उसे देखकर गाँववालों को आश्चर्य हुआ। औरतें उसे देखकर नीचे सर झुका लेतीं। खिड़कियों पर चेहरों की भरमार थी।

अपने घर के फाटक पर एक लम्बी, काली आँखोंवाली खूबसूरत लड़की को अपनी ओर दौड़ते और उसकी गर्दन में हाथ डाल कर उसकी छाती पर रख सिसकारियाँ भरते—उसने पाया। उसके गालों पर हाथ फेरते, उसका सर अलग कर उसने पहचाना, यह उसकी बहन दुनिया है।

पैंतेलीमन लुढ़कते हुए दरवाज़े पर दौड़ा और आंगन में उसकी माँ ज़ोर से रो पड़ी। बायें हाथ से उसने बाप का आलिंगन किया—दाहने हाथ को अब भी दुनिया चूमे जा रही थी।

दरवाज़ा खुला, ग्रीगर आँगन में घुसा। बूढ़ी माँ लड़की की तरह दौड़ी और अपने आँसुओं से उसके ओवरकोट को भिगो दिया। बेटे को छाती से लगाये माँ की बोली में वह क्या-क्या अटेपटे शब्द कहती जा रही थी। कहीं आनन्दातिरेक में वह गिर नहीं पड़े, इसलिए किवाड़ की आड़ से नाटालिया देख रही थी। जब ग्रीगर की नज़र—जिसमें शीघ्रता और उदासीनता भरी थी,—उस पर पड़ी, वह खड़ी नहीं रह सकी!

रात में जब सभी सो गये, बूढ़े ने बुढ़िया की पंडुलियों में अंगुली गड़ा कर धीरे से कहा—"जा देख, दोनों एक साथ सोये हैं या नहीं?"

"मैंने दोनों का बिस्तरा एक साथ कर दिया था।"

"लेकिन जाओ और देखो।"

शलिनिच्चना उठी और किवाड़ की फाँक से देखा। लौट कर उसने कहा—"दोनों साथ सोये हैं!"

"या भगवान! या कृपानिधान!" बूढ़ा बुदबुदाता केहुनी के बल उठा और भावातिरेक में अँगुलियों से सलीब बनाने लगा।

---

## छ

### १

उन्नीस सौ सोलह। अक्टूबर। रात। मेघ और हवा। पोलेसी की दल-दली ज़मीन में खाइयाँ। सामने काँटेदार तारों का घेरा। खाइयों में बर्फीली कीचड़ की किचकिच। जहाँ तहाँ एकाध रोशनी।

अफसरों की सुरंग में एक तगड़ा अफसर घुसा। दरवाज़े पर ज़रा-सा रुका, अपनी भींगी उँगुलियों से ओवरकोट के फीते को सहलाता। फिर उसे खोल दिया, कालर से पानी झाड़ा, बूट को दरवाज़े पर कीचड़ में लथपथ पुआल से पोंछ दिया, फिर किवाड़ को भीतर ढकेल, झुककर सुरंग के भीतर घुसा।

मिट्टी के तेल से जलते चिराग़ से निकली पीली रोशनी उसके चेहरे पर पड़ी। एक अफसर अपना सर खुजलाते उठा और जम्हाई लेने लगा।

"वर्षा हो रही है?" उसने पूछा।

"हाँ!" आगत ने जवाब दिया। अपना ओवरकोट उतार कर टोपी के साथ एक खूँटी पर टाँग दिया और बोला—"तुम लोग मज़े से यहाँ गरम हो।"

"हमने यहाँ तुरन्त आग जलाई थी। नीचे ज़मीन से पानी निकल रहा है। यह बरसात हमें लेकर बीतेगी। तुम्हारी क्या राय है बंचक?"

बाल भरे हाथों को मलते बंचक झुक गया और चुल्हे के नज़दीक जा बैठा।

"ज़मीन पर कुछ तख्ते रख लो!" उसने जवाब दिया। "हम लोगों की सुरंग अच्छी है—सूखी और गरम। उसमें हम खाली पैर भी टहल सकते हैं। लिस्तनिस्की कहाँ है?"

"वह सो गया है। संतरियों को देखने गया था, अभी आकर सोया है।"

"क्यों, उसे उठा दूँ?"

"हाँ, हाँ। हम लोग ज़रा शतरंज खेलें।"

बंचक ने अपनी मोटी भवों पर से बरसात का पानी पोंछा; उस अँगुली को अच्छी तरह देखा, फिर यूजेन को जगा दिया। अपनी हथेली छाती पर मलते यूजेन ने अपने पैर बिछावन के नीचे रखे।

२

पहली बाज़ी खतम होने जा रही थी कि पाँचवीं कम्पनी के दो अफसर कालमिकोव और चूबौव भीतर आये।

"नई खबर!" कालमिकौव चिल्लाते हुए आगे बढ़ा। "हम लोगों की रेजिमेंट यहाँ से वापस की जायगी।"

"कहाँ सुना?" बूढ़ा अफसर मरकुलौव ने अविश्वास के स्वर में पूछा।

"बैटरी के कमान्डर ने टेलीफोन पर तुरन्त बताया है। वह कल ही डिवीजनल स्टाफ से लौटा है।"

"ख़ैर, हमें नहाने का तो मौका मिलेगा।" चूबौव ने आनन्द में कहा।

"भाइयो, आप सीड़ में रह रहे हैं—बहुत ही सीड़!" कालमिकौव लकड़ी की दीवालों और गीली मिट्टी की सेहन की ओर नजर घुमाते हुए कहा।

"मरकुलौव ने जवाब दिया—"क्या करें, चारो ओर कीचड़ ही कीचड़ है।"

"भगवान की खैर मनाइये कि इस दलदल में भी आप स्वर्ग सुख भोग रहे हैं।" बंचक ने कहा—"दूसरे ज़िलों में चढ़ाइयाँ हो रही हैं और हम सप्ताह में एक राउन्ड गोली चला कर निश्चिन्त सोते हैं।"

"इस बिल में सड़ने की अपेक्षा चढ़ाई करना कहीं अच्छा।"

"लेकिन वे कोज़ाकों को चढ़ाई पर ले जाकर उन्हें कटाना नहीं

चाहते। कप्तान मरकुलौव, इस बात को आप सबसे अधिक जानते हैं।" बंचक ने कहा।

"तब, तुम्हारी राय में, हम किस लिए रखे जा रहे हैं?"

"मौक़ा आने पर सरकार अपना पुराना खेल खेलेगी। वह कोजाकों के बल पर अपने अस्तित्व की रक्षा करेगी।"

"यह तो बुढ़िया की फ़ुसफास हुई।" कालमिकोव हाथ हिलाते हुए बोला।

"बुढ़िया की बातें! इसमें सत्य है, इस सत्य को आप इन्कार नहीं कर सकते।"

"इसमें क्या सत्य है।"

"सत्य तो सभी जानते हैं। हाँ, स्वीकार करने से झिझकते हैं।"

"सावधान! भाइयो, होशियार! अब कप्तान बंचक महोदय अपनी समाजवादी स्वप्न-पुस्तक का भाष्य आपको सुनायेंगे।" चूबौव बंचक की ओर देखते हुए चिल्ला उठा।

"तुम समाजवादियों को पसंद नहीं करते—क्यों?" बंचक चुबौव की आँखो में आँख डाल कर हँसा। "मैं कहता हूँ, आपको जानना चाहिये कि ज्योंही खाइयों की लड़ाई शुरू हुई, कोज़ाक पल्टनों को सुरक्षित जगहों पर भेज दिया गया और वहाँ वे शान्तिपूर्वक रखे जा रहे हैं जब तक कि सही वक्त नहीं आ जाता।"

"और तब?" लिस्तनिस्की ने शतरंज की गोटियों को सहेजते हुए कहा।

"और तब? जब मोर्चे पर असन्तोष फैलेगा—जो लाज़िमी है; जब सिपाही लड़ाई से ऊब उठेंगे—जिसका लक्ष उनका मोर्चे छोड़कर भागने से प्रगट हो रहा है; तब कोज़ाकों को विद्रोह दबाने के लिए भेजा जायगा। सरकार कोज़ाकों को अपने हाथ के पत्थर की तरह समझती है। सही वक्त पर इसी पत्थर से वह क्रान्ति का सर फोड़ने की कोशिश करेगी!"

"तुम्हारी बातों का आधार ही कमजोर है।" लिस्तनिस्की ने उज्र पेश किया। "शुरू से ही देखो, घटनायें क्या रास्ता पकड़ेंगी, इसकी भविष्यवाणी करना असम्भव है। आगे असन्तोष ही फैलेगा, यह कैसे निश्चयपूर्वक कह सकते हो। मान लो, मित्रराष्ट्र ने जर्मनों को हरा दिया और लड़ाई का खात्मा मन चाहे ढंग से हुआ, फिर कोजाकों से, तुम्हारी राय में, क्या काम लिया जाएगा?"

बंचक ने सूखी हँसी हँसकर कहा—"लड़ाई का ख़ात्मा! हाँ, वह दृश्य भी एक होगा।"

"तुम छुट्टी से कब लौटे?" कालमिकोव ने पूछा।

"दो दिन हुए"—बंचक ने जवाब दिया।

"छुट्टी कहाँ बिताई?"

"पिटर्सबर्ग में?"

"और वहाँ क्या हाल है? ये दुष्ट एक सप्ताह भी मुझे पिटर्सबर्ग जाने देते।"

"वहाँ जाकर आराम नहीं पा सकेगे दोस्त।" बंचक अपने शब्दों को तोलते हुए कह रहा था। "वहाँ खाने की चीज़ों की बड़ी कमी है। मजदूरों की बस्तियों में भूख, असन्तोष और अशान्ति का दौरदौरा है।"

"मालूम होता है, हम इस लड़ाई से हँसी-खुशी बाहर नहीं होंगे, क्या भाइयो!" मरकुलोव ने चारों ओर उत्सुकता से नज़र दौड़ाई।

"रूस-जापान युद्ध ने १६०५ की क्रान्ति का जन्म दिया। यह युद्ध एक नई क्रान्ति के साथ समाप्त होगा—सिर्फ क्रान्ति ही नहीं होगी, महायुद्ध भी होगा।"—बंचक ने जवाब दिया।

लिस्तनिस्की ने कुछ ऐसी हरकत की, जिससे मालूम हुआ, वह बंचक को बीच ही में टोकने जा रहा है। फिर वह उठा और सुरंग में कंधे हिलाता टहलने लगा। अपनी नाराजी को रोकने की चेष्टा करते हुए उसने कहा—

"ऐसे आदमी को अफसरों के दरम्यान देखकर मुझे आश्चर्य होता

है।" उसकी उँगली बंचक की ओर उठी थी। "मुझे आश्चर्य होता है, क्योंकि आज तक मेरी समझ में यह बात नहीं आई कि देश और लड़ाई के बारे में इनकी क्या राय है। उस दिन इन्होंने जो कुछ कहा, उसका मतलब था कि यह हम लोगों की हार मनाते हैं। क्या मैंने तुम्हें सही समझा बंचक, बोलो।"

"हाँ, मैं चाहता हूँ कि हम लोगों की हार हो।"

"हार हो? मेरी राय में, तुम्हारा राजनीतिक ख्याल चाहे जो कुछ हो, किन्तु, अपने देश की हार मनाना तो भीषण विश्वासघात है। किसी भी भलेमानस के लिए यह अशोचनीय है, उसकी इज्जत में बट्टा लगनेवाला है!"

"लेकिन, मजदूरों की मातृभूमि नहीं होती," बंचक के शब्द में ज़ोर था। "मार्क्स के इस कथन में गहरा सत्य छिपा है। न हम लोगों की कोई मातृभूमि थी और न है। इस अभागे देश ने तुम्हें बढ़िया भोजन दिया, शराब दी; लेकिन हम मज़दूर तो इसमें मैदान की घास-फूस की तरह पैदा हुए।...... हम और तुम साथ साथ नहीं चल सकते।"

अपनी पीठ लिस्तनिस्की की तरफ किए अपने पैकेट से कागज निकाला और उसमें से पुराने पड़ने के कारण पीला बना हुआ अखबार ढूँढ़ कर टेबल पर आया।

"क्या तुम इसे सुनना पसन्द करोगे?" यूजेन की तरफ घूम कर उसने पूछा।

"क्या है?"

"यह युद्ध पर एक लेख है। मैं इसके कुछ अंश तुम्हें सुनाऊँगा। मैं ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं, यह लेख मेरे विचारों को स्पष्ट रूप से रखते हैं—

"पूँजीपति इस साम्राज्यवादी लूट को 'राष्ट्रीय' युद्ध कह कर जनता को धोखे में रख रहे हैं। मजदूर उनके इस धोखे का भंडाफोड़ करता है—उसका नारा है, इस साम्राज्यवादी युद्ध को गृह-युद्ध में परिणत करो। यद्यपि ऐसा करना आसान नहीं है और न किसी व्यक्ति या दल की इच्छा मात्र से ही ऐसा हो सकता है। लेकिन पूँजीवाद के अन्दर ही इस परिवर्तन का बीज

छिपा हुआ है। खास कर जब पूँजीवाद अपने विनाश के युग में पहुँच गया है। समाजवादियों का यह कर्त्तव्य है कि अपनी कार्यधारा को इसी ओर—सिर्फ इसी ओर—प्रवाहित करें। युद्ध के कर्जों के लिए वोट मत दो; 'अपना देश' की पुकार के भ्रमजाल में मत पड़ो ; संघर्ष को कानूनी दायरे में रखने की गलती मत करो—क्योंकि खुद पूँजीपतियों ने कानूनी नकाब उतार फेंका है : यही रास्ता है गृहयुद्ध की ओर पहुँचाने के लिए, यह एक दिन समूचे यूरप में आग लगाकर रहेगा !

"यह लड़ाई कोई आकस्मिक घटना नहीं है—न कोई 'पाप' है, जैसा कि धर्म के पुजारी कहते और देशभक्ति, मानव-प्रेम, शान्ति आदि की दुहाई देते हैं। लड़ाई पूँजीवादी प्रणाली की एक खास मंज़िल का लाजिमी नतीजा है, वैसी ही स्वाभाविक, जैसी शान्ति। आजकल की लड़ाई जनता की लड़ाई होती है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम धोखेबाज़ों द्वारा प्रचारित जन-प्रवाह में बह जायँ। युद्ध के समय में, वर्ग संघर्ष और भी प्रखर हो जाता है और उसका विस्फोट होकर ही रहेगा। समाजवादियों का कर्त्तव्य है कि युद्ध के जमाने में वर्ग-संघर्ष की भावना का और भी जोरों से प्रचार करें। जनयुद्ध को गृहयुद्ध में परिणत करने के लिए सतत प्रयत्न करते जाना—यही समाजवादियों का एकमात्र कर्त्तव्य है, जबकि संसार के सब देशों के पूँजीपति साम्राज्यवादी युद्ध में फँसे हों। किसी तरह शान्ति हो—यह नारा बेवकूफी का है, धार्मिक प्रभाव का है। गृहयुद्ध का झंडा बुलंद करो। साम्राज्यवाद ने यूरप की संस्कृति के भाग्य को विनाशपथ पर डाल दिया है। इस लड़ाई के बाद अगर लगातार सफल क्रान्तियाँ नहीं हुईं। तो फिर दूसरी लड़ाई होकर रहेगी। यह आखिरी लड़ाई है, ऐसा कहने वाले मक्कार हैं!"

वंचक अब तक धीरे से, शान्तिपूर्वक पढ़ रहा था, लेकिन जब अन्तिम वाक्यों तक पहुँचा, उसकी आवाज ऊँची हो गई, उसमें लोहे की टंकार आ गई, उसने खत्म किया—

"अगर आज नहीं तो कल, अगर इस युद्ध के दरम्यान नहीं तो इसके

बाद, इस युद्ध में नहीं तो दूसरे युद्ध में, मजदूरों के गृहयुद्ध के विशाल झंडे के अन्दर लाखों सजग मजदूर आ जुटेंगे और उनका साथ देंगे वे किसान जिन्हें चूसकर मजदूरों से भी बदतर बना दिया गया है लेकिन जो अब तक धोखे बाजों के वाकजाल में फँसे हैं। यही नहीं, फटेहाल बाबू दल, दुकानदार, कारीगर आदि भी उस झंडे के नीचे आ जायेंगे, क्योंकि लड़ाई उन्हें भी कुचल देगी और उन्हें सबक सिखाकर, संगठित कर, तैयार कर देगी कि वे 'अपने देश' और विदेश के पूँजीपतियों के ख़िलाफ लड़ाई छेड़ दें।"

जब बंचक ने पढ़ना ख़तम किया, कुछ देर पूरी निस्तब्धता रही। तब मरकुलौव ने पूछा—

"यह कहाँ छपा है, रूस में ?"

"नहीं, जेनेवा में !"

"किसने इसे लिखा ?"

"लेनिन ने !"

"वह बोलशेविकों का लीडर है ?"

बंचक ने जवाब नहीं दिया। अपनी काँपती उँगुलियों से वह उस कागज को सावधानी से मोड़ता रहा। मरकुलौव ने यह कह कर मानों आँधी का दरवाज़ा खोल दिया—

"उसमें समझाने की बड़ी ताकत मालूम पड़ती है।...हटाओ इसे; उसके कहने में सोचने की बहुत-सी बातें हैं।

लिस्तनिस्की प्रगट ही बहुत उत्तेजित था। अपनी कमीज के बटन को लगाते वह थोड़ी देर इस कोने से उस कोने तक घूमता रहा, फिर मानों शब्दों के ओले बरसाने लगा—

"यह लेख उस आदमी ने लिखा है जिसने इतिहास की धारा को मोड़ने के स्वप्न में ऐन मौके पर अपने देश को छोड़ दिया है। हमारे ज़माने में भविष्यवाणी की कोई कीमत नहीं रह गई—खास कर जब वह ऐसे मुँह से निकले। रूस का सच्चा सुपूत ऐसे प्रलापों को भर्त्सना की दृष्टि से देखता है।

'जनयुद्ध को गृहयुद्ध में बदलो'—क्या कहने हैं ! ऐसे बददिमागों पर गाज गिरे !"

लिस्तनिस्की भौंहों को सिकोड़े बंचक के मुँह की ओर देख रहा था। वह लापरवाह अभी तक झुका हुआ अपने कागज को सहेज रहा था। यूजेन जलती हुई ज़बान में बोल रहा था, लेकिन उसका कोई प्रभाव पड़ा नहीं।

"बंचक !" कालमिकौव बोल उठा। "एक मिनट लिस्तनिस्की तुम ठहर जाओ। बंचक सुनो। मान लो यह लड़ाई गृहयुद्ध में परिणत हो चली। लेकिन इसके बाद ? तुम राजतंत्र को ख़त्म कर दोगे। लेकिन उसकी जगह किस ढंग का राज तुम कायम करोगे ?

"मजदूरों का राज।"

"तुम्हारा मतलब प्रजातंत्र से है ?"

"मुश्किल से !" बंचक मुस्कुराया।

"तब ?"

"मजदूरों का अधिनायकत्व !"

"अच्छा मान लिया, यही हुआ। फिर किसान और पढ़े-लिखे दिमाग-पेशा लोगों का क्या होगा ?"

"किसान हमारा साथ देंगे और पढ़े लिखे लोगों में से भी बहुत से लोग साथ आ जायँगे। और दूसरे...... 'उनके साथ हम यह करेंगे।' ऐसा कह कर उसने काग़ज़ के एक टुकड़े को हाथ में मरोड़ लिया और बड़ी तेजी से उसे फेंकते हुए कहा—"हम उनके साथ यही करेंगे।"

"अरे शैतान, फिर तुम फौज में क्यों भर्ती हुए और क्यों अफसर के पद पर पहुँच गये। अपने विचारों के साथ तुम्हारा काम कहाँ मेल खाता है ? तमाशा है—तुम लड़ाई के खिलाफ हो, अपने वर्ग-भाई के खिलाफ हो, और फिर भी अफसर बने हुए हो !" अपने बूट को हाथ से पीटते कालमिकौव ज़ोरों से हँस पड़ा।

"कितने जर्मन-मजदूरों को मौत के घाट उतारे हैं आपने, हज़रत !" लिस्तनिस्की ने व्यंग्य से पूछा !

बंचक ने जल्दी से अपने कागज को फिर खोला और टेबुल पर झुक झुके बोला—

"मैंने कितने जर्मन-मजदूरों को मारा ! हाँ, यह सवाल तो है......मैं खुद फौज में भर्ती हुआ, क्योंकि मैं जानता था, एक दिन मुझे फौज में भर्ती होने को लाचार किया जायगा ही। मैं समझता हूँ। यहाँ खाइयों में मैंने जो सीखा है, वह कभी काम आयगा। सुनो—

"आज की आधुनिक सेना को देखिये। संगठन का यह एक जबर्दस्त नमूना है। यह संगठन अच्छा इसीलिए है कि यह लचीला है और यह जानता है कि लाखों आदमियों को एक इच्छाशक्ति कैसे भरा जा सकता है। आज ये लाखों आदमी देश के भिन्न-भिन्न हिस्से में अपने अपने घरों में बैठे हैं। कल होकर भर्ती का हुक्मनामा निकलता है और वे भिन्न-भिन्न केन्द्रों में एकत्र होने लगते हैं। आज ये खाइयों में पड़े हैं और कभी-कभी महीनों के लिए पड़े हुए हैं। कल होकर चढ़ाई का बिगुल बजता है। आज ये गोली-गोले से बचने में कमाल दिखला रहे हैं। कल खुले मोर्चे पर उससे भी अधिक कमाल दिखाते हैं। आज उनकी अगली पांत के दस्ते ज़मीन के अंदर सुरंगों में छिपे हैं। कल ज़मीन से ऊपर उड़ने वाले हवाई जहाजों की दिशा में ये मीलों मार्च करते हैं। इसीका नाम संगठन है, जबकि एक उद्देश्य के नाम पर एक इच्छा शक्ति से प्रेरित होकर, लाखों आदमी अपने सामाजिक जीवन के तरीके और कार्य को बदल देते हैं, बदल देते हैं अपने कार्य के क्षेत्र को, उसकी प्रणाली को, बदल देते हैं युद्ध की माँग और परिस्थिति के परिवर्तन के अनुसार अपने अस्त्र-शस्त्र को। पूँजीपतियों के खिलाफ मजदूरों के संघर्ष पर भी यही बात लागू है। क्रान्तिकारी परिस्थिति नहीं है....."

"किन्तु परिस्थिति से तुम्हारा क्या मतलब ?" चुबौक ने पूछा बंचक ने

उस ओर इस तरह घूरकर देखने लगा, जैसे वह तुरन्त ही नींद से जगा हो और अपनी भौंहों को उँगुली से कुदेड़ते मानो जवाब खोजने लगा।

"मैं पूछता हूँ, "परिस्थिति" से तुम्हारा क्या मतलब ?"

"मैं तुम्हारा सवाल समझ गया, लेकिन जवाब मेरे लिए मुश्किल हो रहा है।" वंचक बच्चों की सी सरल मुस्कान हँस उठा। उसे बड़े और गम्भीर चेहरे पर यह मुस्कान अजीब लगी। यह ऐसा लगा, कि पतझड़ में बरसात से भीगे खेत पर सूरज की किरण छिटक गई हों। "परिस्थिति" का मानी है स्थिति, हालतों का एकत्रीकरण। क्या समझ में आया ?"

लिस्तनित्स्की ने अन्यमनस्कता से हाथ हिलाते हुए कहा—"आगे पढ़ो।"

'आज क्रान्तिकारी परिस्थिति नहीं है, वे हालतें नहीं हैं जिनसे जनता में उबाल आये, उनके कामों में गति आये। आज तुम्हारे हाथों में वे वोट का कागज देते हैं, तुम ले लो। इसके द्वारा तुम सीखो कि दुश्मन पर चढ़ाई करने के लिए किस तरह संगठन किया जा सकता है, न कि इसका उपयोग झूठी प्रजातंत्र कायम करने या ऐसे आदमियों को गद्दी पर बिठाने के लिए करो, जो जेलों से डरते हैं। कला होकर वे तुमसे चुनाव का हक भी छीन लेते हैं यदि तुम्हारे हाथों में अस्त्र देकर तुम्हें नये से नये युद्ध के तरीके से परिचित करा देते हैं। मृत्यु और विनाश के इन अस्त्रों को भी तुम ले लो—उनकी बात मत सुनो, जो लड़ाई से डरकर भावनाओं के चक्कर में डालते हैं। इस संसार में ऐसी बहुत सी चीजें हैं जिनका नाश मजदूर की मुक्ति के लिए तुम्हें आग और तलवार से करना होगा। जब जनता में निराशा और क्रोध का दौरदौरा हो, क्रान्तिकारी परिस्थिति आ जाय, तो तुरत नया संगठन कर मृत्यु और विनाश के उन शस्त्रों का प्रयोग अपनी सरकार और पूँजीवादियों के खिलाफ करो।......"

इसी समय पाँचवीं कम्पनी के सरजेंट मेजर ने दरवाजे पर धक्का दिया

और भीतर घुसा। बंचक को रुक जाना पड़ा। उसने कालमिकोव से कहा—"हजूर रेजिमेंट के स्टाफ से एक अर्दली आया है।"

कालमिकोव और चूबॉव अपने ओवरकोट लेकर बाहर चले। मरकुलोव तस्वीर बनाने बैठ गया। लिस्तनिस्की मूँछों को मरोड़ता, चिन्तामग्न, सुरंग टहलता रहा। थोड़ी देर के बाद बंचक भी वहाँ से रवाना हुआ।

बायें हाथ से कालर पकड़े, दाहिने से ओवरकोट दबाये, खाइयों की कीचड़ में वह चलता गया। हवा जोरों से साँय साँय करती बह रही थी। उसके चेहरे पर एक दुखपूर्ण हँसी दीख पड़ती थी। जब वह अपनी सुरंग में पहुँचा, वह पानी से भींग चुका था। मशीनगन का कमान्डर सोया हुआ था, उसके चेहरे पर तीन रात के जागरण की स्पष्ट रेखायें थीं। बंचक ने अपने झोले से कागज के पुलिन्दे निकाले, जिन्हें वह बहुत दिनों से संभालकर रखता आया था दरवाजे कागजों को लाकर उसने उनमें आग लगा दी। अपने पेट में दो भूने ग्रास और कई मुट्ठी रिवाल्वर की गोलियाँ रख लीं। फिर वह बाहर हुआ। खुले दरवाजे से जो हवा धुसी उसने जले कागज की राख उड़ाते, भीतर के चिराग को जाकर गुल कर दिया।

## २

बंचक के चले जाने पर लिस्तनिस्की चुपचाप टहलता ही रहा। इधर चित्रकारी के शौकीन मरकुलौव की पेंसिल कागज पर चल रही थी और काग़ज़ पर पेंसिल की नोक से एक चेहरा खिलता जा रहा था, जो बंचक से मिलता था। वह इस तस्वीर पर ,खुद मुसकुराया और लिस्तनिस्की की ओर मुड़कर बोला—

"उसका चेहरा भारी-सा है, क्यों?"

"खैर तुम उसके बारे में क्या सोचते हो?" यूजेन ने पूछा

"शैतान ही बता सके!" मरकुलौव ने इस प्रश्न की गम्भीरता पर सोचते हुए कहा। "यह अजीब आदमी है। आज तो यह ,खुद खुल गया, नहीं तो इसके समझने में मैं हमेशा लाचार रहा। तुम जानते ही हो, कोजाके

में इसका बहुत प्रभाव है, खास कर मशीनगन चलाने वालों में। तुमने इस पर ध्यान दिया है ?"

"हाँ !"—कुछ अनिश्चित-सा जवाब लिस्तनिस्की ने दिया।

"मशीनगन चलानेवाले एक-एक कर बोलशेविक हो चुके हैं। उन्हें अपने साथ करने में यह पूरी तरह कामयाब हो चुका है। मुझे आश्चर्य हुआ, आज उसने अपना रहस्य क्यों खोला ? वह जानता है कि हममें से कोई भी उसका साथ नहीं दे सकता। फिर इस रहस्योद्घाटन का क्या मानी ? वह उतावला आदमी भी नहीं है। वह खतरनाक है।"

बंचक के इस व्यवहार पर सोचते मरकुलोव ने कपड़े उतारे और सोने चला। लिस्तनिस्की बंचक की तस्वीर वाले कागज के पुट्ठे पर एक रिपोर्ट हेडआफिस को लिखी, जिसमें बताया कि जैसा वह लिख चुका है, बंचक के क्रान्तिकारी होने में कोई शक अब नहीं रह गया। उसने शिफारिश की थी कि बंचक को तुरंत गिरफ्तार कर उसे कोर्ट मार्शल में पेश किया जाय और मशीनगन वाले दस्ते को तोड़ दिया जाय।

दूसरे दिन इसे रिपोर्ट को भेज कर वह कुछ कोज़ाकों पर रात की झुंझलाहट उतार रहा था कि मरकुलोव दौड़ता, हाँफता आया और उसे अलग ले जाकर कहा—

"कुछ सुना ? बंचक कल रात को फौज से भाग गया।"

"बंचक ? क्या कहा ?"

"वह भाग गया—समझे ? मशीनगन के कमान्डर ने मुझसे बताया है कि वह रात अपनी सुरंग में नहीं लौटा। मालूम होता है, वह जरूर भाग गया। तुम क्या सोचते हो ?"

लिस्तनिस्की अपने चश्मे को पोंछता, कंधे हिलाता, खड़ा रहा। मरकुलोव उसके चेहरे की ओर उत्सुकता से देखते हुए कहा—"मालूम होता है, इस खबर ने तुम्हें चंचल कर दिया है।"

"मैं ! मैं क्यों चंचल होऊँ ! क्या तुम होश में नहीं हो। इस अनहोनी ख़बर को सुनकर मैं स्तम्भित मात्र हो गया था ।

४

दो दिनों के बाद सरजेंट मेजर लिस्तनिस्की की सुरंग में आया और बड़ी हिचकिचाहट के बाद कहने लगा—

"हुजूर, आज कोज़ाकों ने अपनी खाई में यह कागज़ पाया है। एक अजीब-सी चीज़ है। मैंने समझा, मैं हुजूर को खबर करा दूँ।

"कौन-सा कागज ?" बिस्तरे से उठते हुए लिस्तनिस्की ने पूछा। सरजेंट मेजर ने साइक्लोस्टाल किये हुए कुछ पर्चे उसके हाथ में रख दिये। लिस्त-निस्की पढ़ने लगा—

"दुनिया भरके मजदूरो, एक हो जाओ !"

"साथी सैनिको,

"दो वर्ष से यह अभागी लड़ाई जारी है। दो वर्ष आप खाइयों में सड़ते हुए दूसरों के स्वार्थों की रक्षा करते रहे। दो वर्ष से संसार के मजदूरों और किसानों का .खून बहाया जा रहा है। लाखों मरे और घायल हुए, लाखों विधवाएँ और बे मां-बाप के बन गया। इस कत्लेआम का यही नतीजा है। आप किसलिए लड़ रहे हैं ? आप किसके स्वार्थ की रक्षा कर रहे हैं ? ज़ारशाही सरकार ने लाखों सैनिकों को दूसरे देशों की ज़मीन छीनने और वहाँ के लोगों को सताने के लिए युद्ध के मैदान में भेजा है—जैसा कि पोलैंड और दूसरे छोटी देशों को वह सताती आई है। संसार के पूँजीपति तलवार के ज़ोर पर बाज़ार के बँटवारे के लिए लड़ रहे हैं और आप उनकी इस नीच स्वार्थ की लड़ाई में .खुद मौत के मुँह में जा रहे हैं और अपने दूसरे भाइयों को भी तलवार के घाट उतार रहे हैं।

"अपने भाइयों का आप बहुत खून बहा चुके ! श्रमिकों, जागो ! तुम्हारा दुश्मन आस्ट्रिया और जर्मनी के सैनिक नहीं हैं, बल्कि तुम्हारा अपना

बार है, ये पूँजीपति और ज़मीदार हैं। इन्हीं की ओर अपनी राइफल को मोड़ो—तुम्हारी गोलियाँ इन्हीं पर चलें। जर्मनी और आस्ट्रिया के सैनिकों से भाईचारा क़ायम करो। बीच में काँटे के घेरे इन लोगों ने डालकर तुम्हें पशुओं की तरह अलग-अलग बाड़ें में रखा है। अपने हाथ बढ़ाओ, आपस में हाथ मिलाओ। तुम सभी मेहनत करने वाले भाई-भाई हो, तुम सभी के हाथों में मेहनत के चिह्न स्वरूप एक ही से ठेले और घिस्से हैं। राजतंत्र का नाश हो! साम्राज्यवादी लड़ाई का नाश हो! संसार भर के मेहनत करने वालों की एकता की जय हो!"

लिस्तनिस्की ने गुस्से में यह पर्चा पढ़ा। "अब शुरू हो गया।" उसने सोचा। घृणा से उसका हृदय भर गया। उसने तुरन्त ही इसकी ख़बर रेजिमेंट के कमान्डर को दे दी और पूछा कि क्या किया जाय।

"सार्जेंट मेजर और अफ़सरों को लेकर तुरंत तलाशी शुरू करो। सबकी तलाशी लो। अफ़सरों को भी मत छोड़ो। मैं डिविजनल स्टाफ से पूछूँगा कि वे कब रेजिमेंट को तोड़ रहे हैं। मैं उनसे जल्दी कराऊँगा। तलाशी में कुछ मिले, तो तुरन्त खबर करना।"

"मैं समझता हूँ, यह मशीनगन वालों का काम है।"

"ऐसा? तो मैं उसके कमान्डर को भी कह रहा हूँ कि अपने कोज़ाकों की तलाशी लें।"

लिस्तनिस्की ने जब सब अफ़सरों को इकट्ठा कर कमान्डर का हुक्म सुनाया, मरकुलौव गुस्से में बोला—"यह अनर्थ है? क्या हम एक दूसरे की तलाशी लेंगे?"

"तो पहले तुम्हारी ही तलाशी हो, लिस्तनिस्की।" एक नौजवान कप्तान ने कहा।

"नहीं गोटी फेंककर निर्णय कर लें!"

"यह दिल्लगी ठीक नहीं"—लिस्तनिस्की ने कहा और तय हुआ, अफ़सर तो सीज़र की बीबी की तरह हमेशा ही सन्देह से परे हैं। खराब था

बेचक, वह चला गया। अतः कोज़ाकों की ही तलाशी ली जाय। बड़ी सरगर्मी से तलाशी हुई—लेकिन, एक ही पर्चा जो मिला, वह ऐसे कोज़ाक की जेब में जो लिखना-पढ़ना जानता ही नहीं था। पूछने पर उसने ज़ोर से, दुखित होकर, गुस्से में कहा—

"माफ कीजिये, हुजूर, मैं पढ़ना भी नहीं जानता। मैंने यह कागज़ उठा लिया। क्योंकि सिगरेट बनाने के लिए मेरे पास कागज नहीं रह गया था यह योंही उड़ रहा था, मैंने रख लिया।"

लिस्तनिस्की ने खखार की और अपने अड्डे की ओर मुड़ा—और अफसर उसके पीछे चले।

# ज

## १

कोज़ाकों की एक स्पेशल आर्मी तैयार की गई थी। असल में इस पल्टन का नाम था, तेरहवीं पल्टन, लेकिन, अफसरों ने तेरह का बदसगुन नाम रखना मुनासिब नहीं समझा, उसे स्पेशल आर्मी कहा जाने लगा।

यह पल्टन चढ़ाई की तैयारी में लगी थी। इसी के साथ एक कम्पनी में तारकतारस्क गाँवके दूसरी पाँतके कोज़ाक थे। इंजिनड्राइवर इवान एलेक्सीविच भी इसी में था। और भी बहुत से लोग थे।

एक सुबह को यह १६१८ अक्टूबर की बात है, वे सड़क पर निकल कर मार्च करते आगे बढ़ रहे थे कि इवान ने देखा, पैदल सेना की पाँत से उसे कोई पुकार रहा है। उसने सर घुमाकर उस सैनिक की ओर देखा—

"इवान, मेरे पुराने दोस्त।"

अपनी पल्टन छोड़कर वह उसकी ओर दौड़ा। उसकी राइफल पीठ पर झनझन कर रही थी। नज़दीक आकर वह चिल्ला उठा—

"तुम मुझे नहीं पहचानते? क्या बिल्कुल भूल गये!"

ईवान ने मुश्किल से पहचाना कि यह वैलेट है। उसका मुँह और ठुड्डी धुयें के रंग की दाढ़ी में बिल्कुक छिप गये थे।

"कहाँ से तुम टपक पड़े?" उसने पूछा।

"मैं भी इसी रेजिमेंट में हूँ। मैंने स्वप्न में भी ख्याल नहीं किया था कि अपने किसी दोस्त से यहाँ मिल सकूँगा।"

वैलेट के छोटे हाथ को अपने हाथ में लपेटे वह आनन्द और उत्साह में हँसता रहा कोज़ाक के पैर से पैर मिलाकर चलने के लिए वैलेट ने लम्बे

डग रखना शुरू किया। उसकी आँखों में नमी आ गई थी, वह बड़ी भावुकता से इवान की आँखों को देखता जाता था।

"हम लोग चढ़ाई में जा रहे हैं..."

"हम भी।"

"खैर, कैसी कट रही है, इवान !"

"पूछो मत।"

"इधर भी यही हाल है। १९१४ से कभी खाई के बाहर जाने का मौका नहीं मिला।

"स्टौकमैन की याद है न ? वह हमारा प्यारा ओसिप डैविडोविच ! उसने हमें पहले ही बता दिया था न ? वह आदमी नहीं, देवता था।"

"मैं उसे याद रखता हूँ !" वैलेट चिल्लाया, उसका घूँसा काँप रहा था, उसके चेहरे पर आनन्द की झलक थी। "मैं तो उसे अपने बाप से भी ज्यादा याद रखता हूँ। उसका क्या हुआ, तुम्हें मालूम है ?"

"वह साइबेरिया में है।" इवान के चेहरे पर उदासी छा गई।

"कैसे ?" वैलेट उत्तेजना में उछलता हुआ पूछा।

"वहाँ वह जेल में है। जितना मैं जानता हूँ, वह बेचारा मर चुका होगा।"

वैलेट थोड़ी देर तक और चला किया। उसकी जबान बन्द हो चुकी थी। फिर उसने अपनी कम्पनी की ओर नजर की। इवान के हाथों से अपना हाथ छोड़ाते उसने उसे अभिवादन किया और कहा—"अब फिर हमारे मिलने की आशा तो नहीं है।"

इवान ने बायें हाथ से टोपी उतार ली और झुककर अपने हाथों में वैलेट को बाँध लिया। दोनों ने एक दूसरे को इस तरह चूमा, जैसे उनकी यह आखिरी भेंट है। अचानक वैलेट जैसे मूर्च्छित हो चला हो, उसने अपना सर इवान की छाती पर झुका दिया। इवान ने पांत से अलग होकर वैलेट से कहा—

"भाई, ओ मेरे भाई। आह! तुम कितने मजबूत थे! आह..."

वैलेट ने आँसू से तरबतर अपने चेहरे को हटा लिया और अपने घूसे से अपनी छाती को पीटता हुआ बोला—

"हाँ, था—मैं मज़बूत था। लेकिन इन्होंने मुझे चूर कर डाला, कुचल डाला। बूढ़े घोड़े को उन्होंने दौड़ाते दौड़ाते मार डाला!"

उसने कुछ और कहा, लेकिन इवान सुन नहीं सका, वह नज़रों से दूर हो चला था।

२

रात सुनसान। जंगल। गोलों से नष्टभ्रष्ट की गई ज़मीन पर दस्तों के सैनिक सावधानी से पैर रखते हुए बढ़ रहे हैं। वैलेट लम्बी पांत के आखिरी हिस्से में दाहने तरफ से छठा व्यक्ति था। चलते-चलते कभी कोई गिर पड़ता और गालियाँ बकने लगता है।

"ओ, पड़ोसी!" कोई धीमे से वैलेट की बाईं तरफ बोला।

"क्या है?"

"मज़े में चल रहे हो न?"

"मज़े में?" उसी समय वैलेट को ठेस लगी और वह गिरते-गिरते बचा।

"कितना अंधकार—नरक से भी ज्यादा अँधियाता!" उसने बाईं तरफ से आवाज़ सुनी।

एक या दो मिनट तक दोनों एक दूसरे को बिना देखे चला किये। फिर वह अजनबी आदमी वैलेट के दाहिने कानों में फुसफुसाया—

"हम लोग साथ साथ चलें, तब इतना बुरा नहीं मालूम होगा।"

दोनों चुपचाप जा रहे थे। फिसलन-भरी ज़मीन पर भींगे हुए बूटों को बड़ी हुशियारी से वे रखते। अचानक हँसिये के आकार का चाँद बादल से निकल पड़ा। साफ आसमान में आकर उसने किरणों की वर्षा कर दी।

पेड़ों के पत्ते चमक उठे। दोनों ने रोशनी में देखा, पांत बहुत आगे बढ़ गई है। वे तेजी से चले। किन्तु, घने अंधकार में वे उसे पा न सके। ख़ैर, किसी तरह वे मोर्चे पर पहुँचे। कुछ देर इधर-उधर घूम कर वे एक खाई में कूद पड़े।

"चलो, सुरंगों में खोजें। शायद खाने को कुछ मिल जाय।" वैलेट के साथी ने प्रस्ताव किया।

"अच्छी बात।"

"तुम दाहिने जाओ, मैं बाईं ओर देखता हूँ"

पहली सुरंग जो मिली, उसमें दियासलाई जलाकर वैलेट घुसा। लेकिन वह उसमें से ऐसे भागा, मानो उसे भूत खदेड़ रहा हो। भीतर उसने दो मुर्दों की लाशें एक-दूसरे पर पड़ीं, देखा था। तीन सुरंगों की उसने व्यर्थ खोज की चौथे का दरवाजा ज्यों ही खोला कि जर्मन भाषा में उसने कड़ी आवाज़ सुनी।

"कौन है ?।'

काँपते शरीर से वैलेट चुपचाप पीछे कूद पड़ा।

"कौन ? ओटो ? तुम अब तक कहाँ थे।" वह जर्मन सुरंग से बाहर आकर, लापरवाही से अपने कंधे पर के ओवरकोट को सम्हालते हुए बोला।

"हाथ उठाओ ! हाथ उठाओ ! आत्मसमर्पण करो ! "वैलेट ज़ोर से चिल्लाने लगा।

आश्चर्य से गूँगा बना, उस जर्मन ने धीरे धीरे हाथ उठाया, बगल में घूम गया और अपनी ओर तनी हुई किरचों की चमक को घूरता रहा। उसका ओवरकोट कंधे पर से गिर पड़ा। उसकी उँगुलियाँ काँप रही थीं। वैलेट स्थिर खड़ा उस लम्बे तगड़े जर्मन को देख रहा था—उसकी वर्दी के चमकीले बटन, छोटे बूट और एक तरफ झुकी टोपी। अचानक उसने अपना रुख बदला, जरा-सा हिला, मुँह से कुछ फेंका जो न खखार थी और न थूक और जर्मन की ओर बढ़ाकर पोली, टूटी आवाज में कहा—

"भागो, जर्मन, भागो ! मुझे तुमसे कोई झगड़ा नहीं है। मैं तुम पर गोली नहीं चलादूंगा।"

उसने अपनी राइफल खाई की दीवार में उँगठा दी और एँडी पर उठता हुआ अपना हाथ उस जर्मन के दाहिने हाथ तक बढ़ा दिया। उसकी इस हरकत से उस जर्मन को इत्मीनान हुआ, उसने अपना हाथ नीचे किया और रूसी ज़बान में कहीं जानेवाली बातो को ध्यान से सुनने लगा।

वैलेट ने बिना किसी हिचक के जर्मन की ठंडी उँगुलियो को अपनी मुट्ठी में लिया। फिर अपनी हथेली ऊपर की, जिसके काले ठेले घिस्से को चाँद की रोशनी ने चमका दिया।

"मै मजदूर हूँ। मैं तुम्हें क्यों मारूँगा।" हँसते हुए वैलेट ने जर्मन के कंधे पर हाथ रखा और आगे के जंगल की ओर इशारा करते कहा—"भागो ! बेवकूफ, थोड़ी देर में हमारे आदमी यहाँ आ जायँगे।"

वह जर्मन वैलेट की ओर देखते कुछ देर खड़ा रहा—मानो, वह इन शब्दों का अर्थ समझने की कोशिश कर रहा हो। फिर दो तीन सेकेन्ड के अन्दर उसकी आँखें वैलेट की आँखों से मिलीं, कि उसके होंठों पर मुस्कुराहट दौड़ गई। एक कदम पीछे हटकर उसने अपने हाथ आगे बढ़ा दिये, वैलेट के हाथों को पकड़कर हिलाने लगा—मुस्कुराहट और भावप्रवणता उसके चेहरे से छलकी पड़ती थी।

"तुम मुझे जाने देते हो ? हाँ, मैंने अब समझा ? तुम रूसी मजदूर हो ? मेरी ही तरह समाजवादी ? हाँ मेरे भाई, मैं तुम्हें किस तरह भूल सकूँगा। . ...मेरे पास शब्द नहीं......लेकिन तुम आदमी नहीं, देवता.....मैं।"

विदेशी शब्दों के इस झरने में वैलेट सिर्फ एक शब्द समझ सका—समाजवादी।

"हाँ, मैं समाजवादी हूँ। तुमने ठीक अनुमान किया। लेकिन, साथी, अब भागो ! प्रणाम भाई। ज़रा हाथ बढ़ाओ। हम आपस में भाई हैं यदि भाई यों नहीं बिदा होते।"

दोनों भावावेश में थे, दोनों एक दूसरे को स्वभावतः ही समझ रहे थे, दोनों के हाथ जुड़े थे दोनों की आँखें एक दूसरे से बँधी थीं। उसी समय जंगल से रूसी सेना की पाँत के आने की धमक सुनाई दी। जर्मन ने धीरे से कहा—

"आगे जो वर्ग युद्ध होगा, उसमें हम लोग एक ही खाई में होंगे। क्यों साथी, बात है न?" फिर वह भूरे भेड़िया सा छलांग लेता जंगल की ओर निकल गया।

## ३

ग्रीगर जब मोर्चे पर लौटा, फिर वह एक अच्छा कोज़ाक था। यद्यपि उसके दिमाग़ में लड़ाई की व्यर्थता स्पष्ट अंकित थी, तो भी उसने कोज़ाकों की इज्जत निभाने में कोई कोर-कसर न की।

१६१५ की मई में जर्मनी का इस्पाती दस्ता जब दनादन आगे बढ़ रहा था, उसे रोकने में बारहवीं कोज़ाक रेजिमेंट ने ही कमाल दिखलाया। जब वे एक दिन जर्मन सेना के धावे के इन्तजार में थे, ग्रीगर ने पीछे मुड़कर देखा, एक सूरज आसमान में चमक रहा है। दूसरा नदी में तैर रहा है। नदी से उस ओर कोजाक घोड़े नजर आते थे और सामने जर्मनों की वर्दी में लगे गिद्ध की तस्वीरें झलझल कर रही थीं। हवा बारूद की गंध के झोंके पर झोंके ला रही थी। बिना किसी घबराहट के, अच्छी तरह निशाना बाँधकर ग्रीगर गोलियाँ चलाने लगा। उसके आस्ताने पर एक मुनिया आ बैठी थी, उसे होशियारी से उड़ा दिया। उसके बाद चढ़ाई हुई। अपने राइफल के कुंदे से ग्रीगर ने एक जर्मन लेफ्टिनेंट को चित्त कर दिया, तीन को क़ैदी बनाया और उनके सर पर गोलियाँ चलाते, उन्हें नदी की ओर भागने को लाचार कर दिया।

१६१५ की जुलाई में उसने आस्ट्रियनों के हाथ से एक पूरा तोपखाना छीन लिया। उसी लड़ाई में वह चुपके दुश्मनों के पीछे चला गया और वहाँ से एक दस्ती मशीनगन के द्वारा लगातार गोलियाँ चलाकर बढ़ते हुए आस्ट्रियनों

को भागने के लिए लाचार कर दिया। उसने एक कप्तान को क़ैद बनाया, जिसे वह भेंड़ की तरह हँकाकर अपने कैम्प में लाया।

उसके बाद ही एक दिन उसकी और उसके जानी दुश्मन स्टेपन की भेंट अजीब तरह से हुई। बारहवीं रेजिमेंट मोर्चे पर से हटाकर पूर्वी प्रुसिया की तरफ रवाना की जा चुकी है। कोजाकों ने अपने घोड़ों से जर्मनों के खेत रौंदे, उनकी बस्तियों पर गोलियाँ चलाई। जिस रास्ते से वे गये, वहाँ धुएँ उठते, जली दीवालें और खपरैल दिखाई देते, घर धूल में मिले होते। स्टालियन शहर के नजदीक उसकी भेंट चढ़ाई पर जाती २७वीं रेजिमेंट से हुई। ग्रीगर ने दूर से ही अपने भाई पियोत्रा, सफाचट दाढ़ी किये स्टेपन और गाँव के दूसरे कितने कोजाकों को देखा। इस रेजिमेंट को जर्मनों ने घेर लिया। जब बारहों कम्पनियाँ एक के बाद एक जर्मनों के घेरे को तोड़ने की कोशिश में बढ़ रहीं थीं, ग्रीगर ने देखा, स्टेपन जिस घोड़े पर बैठा था, वह गोली खाकर मर गया, और वह उस पर से कूद कर भेड़िये की तरह चक्कर दे रहा है। अचानक आनन्द के उत्साह में ग्रीगर अपना घोड़ा फँदाता उस तरफ बढ़ाए और जब तक आखिरी कम्पनी के सवार घोड़े कुदाते उसे कुचलने ही जा रहे थे, कि वहाँ पहुँचकर ग्रीगर ने चिल्ला कर कहा—

"मेरी रकाब पकड़ो।"

स्टेपन ग्रीगर की रकाब को पकड़े, उसके घोड़े के साथ ही आधमील तक दौड़ता रहा। "जोर से मत दौड़ाओ, भगवान के लिए धीरे धीरे......" स्टेपन के मुँह से झाग आ रहा था, वह हाँफ रहा था।

जर्मनों ने जो घेरा डाला था, उसमें एक जगह टूट हो गई थी—उसी रास्ते ये दोनों निकल गये। जब जंगल सिर्फ दो सौ गज पर रह गया था, एक गोली सनसनाती हुई आकर स्टेपन के पैर में लगी और वह सर के बल गिर पड़ा। हवा से ग्रीगर की टोपी उड़ गई और उसके बालों ने उसकी आँख ढँक ली। जब आँख से बाल हटाये, ग्रीगर ने देखा, स्टेपन एक झाड़ी के नजदीक बैठा है, अपनी कोज़ाक टोपी उसने फाड़ डाली है और जल्दी में अपने

पटलून के बटन खोल रहा है। पहाड़ी की ओर से जर्मन दौड़े आ रहे थे। ग्रीगर ने महसूस किया, स्टेपन मरना नहीं चाहता, इसलिए वह टोपी और पाजामा हटा रहा है, क्योंकि जर्मन लोग कोज़ाकों के प्रति ज़रा भी दया नहीं दिखलाते। अपने दिल की धड़कन पर क़ब्ज़ा कर उसने अपने घोड़े को मोड़ा, झाड़ी के नज़दीक पहुँचा और घोड़ा चल ही रहा था कि उस पर से कूद गया।

"घोड़े पर चढ़ जाओ।" उसने स्टेपन को आज्ञा दी।

जब ग्रीगर सहारा देकर स्टेपन को घोड़े पर चढ़ा रहा था, उस समय की स्टेपन की आँखों को भूलना मुश्किल है। स्टेपन को लेकर घोड़ा भागा, रकाब पकड़े ग्रीगर उसकी बगल में दौड़ा जा रहा था। उनके सर से, उनके दाहिने बायें, उनके आगे पीछे कारतूस ऐसे फूट रहे थे, जैसे भड़भूँजे की हाड़ी में चने!

जंगल में पहुँचकर स्टेपन घोड़े से नीचे खिसक गया। उसका चेहरा मुर्झाया था। दाहने पैर के बूट से खून की धारा बही जा रही थी। वह लँगड़ाता हुआ एक ओक के पेड़ के नीचे लेट गया और ग्रीगर के पहुँचने पर बोला—

"मेरे बूट में खून भरा है।"

ग्रीगर चुपचाप खड़ा देख रहा था।

"ग्रिश्का, जब मैं आज चढ़ाई पर जा रहा था...सुन रहे हो ग्रीगर!" स्टेपन अपने दुश्मन की आँखों की ओर देखता बोल रहा था। "जब मैं आज चढ़ाई करने जा रहा था, मैंने पीछे से तीन बार तुम पर गोलियाँ छोड़ीं!... भगवान ही ने तुम्हारी हत्या करने से मुझे बचाया।"

दोनों की आँखें मिलीं। धँसे हुए कोटर से स्टेपन की पुतलियाँ चमक रही थीं। होंठों को हिलाये वह कहे जा रहा था—

"तुमने मुझे मौत से बचाया है।...तुम्हें धन्यवाद।...लेकिन मैं तुम्हें अक्सीनिया के लिए क्षमा नहीं कर सकता।...अब खुद मेरे हाथ न उठ सकेंगे...लेकिन, ग्रीगर कभी मुझे मजबूर न करना..."

"मैं जबूर नहीं करूँगा।" ग्रीगर ने जवाब दिया। दोनों आदमी फिर दुश्मन ही की तरह विदा हुए।

ल्वौब की चढ़ाई में ग्रीगर ने अपनी कम्पनी को आगे बढ़ा वह अकेले यर्ना से हावीत्सर तोपों की बैटरी छीन ली। उसके एक महीने बाद वह अकेले बग-नदी तैरकर उस पार चला गया, सन्तरी को पटक दिया और बड़ी देर तक कुश्तमकुश्ती के बाद उसे बाँधकर लौटा।

अपनी अमानवीय शक्ति के प्रदर्शन का एक भी मौका वह नहीं छोड़ती। बात बात पर अपने को खतरे में डाल देना, कपड़े बदलकर दुश्मनों के बीच से निकलकर उनके पीछे चला जाना, उनके नाकों पर कब्जा पर लेना, गोलियाँ खाना और देना—अब उसका दिल पत्थर का हो चुका था। उसमें दया ममता का निशान न था। एक के बाद एक उसने चार सेंट जौर्ज के तमगे पाये थे। जब परेड होता, वह झंडे के नीचे फख्र से खड़ा किया जाता।

४

सुरंग में अब भी सैनिकों का ताश खेलना चल रहा था, कि ग्रीगर अपने तख्ते पर लेट गया और उसे नींद आ गई। सपने में उसने सूखे मैदान देखे, लाल फूलों के चप्पे देखे, घोड़ों की टाप से बने खड्ड देखे। मैदान सूना था, उसकी निस्तब्धता भयानक थी। वह कड़ी, बलुही जमीन पर बूट पहने चल रहा था, लेकिन उसे अपने पैर की आहट नहीं सुनाई पड़ती थी। यह क्या? वह भयभीत हुआ।···वह चौंक कर उठा अपने होंठों को यों चबाता, जैसे कोई भूखा घोड़ा घास चबा रहा हो। फिर वह सो गया, स्वप्न रहित शान्ति निद्रा में।

दूसरे दिन उठने पर एक अजीब व्याकुलता से वह परीशान था।

"क्यों, आज उपवास क्यों कर रहे हो? क्या रात में घर का सपना देखा?" युरिमिन ने उससे पूछा।

"तुम्हारा अनुमान ठीक है। मैंने मैदान का सपना देखा है।···मैं

इस तरह ऊब उठा हूँ।…मैं घर लौटना चाहता हूँ। ज़ार की सेवा से मैं ऊब उठा हूँ।"

यूरिपिन मुस्कुराया। वह बहुत दिनों से एक ही सुरंग में ग्रीगर के साथ रहता आया था। उसे ग्रीगर के प्रति वह श्रद्धा थी, जो एक मजबूत जानवर को दूसरे मजबूत जानवर के लिए होती है। ग्रीगर के चरित्र और मनोवृत्ति पर भी यूरिपिन का प्रभाव पड़ा था। युद्ध के बारे में यूरिपिन के विचारों में भी परिवर्तन हुआ था। उसका रुख और व्यवहार युद्ध-विरोधी होता जा रहा था। देशद्रोही सेनापतियों और ज़ार के महल में घुसे जर्मनों की चर्चा वह प्रायः करता। एक बार उसने कहा—"जब ज़ार में ही जर्मन खून है, फिर इस लड़ाई से किसी भलाई की उम्मीद मत करो...।" ग्रीगर ने गरांज़ा के उपदेश उसमें प्रवेश कराने की चेष्टायें की थीं, लेकिन व्यर्थ।

"ये बातें सुनने में भले ही अच्छी हों, ये काम की नहीं, वह हँसता हुआ कहता। "मिशा कोशवाइ भी इसी तरह की बातें हमेशा बका करता है। लेकिन, याद रखो, क्रान्तियों से खुराफात के अलावा और कोई अच्छाई नहीं पैदा हो सकती। हम कोज़ाकों को एक ही चीज़ चाहिये—कोज़ाकों की अपनी सरकार हो। किसानों से हमारी कोई बात नहीं मिलती। हंस और सूअर साथी नहीं हो सकते। किसान अपने लिए ज़मीन चाहते हैं, मजदूर अच्छी मजदूरी माँगते हैं। लेकिन वे हमें क्या देंगे? ज़मीन की हमें कमी नहीं। और दूसरी क्या चीज़ हमें चाहिये? निश्चय जानो, ज्यों ही वे ज़ार को निकाल बाहर करेंगे, वे हम पर भी टूटेंगे। फिर पुरानी लड़ाई शुरू हो जायगी। वे हमारी ज़मीन छीन कर किसानों को देना चाहेंगे। हमें हमेशा चौकन्ना रहना चाहिये।"

"तुम हमेशा एकतरफा सोचते हो।" ग्रीगर की आवाज़ में झिझक थी।

"तुम बेवकूफी की बातें करते हो। तुम अभी नौजवान हो, तुमने अभी संसार नहीं देखा। लेकिन थोड़े दिन ठहरो, तुम्हें पता चल जायगा, किसकी बात सही थी।"

प्रायः ऐसी बहसें इस तरह खत्म होतीं। ग्रीगर चुप हो जाता और यूरिपिन बकता जाता।

५

एक दिन मिशा कोरोवाई खाना लाने गया था कि वह दौड़ा हुआ आया और बोला—

"क्या हम कुत्ते हैं? ये लोग मरे घोड़े का मांस राँध कर हमें खिला रहे हैं।"

जब सबने शोरवा सूँघा, बात सही मालूम हुई। यही नहीं, मांस में पिल्लू भी स्पष्ट दिखाई दिये। बड़ा हल्ला मचा। कम्पनी कमान्डर ने किसी तरह स्थिति सम्हाली। आगे के लिए इतमीनान दिलाया, अपराधी को सज़ा देने की प्रतिज्ञा की।

इसके बाद ही ग्रीगर की कम्पनी एक दिन चढ़ाई के लिए जा रही थी। एक पहाड़ी पर कब्जा करना था। घोड़ों की टापों की आवाज़ से तराई गूँज रही थी, भूरी धूल आसमान की ओर चढ़ रही थी। ग्रीगर और यूरिपिन अगल-बगल थे। ग्रीगर ने अपराधी की तरह मुस्कुराते हुए कहा—

"न मालूम क्यों, मैं ज़ोर से ही घबरा रहा हूँ। मुझे लग रहा है, कि मैं आज पहली बार लड़ाई में जा रहा होऊँ!"

पहाड़ की तलेटी की ओर कोज़ाक छोटे-छोटे दस्ते में बढ़ रहे थे। एक गोली भी नहीं दग रही थी। दुश्मनों की खाइयों में आश्चर्यजनक निस्तब्धता थी। ग्रीगर उत्सुकता में मुस्कुरा रहा था। उसकी नाक बंशी की तरह नुकीली हो चली थी। गाल धँसे हुए थे, जिस पर दाढ़ी की फसल बढ़ी हुई थी। मोटी भवों के नीचे आँखें चमक रही थीं। उसका स्वाभाविक स्वरूप उसे छोड़ चुका था। आज ऐसा अपने और अपने साथियों के लिए वह कभी नहीं चिन्तित हुआ था। उसकी इच्छा हो रही थी कि वह नीचे कूद पड़े और धरती से माता की तरह लिपट कर रोये और अपना दुखड़ा सुनावे। वह अविश्वास की नज़र से

बार-बार सामने की खाइयों की ओर देखता था और बड़ी मुश्किल से अपनी आँखों में बार-बार डबडबा आते हुए आँसू को रोककर वह यूरिपिन से बातें करने लगा था ।

दुश्मनों की ओर से आई गोलियों की पहली मौली में ही वह फेंक दिया गया और कराहते हुए जमीन पर आ रहा । उसने अपने गट्ठर में बँधे फर्स्ट-एड ड्रेसिंग के सामानों को खोलना चाहा, लेकिन केहुनी के नजदीक से इतना लहू बह रहा था कि वह तुरत कमजोर पड़ गया । वह पेट के बल लेट गया और अपना सर झुकाकर अपनी सूखी जीभ से बरफ चाटने लगा । तोप और राइफल की धाँयँ-धाँयँ, पटाख-पटाख पड़े-पड़े भयभीत बना वह सुनता रहा । फिर सर उठा कर देखा, कोज़ाक पीछे भागे जा रहे हैं—गिरते, पड़ते, ऊपर-नीचे गोलियाँ चलाते । एक अव्यक्त भय ने उसे पैर पर खड़ा कर दिया और वह जंगल की ओर भागा ! उसके पीछे मुर्दों का ढेर था, जिन्हें तोप अभि-स्नान करा रहा था ।

मिशा कोशवाई की बाँह से लटका ग्रीगर जंगल में घुसा । जर्मनों की ओर से जंगल पर भी गोले-गोलियों की बौछार हो रही थी ।

"अच्छा गरम समय ये हमें दे रहे हैं ।" यूरिपिन आनन्द से चिल्ला उठा और एक चीड़ के पेड़ से सटकर वह जर्मन-खाई की तरह धुँआँधार गोलियाँ चलाने लगा ।

"अब बेवकूफ लोग सीखेंगे, अब कमअक्लों को सबक मिलेगा ।" मिशा अपनी बाँह ग्रीगर से छुड़ाकर बरबरा रहा था । "लोग सूअर हैं, बिल्कुल गधे । जब शरीर का सारा खून निकल चुकेगा, तब ये समझ सकेंगे कि आखिर उन्होंने किसलिए जान दी ।"

"क्या बड़बड़ा रहे हो ।" यूरिपिन झिझककर बोला ।

"अगर तुम बुद्धिमान हो, खुद समझ सकोगे । अगर बेवकूफ हो, फिर कौन तुम्हें समझाये ? सर पर हथौड़े से पीटकर भी मूर्खों के दिमाग में अक्ल की बात नहीं घुसाई जा सकती ।"

"तुम्हें अपनी प्रतिज्ञा याद है ? तुमने राजभक्ति की शपथ खाई थी या नहीं ?"—यूरिपिन ने पूछा।

जवाब देने के पहले मिशा घुटने के बल नीचे झुक गया और दोनों हाथों से बरफ बटोरने लगा। काँपते और खाँसते हुए वह उसे निगल रहा था।

---

# झ

## १

तारतारस्क गाँव पर पतझड़ अपनी बहार पर था। आसमान पर हवा के मधुर झोंके बादलों को धीरे-धीरे पश्चिम की ओर हाँके-से जा रहे थे। किन्तु, गाँव पर, डोन की बालियों के गहरे हरे मैदान पर, नंगे जंगल पर हवा आँधी की तरह बहती, झाड़ियों को झकझोरती-झुकाती, डोन में तरंगे उठाती और गलियों में गिरे सूखे पीले पत्तों को उड़ाती-भगाती। क्रिस्तोनिया के आँगन में गेहूँ के डंठल का जो अम्बार था, उसके ऊपरी हिस्से को उड़ाकर उसने गली में फेंक दिया, वहाँ से सड़क पर और अन्त में स्टेपन की झोपड़ी में ला समेटा। क्रिस्तोनिया की बीबी ने घर से निकलकर यह देखा, थोड़ी देर उछल कूद की, फिर अपने घर में लाचार आ बैठी।

लड़ाई के तीसरे वर्ष ने गाँव पर अपने स्पष्ट चिह्न अंकित कर दिये थे। मर्दों के चले जाने के बाद झोपड़ी को देखने वाला कोई नहीं रह गया था—छप्परों में छेद हो चले थे, आँगन में घास-फूस उग आये थे। क्रिस्तोनिया के घर में मर्द-सूरत सिर्फ उसका नौ वर्ष का बेटा था। अनिकुश्का की बीबी बिल्कुल अकेली थी। अपने एकान्त जीवन में रंगीनी लाने के लिए उसने खूब सिंगार-पटार करना शुरू कर दिया था और मर्द के अभाव में चौदह-पन्द्रह वर्ष के छोकरों से भी दिलबहलाव कर लिया करती थी। उसका घर उजड़ रहा था, उसकी खेती बर्बाद हो रही थी। स्टेपन का झोपड़ा बिल्कुल वीरान था। खिड़कियाँ खिसक चली थीं, छत गिर रहे थे, दरवाजे के ताले में जंग लग गई थी और उसके आंगन को पशुओं ने अपना अखाड़ा बना लिया था। इवान तोमिलिन के घर की

जर्मनों के घर को गिराया था, मानो, प्रकृति उसने बदला चुका रही थी।

यही गाँव भर की हालत थी। सिर्फ एक छोर पर पैंतलीमन मेलखोव का घर अपनी पुरानी आकृति को क़ायम रखे हुए था। ऊपर से वहाँ सब चीजें ठीक मालूम पड़ती थीं, लेकिन, बात ऐसी नहीं थी। अन्नागार एक तरफ धँस रहा था, उसकी छत पर का लोहे का मुर्गा गिर चुका था। बूढ़े से सब प्रबंध होना मुश्किल था। बूढ़ा दिन पर दिन खेती का रकबा कम किये जाता। हाँ, परिवार की तादाद में कमी नहीं हुई थी। पियोत्रा और ग्रीगर की जगह पर नाटालिया ने दो बच्चे दे दिये थे। एक बेटा और एक बेटी पैदा कर उसने सास-ससुर दोनों को खुश कर दिया था। नाटालिया को ये बच्चे बड़ी पीड़ा से हुए। समूचा दिन मुश्किल से वह खड़ी हो पाती थी, उसके पेट में दर्द होता था। दर्द को बहुत धीरता से उसने बर्दाश्त किया। सिर्फ उसके चेहरे पर रह-रह कर पसीने की बूँदें चमकने लगतीं। इलिनिच्चना की अनुभवी आँखों ने सब कुछ समझा, उसे लेट रहने को कहा।

लेकिन, वह लेटी हुई नहीं रह सकी। जब बाहर चली, इलिनिच्चना ने रोका, लेकिन बहाना करके वह निकली। अपने हाथों से पेट को पकड़े, कराहते, वह गाँव के बाहर निकली, एक झाड़ी में पहुँची और वहाँ पड़ गई। जब शाम हुई, वह कपड़े में दो बच्चों को लपेटे घर पहुँची।

"मेरी बेटी! मेरी छोटी शैतान! यह क्या है? तुम अब तक कहाँ थी।" इलिनिच्चना चिल्ला रही थी।

"मुझे शरम लगी, इससे बाहर चली गई।...बाबूजी के सामने...मैं नहीं चाहती थी...मैंने अपनी सफाई कर ली है, बच्चों को भी धो डाला है...लीजिये इन्हें।" पीली पड़ी नाटालिया ने जवाब दिया।

यह ख़बर सुनकर बूढ़े पैंतलीमन के आनन्द का कोई ठिकाना नहीं रहा। वह हँसा, चिल्लाया, शोर मचाया। वह वर्ष बड़ा ही उपजाऊ साबित हुआ। गाय ने दो बच्चे दिये, भेड़ ने दो बच्चे दिये, बकरी ने दो बच्चे दिये। यह हमारे लिए खुशी का वर्ष है—बूढ़ा जिसतिस से कहता फिरता।

नाटालिया अपने बच्चों से उलझी रहती। वह अपने को भूल गई—पूरा समय बच्चों में ही लगाती। उन्हें नहलाती, सहलाती, सजाती, सिंगारती प्रायः ही वह अपना एक पैर ज़मीन पर लटका कर बिस्तरे पर बैठ जाती और दोनों बच्चों को पालने से निकालकर, कंधे हिलाती, अपने दोनों पुष्ट पीले स्तनों को चोली से बाहरकर, एक ही बार उनके मुँह में दे देती।

२

इन वर्षों में जिन्दगी डोन-नदी की बाढ़ के पानी की तरह नीचे खिसकती जा रही थी। दिन काटे न कटते। छोटी-छोटी ज़रूरतें, छोटे आनन्द और बड़ी चिन्तायें लोगों की जिन्दगी को घसीटे जा रही थीं। सब का मन लड़ाई में गये सम्बन्धियों पर अँटका रहता। पियोजा और ग्रीगर के पास से बहुत-बहुत दिनों पर ख़त आते, जिन पर बहुत से डाकख़ानों की मुहरें लगी होतीं। ग्रीगर का अन्तिम ख़त किसी आदमी (सेंसर!) के हाथ में पड़ गया था, जिसने उसके आधे हिस्से को गहरी नीली रोशनाई से पोत डाला था और उसकी बग़ल में न समझने लायक निशान कर दिया था। पियोजा ग्रीगर की अपेक्षा ज्यादा ख़त भेजता और उनमें अपनी बीवी दरिया को उसकी फिसलन के लिए डाँटता-धमकाता। उसकी बीबी की बदचलनी की अफवाह उसके कानों में भी पहुँच चुकी थी। चिट्ठियों के साथ ग्रीगर घर पर रुपये भी भेजता, जो उसे मुशाहरे और तमगे के लिए एलाउएंस के रूप में मिलता। दोनों भाइयों की जीवन-धारा इस समय दो दिशा में प्रवाहित हो रही थी। ग्रीगर युद्ध से ऊब चला था, उसके चेहरे पर खून नहीं रह गया था, पिलिये के रोगी की तरह उसका समूचा शरीर रक्तहीन हो चला था। उसे विश्वास हो चला था कि युद्ध की समाप्ति तक वह जिन्दा नहीं बचेगा। किन्तु, पियोजा बड़ी तेज़ी और आसानी से ऊपर के ज़ीने पर चढ़ रहा था। कम्पनी कमान्डर को उसने ख़ुश कर लिया था। १९१६ के पतझड़ में उसे दो तमग़े मिल चुके थे और अब वह कप्तान बन चला था। उसने अपने ख़त में लिखा था कि वह फौजी अफसरों के ख़ूब

में जाने की भी कोशिश कर रहा है। गर्मी में उसने अपने घर पर जर्मन अफसर से छीना बख्तर और जिरह भेजा और भेजा साथ ही अपना फोटो। चेहरे पर उम्र की छाप थी, मूँछें उमेठी हुई ऊपर चढ़ी थीं और नुकीली नाक के नीचे होंठों पर मुस्कुराहट थी। पियोजा पर जिन्दगी की मेहरबानियां बरस रही थीं। युद्ध ने उसके लिए उन्नति का दरवाजा खोल दिया था, नहीं तो कभी वह अफसरी पा सकता था? सिर्फ एक कांटा उसके दिल में खटकता रहता था। उसकी बीबी की शिकायत गांव भर में फैल रही थी। छुट्टी में, १६१६ की गर्मियों में स्टेपन घर गया था, जब वह लौटा तो कम्पनी में जहाँ-तहाँ बका करता कि उसने पियोजा की बीबी के साथ कैसे मजे उड़ाये हैं। पियोजा ने उसकी बातों पर विश्वास नहीं किया। उसका चेहरा काला पड़ गया, तो भी मुस्कराते हुए, उसने कहा—

"स्टेपन झूठा है। वह ग्रीगर का बदला मुझसे चुकाने का स्वांग भरता है।"

लेकिन, एक दिन जब स्टेपन सुरंग से निकल रहा था, न जाने जान-बूझकर या अनजाने उसने एक कामदार रूमाल गिरा दिया। पियोजा ने जो उसके ठीक पीछे था, वह रूमाल उठा लिया और तुरत वह पहचान गया, यह तो उसकी बीबी की कारीगरी है। फिर एक बार दोनों में पुरानी शत्रुता भड़क उठी। पियोजा अवसर की खोज में था, मौत स्टेपन की खोज में थी। पियोजा को मौका मिला होता तो उसने स्टेपन के सर में अपना निशाना लगाकर उसे दुनिया में फेंक दिया होता। लेकिन, उसके पहलेही स्टेपन एक दिन जर्मन नाके का पता लगानेवाली पार्टी में गया, और फिर नहीं लौटा। उसके साथी कोजाकों ने बताया कि जब वे तार काट रहे थे, एक जर्मन ने उन पर दस्ती बम फेंका। कोजाक बचकर किसी तरह उसके नजदीक पहुँचे और स्टेपन ने एक घूँसे से उसे जमीन पर लुढ़का दिया। उसी समय दूसरे जर्मन सन्तरी ने गोली चलाई और स्टेपन गिर गया। कोजाकों ने इस सन्तरी को किरचों से मार डाला और मूर्छित जर्मन को घसीट कर ले चले। उन्होंने स्टेपन को भी उठाकर लाना

चाहा, लेकिन, वह बहुत भारी था, इसलिए उसे छोड़ना पड़ा। स्टेपन आरज़ू कर रहा था—"भाइयो, मुझे मत छोड़ो! साथियो, मुझे क्यों छोड़े जा रहे हो?" लेकिन उसी समय मशीनगन की गोलियाँ भर्राकर बरसने लगीं और कोज़ाक छाती के बल रेंगते भागे। "भाइयो!"—स्टेपन चिल्लाता रहा, लेकिन इससे क्या? पहले अपने सर की आग बुझाना स्वाभाविक ही है। जब पियोजा को स्टेपन की इस गत की खबर लगी, उसने इतमीनान की साँस लीं। लेकिन, उसने तय किया, लौटकर वह दरिया की जान जरूर लेगा। वह स्टेपन नहीं है। वह बर्दाश्त नहीं करेगा! लेकिन, उसने तुरत ही फिर सोचा—यह ग़लत बात। सांपिन को मारो और अपनी ज़िन्दगी बर्बाद करो। जेल में सड़ते रहो, दुनिया के सभी सुख स्वाहा कर लो। उसने तय किया—वह उसे इस तरह पीटेगा कि वह कभी पूँछ न उठाये। "मैं उस साँपिन की आँख निकाल लूँगा।" दाँत पीसकर उसने द्वीना नदी के किनारे प्रतिज्ञा की।

३

नवम्बर में जोरों से बर्फ पड़ने लगी। गाँव के ऊपरी छोर पर डोन-नदी का पानी बिलकुल जम गया था। उस पर से कभी-कभी कोई हिम्मतवर आदमी चलकर डोन को पार भी कर जाता। लेकिन, निचले छोर पर नदी के दोनों किनारों पर ही बर्फ जम पायी थी। धारा बीच में बहती, हरी तरंगें अपने भूरे सर को उठाये कलोलें करतीं। बड़ी मछलियाँ डोन की गरम छाती से जा चिपकी थीं, सिर्फ छोटी मछलियाँ ऊपर छलतीं-उतरातीं। मछली मारने वाले कुहासे के दिनों के इन्तजार में अपना जाल समेटे बैठे थे।

इसी महीने में पँतेलीमन को ग्रीगर का खत मिला। वह रूमानिया से लिखा गया था और उसमें लिखा था कि ग्रीगर घायल हो चुका है, एक गोली ने उसके बायें हाथ की हड्डी को तोड़ डाला था, घाव अब अच्छा हो रहा है, लेकिन उसे घर आराम करने के लिए भेजा जाने वाला है। इस खबर से मेलेखौव परिवार में उदासी छाई ही थी, कि एक और संकट आ पहुँचा। डेढ़

वर्ष हुए पैंतेलीमन ने एक सौ रूबल साहूकार सरगीमोखोव से कर्ज लिया था। तब से फ़सल ऐसी खराब रही थी और पशुओं का दाम इतना गिर गया था कि कर्ज सधाया नहीं जा सका। साहूकार ने तकाज़ा किया, फिर नालिश कर दी। अब कुर्कीवाला गाँव में आ पहुँचा है! बूढ़ा क्या करे? उसने सोचा, क्यों न अपने समधी कोरशुनोव से यह रकम उधार माँगे।

वह मीरन कोरशुनोव के घर की ओर जा रहा था कि रास्ते में उसे मालूम हुआ, मीरन का बेटा, ग्रीगर का साला, मिट्का लड़ाई से लौटा है। उसे भी सेंटजोर्ज का तमग़ा मिला है। जब वह मीरन के घर पहुँचा, ख़ुद उसने उसका स्वागत किया। आनन्द से प्रफुल्ल चेहरे से वह कह उठा—

"हमारे सौभाग्य का समचार पाया?" मीरन ने अपना हाथ पैंतेलीमन की ओर बढ़ा दिया।

"हाँ, रास्ते में अभी सुना है, लेकिन मैं एक काम से आया हूँ।"

"ज़रा ठहरो, भाई। घर चलो बच्चे से मिलो। हम लोग उसी खुश-खबरी में अभी थोड़ी शराब ले रहे थे।"

पैंतेलीमन भीतर घुसा। मिट्का को आशीर्वाद दिया। बैठते ही बुढ़िया लुकोनिच्चना शराब ढाल-ढालकर उसे पिलाने लगी। "यह तुम्हारे सौभाग्य के नाम पर, यह मिट्का, तुम्हारे घर लौटने की खुश खबरी में"—यों कहते हुए पैंतेलीमन ने दो गिलास शराब गले के नीचे उतार दी। उसकी मूँछ और दाढ़ी पर शराब की नमी थी, वह खीरे का टुकड़ा चबाये जा रहा था। उसकी आँखों से नशा झलकने लगा। बूढ़े की हालत देख मिट्का मुस्करा रहा था।

मिट्का की ज़िन्दगी चिड़िया-सी स्वच्छन्द ज़िन्दगी थी—जिसमें कोई चिन्ता नहीं। आज अच्छा है, तो कल की क्या परवाह? सैनिक बनने के लिए वह उत्सुक नहीं था और निर्भीक स्वभाव होने पर भी कभी उसने विशेषत्व प्राप्त करने की कोशिश नहीं की। दो मरतबा उसे फौजी अदालत से सज़ा हो चुकी थी—एकबार रूस में पैदा हुई पोलैंड की एक लड़की पर बलात्कार

करने के कारण और दूसरी बार चोरी करने के कारण लड़ाई के इन वर्षों में उसे कई बार सजाएं मिल चुकी थीं, एकबार तो वह गोली से मार दिये जाने से बालबाल बचा। यद्यपि वह रेजिमेंट में सबसे ज्यादा बदनाम आदमी था, लेकिन कोजाक उसे उसके हँसमुख स्वभाव, उसके प्रेम-गीत, उसके सरल व्यवहार के लिए उससे प्रेम करते और अफसर उसकी दुस्साहसिकता के लिए उसे चाहते। उसके विचार आदिमानवों की तरह सरल और सीधे थे। अगर तुम भूखे हो, तो अपने साथियों की चीज भी चुरा सकते हो, इसलिए जब मिट्का भूखा होता, वह चोरी करता। अगर तुम्हारे बूट फट चुके हैं, तब सबसे सरल बात यह है कि किसी जर्मन-कैदी के बूट छीन लो। अगर किसी वजह से तुम्हें सजा मिली है, तो उस सजा की माफी के लिए तुम्हें कुछ असाधारण काम करना चाहिये। जर्मन नाकों में घुस जाओ, सबसे खतरनाक काम के लिए अपने को पेश करो। १६१५ में एकबार जर्मनों ने उसे कैद कर लिया। वह उसी रात को छत से निकल भागा, यद्यपि इस काम में उसके हाथ के सभी नाखून चूर-चूर हो गये। इस तरह कई बार मिट्का ने अपने को बचाया।

"हाँ, तुमने भी तमगा हासिल किया?" नशे में दांत निकालते हुए पँतेलीमन ने कहा?

"कोजाकों में किसे तमगा नहीं मिला है?" मिट्का झिझककर बोला।

"माफ करना, यह जरा घमंडी स्वभाव का है—ठीक मेरे जैसा।" मीरन बीच में ही बोल उठा और उसे रसोईघर में लिवाकर पहले नातालिया और उसके बच्चों के बारे में पूछा। फिर काम की बात पर आया। पँतेलीमन के मुँह से निकलते ही उसने रुपये निकालकर दे दिये और जब वह धन्यवाद देने लगा, वह बोला—

"वाह, धन्यवाद किस बात का? अरे, अब तो हमारे मांस और खून मिलकर एक हो चुके हैं!"

---

क

१

साहूकार सरगीमेखोव जिन्दगी के सभी पहलुओं से परिचित था। कभी ज़िन्दगी उसे हँसी-खुशी के खेल खेलाती, कभी वह उसके गले में चक्की बन जाती। भविष्य को भापने की योग्यता उसमें थी अपनी ज़िन्दगी में उसे कितने संकटों से गुज़रना पड़ा है! मंदी-तेजी के ज्वार-भाटे के साथ उसने १६०५ का तूफान भी देखा था। इस समय वह काफी धनी हो चुका था, उसके साठ हज़ार रूबल बैंक में थे। लेकिन, वह परख रहा था, कि एक भारी उथल-पुथल आने ही वाला है। बुरे दिन के इन्तज़ार में वह था और उसका अनुमान ग़लत नहीं था।

फरवरी से ही डोन के गाँवों में रासपुटिन और ज़ार के परिवार की कहानियाँ फैलने लगी थीं। मार्च में साहूकार सरगी को ही घोषित करना पड़ा कि ज़ारशाही उखाड़ फेंकी गई। कोज़ाकों ने यह खबर चिन्ता और परेशानी से सुनी। उस दिन गाँवभर के कोज़ाक साहूकार की दुकान पर इकट्ठे हुए। गाँव का क्या आतमन नाटा (मुखिया) एक लाल बालोंवाला कोज़ाक था। उसकी तो बोलती बन्द थी।

दुकान पर लगी भीड़ को देख सरगीमोखोव बाहर निकला। उसे देखते ही एक बूढ़े कोज़ाक ने पूछा—

"क्यों, मोखोव, तुम तो पढ़े-लिखे हो। बताओ यह क्या होने जा रहा है?"

मोखोव ने सर झुकाया, सभी बूढ़ों ने अपनी टोपी उतार ली। उसे उन्होंने अपने बीच में आने दिया।

"क्या होगा ? हम लोग बिना ज़ार के ही काम चलायेंगे।"...मोखोव शुरू किया।

सभी बूढ़े एक साथ ही बोल उठे, "बिना ज़ार के ही ? यह कैसे होगा।" "हम लोगों के बापदादे हमेशा ज़ार के नीचे रहते आये। अब क्या ज़ार की जरूरत नहीं रही।" "तब सरकार कैसी होगी ?" "अच्छा, यह तो बताओ सरगी, क्या हम लोगों के लिए कुछ भय की बात भी है ?"

"वह खुद भी नहीं जानता हो तो ?" एक ने मुस्कराते हुए कहा।

सरगीमोखोव ने अपने पुराने बूट की ओर नजर की, फिर मुश्किल से बोला—

"अब धारासभाओं का राज होगा। हम लोग प्रजातंत्र कायम करेंगे।"

उसने ज़ोर देकर हँसने की चेष्टा की। अपनी पुरानी आदत के अनुसार अपनी दाढ़ी को दो हिस्सों में बाँटते हुए न मालूम किस पर गुस्सा होते, बोला—

"अब देखोगे, उन्होंने रूस को किस रसातल तक पहुँचा दिया है। वे लोग तुम्हें किसानों के बराबर समझेंगे, तुम्हारी सहूलियतें छीन लेंगे, पुराने बदले चुकायेंगे। बुरा वक्त आ रहा है......सब बात अब इस पर निर्भर है कि राज का सूत्र किसके हाथ में आता है। नहीं तो हम लोग की दुर्दशा का क्या पूछना !"

"हम जिन्दा रहेंगे, तो देख लेंगे।" एक बूढ़े ने सर हिलाया और अपनी घनी भवों के नीचे, से मोखोव की ओर, अविश्वास की आँखों से देखा। "तुम अपनी बात जानो, सारगी लेकिन हो सकता है, अब हम लोग मज़े से दिन गुजारें।"

"तुम्हारे दिन अच्छे कैसे होंगे।" मोखोव तीखेपन से बोला।

"हो सकता है, नई सरकार तुरन्त लड़ाई बन्द कर दे। यह हो सकता है। क्या नहीं हो सकता ?"

मोखोव हाथ हिलाता अपने घर में चला आया। वह सोच रहा था

अपने व्यक्तिगत बातों पर—मिल और गिरते हुए व्यापार पर, बेटे और बेटी पर जो मास्को में है। उसका विचार कहीं ठिक नहीं रहा था। बढ़ों की तरह देखकर उसने सीढ़ी के नीचे थूका और बरामदे से होता कमरे में चला गया।

"मेरे भगवान!" वह सोचने लगा—"किस तरह सभी चीजें बदल रही हैं। बुढ़ापे तक मैं बेवकूफ ही साबित हुआ। मैं हमेशा यकीन करता रहा कि अब मेरे अच्छे दिन आये, लेकिन मैं सन्तरी का काम करने वाले आदमी की तरह हमेशा अकेला ही रहा। मैंने किन-किन कुकर्मों से पैसे कमाये—लेकिन कहीं सुकर्म से पैसे मिलते हैं?...मैंने सबको चूसा, और अब क्रान्ति आ रही है, कल मेरे नौकर ही मेरे घर के मालिक बन बैठें, तो ताज्जुब नहीं। उन पर गाज गिरे। और मेरे बच्चे! बेटा तो बेवकूफ है......लेकिन, इन बातों में क्या रखा है? शायद किसी का भी ठिकाना न लगे।"

२

रातभर उसे नींद नहीं आई। करवटें बदलता विश्रृंखलित विचारों और वासनाओं के झूले पर झूलता रहा। भोर में यह सुनकर कि यूजेन लिस्त-निस्की लड़ाई पर से लौटा है, वह यथार्थ बात जानने के लिए यागोदनो के लिए रवाना हुआ।

सूर्य आसमान में पके नाशपाती की तरह दीख रहा था। बादल उसके ऊपर नीचे दौड़ रहे थे। बर्फीली तेज हवा में फलों की गंध थी। घोड़ों की टाप से सड़क की बरफ टूटती जा रही थी। तेज रफ्तार और ठंडक का आश्रय पाकर वह ऊँघने लगा।

दोपहर को यागोदनो पहुँचा। दरवाजे पर एक कुत्ती ने उसका स्वागत किया। वह रास्ते पर अपनी टाँगों को फैलाकर जम्हाई ले रही थी। और कुत्ते भी उसके साथ ही सुगबुगाकर जगे।

घर से गोश्त और सिरके की गंध आ रही थी। ट्रंक पर अफसर की कोकेसियन टोपी और लबादा रखा था। एक मोटी, काली आँखोंवाली औरत

बाहर आई, उसने मोखोव को घूर कर देखा और अपने लाल चेहरे की भावभंगी में जरा भी परिवर्तन बिना लाये, वह बोली—

"निकोलाई एलेक्सीविच को चाहते हो? मैं उनसे कहती हूँ।"

सरगीमोखोव को अक्सीनिया को इस मोटे और खूबसूरत रूप में पहचानने में दिक्कत हुई, लेकिन अक्सीनिया उसे झट पहचान गई। वह कमरे में निधड़क घुस गई, जाते समय दरवाजा बन्द कर गई और बूढ़े लिस्तनिस्की को लिये तुरत लौटी। बढ़े ने गम्भीरतामिश्रित मुस्कान से स्वागत करते हुए कहा—

"ओहो! साहुकार मोखोव। कैसे आये? भीतर चलो।"

सरगी ने झुककर सलामी दी और भीतर घुसा। अपने चश्मे के अन्दर आँखों को मींचते यूजेन लिस्तनिस्की भी वहाँ आ पहुँचा। अपने सोना मढ़े दाँतों से मुस्कुराते, हुए हाथ पकड़कर, उसने मोखोव को कुर्सी पर बिठाया। बूढ़े लिस्तानिस्की ने अक्सीनिया को चाय लाने का हुक्म देकर मोखोव से कहा—

"तुम्हारे गाँव की क्या हालत है? क्या तुमने सुना?......वह खुशखबरी?"

मोखोव बूढ़े की सफाचट ठुड्डी के नीचे के मांस को देखते हुए उदासी के स्वर में बोला—

"भला कैसे न सुनता?"

"घटनाएँ किस तरह सिलसिलेवार घटीं! मैंने तो शुरू में ही कह दिया था। इस राज का खत्म होना ही था।" बूढ़े में उत्तेजना थी।

"हमने कोई विश्वस्त खबर नहीं सुनीं। मोखोव कुर्सी पर हिला और एक सिगरेट जलाते हुए कहता गया—"एक सप्ताह से कोई अखबार भी नहीं देखा। जब सुना, यूजेन तशरीफ लाये हैं, मैं यहाँ आया कि जानूँ यथार्थतः क्या बात हुई और क्या होने जा रहा है?"

अब यूजेन के चेहरे पर हँसी नहीं थी। उसने कहा—

"घटनाएँ तो बड़ी भयानक हैं। सैनिकों में ज़रा भी दम नहीं रह गया है'

वे लड़ना नहीं चाहते, वे लड़ाई से ऊब उठे हैं। सच बात तो यह है कि इस साल के शुरू से ही, सही माने में, हम लोगों के पास सैनिक रह ही नहीं गये हैं। वह तो बदमाशों दुराचारियों और जंगली आदमियों के झुंड बन गये हैं। बाबूजी यह बात नहीं समझ पाते। वे महसूस नहीं कर सकते कि हमारी सेना कितनी बिगड़ चुकी है। वे अपनी जगह से बिना पूछे हट जाते हैं, लोगों को लूटते और, क़त्ल करते, अपने अफसरों की जान के गाहक बन जाते।...फौजी हुक्मों को तोड़ना तो एक फैशन हो चला है।"

"मछली सर से ही सड़ती है।" बूढ़े लिस्तनिस्की ने धुएँ का बादल उड़ाते हुए कहा।

"मैं यह नहीं कह सकता।" यूजेन के कंधे हिल रहे थे, एक आँख कुछ खिंच गई थी। "मैं यह नहीं कह सकता। फौज तो नीचे से सड़ रही है। बोलशेविक उसमें ज़हर डाल रहे हैं। यहाँ तक कि कोजाक पल्टनों पर भी, खासकर जिनका तोपखाने से सम्बन्ध है कोई विश्वास नहीं रह गया है। लोगों में भयंकर थकावट और घर लौटने की इच्छा है।...और, इस पर ये बोल्शेविक..."

"वे क्या चाहते हैं?" मोखोव से धीरज नहीं रखा गया। वह बीच ही में पूछ बैठा।

"अहा!"......यूजेन हँसा। "वे क्या चाहते हैं?...वे हैजे के कीड़े से भी बदतर हैं। वे आदमी में आसानी से चिपक जाते हैं और फौज के सीधे बीच में जा पहुँचते हैं। मेरा मतलब उनके सिद्धान्त से ही है।...आप उनसे बच नहीं सकते। निस्सन्देह उनमें कुछ बड़े होशियार आदमी भी हैं। उन लोगों के सम्पर्क में आने के मुझे मौके मिले हैं। उनमें कुछ सीधे पागल हैं, लेकिन उनमें ज्यादा तो दुराचारी और बदचलन जानवर हैं। बोल्शेविकों के सिद्धान्त से उन्हें वास्ता नहीं, वे तो लूटखसोट करना चाहते और मोर्चे से भागना चाहते हैं। पहले तो वे किसी तरह भी इस "साम्राज्यवादी" युद्ध का (उन्होंने इसका यही नाम रखा है) अन्त करना चाहते हैं—भले ही सुलह

करके। फिर, वे ज़मीन किसानों को और कारखानें मज़दूरों को सौंप देना चाहते हैं। यह बिलकुल खामख्याली है, बेवकूफी-भरा सपना है, लेकिन वे इसी जंगली नारे पर फौज में गड़बड़ी डालने में कामयाब हो सके हैं।"

मोखोव इस तरह झुककर सुन रहा था, जैसे वह कुर्सी पर से उछलकर खड़ा हो जाना चाहता हो। बूढ़ा लिस्तनिस्की घर में ज़ोरों से टहलता अपने काले लबादे को कुतरता और अपनी भूरी दाढ़ी को चबाता रहा।—

यूजेन ने बताया कि किस तरह क्रांति होने पर वह अपने बचाव के लिये रेजिमेंट छोड़कर भागा, क्योंकि उसे डर था, कोज़ाक उससे बदले चुकाते। पेट्रोग्राड की आँखों देखी घटनायें भी उसने सुनाईं। थोड़ी देर के लिये बात बन्द हुई—मौन छा गया। अचानक बूढ़ा लिस्तनिस्की मोखोव की नोक पर घूरते हुए बोला—

"क्या तुम उस भूरे घोड़े को खरीदोगे, जिसे तुम पतझड़ में देख गये थे?"

"इस जमाने में ये बातें कैसे की जा सकती हैं, निकोलाई एलेक्सीविच!" मोखोव ने दर्द भरे स्वर में कहा और निराशा में हाथ हिलाया।

## २

मार्च की क्रांति के पहले पैदल सेना की पहली डिवीजन और २७ वीं डोन कोज़ाक रेजिमेंट मोर्चे पर से हटाकर पेट्रोग्राड की अशान्ति रोकने को भेजी जा रही थी। उन्हें अच्छे कपड़े दिये गये थे, कुछ दिनों तक अच्छी तरह खिलाया-पिलाया गया था, फिर ट्रेन से उन्हे रवाना किया गया था। लेकिन घटनाओं की रफ्तार इस ट्रेन से भी ज्यादा थी। ट्रेन रवाना होने के दिन से ही अफवाह उड़ने लगी कि जार ने सिंहासन छोड़ दिया!

रैजगौन स्टेशन पर २७ वीं कोजाक रेजिमेंट को ट्रेन से उतरने का हुक्म हुआ। रास्ते बन्द हो गये। कोट पर लाल पट्टी बाँधे और कंधे पर इँगलैन्ड की बनी नई राइफलें रखे सैनिक प्लैटफार्म पर चेहली कदमी करते दीख पड़ते थे।

वर्षा हो रही थी। स्टेशन के मकानों से पानी चू रहा था। आसमान में बादल गड़गड़ा रहे थे, नीचे इंजिन चीख रहे थे। उसी समय कमान्डर घोड़े पर पहुँचा और कोजाकों के नजदीक जाकर व्याख्यान झाड़ने लगा, जिसका सारांश यह था—

कोजाकों, प्रजा की इच्छा से जार ने इस्तीफा दे दिया। अस्थायी सरकार कायम हो गई है। हमें इस खबर से उत्तेजित नहीं होना चाहिये। कोजाकों का एक ही कर्तव्य है—देश की रक्षा करना। कैसी सरकार हो—यह जनता जाने। सेना को राजनीति से क्या वास्ता ? जब नींव हिल रही हो, हमें इस्पात की तरह मजबूत बनाना चाहिये। कोजाको, तुम अपने अफसरों का हुक्म मानते हुए पहले से भी ज्यादा उत्साह से राष्ट्र की रक्षा में तत्पर रहो।"

## ४

कोजाक उस स्टेशन पर कई दिन तक और रहे। अस्थायी सरकार की राजभक्ति की शपथ ली, सभाओं में शामिल होते रहे, छोटे गिरोहों में बहस-मुबाहसे करते रहे। व्याख्यानों की आलोचना करते हुए वे सब एक ही नतीजे पर पहुँचे कि अगर आजादी हासिल हो गई, तो लड़ाई भी बन्द होनी चाहिये।

ऊपर की गड़बड़ी का असर नीचे भी पड़ा। मानो, उच्च अधिकारी इस बात को भूल ही गये कि इस स्टेशन पर फौज को उतारा गया है। आठ दिनों के लिये जो खुराक मिली थी उसे खाकर सैनिक नजदीक के गाँवों पर टूटे। शराब की बोतलें जादू से पैदा होने लगीं—सैनिक और अफसर शराब में धुत्त इधर उधर दीख पड़ते।

कोजाक ड्यूटी से छुट्टी पाकर दिन-रात डोन लौटने का सपना देखने लगे। घोड़ों पर ध्यान देना उन्होंने छोड़ दिया। बाजार जाकर वे युद्ध में लुटे हुये सामानों की खरीद बिक्री करते।

अन्त में जब हुक्म आया कि रेजिमेंट को मोर्चे पर वापस किया जाय, तब बड़ा असन्तोष देखा गया। दूसरी कम्पनी ने जाने से इन्कार कर दिया। कोजाकों ने इंजिन का डिब्बा से जोड़ना रोक दिया। लेकिन कमांडर ने उनके हथियार छीनने की धमकी दी, तब कहीं मामला ठंढा पड़ा। गाड़ी मोर्चे की ओर चली, लेकिन डब्बों में गरमागरम बातें जारी थीं।

एक स्टेशन पर गाड़ी ज्योंही रुकी, अचानक कोजाक डिब्बों से निकल पड़े, मानों उन्होंने पहले से सलाह कर ली हो। कमान्डर ने धमकाया, वादे किये, लेकिन वे कुछ सुनने को तैयार नहीं हुये। उन्होंने झट अपनी सभा शुरू कर दी। एक सार्जेंट और एक कोजाक सैनिक ने व्याख्यान दिये। कोजाक गुस्से में चूर बोले जा रहा था—

"कोजाक भाइयों, इनकी चालाकियाँ देखो, ये हमें फिर बेवकूफ बनाने पर तुले हैं। अगर क्रान्ति हो गई है। सब लोग आजाद हो चुके हैं, तो वे लड़ाई भी बन्द कर दें। क्या जनता या हम कोजाक लड़ाई चाहते हैं? क्या मैं ठीक कह रहा हूँ?—

"बहुत ठीक।"

"हम हमेशा वर्दी पहने खड़े रहें, यह तो नहीं हो सकता। क्या यह कोई लड़ाई है?"

"लड़ाई का सत्यानाश हो! चलो हम घर चलें।"

"इंजिन खोल दो, चलो, भाइयो।"

"कोजाक, जरा ठहरो। भाइयो, जरा ठहरो।" वह ठिगना कोजाक बड़े जोरों से चिल्लाया, जिसमें उसकी आवाज हजारों की आवाज पर भी सुनाई दे। "इंजिन को मत छुओ। हमें इस बेवकूफी को बन्द कर देना है।

हम कमान्डर साहब से पूछें कि सचमुच हमें मोर्चे पर ले जाने का हुक्म है या हमारे साथ खेलवाड़ किया जा रहा है !"

रेजिमेंट कमान्डर ने काँपते होठों से, चिल्लाते हुए, वह तार पढ़ सुनाया जिसमें मोर्चे पर जाने का हुक्म था। तब कहीं कोज़ाक फिर ट्रेन पर सवार हो सके।

एक डिब्बे में तारतरस्क गांव के छः कोज़ाक थे—पियोत्रा था, अनिकुश्का, और फिहोत थे और तीन। और जिसमें ग्रियाज़नोव घोड़ा चुराने के लिये जिले भर में नामी था। ज़ोरों से हवा बह रही थी। घोड़े कम्बल से ढक दिये गये थे। बीच में आग जल रही थी। सब उसे घेर कर बैठे थे। ग्रियाज़नोव ने कहना शुरू किया—

बचपन की बात है। मेरी बूढ़ी दादी मेरे सर से जुयें निकालती हुई कहती थी। बच्चा रे, बड़े बुरे दिन आने वाले हैं। समूची पृथ्वी पर तार का जाल बिछ जायगा। लोहे की चिड़िया आसमान में उड़ेगी और अपनी चोंच से जिसका सर चाहे नोंच लेगी। भूख और प्लेग का दौर-दौरा होगा। भाई भाई के खून का प्यासा होगा, बाप बेटे आपस में लड़ेंगे। लोगों का नाश हो जायगा, जिस तरह आग लगने पर घास जल जाती है।" थोड़ी देर तक ठहर कर उसने शुरू किया—"उसकी बात सच्च हो रही है। तार देख ही रहे हो, हवाई जहाज देखते ही हो। अकाल फैला ही है।"

"लेकिन भाई भाई से लड़ेंगे, यह कैसे होगा ?" पियोत्रा ने कहा।

"जरा ठहर जाओ, वह भी देखोगे।"

अनिकुश्का अपने गंजे सर पर हाथ फेरते बोला—"भई, यह बताओ आखिर यह लड़ाई कब तक खत्म होती है ?

"जब तुम्हारे सर पर बाल होंगे।"

सब हँस पड़े। अनिकुश्का शरमा गया। किंतु, उसकी बात पकड़ कर ग्रियाजनोव ने कहना जारी रखा—

"नहीं, अब काफी हो चुका। अब बर्दाश्त नहीं हो सकता। हम यहाँ चीलड़-से मरे जा रहे हैं, वहाँ परिवार वालों की हालत है कि काटो तो खून नहीं।"

"आखिर ये में में किस लिए?" मियोत्रा ने हँसते हुए कहा। हैं? तुमने देखा होगा, चरवाहे जानवरों को मैदान में ले जाते हैं। जब तक घास पर ओस रहती है, तब तक वे चरती होती हैं। ज्योंही सूरज सर पर आया, डंस और मक्खियाँ उन्हें काटने लगती हैं और तब—उसने प्रियोत्रा की ओर मुखातिब होकर कहा—"कप्तान साहब, तब क्या होता है? जानवर भों भों करने और दुलत्तियाँ चलाने लगते हैं। आप जानते हैं न? एक बछड़ा पूँछ उठाकर भागता है और समूचा झुण्ड उसके पीछे हो लेता है। चरवाहे कितने दौड़ें, रोकें; लेकिन वे तो बाढ़ की तरह भाग निकलते हैं।"

"इसका मानी?"

"चार साल से हम लड़ रहे हैं। चौथा साल है, जब से हम खाइयों में सड़ रहे हैं। क्यों और किस लिए, यह कोई नहीं जानता? लेकिन, वह दिन दूर नहीं जब कोई ग्रियाजनोव या कोई प्रियोत्रा मोर्चे से भागेगा, उसके पीछे रेजिमेंट भागेगी और उसके पीछे पूरी सेना।......हाँ यही होने जा रहा है।"

दूसरे डब्बों में भी कुछ ऐसी ही बातें हो रही थीं। गाड़ी तेजी से भागी जा रही थी। सामने सुफेद रूस का खून से लथपथ मैदान था। ऊपर तारे थे, लेकिन नीचे अंधकार जम्हाई ले रहा था। हवा तेज थी—मार्च की बरफ से झड़े पत्ते खड़खड़कर उड़ रहे थे।

## ५

धीरे-धीरे रेजिमेंट मोर्चे के नजदीक पहुँची। एक स्टेशन पर गाड़ी रोक दी गई। घोड़े उतारे जाने लगे। इधर-उधर दौड़-धूप, सामानों को

निकालना-सम्हालना जारी था। उसी समय कमान्डर का अर्दली आया और पियोत्रा से कहा कि साहब तुम्हें स्टेशन के कमरे में बुला रहे हैं।

ओवरकोट पर कमरबंद कस कर पियोत्रा चला। "अनिकुश्का, जरा मेरे घोड़े को देखते रहना"—कहता गया।

पियोत्रा कमान्डर की तरफ जा रहा था तो उसने देखा—पानी के नल के नजदीक एक झुंड एकत्र है। वहाँ पहुँचने पर उसने पाया—करीब बीस सैनिक एक लम्बे, लाल चेहरे वाले कोजाक को घेरे हुए खड़े हैं। उस कोजाक के दाढ़ीदार चेहरे को पियोत्रा ने गौर से देखा। उसकी वर्दी सरजेंट की थी, जिस पर ५२ का अंक चमक रहा था। "शायद मैंने इसे कहीं देखा है!"—उसने सोचा।

"बात क्या है?"—पियोत्रा ने दरयाफ्त किया। एक सैनिक बोल उठा—

"फौजी का भगोड़ा है!......तुम्हारा कोजाक ही तो है।"

सैनिक तरह-तरह के सवाल कर रहे थे, किन्तु, वह कुछ नहीं बोल कर बिस्कुट को पानी में भिगो कर चबाये जाता और जस्ते के मग में पानी लेकर पीता जाता था। चबाने और निगलने के समय उसकी फैली हुई आँखें छोटी हो जातीं और जब वह नीचे-ऊपर देखता, उनकी भवें काँपने लगतीं। एक सैनिक राइफल की किरच उसकी ओर झुकाये खड़ा था। खाना-पीना समाप्त कर वह भीड़ पर झिड़का—

"क्या मैं जानवर हूँ! सूअर, तुम आदमी को खाने-पीने भी नहीं दोगे! क्या तुमने कभी आदमी नहीं देखा था!"

सब सैनिक ठठा कर हँस पड़े। लेकिन, ज्यों ही उसका पहला शब्द सुना, पियोत्रा को उसकी याद अचानक आ गई।

"फोमिन! याकोव!"—वह चिल्लाते हुए उसकी ओर बढ़ा।

उस कोजाक ने मग नीचे रख दिया और हँसता हुआ, बोला—

"मैं आपको ठीक से नहीं पहचानता, भाई साहब!"

"तुम र्वीजीन के रहने वाले हो न ?"

"हाँ ! और आप भेलांस्का से आए हैं ?"

"नहीं, बाइकोंस्का से । मैं तुम्हें पहचानता हूँ । चार साल पहले तुमने अपना बैल मेरे बाप से बेंचा था ।"

फोमिन बच्चों-सा हँसता हुआ बोला कि वह उसे नहीं पहचान रहा है । लेकिन जब पियोत्रा ने कहा—"तुम भाग आये ? यह क्या किया भाई ।" तब उसने अपने रोयेंदार टोपी उतार ली, उसमें से तम्बाकू खोज कर निकाला, टोपी को बगल से दबाकर थोड़ा कागज़ फाड़ा और सिगरेट बनाते हुए भरी आँखों से बोला—

"भाई साहब, बर्दाश्त नहीं हो सका !"

उस आदमी की आँखों को देख कर जैसे वह स्तब्ध हो गया । ज़रा खखार की और अपनी पीली दाढ़ी को दाँतों से कुतरने लगा ।

"चलो, बात खतम करो; तुम मुझे झंझट में रखोगे । कह कर पहरे के सैनिक ने उसे सावधान किया । फोमिन ने मग को अपने गट्ठर में रखा, पियोत्रा को बिदाई का सलाम दिया और भालू की चाल से झूमता चलता बना ।

जब पियोत्रा कमान्डर के नज़दीक पहुँचा, उसे एक टेबल पर दो आफिसरों के साथ झुका पाया ।

"तुम्हारे चलते हमें अब तक रुकना पड़ा, मेखोव ।"—कर्नल ने चिड़चिड़ाहट की आँखों से पियोत्रा की ओर देखते, कहा ।

पियोत्रा को बताया गया कि उसकी कम्पनी स्टाफ के साथ रखा जायगा । उसे चाहिए कि अपने कोजाकों पर तीखी नज़र रखे और कोई परिवर्तन देख कर तुरन्त कमान्डर को खबर दें । वह निर्निमेष नेत्रों से कर्नल का मुँह देख रहा था । लेकिन उसके दिमाग़ में—नहीं बर्दाश्त हो सका, भाई, जैसे चिपका हुआ था ।

वहाँ से बाहर हुआ, तो देखा—कोजाक सैनिक नालबन्द को घेरे हुए अपने-अपने घोड़ों को नाल दिलाने की फिक्र में लगे हुए हैं। छोटी-छोटी बातों में ही लोगों के मन जा उलझते हैं। यह सोचते वह आगे बढ़ा कि देखा —गाड़ी के पीछे से एक औरत उजला साल ओढ़े और सुफेद रूसी औरतों से भिन्न पोशाक पहने आ रही है। उस औरत ने तुरंत अपना चेहरा उसकी ओर किया और शान से झूमती हुई आगे बढ़ी। उसकी चाल ने बता दिया— यह तो पियोत्रा की बीबी है। पियोत्रा के हृदय में एक चुभनेवाली सुहानी ठंढक दौड़ गई। अप्रत्ययशील होने के कारण उसके आनन्द का क्या कहना ! उसने कमिया को गले से लगा लिया। रस्म के मुताबिक तीन बार चूमा और कुछ कहने ही जा रहा था, कि कुछ सुप्त भावनायें जाग उठीं, उसके होंठ काँपने लगे, रुँधी-सी आवाज में वह बोला—

"मुझे इसकी आशा नहीं थी।"

"मेरे पंडुक, तुम कितने बदल गये हो।—दारिया बोली—"उफ़, तुम अजनबी-से लग रहे हो। वे मुझे नहीं आने देना चाहते थे, लेकिन, मुझसे नहीं रहा गया। मैंने तय किया—मैं जाउँगी, तुमको देखूंगी, मेरे प्यारे।" बोलती हुई वह अपने पति में मानो समझे जा रही थी और गीली आँखों से उसे देख रही थी।

बस, एक क्षण में ही पियोत्रा भूल गया कि उसने उसके प्रति क्या प्रतिज्ञा कर रखी है। वह सब के सामने ही उसकी पीठ सुहलाने और उसकी भवों की कमान पर उँगुलियाँ फेरने लगा। दारिया भी यह भूल गई कि दो रात पहले वह रेल में एक घोड़ा-डाक्टर के साथ सोई थी। उसकी आंखों से वास्तविक प्रेम के आँसू बह रहे थे और वह अपने पति के कलेजे में चिपकी जा रही थी।

---

## ख

### १

घर से लौटने पर लिस्तनिस्की यूजेन अपनी रेजिमेंट में नहीं गया। वह सीधे डिविजनल स्टाफ के पास गया। वहां एक ऊँचे खानदान के युवक कोजाक अफसर की मदद से उसने अपनी बदली १४ वीं कोजाक रेजिमेंट में करा ली।

इस बदली से यूजेन को बड़ी खुशी हुई। इस रेजिमेंट के अधिकांश अफसर राजा के प्रति भक्ति रखने वाले थे! इन कोजाकों का सम्मान भी कूमनों की ओर नहीं थी। बड़ी मुश्किल से उन्होंने अस्थायी सरकार के प्रति भक्ति की शपथ ली थी।

यह रेजिमेंट दो महीने से इन्सिक में आराम कर रही थी। अफसरों की सख्त निगरानी में कोजाक अपना वक्त कसरत करने, घोड़े को अच्छी तरह खिलाने, और सभी बाहरी प्रभावों से दूर रह कर आराम-चैन की जिन्दगी बिताने में लगा रहे थे। उनमें जब तब बुरी अफवाहें उड़तीं कि किसी बुरे उद्देश्य से ही उन्हें इस तरह रखा जाता है; लेकिन अफसर तो आपस में खुले आम कहते कि वे इतिहास की धारा को उलट कर ही दम लेंगे।

इतने में जुलाई पहुँची। उन्हें हुक्म दिया गया—एक क्षण भी बिना विलम्ब किये, पेट्रोग्राड की तरफ रवाना हो जाओ। चार दिनों के अन्दर-अन्दर कोजाकों के घोड़ों की टाप से राजधानी की सड़कें ध्वनि प्रति-ध्वनि कर रही थीं।

नेवस्की प्रोस्पेक्ट के मकानों में रेजिमेंट को ठहराया गया था। यूजेन के कम्पनी को एक दुकान की इमारत दी गई थी। शहर के अधिकारियों

ने कोजाकों को खुश रखने के लिये कुछ उठा नहीं रखा था। यह तो मकानों के देखने से ही पता चलता था। नये चूने से दीवालें झकझक कर रही थीं; सेहन नई सुई की तरह चमक रही थी। मकानों को देख कर यूजेन बहुत सन्तुष्ट हुआ। अब वह अस्तबल की ओर चला! उसके साथ शहर का एक अधिकारी भी था। गुदाम को अस्तबल में बदल दिया गया था। यूजेन ने उससे कहा—

"अस्तबल में एक और दरवाजा बनाना पड़ेगा। एक सौ बीस घोड़ों के लिये सिर्फ तीन दरवाजा—सोचिये, कभी खतरे का मौका आया, फिर इन्हें निकालने में ही आधा घंटा लग जायगा। आश्चर्य है, इस पर पहले ध्यान नहीं दिया गया।"

जल्द-से जल्द दरवाजा बन जायगा, कह कर वह आदमी चला गया। लिस्तनिस्की उस घर में पहुँचा, जो अफसरों के लिये रखा गया था। थोड़ी देर तक वह बिस्तरे पर लेटा पसीने की ठंढक का मजा लेता रहा। फिर उठा, नहाया और कपड़े पहन कर ताजगी अनुभव करता वह अखबार पढ़ने जा रहा था, कि कमान्डर ने उसे बुला भेजा। वह नेवस्की प्रोस्पेक्ट की ओर चला। रास्ते में उसने एक सिगरेट जलाई और धीरे-धीरे टहलने लगा। वहां मर्दों और औरतों की खासी जमावट थी। रंगों की बहार में कभी-कभी प्रजातंत्र के चिन्ह स्वरूप हरी टोपी भी दिखाई पड़ती थी।

समुद्र से आई ताजी हवा के झोंके मन-प्राण को तृप्त कर रहे थे। आसमान में बादल के टुकड़े दक्षिण की ओर भागे जा रहे थे। हवा में समुद्र, पेट्रोल, इत्र-एसेंस और पसीना—सब की गंध मिली जुली थी। बादल की रंगत बताती थी, अब वर्षा होगी ही। सड़कों पर लोगों की आवाज, मोटर की भों-भों और अखबार बेचने वालों की चिल्लाहट से कोलाहल-सा मचा हुआ था। बहुत दिनों तक लड़ाई के मैदान और खाइयों में रह जाने के कारण यूजेन को शहर के इन चीजों में अजीब वितृष्णा मालूम पड़ने लगी।

वह धीरे धीरे उस घर के नजदीक गया, जिसमें रेजिमेंट का स्टाफ

ठहरा हुआ था। दूसरे तल्ले पर जाकर उसने सिगरेट बुता दी और चश्मे के शीशे को साफ कर लिया। तीसरे तल्ले पर वह कमान्डर के सामने हाजिर हुआ।

शहर का एक नक्शा खोल कर कमान्डर ने बताया कि किस किस सरकारी इमारत पर लिस्तनिस्की को पहरे का इन्तजाम करना है। हर इमारत और उसके पहरे का तरीका और वक्त भी उसने ब्योरे से बताया। उसने खत्म किया—

"विंटर पैलेस मेंरन्स्की..."

"केरन्स्की की बात मत कीजिये!"—लिस्तनिस्की के चेहरे पर खून नहीं था। उसके आवाज में भयावनापन था!

"यूजेन निकोलेविच, जोश में यों होश मत खोओ!"

"कर्नल, मैं कहता हूँ ...."

"नहीं नहीं; तुम्हारा पारा गरम हो चुका है..."

"क्या मुझे पुटिलौव के कारखाने पर भी आदमी भेजने होंगे?" यूजेन ने शान्त होकर ऊँची साँस-से लेते, पूछा।

कर्नल ने अपने होठ काटे, मुस्कुराया और कंधा हिलाता बोला—

"तुरत और किसी अफसर के साथ।"

कर्नल से हुई बात चीत के कारण हिम्मतपस्त बना यूजेन बाहर हुआ। दरवाजे पर उसने चौथी कोजाक सेना के घुड़सवार को गश्त लगाते देखा। "देश के रक्षकों की जय हो"—कहता, एक बूढ़ा आदमी हैट हिलाता आगे बढ़ गया। लिस्तनिस्की उस आदमी की अपटुडेट पोशाक और चाल ढाल को घूर-घूर कर देखता रहा।

## २

जेनरल कार्निलौव का दक्खिणी पश्चिमी मोर्चे का सेनापति चुना जाना चौथी कोजाक रेजिमेंट के अफसरों ने बहुत पसंद किया। वे उसके फौलादी

इरादों के प्रशंसक थे और सोचते थे कि अस्थायी सरकार ने देश को जिस गड्ढे में गिरा डाला है, उससे वही उसे उबार सकेगा। लिस्तनिस्की ने तो इसे बहुत ही पसन्द किया। रेजिमेंट के नौजवान अफसरों और अपने विश्वस्त कोजाकों से उसने इस बारे में बातें कीं, किन्तु जो जवाब मिले, उनसे वह सन्तुष्ट नहीं हो सका। कोजाक सुन कर या तो चुप रह जाते, या बहुत ही ठंढे दिल से कहते"

"इससे हमारा क्या लेना-देना ?"

"वह लड़ाई बन्द करायें तो एक बात हो।"

"उनकी तरक्की से हमारी हालत में कौन सा सुधार होगा ?—

कार्निलोव की इस तरक्की की खबर के कुछ दिनों के अन्दर यह अफवाह उड़ी कि वह मोर्चे पर फाँसी देने का रद्दशुदा कानून फिर से जारी करने के लिये करेंस्की पर जोर डाल रहा है और चाहता है कि ऐसी सख्त कार्रवाइयाँ की जायें, जिनसे लड़ाई के जीतने में सफलता मिले। यह भी कहा जाता था कि करेंस्की उसकी रायें पसन्द नहीं करता और चाहता है कि उसे हटाकर किसी मन-माफिक आदमी को सेनापति बनायें। लेकिन सैनिकों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब उन्होंने सुना कि उसी कार्निलोव को अब रूस की पूरी सेना का सेनापति बना डाला गया है। उसी शाम को लिस्तनिस्की ने अपनी रेजिमेंट के अफसरों के सामने यह सीधा सवाल रखा कि आखिर हम किसके साथ हैं ?

"महाशयों,"—अपनी उत्तेजना को छिपाने की कोशिश करते हुये, उसने कहा," हम लोग एक परिवार के सदस्य की तरह यहाँ रह रहे हैं, तो भी कई सवाल हैं, जिन्हें हम तय नहीं कर सके हैं। अब तो यह साफ है कि एक-न-एक दिन सरकार और फौजी कमांड में झगड़ा होकर रहेगा, अतः हमें चाहिये कि यह तय कर लें कि हम किसका साथ देंगे। हम लोग साथी की तरह, बिना कुछ छिपाये, खुल कर बातें करें।"

पहला जवाब मिला लेफ्टिनेन्ट अतार्शिकोव से। उसने कहा—"जेनरल कार्निलोव के लिए मैं अपनी जान दे सकता हूँ। वह ईमानदार आदमी

हैं। वही रूस को फिर पैर पर खड़ा कर सकते हैं। सेना में ही उन्होंने कितना कर दिखाया है! हम अफसरों के हाथ की बेड़ियाँ उन्होंने काट गिराई हैं–पहले तो हम कमीटियों के बन्धन में जकड़े थे। इस बारे में बहस की गुन्जायश ही कहाँ है?"

उसकी आवाज़ में आग थी। खत्म करके उसने अफसरों के चेहरों की ओर गर्व से देखा और शान से अपने सिगरेट-केस को खटखटाया।

"अगर हमें बौलशेविक, करेंस्की और कार्निलौव के बीच चुनाव करना है, तो निश्चय ही हम कार्निलौव के साथ हैं"—दूसरे अफसर ने कहा!

"लेकिन यह समझना मुश्किल है कि कार्निलौव चाहते क्या हैं? वह अमन कायम करना चाहते हैं, या कुछ दूसरा...," तीसरे ने कहा।

"यह कोई जवाब नहीं है। अगर है, तो बेवकूफी से भरा। आप डरते किस बात से हैं?—क्या राजतंत्र की स्थापना से?"

"मैं उससे नहीं डरता—डर रहा हूँ कुछ दूसरी बात से।"

इसी बीच डौलगौव बोल उठा, जो हाल ही में कारपोरल से कौरनेट बनाया गया था—"हम झगड़ किस बात पर रहे हैं। हमें साफ कहना चाहिये कि हम कोजाकों का प्राण कार्निलौव पर निर्भर है। बच्चे जिस तरह माँ की आँचल में लिपटे रहते हैं, हमें भी कार्निलौव से चिपके रहना है। नहीं तो रूस हमें घूरे पर गाड़ देगा।"

"बिलकुल ठीक बात"—अतार्शिकोव चिल्ला पड़ा। और डौलगौव की पीठ ठोंकी। "महाशयो, बोलिये, हम कार्निलौव के साथ हैं या नहीं?"—उसने जोरों से पूछा।

"ज़रूर हैं, जरूर हैं! का शोर मचा। सब अफसर हँसने और एक दूसरे को चूमने लगे। फिर चाय पर टूट पड़े। जो तनाव था, खत्म हो चुका था। अब हाल की घटनाओं पर गप्पें चल रही थीं। इसी सिलसिले में डौलगौव बोला—"हम सभी अफसर तो सेनापति के साथ हैं ही, सिर्फ को-जाकों में कुछ......"

"कोजाकों में कुछ - इसका क्या मानी"—लिस्तनिस्की ने पूछा ?

"कुछ नहीं; ये कमबख्त खाइयों मे रहते-रहते ऊब गये हैं । ये घरों पर जाना और अपनी बीवियों के सीने से गरमाना चाहते हैं । उन बेचारों की हालत कुछ मुश्किल जरूर है !"

"यह हमारा काम है कि कोजाकों को अपने साथ लेचलें"—दूसरे अफसर ने अपने घूँसा टेबल पर पटकते हुए कहा । "हम अफसरों का यही तो काम है ।"

लिस्तनिस्की ने अपने चमचे को ग्लास में टनटनाते हुए लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा और बड़े तपाक से बोला"

"भाइयो, हमारा सर्व प्रथम यह काम है कि कोजाकों को पूरी स्थिति समझाते रहें और उन्हें कमीटियों के चक्कर से बचायें । १६१६ में ऐसा हो सकता था कि हम किसी कोजाक को कोड़े से पीट दें; लेकिन मार्च-क्रान्ति के बाद ऐसी स्थिति थी की हम ज्योंही कोड़े उठावें, वे हमारे सिर गोली से उड़ा देते । अब फिर हालत बदली है । लेकिन अब हमें होशियारी से बढ़ना है । कोजाकों से हमें भाईचारा बढ़ना चाहिये । आप लोग पहली और चौथी रेजिमेंटों की हालत शायद नहीं जानते । वहाँ के अफसरों ने अपने को उनसे अलग रखा था । नतीजा यह है कि उनके सभी कोजाक एक-एक कर बोलशेविकों के प्रभाव में आगए हैं । जो घटनायें सरों पर गरज रही हैं, उनसे हम आँख मूँद नहीं सकते । १६ और १८ जुलाई को पेट्रोग्राद आदि में जो कुछ हुआ, वह हमें चेतावनी देता है । या तो हम कार्निलोव से मिल कर क्रान्तिकारी ताकतों को कुचल दें, नहीं तो बोलशेविक दूसरी क्रान्ति कराके छोड़ेंगे । वे शक्ति-संचय कर रहे हैं, हम ढिलाई दिखा रहे हैं । यह क्या मुनासिब है ?"

"ठीक कहते हो, लिस्तनिस्की ।"

"रूस का एक पैर कब्र में है ।"

"मैं कहता हूँ, जब संकट का वक्त आयगा, मेरा मतलब क्रान्ति और गृह-युद्ध से है, तब हमें विश्वासी कोजाकों की जरूरत पड़ेगी । हमें उन्हें कमीटी और

बौलशेविकों से हटाना चाहिये। याद रखिये। जब वक्त आयेगा, पहली और चौथी रेजिमेंन्ट के कोजाक अपने अफसरों को गोली के घाट उतार देंगे— बिना किसी हिचक या विधि-विधान के।"

"बहुत ही सही बात!"

"हमें तजरबों से सबक लेना चाहिये। पहली और चौथी रेजिमेंन्ट के कोजाकों पर तुरत कारवाई होनी चाहिये। वे कोजाक तो रह नहीं गये। खेत में खरपात को उखाड़ फेंकना चाहिये। साथ ही, हमें अपने कोजाकों को उन गलतियों से बचाना चाहिये।"

लिस्तनित्स्की के बाद एक सिनरशीद कमान्डर बोलने लगा जो रेजिमैंट में नौ सालों से था और जो चार बार घायल हो चुका था। लड़ाई के पहले सेना में कोजाकों को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, उसका उसमें वर्णन दिया। कोजाक अफसरों पर ध्यान नहीं दिया जा सकता था, उन्हें जल्द तरक्की नहीं दी जाती थी। नतीजा यह हुआ कि जारशाही के पलट जाने पर भी वे चुपचाप रहे।—खैर, हमें कार्निलौव की तो मदद करनी ही चाहिये। उन्हें हम डिक्टेटर बनाएँ। होसकता है जार से अच्छा हमारे लिये वे सिद्ध हों, इन शब्दों में उसने खत्म किया।

भोर तक अफसरों की बात-चीत होती रही। तय हुआ कि सप्ताह में तीन बार कोजाकों से राजनीतिक विषयों पर बातें की जायँ और हर टुकड़ी के अफसर अपने कोजाकों को लिखने-पढ़ने और खेल-कसरत में लगाये रहें। मजमा खतम होने के पहले चाय के प्यालों पर ही एक दूसरे का स्वास्थ्य-पान किया गया और डौलगौव और अतार्शिकोव ने ऊँची आवाज में कोजाक-गीत गाया—

"लेकिन मेरे डोन में एक शान है, मेरे दयालु पिता डोन—
"उसने कभी नास्तिकों के नजदीक सर नहीं झुकाया और न मास्को से जिन्दगी का रहन-सहन पूछा।"
"और तुर्कों को—युगों से उनका स्वागत उसने तलवार से किया।"

प्रेमतर साल डोन की घाटी—हमारी प्यारी मातृभूमि—,
"पवित्र माँ 'मेरी' के नाम पर, उसके सच्चे धर्म के नाम पर।"
"हाँ, स्वतंत्र डोन के नाम पर, उसकी लहराती लहरों के नाम पर।"
दुश्मनों से लड़ती रही, लड़ती रहे।"

अपने घुटने पर हाथ रखे अतार्शिकोव गा रहा था—उसकी आवाज़ में जरा भी रुकावट नहीं थी, उसका चेहरा अजीब सूखा था। किन्तु, लिस्तनिस्की ने देखा कि ज्योंही वह अंतिम कड़ियों पर आया, उसकी आखें छलछला गईं; आँसू की एक बूँद निकल कर गाल को गीला बनाती उसकी गोद में आ गिरी!

३

लिस्तनिस्की की टुकड़ी में एक कोजाक था, इवान लैगुतिन। सब से पहले वही फौजी क्रान्तिकारी कमीटी में चुना गया था। जब तक पैट्रोग्राद से बाहर था उसके बारे में कुछ खास बात नहीं सुनी गई थी। किन्तु, अगस्त में एक ट्रूप-अफसर ने लिस्तनिस्की को बताया कि वह पैट्रोग्राद सोवियत में जाया करता है, दूसरे कोजाकों से बातें करता है और उन पर उसका प्रभाव भी बढ़ रहा है। दो बार कोजाकों ने गार्ड और सन्तरी की ड्यूटी देने से इन्कार किया था, जिसकी जड़ में यही लैगुतिन है। लिस्तनिस्की ने तय किया कि वह इस आदमी के बारे में व्यक्तिगत जानकारी हासिल करूँगा। इसका मौका भी मिल गया। एक रात लैगुतिन के दस्ते को प्रतिलेख के कारखाने की ओर पेट्रोल करने का हुक्म हुआ। लिस्तनिस्की ने दस्ते के अफसर को खबर दी कि वह खुद इनके निरीक्षण का जिम्मा लेगा।

दस्ता तैयार था। लिस्तनिस्की अपने घोड़े पर पहुँचा और उसका नेतृत्व करते आगे बढ़ा। थोड़ी दूर जाने पर उसने अपने घोड़े की चाल धीमी कर

दी और लेगुतिन को अपने निकट बुलाया। अपना घोड़ा फँदा कर वह कप्तान के निकट गया और उसके मुँह की ओर उत्सुकता से देखने लगा।

"अच्छा, कमीटी का ताजा खबर क्या है, लेगुतिन ?" उसने पूछा।

"कोई खास बात नहीं।" उसने जवाब दिया।

"तुम्हारा घर किस जिले में है ?"

"बुकानोवस्क।"

"गाँव ?"

"मितकिन।"

"तुम्हारी शादी हुई है ?" कप्तान ने थोड़ा ठहर कर उसके चेहरे को पढ़ने की चेष्टा करते हुए, पूछा।

"हाँ बीबी है, और दो बच्चे भी।

"खेती भी ?—"

"उसे क्या खेती कहा जायगा ?" लेगुतिन की आवाज में व्यंग के साथ दर्द भी था। "मुश्किल से हाथ मुँह का रोजगार चलता है। हमारी जिन्दगी क्या है, चक्की की पिसाई है।" कुछ देर ठहर कर उसने कहा—"हमारे खेत की जमीन बलुही है।—

लिस्तनिस्की एक बार बुकानोवस्क जिले में गया था। वहाँ के उजड़े खेतों को वह देख चुका था। वह बोला—

"तुम घर जाना पसन्द करोगे, क्यों ?"

"क्यों नहीं, साहब। जितना जल्द हो, मैं जाने को व्याकुल हूँ। हम इस लड़ाई में काफी भुगत चुके।"

"लेकिन, उम्मीद नहीं है कि तुम जल्द जा सको।"

"मैं समझता हूँ, हम जायँगे।"

"लड़ाई तो खतम हुई नहीं।"

"तुरत खतम होगी और हम घर जायँगे।" लैगुतिन की आवाज में हठ थी।

"हमें पहले आपस में ही लड़ना होगा—क्या तुम ऐसा नहीं सोचते ?

अपनी जीन के आगे के खुंटे से बिना सर उठाये, एक क्षण के बाद लैगुतिन ने जवाब दिया—

"हमारी किससे लड़ाई होगी ?"

"ऐसे काफी लोग हैं...शायद बौलशेविकों से लड़ना पड़े।"

लैगुतिन चुप था, घोड़े की टाप की आवाज की गति पर जैसे उसे झपकी आ रही हो। फिर वह बोला"

"हमारी उनसे क्या लड़ाई है ?"

"लेकिन, जमीन के बारे में क्या होगा ?"

"हमारे देश में हर आदमी के लिए काफी जमीन है।"

"तुम जानते हो कि बौलशेविक क्या चाहते हैं ?"—लिस्तनिस्की ने पूछा।

"हां, कुछ मालूम तो है।"

"तो सोचो, अगर बौलशेविकों ने चढ़ाई की और हमारी जमीन छीनना और कोजाकों को गुलाम बनाना चाहा, तो हम क्या करेंगे ? आखिर अपने देश की रक्षा के लिए ही तो हम जर्मनों से लड़ते रहे हैं ?"

"जर्मनों की बात दूसरी है।"

"और बौलशेविकों की ?"

लैगुतिन तब तक निर्णय पर पहुँच चुका था। उसने अपनी आँखें उठाईं और लिस्तनिस्की की नजर पर गड़ा दीं। वह बोल उठा—बौलशेविक हमारी जमीन की छोटी टुकड़ी लेकर क्या करेंगे ? ... मेरे पास फालतू जमीन है कहाँ...लेकिन...माफ कीजिये, बुरा तो न मानियेगा...? एक आपके पिता जी हैं, जिनके पास बीस हजार एकड़ जमीन... ।"

"बीस नहीं, आठ...... ।"

"इससे कुछ फर्क नहीं पड़ जाता। आठ हजार ही कुछ कम नहीं है। इतनी जमीन किसी को रखने का क्या हक है? और आपके पिता जी की तरह बहुत से लोग रूस भर में हैं। जरा सोचिये, हर आदमी के पास पेट है। आप खाना चाहते हैं, तो हर आदमी खाने को लाचार है। जार के जमाने में सब बातें गलत थीं। गरीबों का कोई पुछवैया नहीं था। उन्होंने आपके पिता को आठ हजार एकड़ जमीन दी। क्या वे दो आदमी का खाना भी अकेले खा सकते हैं? यह शर्म की बात है। बौलशेविक सही रास्ते पर हैं, तब भी आप उनसे लड़ने को आमादा हैं।"

पहले तो लिस्तनिस्की अपनी उत्तेजना को दबाये हुये बातें कर रहा था, लेकिन जब इस कोजाक ने अपनी दलील आगे बढ़ाई, तो वह अपनेपर काबू नहीं रख सका। वह गुस्से में बोल उठा—

"क्या तुम भी बौलशेविक हो, बोलो।"

"नाम में कुछ नहीं धरा है, जनाब! सवाल नाम का नहीं है, सवाल है हक्क का। जनता अपना हक माँगती है, लेकिन हमेशा उसे ढूह के नीचे गाड़ दिया जाता है।"

"यही सब बौलशेविक तुम्हें सिखलाते हैं। उनकी शिक्षा तुम पर फिजूल नहीं गई?"

"आह, कप्तान साहब, यह हमारी जिन्दगी है, जिसने यह तीता सबक हमें सिखलाया है। बौल्शेविकों ने तो सूखी लकड़ी में सिर्फ आग लगा दी है।—

"ये किस्से बन्द करो"—लिस्तनिस्की ने गुस्से में चूर उसे हुक्म दिया। "जवाब दो—तुम अभी मेरे पिता की जमीन और दूसरे जमीदारों की जमीन के बारे में बातें कर रहे थे। लेकिन तुम जानते हो कि यह व्यक्तिगत सम्पत्ति है। मान लो कि तुम्हारे पास दो कमीजें हैं और मेरे पास एक भी नहीं है, तो क्या इसका यह मानी होगा कि मैं तुमसे एक छीन लूँ?"

लिस्तनिस्की कोजाक के चेहरे को नहीं देख रहा था; लेकिन उसने अनु-मान किया कि वह मुस्कुरा रहा है।

"ऐसी हालत में मैं एक कमीज खुद दे देता। मोर्चे पर मैंने अपनी फालतू कमीज ही नहीं दे दी, बल्कि जो सिर्फ एक कमीज मेरे पास थी वह भी दे दी और सिर्फ लम्बा कोट पहन के गुजर की! अपनी ज़मीन का फालतू हिस्सा देने से किसी को क्या नुकसान हो सकता है, भला।"

"क्या तुम्हारे पास काफी ज़मीन नहीं है?"—लिस्तनिस्की की आवाज ऊँची थी।

लैगुतिन ने चिल्ला कर जवाब दिया—

"आप समझते हैं, मैं सिर्फ अपने बारे में सोच रहा हूँ। हम लोग पोलैंड में थे, आपने देखा होगा, वहाँ के लोग कैसी जिन्दगी बिता रहे हैं? हमारे डान के ही किनारे किसानों की कैसी बुरी गत है! मैंने देखा है। उसे देख कर किसका खून गरम नहीं हो उठता। क्या आप समझते हैं कि उनके लिए मेरे दिल में दर्द नहीं है?"

यूजेन इसका तीखा जवाब देने ही जा रहा था कि उसी समय प्रतिलोव के कारखाने की ओर से "पकड़ो" की आवाज आई। घोड़ों की टापों की आवाज और एक बार गोली की आवाज भी सुनाई पड़ी। लिस्तनिस्की ने घोड़े को चाबुक लगाई और घोड़े को उड़ाता उस ओर भागा—लैगुतिन भी उसके पीछे लगा। वहाँ देखा कि तीन कोजाक घोड़े से उतर कर एक आदमी को पकड़े हुए हैं। उस आदमी की कमीज का कालर दस्ते के सर्जेंट के हाथ में है, जो घोड़े पर ही झुका बैठा है।

"क्या बात है?"—अपने घोड़े को घुसाते लिस्तनिस्की ने कहा।

"यह शैतान हम पर पत्थर फेंक रहा था।"

"यह हम में से एक को मार कर भागा जा रहा था!"

"इसे कोड़े लगने चाहिये।"—एक चिल्लाया।

गुस्से में आग बबूला बना लिस्तनिस्की ने उस आदमी से पूछा—

"तुम कौन हो ?"

उस आदमी ने सिर उठाया, लेकिन उसके उजले चेहरे पर उसके होंठ मुहर लगे लिफाफे की तरह बंद रहे।

"तुम कौन हो ?"–लिस्तनिस्की ने फिर पूछा। "तुम ! पत्थर फेंक रहे थे ! तुम, बदजात ! चुप ! सर्जेंट इसे कोड़े लगाओ !" हुक्म देकर उसने अपने घोड़े को मोड़ दिया।

घोड़े से नीचे तीन-चार कोजाकों ने उस आदमी को जमीन पर पटक दिया और कोड़े लगाने लगे। लैगुतिन घोड़े की जीन से झट से कूद पड़ा और लिस्तनिस्की के पास जाकर बोला—

"कप्तान,...आप यह क्या कर रहे हैं ?...कप्तान।" उसने लिस्तनिस्की का घुटना अपनी कांपती उगँलियों से पकड़ लिया और चिल्ला कर कहा—आप ऐसा नहीं कर सकते ! वह अदमी है......आप क्या कर रहे हैं ?"

लिस्तनिस्की ने अपनी लगाम हिलाई, बोला कुछ नहीं। लैगुतिन तब उन लोगों के पास पहुँचा और सर्जेंट की कमर पकड़ उसे हटाना चाहा। सर्जेंट नहीं हटा और बोला—"मुझे छोड़ो ! छोड़ो। यह पत्थर मारेगा ! छोड़ो, नहीं तो..."

उसी समय एक कोजाक अपनी रायफल कंधे से उतार कर उसके कुंदे को उस आदमी के कोमल शरीर पर पटकने लगा। वह आदमी जंगलियों की तरह आर्त्तनाद कर उठा—"हा, हा, आ,हा हा ! ये मेरी जान ले रहे हैं—खून,खून !" कुछ क्षण तक आवाज बन्द हो गई–-फिर आवाज लेकिन अब उसमें कँपकँपी थी। वह चिल्ला रहा था—-

"सूअर ! क्रान्ति विरोधी ! मार लो, ओ हो।"

लैगुतिन दौड़ कर फिर लिस्तनिस्की के निकट पहुँचा और उसके घुटने को पकड़ते हुए बोला—-

"उसे छुड़ा दिजिये !"

"हटो !"—लिस्तनिस्की ने हुक्म दिया।

"कप्तान," लिस्तनिस्की, तुम सुनते हो ? तुम्हें इसका जवाब देना होगा। इतना कह कर वह फिर भीड़ के नजदीक आया और उन कोजाकों से बोला—"भाइयों, मैं क्रान्तिकारी कमीटी का मेम्बर हूँ...मैं हुक्म देता हूँ कि उस आदमी को बचाओ... नहीं तो तुम्हें इसका जवाब देना पड़ेगा, अब पुरानी बातें नहीं रह गईं।"

लिस्तनिस्की के गुस्से और घृणा का सीमा नहीं थी। अपना घोड़ा फंदाते वह लैगुतिन के पास पहुँचा और अपनी पिस्तौल निकाल उसकी नली लैगुतिन के सिर से छुलाता, गरज उठा—

"चुप; धोखेबाज ! बोल्शेविक ! मैं तुम्हें गोली से उड़ा दूँगा।"

लेकिन तुरत उसने अपने गुस्से पर कब्जा किया, पिस्तौल हटाई और घोड़े को पिछले पैरों से घुमा कर चलता बना।

कुछ मिनट के बाद बाकी तीन कोजाक भी उसकी ओर चले। उनमें से दो उस कैदी को अपने घोड़ों के बीच घसीटे लिये जा रहे थे, जिसका सर भुर्ता बन चुका था, जिसकी कमीज लहूलुहान थी !

## ४

दूसरे दिन लिस्तनिस्की कुछ देर से उठा। रात में सोते समय उसने अपनी गलती महसूस की। क्या यही कोजाकों से भाईचारा बढ़ाना है ? खैर उसने तय किया कि वह कुछ दिनों तक लैगुतिन के सामने नहीं जायगा, जिसमें वह भूल जाय ! उसका एक मोका भी आगया। मास्को में स्टेट कान्फरेंस होने जा रही थी। वह पैट्रोग्राड के अफसरों की ओर से कुछ जरूरी कागजात लेकर वहाँ भेजा गया।

मास्को में पहुँच कर उसे पता चला —कार्निलोव वहाँ कल आने वाला है। बड़ी उत्सुकता से वह कल की प्रतीक्षा में रहा। दूसरे दिन दोपहर के बाद मास्को स्टेशन पर सैनिकों की बड़ी भीड़ थी। कार्निलोव को भिन्न-भिन्न सैनिक दस्तों की ओर से सलामियाँ दी गईं। फिर उससे उन दस्तों के डेपुटेशन मिले। किस तरह फोटो से कैमरों की खट-खट हुई, किस तरह फूलों की वर्षा की गई, किस तरह पागलपन के नारे लगे, किस तरह अफसरों के बीच में कार्निलोव स्टेशन से बाहर हुआ—उसका वह ठिगना कद, लेकिन, शान से तनी हुई अकड़—ये सब लिस्तनिस्की के दिमाग में स्वप्न-से लगे।

दूसरे दिन जिस समय इन स्वप्नों को लिये वह पेट्रोग्राड लौट रहा था। ठीक उसी समय मास्को की स्टेट कान्फ्रेंस की बैठक के बाद, ग्रेट थियेटर के बरामदे पर दो अफसर फुसफुस कर कुछ बातें कर रहे थे। उनमें से एक ठिगना आदमी था, जिसका चेहरा मंगोल के ऐसा लगता था; दूसरा मोटा-सा आदमी जिसके चौड़े सर पर जड़ से तराशे हुए मोटे-मोटे बाल थे। इनमें एक था कार्निलोव और दूसरा कालेदीन।

"जो घोषणा तैयार की गई है, उसमें सेना में कमीटी बनाने की प्रथा का उच्छेद किया गया है न?"—कार्निलोव ने पूछा।

"हाँ," कालेदीन ने जवाब दिया।

"संयुक्त मोर्चे और पूरी एकता की नितान्त आवश्यकता है—कार्निलोव ने कहा। मैंने जो बातें पेश की हैं, उन्हें अमल में लाये बिना कल्याण की सूरत नहीं दिखाई पड़ती। फौज में लड़ने का माद्दा रह नहीं गया है। ऐसी सेना विजय कहाँ तक प्राप्त करेगी, वह चढ़ाई के धक्के को भी बर्दाश्त नहीं कर सकती। बौल्शेविकों के प्रचार से फौज में बिश्रृंखलता आ गई है। इधर मजदूरों ने अलग बावेला मचा रखा है—हड़तालें, प्रदर्शन! इस कान्फ्रेंस के मेम्बरों को पैदल जाना पड़ रहा है...। यह बर्दाशत के बाहर की चीज है। चारों तरफ फौजी अनुशासन और बौल्शेविकों का उच्छेद—तुरत का हमारा काम यही है। क्या भविष्य में मैं आप की सहायता की उमीद रक्खूँ, जेनरल कालेदीन?"

"मैं बिल्कुल आपके साथ हूँ।"

"मुझे यही उमीद थी। धन्यवाद। देखिये न, जब सरकार को इस्पाती हाथों से काम करना चाहिये, लम्बी लम्बी बातें की जा रही हैं। सैनिक पहले काम करते हैं, पीछे बोलते हैं। इन लोगों की उल्टी ही बात है। खैर... इसका मजा ये खुद चखेंगे। लेकिन, मैं इस शर्मनाक काम में शिकायत करना नहीं चाहता। मैं तो खुले संघर्ष का हिमायती हूँ— मुझसे दुहरी नीति निभ नहीं सकती।"

वह रुका और कालेदीन की वर्दी के एक बटन को मरोड़ते हुए उत्तेजना में बिलबिलाने लगा—

"इन्होंने पहले तो नली हटाई; और अब खुद अपने प्रजातंत्र से डरने लगे हैं। ये हमें राजधानी में विश्वासी फौज लाने को कहते हैं, लेकिन, खुद सख्ती से पेश आने से डरते हैं। एक डेग आगे, एक डेग पीछे...हम अपनी पूरी ताकत को संगठित करके ही इस सरकार से सहूलियतें प्राप्त कर सकते हैं। और अगर नहीं...तो देखा जायगा। मैं तो मोर्चे का दरवाजा खोल दूँगा—जर्मन आवें और इनका होश दुरुस्त करें।"

कुछ देर तक वह खड़ा रहा, फिर बोला—"कान्फ्रेंस के बाद आप, सब लोगों के साथ, मुझ से मिलें। डोन को क्या हालत है?"

कालेदीन का चौड़ा सिर जैसे उसकी छाती में घुसने लगा। उसने उसकी ओर उदासी के भाव से देखा। उसके होंठ काँप रहे थे, उसने जवाब दिया—

"कोजाकों पर मेरा पहला विश्वास नहीं रह गया। इस समय परिस्थिति डँवाडोल मालूम होती है। समझौते की जरूरत है—कोजाकों को ऐसी सहूलियतें देनी चाहिये कि वे हमारे साथ रहें। मैं इस तरफ कोशिश कर रहा हूँ, देखना है, कहाँ तक सफल होता हूँ। जमीन ...कोजाकों का पूरा ध्यान इस समय इसी पर है!"

"आप विश्वासी कोजाकों डिवीजनों को अपने पास रखें, जिसमें वक्त पर वे काम आवें। मैं जब मोर्चे पर लौटूँगा, कुछ रेजिमेंटों को डोन भेजने की कोशिश करूँगा।"

"अगर आप ऐसा कर सकें, तो बड़ी मेहरबानी हो"

"तो, हम लोग शाम को आपस में मिलते और बात-चीत करके सब कुछ तय कर लेते हैं। हम जरूर ही कामयाब होंगे। लेकिन तकदीर बड़ी चंचल होती है। अगर उसने मुझ से मुँह फेर लिया, तो क्या मैं आशा करूँ कि डोन मुझे शरण देगी ?"

"शरण ही नहीं, सहायता भी। कोजाक अतिथि सेवा के लिए प्रसिद्ध हैं। "बातचीत के समय पहली बार कालेदीन मुस्कुराया।

इसके एक घंटे बाद डोन कोजाक के आतमन कालेदीन ने बारहवीं कोजाक रेजिमेंट की ओर से वह सुप्रसिद्ध घोषणा जारी की जिसके चलते डोन, कुबान और यूरल में—जहाँ जहाँ कोजाक रहते थे—गाँव-गाँव पर षड्यंत्र का एक भयानक मकड़जाला तन गया, जिसके सफे में कोजाकों ने कोजाकों के खून की नदियाँ बहा दीं।

———o———

## ग

### १

जुलाई के धावे में जो बिलकुल जमींदोज कर दिया गया था, उस छोटे-से शहर से एक मील पर खाइयों की टेढ़ी-मेढ़ी रेखायें दीख पड़ती थीं, जो नजदीक के जंगल तक जाती थीं । इस जंगल की इर्द-गिर्द के मैदान पर स्पेशल कम्पनी का मोर्चा था ।

इवान एलेक्सीविच इसी कम्पनी में सैनिक था । इवान वही है, जो मोखोव की मिल में नौकर था। वह एक दिन नजदीक के शहर से लौट रहा था कि जखार कोरोलियोव से उसकी भेंट हुई । जखार ने उसकी वर्दी के बटन को पकड़ते और अपनी पीली आँखों को घुमाते हुए, उससे फुसफुसाया—

"तुमने कुछ सुना है ? हम लोगों की बगल में जो पैदल-सेना थी, वह मोर्चा छोड़ रही है । हो सकता है, वे लोग भाग रहे हों ।

"यह क्या कर रहे हो ? हो सकता है, वे आराम के लिए वापस किये जा रहे हों । हम लोग दस्ते के अफसर से जाकर पूछ क्यों न लें ?"

दोनों अफसर पास के खाई में चले । जमीन गीली थी और उनके पैर फिसल रहे थे । लेकिन, एक घंटे के अन्दर ही उनकी कम्पनी को वहाँ से हटने का हुक्म हुआ और दूसरे दिन भोर में वे अपने घोड़ों पर सवार पीछे की ओर चल पड़े ।

वर्षा हो रही थी । चीड़ के झाड़ झुक रहे थे । सड़क जंगल हो कर जाती थी । जंगल के पत्तों की सड़न की गंध से घोड़े के पैर आप ही आप तेज उठने लगे । उनका लम्बे भूरे कोट भींग कर काले पड़ रहे थे । तम्बाकू का धुआँ उनकी

पाँत के ऊपर चक्कर काटता जाता था। आपस में बहस हो रही थी कि वे भी अचानक कहाँ भेजे जा रहे हैं? थोड़ी देर में वे गीत गाने लगे—कम से कम उन्हें इतना सन्तोष था कि 'भेड़िये के कब्रस्तान'—इन खाइयों से उन्हें नजात तो मिला। उसी शाम को वे स्टेशन पर गाड़ी में सवार करके गये। पस्कौव की ओर वह ट्रेन जा रही थी। थोड़ी देर में उन्हें यह भी पता चल गया कि वे पेट्रोग्राद भेजे जा रहे हैं, विद्रोह दबाने के लिए। इस खबर से निस्तब्धता छा गई।

"तवे से चूल्हे में"—आखिर उनमें से एक ने कहा।

जब गाड़ी पहली बार रुकी, इवान कम्पनी-कमांडर के पास गया। मार्च महीने से इवान ही कम्पनी-कमीटी का स्थायी सभापति था।

"कोजाक बहुत उत्तेजित हो रहे है, कप्तान साहब", उसने कहा।

कप्तान ने इवान को ठुड्डी के गड्ढे को प्यार से देखा और हँसते हुए कहा—

"मुझे खुद उत्तेजना हो रही है, मेरे दोस्त!"

"हमें कहाँ ले जाया जा रहा है?"

"पेट्रोग्राद को।"

"क्या विद्रोह कुचलने के लिए!'

"क्या हमारा यह काम नहीं है कि हम अमन कायम रखें?"

"हम इनमें से न यह पसंद करते हैं न वह!"

"लेकिन, वे तो हमसे हमारी राय नहीं पूछते।

"लेकिन कोजाकों का..."

"कोजाकों का"...अफसर ने नाराजी के स्वर में कहा—"मैं जानता हूँ! कोजाक क्या सोच रहे हैं। क्या तुम समझते हो कि यह काम मुझे पसंद है? यह लो और उन्हें पढ़कर सुना दो। दूसरे स्टेशन पर मैं कोजाकों से बातें करूँगा।"

इवान अपने डब्बे में लौटा। उसके हाथ में कार्निलौव का तार था। उस तारको वह ऐसे पकड़े हुआ था मानो आग का अंगारा है। गाड़ी उस समय चलने पर थी। उसके डब्बे में जो तीस के लगभग कोजाक थे, उसने उन्हें वह तार पढ़ कर सुनाया। तार में कार्निलौव ने देश-भक्ति की कसमें खाता, अपने काम को देश-भक्ति से प्रेरित बताता, अपने को उसका सच्चा सपूत कहता और उसके लिए कुर्बानियाँ करने को तैयार बताता हुआ अन्त में लिखा था कि उसने करेंस्की की सरकार को आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया है क्योंकि यह सरकार घूस पर चलाई जा रही है, इसने रूस को जहन्नुम-रशीद कर दिया है, और इसके हाथ में जनता का हित और आजादी कुछ भी सुरक्षित नहीं है।

तार पढ़ते ही मौत का सन्नाटा छा गया। दूसरे स्टेशन पर कुछ देर के लिए गाड़ी ठहरी। कोजाकों में इस तार को लेकर चर्चायें होने लगीं। थोड़ी ही देर के बाद कमान्डर ने दूसरा तार सुनाया, जिसे करेंस्की ने भेजा था और कार्निलौव को देशद्रोही बत लाकर सब कोजाक अजीब घापले में पड़ गये—अफसरों को भी कुछ नहीं सूझता था। एक ने कहा—"ये सब आपस में लड़ते और सैनिकों में जहर फैलाते हैं।" दूसरे ने कहा—"इन सब की आँख गद्दी पर लगी हुई है।" कोजाकों का एक जत्था इवान के पास आया और कहा कि हम कमान्डर से पूछें कि हमें क्या करना चाहिए। सब कमान्डर के पास गये। उसने कहा, मैं तुरत आता हूँ, सब कोजाकों को इकट्ठा करो।

समूची कम्पनी इकट्ठी हुई। कमान्डर आया, बीच में गया और हाथ उठाकर कहने लगा—

"हम लोग करेंस्की के मातहत नहीं थे और न हैं। हम तो सेनापति की मातहत हैं और अपने अफसरों को ही जानते हैं। क्या यह बात नहीं है? इसलिए, हमें अपने अफसरों की आज्ञा मानना है और पैट्रोग्राद चलना है। डनो-स्टेशन पर पहुँच कर सारी स्थिति हमें मालूम हो ही जायगी। आप लोग उत्तेजित न हों। हम एक अजीब जमाने से गुजर रहे हैं।"

इसके बाद कमांडर सैनिकों के कर्त्तव्य, देश, क्रान्ति आदि पर बातें बताते हुए कोजाकों को शान्त करने की कोशिशें करता रहा। कोजाक कोई सवाल पूछते, तो उन्हें टाल देता। वह अपने उद्देश्य में सफल हुआ। जिस समय वह बातें कर रहा था, उसी समय गाड़ी से इंजिन लगी और सब कोजाक दौड़ दौड़ कर अपने डब्बे में चढ़ गये। उन्हें क्या पता कि दो अफसरों ने स्टेशन मास्टर को पिस्तौल का भय दिखाकर समय से पहले ही गाड़ी में इंजिन लगवा दी थी।

२

गाड़ी चली और डनों के नजदीक पहुँचती गई। कोजाक डब्बों में ही अपने घोड़ों को खिलाते, सोते, या खुले दरवाजे के नजदीक बैठकर तम्बाकू पीते और आसमान देखते बढ़ा किए। इवान डब्बे के दरवाजे के नजदीक बैठा तारों भरे आसमान को तेजी से भागता हुआ देखता रहा। कुछ घंटों से इस नई परिस्थिति पर वह बराबर सोच रहा था और वह इस निर्णय पर पहुँच चुका था कि किसी तरह वह इस कम्पनी को पैट्रोग्राद जाने से रोकेगा। अब वह सोच रहा था कि इसके लिए वह कौन सा उपाय काम में लावे।

उसे स्टोकमैन की याद आ गई। उसने एक बार उससे कहा था—"इवान, एक बार इस कौमी सड़ान के दूर होने की देर है, फिर तो देखोगे तुम्हीं इस्पात ऐसे सख्त इन्सान बन जाओगे। इस सड़ान को दूर होना ही है। जो उलटा है, वह आँख में गलकर जलकर रहेगा।" आज इवान देख रहा है, स्टोकमैन का कहना गलत नहीं था। गर्चे वह पार्टी में नहीं है, तोभी पार्टी के लिए उसने कम कोशिशें नहीं की हैं। आज वह एक विश्वासी बोलशेविक है, उसके दिल में पुरानी चीजों से घोर घृणा है। बिना किसी साथी के भी उसने मूढ़ धारणा वाले कोजाकों में काम करना शुरू किया था। उसे अंधेरे में टटोलना पड़ा, धीरे-धीरे कदम बढ़ाना पड़ा। जब कोई मुश्किल उसके सामने आती, वह आप ही एक सवाल पूछता—इस स्थिति

में स्टोकमैन क्या करता ? और इसके जवाबमें वह जो सोच पाता वही करता। इस तरह काम करते उसे हमेशा कामयाबी मिलती रही है।

आज भी वही बात हुई। वह दोनों तार के बाद सोचने लगा कि उसे क्या करना चाहिए। न वह कार्निलौव का साथ दे सकता है, न करेंस्की का। इसलिए अच्छा है कि वह पैट्रोग्राद से बाहर ही रहे। एक बार कमीटी ने उसे पैट्रोग्राद सोवियत के पास भेजा था। उसने देखा था कि वहां शासन-सूत्र हाथ में लेने की तैयारियां बोल्शेविक लोग कर रहे थे। करेंस्की के बाद पार्टी का ही राज्य होगा, यह उसका विश्वास था। उसने निर्णय कर लिया था—"इवान, जान दे दे, लेकिन अपने विश्वास से उस तरह चिपके रहो, जिस तरह बच्चा अपनी मां की छाती से चिपका रहता है।" लेकिन जरा होशियारी से कदम बढ़ाना होगा। उस दिन स्टोकमैन ने ही तो उससे कहा था—

"कोजाक स्वभावतः ही दकियानूस हैं। जब तुम उनमें समाजवादी विचार का प्रवेश कराना चाहते हो, तो यह बात मत भूलो। होशियारी से काम लो, धीरे-धीरे बढ़ो, सोच-विचार कर चलो और हर परिस्थिति में अपने को ढालने की कोशिश करो। पहले वे तुम्हें घृणा की नजर से देखेंगे, जिस तरह तुम और मिशा कोशेवाई मेरी ओर देखते थे। लेकिन इससे उदास मत हो। रंदा दिये जाओ— आखिर हमें सफलता मिल कर रहेगी।"

इवान ने सोचा था कि कल कल जब वह कोजाकों को पैट्रोग्राद नहीं जाने को कहेगा, तो उसे कुछ मुखालफत का सामना करना पड़ेगा। लेकिन जब उसने अपने डब्बे के लोगों से बातें शुरू की तो वे तुरत ही तैयार हो गये। जरवार तुरिलिन नामक एक और ठिंगना कोजाक तो बिलकुल उसकी ही विचारधारा के नजदीक आ गये और तीनों ने दिन भर हर डब्बे में जाकर कोजाकों को समझाना शुरू किया। जब शाम को गाड़ी एक छोटे-से स्टेशन पर धीमी हुई तो तीसरे दस्ते का एक सर्जेंट इवान के डब्बे में उछल कर आ रहा और उससे बोला—

"अगले स्टेशन पर कम्पनी ट्रेन से उतारी जायगी। तुम कैसे सभापति हो, जो यह भी नहीं जानते कि कोजाक क्या चाहते हैं? हम आगे नहीं बढ़ेंगे। अफसर हमें बरगलाना चाहते हैं, और तुम हाँ-ना के फेर में पड़े हो। इसीलिए हम लोगों ने तुम्हें सभापति चुना था?"

"यह बात तुम्हें पहले ही कहना था।" इवान मुस्कुराया।

गाड़ी ज्यों ही रुकी, इवान डिब्बे से कूद पड़ा और तुरिलिन के साथ स्टेशन-मास्टर के पास पहुँचा। "हमारी ट्रेन आगे मत बढ़ाओ," उसने हुक्म दिया—"हम यहीं उतरेंगे।"

"यह कैसे होगा?" स्टेशन मास्टर ने कहा। "हमें हुक्म है कि ट्रेन को आगे भेजें।"

"चुप रहो। तुरिलिन तेजी के स्वर में चिल्ला उठा।"

दोनों ने स्टेशन-कमीटी का पता लगाया और उसके सभापति से सब बातें बताईं। कुछ मिनटों के अन्दर ड्राइवर ने इंजिन को डब्बों से अलग कर बगल की लाइन पर लगा दिया।

जल्द-जल्द डब्बों में तख्ते लगा कर कोजाक अपने घोड़ों को निकालने लगे। इवान इंजिन के आगे अपने कदम मजबूती से रोपे खड़ा, मुस्कुरा रहा था। कम्पनी का कमान्डर दौड़ता हुआ उसके पास आया—यह क्या कर रहे हो? तुम नहीं जानते..."

"मैं जानता हूँ।" इवान ने बीच ही में टोक दिया। कप्तान साहब, ज्यादा उछल कूद मत कीजिये।"कप्तान का चेहरा पीला पड़ गया था। उसने अपनी नाक हिलाते हुए कहा—

"तुम लोग काफी शोर-गुल कर चुके। अब मुझे हुक्म देना पड़ेगा।"

"प्रधान सेनापति जनरल कार्निलोव...।" अफसर बोलने जा रहा था कि इवान ने कहा—"आप इस हुकमनामे को गले में तावीज बनाइए, हमें इसकी कोई जरुरत नहीं रह गई।"

कमान्डर मुड़ा और अपने डब्बे की ओर भागा। एक घंटे के अन्दर पूरी कम्पनी दक्षिण पश्चिम ओर चल पड़ी। इसमें एक भी अफसर नहीं थे, लेकिन, तोभी जरा भी चाल या पाँत में गड़बड़ नहीं थी। उसके आगे-आगे इवान सेनापति के रूप में था और तुरिलिन उसका सहकारी बना था।

कमान्डर से छीने हुए नक्शे को देख कर कम्पनी आगे बढ़ी और एक गाँव में जाकर ठहरी। सभा की गई और तय पाया कि हम मोर्चे पर लौट चलें और कोई रोके तो उससे लड़ाई ली जाय। घोड़े को खोल कर और पहरेदार मुकर्रर कर कोजाक भोर की प्रतीक्षा में लेट गया। आग नहीं जलाई गई। यह उनके चेहरे से पता लगता था कि अधिकांश अजीब उदास थे। वे बोलते-चालते भी नहीं थे—मानो, एक दूसरे से अपने विचार छिपाना चाहते हों।

"क्या हो, यदि ये लोग फिर कुछ सोचें और फिर वापस चले जाँय।" इवान चिन्तित हो सोचने और अपने लम्बे कोट से देह ढँकने लगा। जैसा कि उसके विचार को उसने सुन लिया हो, तुरिलिन उठ बैठा।

"इवान, क्या तुम सो गये हो!" उसने पूछा।

"अभी नहीं।"

तुरिलीन आकर उसकी बगल में बैठ गया और एक सिगरेट जलाते हुए धीमे से बोला—

"कोजाकों में हलचल है।...वे कर तो चुके, लेकिन अब डर रहे हैं। यह अच्छा बखेड़ा हमने खड़ा कर लिया। तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"देखा जायगा।" इवान ने शान्ति से कहा। "तुम्हें डर लग रहा है क्या?"

तुरिलिन ने अपना सर खुजलाया और सूखी हँसी हँसते बोला—

"तुमसे साफ कहूँ, मैं डर गया हूँ। पहले मुझे डर नहीं लगा था, लेकिन अब जरा भयभीत हो गया हूँ।"

दोनों चुप हो रहे। मैदान पर रात्रि की निस्तब्धता छाई हुई थी। घास पर ओरा का छिड़काव हो रहा था। ठंढी हवा, घास और जमीन की मीठी सोंधी गंध कोजाकों की नाक में भर रही थी। रह-रह कर घोड़ों की लगामें झन झना उठतीं, या उसकी नाक की अवाज होती या उनके गिरने का शब्द होता। फिर वही निस्तब्धता। जब-तब जंगली बत्तख और उसकी मादा की पुकार सुनाई पड़ती और पंखों की फरफराहट हवा में तरंग-सी पैदा करती। पश्चिम तरफ आसमान में बादल का एक टुकड़ा लटका हुआ था। आसमान के बीचोबीच अकाश-गंगा चमचम कर रही थी।

( ३ )

भोर में कम्पनी रवाना हुई। गाँव होकर जब वह जा रही थी, औरतें और बच्चें घूर घूर कर सैनिकों को देखते। जब वे एक दूर की ऊँचाई पार कर रहे थे, तुरिलिन ने अपने पैर से इवान की रिकाब को छूते हुए कहा—

"पीछे देखो, कुछ घुड़सवार हमारे पीछे दौड़े आ रहे हैं!"

इवान ने देखा तो तीन घुड़सवार धूल उड़ाते आते दिखाई पड़े। उसने कम्पनी को खड़ा हो जाने का आर्डर दिया। अपनी स्वाभाविक क्षिप्र गति से सब कोजाक मोर्चे के रूप में खड़े हो गये। जब वे सवार आधे मील की दूरी पर थे उनमें से एक उजला रुमाल अपने सर पर हिलाने लगा। वह एक कोजाक अफसर था। अपने दो साथियों से आगे बढ़कर वह कम्पनी के नजदाक आया। उसे बढ़ता देख इवान आगे बढ़ा और बोला—

"तुम हमसे क्या चाहते हो?"

"हम सुलह का पैगाम लेकर आये हैं।" अफसर ने अपनी टोपी को छूते हुए कहा। "कम्पनी का इस समय सरदार कौन है?"

"मैं हूँ।"

"मैं पहली डोन कोजाक डिवीजन की तरफ से दूत की तरह भेजा गया हूँ। ये दोनों अफसर हमारी सेना के प्रतिनिधि हैं।" इतना कह उसने अपने घोड़े की लगाम खींची और पसीने से तर घोड़े के कंधे को थपथपाया। "अगर आप बातें करना चाहते हैं तो कोजाकों को घोड़ों से उतरने को कहिये। मेजर जेनरल ग्रिकोव के कुछ जबानी सन्देश मुझे आप लोगों से कहना है।"

कोजाक घोड़े से उतरे और अफसर भी। पहला अफसर उनके बीच में जाकर कहने लगा—

"कोजाकों, मैं आपसे बताने आया हूँ कि कल जो आपने किया, उसके क्या भीषण नतीजे हो सकते हैं? हमें खबर दी गई कि किसी के बद-माशी से भरे बहकावे में आकर आप डब्बे से निकल भागे हैं। मैं कहता हूँ। आप तुरत लौट चलिये। पैट्रोग्राद से खबर आई है, अस्थायी सरकार भाग गई, उसकी जगह हम सैनिकों का राज कायम हो चुका है। अगर आपने बात नहीं सुनी, तो आपके खिलाफ फौज भेजी जायगी। अगर आप खून खराबा से बचना चाहते हैं, तो तुरत, बिला शर्त लौट चलिये।"

इतना कहकर अफसर फिर घोड़े पर चढ़ गये। इवान ने सोचा, इस समय बहस मुबाहसे से काम नहीं चलेगा। अफसर की बातें कोजाक बड़े ध्यान से सुन रहे थे। उनमें से कुछ के चेहरे उतर आये थे। कुछ फुसफुस करने लगे थे—कुछ मिनट की देर हुई और सब सत्यानाश में मिल जायगा; जल्द इसके प्रभाव को दूर करना चाहिये। इवान ने हाथ उठाया और अपनी उजली आँखों से कोजाकों के झुँड को देखता, चिल्ला उठा—

"भाइयों, जरा ठहरिये।" फिर उसने अफसर की ओर घूम कर कहा—"क्या वह तार आपके पास है?"

"कौन-सा तार?"— अचरज में अफसर ने कहा।

"वह तार जिसमें पैट्रोग्राद पर आप लोगों के अधिकार का जिक्र है।"

"नहीं—वह तार लेकर आप क्या करेंगे?"

"आहा,—तार उसके पास नहीं।" समूची कम्पनी एक बार ही स्वस्थता की सांस लेती हुई बोल उठी। बहुत से कोजाकों की नज़र आशा से इवान पर पड़ी। इवान अपनी आवाज तेज करते हुए व्यंग्य के स्वर में बोला—

"तुम्हारे पास नहीं है—यही न कहा? और तुम चाहते हो कि तुम्हारी बातों पर हम यकीन करें। इतनी आसानी से तुम हमें नहीं फँसा सकते।"

यह धोखा है, चालबाजी है।" कम्पनी एक स्वर में चीख उठी।

"वह तार हमारे पास नहीं भेजा गया था, कोजाकों!"—अफसर ने अपनी छाती पर हाथ रख आश्वासन देने के लहजे में कहा। लेकिन अब कौन उसकी सुनने जा रहा था? इवान ने देखा, अब उसकी गोटी लाल हो चुकी है। अपने पर पूरा विश्वास रखते वह शीशे पर हीरे की काट की तरह स्पष्ट शब्दों में बोला—

"अगर आप के पास तार होता, तो भी आपकी और हमारी राय एक नहीं हो सकती थी। हम अपने भाई का खून बहाना नहीं चाहते। जनता के खिलाफ हम हथियार नहीं उठायेंगे। नहीं, हम सेनापतियों और अफसरों की सरकार की मदद नहीं कर सकते। बस, समझे?"

कोजाकों ने चिल्ला कर अपनी स्वीकृति दी—"बहुत सही कहा, इवान।" "आप चलते-फिरते नजर आइये!" "धूर्त कहीं का!"

इवान ने तीनों अफसरों की ओर देखा। कोजाक अफसर दाँतों से होंठ दबाये खड़ा था। दोनों अफसर उसकी बगल में खड़े थे। उनमें से एक का नाम इंगस था—खूबसूरत नौजवान! उसकी आँखें चमक रही थीं। इवान बातें बन्द करने का सोच ही रहा था कि कोजाक अफसर ने इंगस से फुसफुसाने के बाद कहा—

"डोन कोजाकों! क्या आप सैवेज डिवीजन के प्रतिनिधि की बातें सुनेंगे?" और स्वीकृति की परवाह किये बिना इंगस आगे बढ़ा बोल उठा—

"कोजाक भाइयों ! यह शोरगुल कैसा ? क्या आप जेनरल कार्निलोव को नहीं चाहते ? क्या आप लड़ाई चाहते हैं ? अच्छी बात । आपको लड़ाई मिलेगी । हम डरने वाले नहीं हैं । बिलकुल नहीं । हम आज ही आप को चूर कर देंगे । हमारे पीछे दो रेजिमेंट हैं ।" उसने शान्त-भाव से बोलना शुरू किया था, किन्तु अब उत्तेजित हो चुका था । इवान की ओर हाथ उठाते उसने कहा—"वह कोजाक आपको बहका रहा है ! वह बोल्शेविक है ? उसका साथ छोड़िये । मैं उसे पहचानता हूँ । उसे गिरफ्तार करो ; उसका हथियार छीनो ।"

इतना कह कर वह कोजाकों की ओर आँखें घुमा कर देखने लगा । उसका चेहरा दिप रहा था । कोजाक फिर चुप हो गये थे, वे असमंजस में पड़े थे, उत्तेजित थे । इवान ने देखा, उसने इसे बोलने का मौका देकर गलती की । लेकिन, तुरिलिन ने स्थिति सम्हाल ली । वह अपने हाथों को हिलाता कोजाकों के बीच में आ रहा, गुस्से में मुँह से थूक के छींटे फेंकता गरज उठा—

"तुम सोचो शैतानों, बुजदिलों । वे तुम पर कोड़े लगा रहे हैं और तुम देख रहे हो ? ये अफ़सर तुमसे जो चाहें, करा लें । तुम क्या कर रहे हो ? क्या कर रहे हो तुम ? इनके सिर उतार लेना चाहिये था और तुम उनकी बातें सुन रहे हो ? इन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दो, इनके खून से जमीन रंग दो । ये तुम्हें बातों में फँसाये हुए हैं और चारों ओर से तुम्हें धोखा दे रहे हैं । मशीन-गन से ये तुम्हारे धुर्रे उड़ा देंगे । तुम सभा करो, जब तोपें गरजेंगी, तो मालूम होगा । तुम अपने को कोजाक कहते हो । अरे, तुम छोकड़ी हो, छोकड़ी !"

"घोड़े पर"—इवान ने गरज कर हुक्म दिया । उसकी आवाज गोली-सी मालूम पड़ी । सभी कोजाक अपने घोड़ों पर जा चढ़े । एक मिनट के अन्दर ही फिर ये मोर्चेबन्द दीख पड़ने लगे ।

"सुनो, कोजाकों !"—अफसर चिल्लाया

इवान ने झट अपनी पिस्तौल निकाल ली और उसके घोड़े पर हाथ रख, कहा—"अब बातें बन्द—अगर बातें करना चाहोगे, तो इससे बातें होगीं। उसने अपनी राइफल भी हिलाई।

पूरी कम्पनी फिर रवाना हुई। पीछे घूम कर उन्होंने देखा कि तीनों दूत आपस में बातें कर रहे हैं। इंगस हाथ उठा कर तेजी से कुछ बोल रहा था। उसकी हरी पोशाक पर उजला कालर चमक रहा था। इवान को उसे देख कर डोन की याद आ गई—उसकी उफान में आई हरी-हरी लहरें और उन पर उड़ती हुई एक उजली टिटहरी।

# घ

## १

कार्निलोव ने पेट्रोग्राद के खिलाफ जो सेनायें एकत्र करना शुरू किया था, वे पश्चिम, दक्षिण और पूरब से आने वाली आठ रेलवे लाइनों पर बिखरी थीं। सभी स्टेशनों—छोटे-बड़े पर खचाखच भरे डब्बे खड़े या धीरे-धीरे चलते दिखाई पड़ते थे। इन सेनाओं का संगठन बिखर गया था। पल-पल बदलने वाले विरोधी हुकमनामों के चलते उनमें और गड़बड़ी फैल रही थी। रेल-मजदूरों के विरोध ने और भी बंटाढार कर दिया था।

डब्बों के पिंजड़ों में अधभूखे कोजाक और अधमरे घोड़े ठसाठस भरे थे। स्टेशनों पर गाड़ी घंटों खड़ी होती। कोजाक डब्बों से निकल कर लोगों की चीजें चुराते या खाना लूटते। कमान्डरों की हिम्मत नहीं होती थी कि निकल कर उनसे बातें करें।

दूसरे रेजिमेंटों के साथ पहली डोन-कोजाक डिवीजन भी पेट्रोग्राद को रैवेल-नारवा रेलवे लाइन से जा रही थी। १० सितम्बर को दो रेजिमेंट नारवा स्टेशन पर शाम को पहुँची! उसके बाद की लाइन उखाड़ दी गई थी। मजदूर उसकी मरम्मत को भेजे गये थे, जिसमें कल भोर तक गाड़ी बढ़ाई जाये।

रात हो रही थी। फिनलैंड की खाड़ी से आने वाली चुभीली हवा तेजी से बह रही थी। अपने डब्बों में कोजाक गप कर रहे थे। एक कोजाक मर्दाने स्वर में गाना गा रहा था।

उसी समय एक आदमी इन डब्बों के नजदीक आया और बीच के एक डब्बे के नजदीक जा कर पूछा—

"आप किस कंपनी के हैं?"

"हम कैदी हैं।" यह कह कर उस अंधकार में एक आदमी ठठा उठा।

"नहीं, मैं गंभीरता से पूछ रहा हूँ।"

"दूसरी कंपनी के हम है।"

"इसका चौथा दस्ता किधर है ?"

"आगे से छठे डब्बे में।"

छठे डब्बे के दरवाजे पर कुछ खड़े और कुछ बैठे कोजाक तंबाकू पी रहे थे। वे इस आगन्तुक की ओर आँखें फाड़ कर देख रहे थे।

उसने कोजाक ढंग से इनका अभिवादन किया और फिर पूछा—"क्या निकिता दुगिन अभी जिन्दा है ? क्या वह यहाँ है ?"

"मैं यहाँ हूँ।" बैठा हुआ आदमी खड़ा होते हुए बोला। "लेकिन मैं नहीं जानता, तुम कौन हो ?"—ऐसा कह कर उसने अपनी दाढ़ी आगे बढ़ाई जैसे वह पहचानने की कोशिश में हो। तुरत ही वह अपनी दाढ़ी हाथ से पकड़ कर चिल्ला उठा—"ओहो, तुम, इलिया, बंचक ! अरे, कम्बख्त तुम वहाँ से झपक पड़े।"

बंचक की बालों भरी बांह को उसने झुक कर पकड़ लिया और बोला—"ये सब अपने आदमी हैं। तुम मत घबराओ। तुम कैसे यहाँ आ पहुँचे ? शैतान तुम्हारा सिर खाये।" बंचक ने दूसरे कोजाकों से भी हाथ मिलाया और टूटी आवाज में कहा—"मैं पेट्रोग्राद से आ रहा हूँ ; तुम्हारी ही तलाश में था। काम है। जल्दी हम आपस में बातें करें। ओहो, तुम जिन्दा हो, मुझे कितनी खुशी हुई। चलो, डब्बे में चलें।"

बंचक डब्बे में आया। कोजाको में हलचल मच गई। उनमें से एक अपना हाथ अंधकार में बंचक के चेहरे की ओर बढ़ा कर उसे छूता हुआ बोल उठा—"बंचक।"

"हाँ, हाँ ! और तुम चिकोमासोव न ?"

"हाँ, मैं ही हूँ। क्या मौके पर आये। मैं तीसरे दस्ते के सैनिकों को बुला लाता हूँ।

तीसरे दस्ते के लोग भी आ जुटे। सब बंचक से बड़े प्रेम से मिले। उसे लालटेन के सामने उन्होंने बिठाया। दुगिन ने खाँसते हुये कहा—"तुम्हारा खत उस दिन मिला था, इलिया। लेकिन, हम तुमसे मिलने को आकुल थे। मुश्किल समस्या है। वे हमें पैट्रोग्राद भेज रहे हैं। एक कोजाक-जो दरवाजे के सामने खड़ा था, बोला—

"साफ बात यह है कि हमारे पास तरह-तरह के लोग आते हैं। वे कहते हैं पैट्रोगाद मत जाओ, अपने भाइयों का खून मत बहाओ—आदि हम उनकी बात सुन लेते हैं, लेकिन हमें विश्वास नहीं होता। वे हमारे अपने आदमी नहीं है। वे हमें धोखा भी दे सकते हैं। अगर हम पैट्रोग्राद नहीं जाते हैं, तो कार्निलौव रूसी सेना हम पर भेजेगा—फिर खूनखराबा होकर रहेगा। तुम कोजाक हो, हमारे अपने हो। हम तुम पर विश्वास रखते हैं। हम तुम्हारे बड़े कृतज्ञ हैं, तुम हमेशा खत भेजते रहे और अखबार भी भेजते रहे...। सिगरेट पीने के लिए हमें काफी कागज भी नहीं मिलता था।"

"क्यों झूठ बोल रहे हो, मूरख कहीं का"—दूसरा कोजाक गुस्से में बोल उठा। "तुम पढ़ना नहीं जानते, इसलिए अखबार को सिर्फ सिगरेट बनाने की चीज समझते हो। हम उन अखबारों को शुरू से आखिर तक पढ़ते रहे हैं, इलिया।"

बंचक यह सुन कर मुस्कराया। उसने देखा बैठ कर बोलने में ठीक नहीं पड़ता। वह लालटेन की तरफ पीठ करके धीमे स्वर में, किन्तु विश्वास के साथ कहने लगा—

"पैट्रोग्राद में तुम्हारी कोई जरूरत नहीं, हे भाइयों। वहाँ कोई विद्रोह नहीं है। समझते हो, ये तुम्हें वहाँ क्यों भेज रहे हैं? करेंस्की की अस्थायी सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए। और इसमें नेतृत्व कौन कर रहा है? जार का पुराना सेनापति कार्निलौव! वह करेंस्की को क्यों भगाना चाहता है? जारकी गद्दी पर यह खुद बैठना चाहता है। यह तुम्हारे कंधे से लकड़ी का जूआ

हटा कर लोहे का जूआ रखना चाहता है। दो बुराइयों में से छोटी बुराई को हमें चुनना है। जार से करेंस्की कहीं अच्छा है—लेकिन सबसे अच्छा तो तब होगा, जब हुकूमत बोल्शेविकों के हाथ में आयगी। तब लड़ाई बंद होगी हम मौज से रहेंगे। मैं करेंस्की के पक्ष में नहीं हूँ—उसका जल्द नाश हो। लेकिन, उसकी जगह पर कार्निलोव बैठ कर मजदूरों के खून की होली खेलेगा। इसलिए, इस समय हमें करेंस्की की सरकार को बचाना है। अगर हम इसे बचा सके, तो करेंस्की के हाथ से छीन भी सकेंगे। छीनेंगे और मेहनत करने वालों के हाथ में सौंप देंगे।"

"जरा रुको, इलिया!" एक ठिंगना कोजाक बोल उठा—"तुमने जूए की बात कही। अगर बोल्शेविकों के हाथ में राज आया, वे किस चीज़ का जूआ हमारे कंधों पर रखेंगे!"

"क्या तुम अपने कंधे पर खुद जूआ रखोगे ?"

"इसका मानी ?—अपने कंधे पर।"

"जरा सोचो, बोल्शेविकों का राज होने पर हुकूमत किसके हाथ में होगी ? तुम्हारे ही हाथों में तो, अगर लोगों ने तुम्हें चुना। नहीं तो दुगिन के हाथ में, या उस बूढ़े बाबाके हाथ में। वह तो चुनाव से बनी, सरकार होगी, बिल्कुल पंचायती राज समझो।"

"लेकिन सबसे ऊपर कौन होगा ?"

"क्यों, जिसे लोग चुन लें। अगर लोगों ने तुम्हें चुना, तो तुम्हीं।"

"सच ? तुम चपला तो नहीं दे रहे !"

सभी कोजाक हँस पड़े और सभी सवालों की झड़ी लगाने लगे। दरवाजे पर जो सन्तरी का काम कर रहा था, वह भी एक क्षण के लिए आकर बातों में शामिल हो गया। "जमीन का क्या होगा ? क्या वे लड़ाई बन्द कर देंगे ? जरा साफ-साफ कहो"—आदि सवालों की धूम मच गई। बंचक ने कोजाकों का रुख ताड़ लिया और समझ गया कि ये लोग आगे

बढ़ने वाले नहीं है । इसी समय वह जूए का सवाल पूछने वाला फिर बोल उठा—

"अच्छा बताओ, तुम्हारा लेनिन को क्या जर्मनों ने नहीं भेजा है ? बंचक तुम अपनी इच्छा से आये हो या किसी ने तुम्हें भेजा है ? मेनशेविक भी तो आखिर जनता के आदमी हैं ! हमें पंचायती सरकार की क्या जरुरत है, आज भी तो हमारी फौज़ी कमीटियाँ हैं ।"

इन सवालों का जवाब बंचक देता रहा । आधीरात के बाद यह सभा समाप्त हुई । तय हुआ कि भोर में दोनो कम्पनियों की सभा बुलाई जाय । उस रात में बंचक वहीं ठहर गया । चिकामासोव ने उसे अपने कम्बल के नीचे सुलाया । सोते समय बोला—"देखना बंचक ! चीलड़ से बचना—ये साले अंडे इतने बड़े-बड़े हो गये हैं ।" एक ठहाका लगाते वह खुद भी लेट गया और फिर धीरे से बोला—

"बंचक, यह तुम्हारा लेनिन किस कौम का है ? मेरा मतलब है उसका जन्म कहाँ हुआ ?"

"वह रूसी है ।"

"रूसी ? नहीं दोस्त, तुम नहीं जानते, वह हमारी कौम का है— कोजाक है, डोन कोजाक । वह सालस्तेकोय प्रान्त का है, उसका जिला है..." यों ही वह बोलता रहा । बंचक ने कहा कि नहीं, वह रूसी है और सिम्बर्स्क प्रान्त में जन्मा, तो चिकामासोव ने विश्वास नहीं किया । उसने बताया कि कोजाकों में यह निर्विवाद प्रचलित है कि वह डोन का रहने वाला है । उसने फखु से यह भी बताया कि आज तक जिन्होंने जार के खिलाफ गरीबी की आवाज उठाई, वे सबके सब कोजाक ही थे—प्रगाकोव, स्टेन्कारेजिन, यरमाक, सबके सब । "तुम कहते हो, उसका जन्म सिम्बर्स्क हुआ, मुझे यह सुन कर शर्म हुई, इलिया ।"

बंचक ने मुस्कुरा कर कहा—"तो वे लेनिन को कोज़ाक मानते हैं ?"

"हाँ, वह कोज़ाक है, लेकिन अभी अपना पता किसी को नहीं देता है ।

वह तोप सेना में काम करता था। जर्मनों ने उसे पकड़ा। वहीं उसने सारी बातें सीखीं। लेकिन जब वह उनके मजदूरों को भड़काने लगा, जर्मनों ने उसे निकाल बाहर किया।" कहते-कहते चिकामासोव की आवाज़ तेज़ हुई। उसने जारी रखा—"तुमने कभी उसे देखा है, बंचक! उसका सिर बहुत बड़ा है। कोई ज़ार बातचीत में उसे जीत नहीं सकता। ऐसा बड़ा आदमी साइबेरिया प्रान्त में जन्म लेगा? तुम भी कैसे बेवकूफ हो।"

बंचक मुस्कुराता हुआ सुनता रहा। तब तक चीलड़ों ने उस पर चढ़ाई कर दी थी। कमीज के नीचे खुजली-सी लग रही थी। थोड़ी ही देर में चिकामासोव खुर्राटे भरने लगा। लेकिन बंचक को नींद कहाँ आ रही थी? उसके दिमाग में विचारों का तांता बँधा था—मरे हुए जर्मन और रूसी सैनिकों के वीभत्स चेहरे; उजड़े हुए खेतों और गाँवों के भीषण दृश्य, तोपों और मशीनगनों की गड़गड़ाहट, बीच-बीच में गाने जिनमें दर्द भरे होते, उस स्त्री का धुँधला चेहरा जिसे वह कभी प्यार करता था, फिर युद्ध की विभीषिकायें, पहाड़ी पर उसके दोस्तों की कब्रें! वह व्याकुल हो उठ बैठा और ज़ोर से बोल पड़ा, या सिर्फ दिमाग में ही बोला—

"जब तक ज़िन्दा हूँ, इन यादों को ताज़ा रखूँगा! एक हमारी सारी जिन्दगी लँगड़ी बना दी गई है! इनका नाश हो, ये जहन्नुम जायँ। सिर्फ मौत इनके पाप को नहीं धो सकती।"

## २

भोर होने के पहले तक उसे नींद नहीं आई। आसमान में ऊषा की लाली देखते वह वहाँ से रवाना हुआ। उसका चेहरा पीला पड़ा था, उस पर शुष्कता छाई हुई थी। वह रेल-मज़दूरों की कमीटी से मिला और उन्हें राजी किया कि वे गाड़ी को आगे न बढ़ने दें। फिर वह फौजी कमीटी की तलाश में चला।

आठ बजे तक वह फिर ट्रेन के नज़दीक लौट आया। रात में वर्षा हो गई थी। बलुही ज़मीन पर पानी के बहने की रेखायें बन गई थीं। बड़ी बड़ी बूँद के गिरने से ज़मीन में छोटे-छोटे छेद से हो गए थे, वह चेचक भरे चेहरे-सी मालूम पड़ती थी।

वह डब्बों के पास से जा रहा था कि लम्बा कोट और कीचड़-भरे बूट पहने एक अफ़सर को उसने देखा। बंचक ने पहचान लिया, यह कप्तान कालमिकौव था। उसे देख कर कालमिकौव खड़ा हुआ और उस पर तिरछी निगाह डालते घृणा के शब्दों में बोला—

"कौर्नेट बंचक ? तुम अभी तक गिरफ्तार नहीं हुए ? माफ करो, मैं अपना हाथ तुम्हारे लिए बढ़ा नहीं सकता।"

"आप जल्द बक गये। मैं अपना हाथ आपकी ओर नहीं बढ़ा रहा हूँ।" बंचक के स्वर में भी रूखाई थी।

"कर क्या रहे हो ? अपनी जान बचाते फिर रहे हो ? या ...क्या तुम पैट्रोग्राद से आये हो ? तुम्हें हमारे दोस्त करेंस्की ने तो नहीं भेजा ?"

क्या मुझसे जिरह की जा रही है ?"

"नहीं, सिर्फ जिज्ञासा मात्र है ! जो अब भगोड़ा है, कभी वह साथी था न ?"

बंचक ने कंधे हिलाते हुए कहा—

"आप विश्वास रखें, मुझे करेंस्की ने नहीं भेजा है !"

"लेकिन तुम यहाँ बड़ा खतरा मोल ले रहे हो। अकेले घूम रहे हो। और यह भेष क्या बना रखा है ? बिल्ला नहीं है, तो भी सैनिक का बड़ा कोट पहने हुए हो।" कालमिकौव ने नीचे से ऊपर बंचक को देखा।

"क्या कुछ राजनीतिक काम करने आये हो ? क्या मेरा अनुमान सही है ?" इतना कह उत्तर की प्रतीक्षा किये बगैर वह घूम कर आगे बढ़ गया।

बंचक ने डुगिन को अपने डब्बे में प्रतीक्षा करते हुए देखा।

"तुम कहाँ थे ?" डुगिन ने पूछा। "वहाँ सभा शुरू भी हो गई !"

"शुरू हो गई ?"

"हाँ, हमारी कम्पनी का कमान्डर कालमिकौव पैट्रोग्राद गया था और वह भोर में ही लौटा है। उसने कोज़ाकों की सभा बुलाई है और अभी इस रास्ते गया है।"

वह डुगिन के साथ सभा-स्थल की ओर चला। वहाँ कोजाकों की भीड़ लगी थी और बीच में एक पीपे पर खड़ा हो कालमिकौव बोल रहा था। उसके चारों ओर अफसरों की भरमार थी। वह कह रहा था—

"...हमें विजय तक इसे पहुँचाना है। वे हम पर विश्वास करते हैं और हम बता देंगे कि इस विश्वास के हम पात्र हैं। बौल्शेविकों और करेंस्की के एजेन्ट सेना को आगे बढ़ने में रुकावटें डाल रहे हैं। हमें सेनापति ने आज्ञा दी है कि अगर रेल से आना मुमकिन न हो, तो हम घोड़े से ही चल पड़ें। हमें आज ही पैट्रोग्राद के लिए चल देना है। जल्दी रेल से हम लोग सामान उतार लें।"

भीड़ में धक्कमधुक्का करते बंचक बीच में पहुँचा और अफसरों के नजदीक न जाकर, वहाँ से ही चिल्ला पड़ा—

"कोजाक साथियों ! मुझे पैट्रोग्राद के मजदूरों और सैनिकों ने भेजा है। तुम्हारे अफसर तुमसे भाई का खून बहवाना और क्रान्ति को कुचलवाना चाहते हैं। अगर आप लोग जनता• को कुचलना चाहते हैं, फिर से जारशाही कायम करना चाहते हैं, फिर लड़ाई में तब तक फँसे रहना चाहते हैं जब तक आप में से एक-एक या तो मुर्दा बन जाय या पंगु—तो, आप लोग इनकी बात मानिये लेकिन, पैट्रोग्राद के सैनिक और मजदूर यह आशा रखते हैं कि आप विभीषण नहीं बनेंगे। उन्होंने आपको हार्दिक अभिनंदन भेजा है और वे आपको अपना दुश्मन नहीं, दोस्त देखना चाहते हैं।

उसे आगे कहने से रोक दिया गया। इस पर भीड़ में उत्तेजना फैली और ऐसा लगा कि कालमिकौव को लोग पीपे से धकेल देंगे। वह खुद

पीपे से नीचे उतरा, बंचक की ओर बढ़ा, लेकिन बीच ही में रुक कर बोला—

"कोजाकों ! पिछले साल बंचक मोर्चे पर से भाग आया था। आपको यह मालूम है न ? क्या हम इस बुजदिल और गद्दार की बातें सुनेंगे ?

छठी कम्पनी का कमान्डर मेजर सुकिन चिल्लाया—

"इसे गिरफ्तार करो—यह बदजात ! हम अपना खून बहाते रहे और यह जान बचाते फिरा। इसे पकड़ो"

"जरा ठहरो, भाइयों", "उसे बोलने दो", "हम भगोड़े को नहीं चाहते", "बोलो बंचक", "इनका नाश हो"—आदि परस्पर विरोधी आवाजों का हंगामा-सा लग गया।

उसी समय एक लम्बा, खाली सिर कोजाक, जो रेजिमेंट की क्रान्तिकारी कमीटी का सदस्य था, पीपे पर उछल कर जा चढ़ा। उसकी पतली गरदन पर उसकी सफाचट खोपड़ी सांप की तरह इधर-उधर घूमने लगी। बड़े ही ओजस्वी शब्दों में उसने कोजाकों से जैनरल कार्निलौव की आज्ञा नहीं मानने की अपील की, उसे क्रान्ति का दुश्मन और देश-द्रोही बताया और आपसी लड़ाई के बुरे नतीजे सुझाये। अपने भाषण के अन्त में बंचक की ओर मुखातिब होकर कहा—

"ओ हमारे प्यारे साथी, आप ऐसा न सोचें कि इन अफसरों की तरह हम कोजाक आपसे घृणा करते हैं। आपको पाकर हम धन्य हैं, हम आपके प्रशंसक हैं। आप भी एक दिन अफसर थे, लेकिन कभी आपने हमें कुचलने की कोशिश की ? आपने हमेशा हमें भाई माना। कभी आपके मुँह से हमने बदजुबान सुनी ? आप यह न समझें कि हम जाहिल हैं, तो बातों को नहीं समझते ? पशु भी अपने हितू को पहचानता है। हम सर झुका कर आपका अभिनन्दन करते हैं और आपको यह सन्देश देते हैं कि आप पैट्रोग्राद के मजदूरों को जाकर कह दें, हम उनके खिलाफ उँगली तक नहीं उठायेंगे।"

चारों ओर से आनन्दध्वनि होने लगी—शोर मचने लगा। कालमिकौव फिर पीपे पर चढ़ा और अपने सुन्दर शरीर को कोजाकों की ओर हिलाते हुए उन्हें डोन की इज्जत और गौरव की याद दिलाई, कोजाकों की ऐतिहासिक महत्ता पर उनका ध्यान खींचा और अपने बाप-दादों के बहाये हुए खून की पवित्रता का यशोगाथा गाई। कालमिकौव के बाद एक कोजाक पीपे पर चढ़ा और वह बंचक को गालियाँ सुनाने लगा। भीड़ में ऐसी उत्तेजना हुई कि किसी ने उसे पीपे पर से नीचे खींच लिया। उसी समय चिकामासौव पीपे पर चढ़ गया और अपनी बाँह फटकारते चिल्लाया—

"हम नहीं जायेंगे। हम ट्रेन से नहीं उतरेंगे। कालमिकौव ने कहा है कि कोजाकों ने कार्निलौव को सहायता का बचन दिया है। हमसे किसने बचन मांगा। हमने कार्निलौव को बचन नहीं दिया। अफसरों ने बचन दिया। वे ही उसकी मदद करें!"

इसके बाद एक के बाद दूसरा कोजाक पीपे चढ़कर चिल्लाता रहा। चारों ओर बिजली-सी दौड़ रही थी। मालूम होता था, खून बहकर रहेगा। अफसरों ने वहाँ से हट जाने में ही कल्यान देखा।

आध घंटे के बाद डुगिन दौड़ता हुआ बंचक के पास पहुँचा।

"इलिया, अब हम क्या करेंगे? कालमिकौव चालाकी खेल रहा है। वे लोग मशीनगनें उतार रहे हैं और उन्होंने घुड़सवार दूत कहीं भेजे हैं।"

"घबराने की बात नहीं। बीस कोजाक लेकर मेरे साथ चलो।"

अफसरों के डब्बे के नजदीक कालमिकौव और तीन अन्य अफसर मशीनगनों को घोड़ों पर लाद रहे थे। बंचक उनके पास बढ़ा, अपने पीछे के कोजाकों की ओर देखा और अपने पाकेट में हाथ डाल एक रिवाल्वर निकाल, बोला—

"कालमिकोव, मैंने तुम्हें गिरफ्तार किया! हाथ उठाओ।"

कालमिकोव घोड़े पर से कूद पड़ा और झुक कर खोल से अपना रिवा-

स्वर निकालना चाहा। उसी समय उसके सिर पर रिवाल्वर की गोली धाँय कर उठी और बंचक चिल्ला पड़ा—

"हाथ उठाओ!"

बंचक के रिवाल्वर की नली कालमिकोव की पेशानी पर सटी हुई थी। कालमिकोव ने आँखें उठा कर उसे देखने की कोशिश की और धीरे-धीरे हाथ उठा दिये, उसकी उँगलियाँ ठिठुर-सी रही थीं। दूसरे अफसरों ने भी अपने हथियार सुपुर्द कर दिये। कोजाकों ने घोड़ों पर से मशीनगनें उतारीं और उन्हें डब्बे में रख दिये।

"इन पर पहरे बिठा दो"—बंचक ने डुगिन को आज्ञा दी। "चिकामासोव, तुम दूसरे अफसरों को गिरफ्तार करो और उन्हें यहाँ लाओ। डुगिन और मैं कालमिकोव को फौजी क्रान्तिकारी कमीटी के पास ले जाता हूँ।" "कप्तान कालमिकोव, कृपा कर आगे बढ़ो।"

"फुर्ती...फुर्ती की हद हो गई।" एक अफसर अपने डब्बे में चढ़ते हुए, और बंचक, डुगीन और कालमिकोव को जाते हुए देख कर प्रशंसा के लहजे में बोला—

"शर्म की बात है, महाशयों, हमें डूब मरना चाहिये। हमने लड़कों से भी बुरा वर्ताव दिखलाया। किसी को उस हरामजादे को मार गिराने की नहीं सूझी! जब उसने कालमिकौव पर रिवाल्वर उठाई, हमें झट उस पर गोली चला देनी थी, बस सब बातें खत्म हो जातीं।" मेजर सुकिन अपनी खीस दूसरे अफसरों पर निकाल रहे थे और हाथ में सिगरेट का डब्बा खट-खटा रहे थे। दूसरे अफसर एक दूसरे पर नजर उठाते सिगरेट सुलगा रहे थे। जिस फूर्ती से बंचक ने काम लिया, सब का होश फाख्ता हो गया था।

थोड़ी देर तक कालमिकौव चुपचाप होंठ चबाता बढ़ता रहा। उसका बायाँ गाल जल-सा रहा था। रास्ते में जो देखता, अचरज से घूरने लगता। शाम का आसमान बादल से ढँका था। स्टेशन के परे, अंधेरे मैदान से दूर पर रात की अगवानी स्पष्ट मालूम हो रही थी।

स्टेशन से निकलते ही कालमिकौव झट घूम गया और बंचक के मुँह पर थूक कर बोला—"शैतान !"

बंचक ने थूक को पोंछ डाला, भौंवें उठाईं। उसकी उँगली रिवाल्वर के घोड़े पर खुजला उठी। लेकिन उसने अपने को जब्त किया और रूखे शब्दों में कहा—"बढ़े चलो।"

कालमिकौव हाथ उठाये गालियाँ बकता रहा। "तुम गद्दार हो, इसका बदला तुमसे चुकाया जायगा!"—वह रह रह कर चिल्ला उठता।

"मैं कहता हूँ, बढ़े चलो।"

लेकिन बार-बार कालमिकौव उत्तेजित घोड़े की तरह खड़ा हो जाता। योंही वे पानी-कल के मीनार के नजदीक पहुँचे। दाँत पीसते काल-मिकौव चीख उठा—

"तुम्हारी पार्टी है ? समाज के बुहारन का एक ढेर ! तुम्हारा नेता कौन है ? जर्मनी का सेना विभाग ही न ? बौल्शेविक—हा, हा—बन्दर कहीं के ! तुम्हारी पार्टी को रंडी की तरह खरीदा जा सकता है ! बदजात ! तुम्हें तोप पर उड़ा देना चाहिए। तुमने देश को बेंच डाला है। मैं तुम सब के सिर एक ही पेड़ से लटका दूंगा। वक्त आने दो। तुम्हारे लेनिन ने क्या सिर्फ तीस जर्मन सिक्कों में रूस को नहीं बेच डाला है ! उसने घूस ली है। अरे खुद छिपा फिरता है ! मुजरिम !

"दीवार से लग कर खड़ा हो"—बंचक गंभीरता से गरज उठा।

डुगिन बेचैन हो उठा—"दुलिया ! बंचक ! जरा ठहरो !" वह चिल्ला पड़ा —"यह क्या कर रहे हो, ठहरो !"

क्रोध से आगबबूला बना बंचक कालमिकौव पर झपट पड़ा और उसकी खोपड़ी पर दे मारा। उसकी टोपी उड़ गई। उसे वह पैरों से रौंदता मीनार की काली दीवार के निकट घसीट ले गया और बोला—

"खड़ा रहो !"

तुम क्या करने जा रहे हो !...तुम...तुममें यह हिम्मत ! तुम मुझे गोली मारना चाहते हो !" कालमिकौव गरज उठा।

उसे धकेल कर दीवाल से सटा दिया गया और खींच कर सीधा कर दिया गया। "अच्छा तो तुम मुझे मारने जा रहे हो !" इतना कह वह तन कर खड़ा हो गया। एक कदम आगे बढ़ा और अपने कोट का बटन खोलते हुए बोला—

"मार दो, ओ सुअर के जने, मारो···दागो गोली...और देखो रूसी अफसर किस शान से मरते हैं···मौत के सामने...मैं...ओह... !

गोली उसके मुंह में लगी। गोली की आवाज से मीनार गनगना उठा, कालमिकौव ने बायें हाथ से सिर पकड़ लिया। उसके पैर डगमगाये, वह गिर पड़ा। आधे वृत में वह झुक गया, खून से भरे टूटे दाँत अपनी छाती पर उगले जीभ से होंठ चाटा। उसकी पीठ मुश्किल से जमीन को छू सकी होगी कि बंचक ने फिर गोली छोड़ी। कालमिकौव काँप गया, तड़प उठा, करवट ली, नींद भरी चिड़िये की तरह अपनी गरदन छाती से सटा ली, और एक-दो बार सिसकारियाँ भरीं !

बंचक मुड़ कर चला। डुगिन उसके पीछे दौड़ा।

"इलिया !...तुमने उसे क्यों मारा, बंचक !"

बंचक ने उसका कंधा पकड़ कर झकझोरा और उसकी आँखों में आँखें डाल कर बड़ी ही शान्ति से कोमल आवाज में बोला—

"चाहे हम या वे ! बीच का रास्ता नहीं है। भाई इस लड़ाई में कोई कैदी नहीं होता। खून के बदले खून। खत्म कर लड़ाई। ...समझे ! कालमिकौव ऐसे आदमियों को खत्म करना पड़ेगा—साँप की तरह इन्हें कुचल देना पड़ेगा। और जो उनके प्रति दया दिखाना चाहेंगे, उन्हें भी गोली से उड़ा देना होगा। समझे ! तुम में यह असमंजस क्यों ? होश में आओ, अपने में हिम्मत लाओ। सख्त बनो। अगर कालमिकौव के बश की बात

होती, वह अपने मुँह से सिगरेट हटाये बिना ही हमें गोली के घाट उतार दिये होता। और तुम! ...ओहो, तुम तो रुआँसा बच्चे की तरह कर रहे हो!"

लेकिन डुगिन का सिर हिलता रहा और दाँत कटकटाते रहे। उसके लम्बे पैर चलते समय लड़खड़ा रहे थे।

३

करेंस्की का हुक्मनामा पैट्रोग्राड में आने का पाकर १३ सितम्बर को जनरल क्रिमोव ने गोली से आत्महत्या कर ली।

क्रिमोव की सेना के प्रतिनिधि और कमान्डर शरद-प्रासाद में आ-आकर अपनी भक्ति प्रगट करने लगे। जो लोग कल तक अस्थायी सरकार को उलटने के सपने देखते और उनके लिए कोशिशें कर रहे थे, अब वे ही झुक-झुक कर करेंस्की की सलामी बजा रहे थे।

क्रिमोव की आत्महत्या के पहले जनरल ऐलक्सीव को प्रधान सेनापति बनाया गया था। अपनी जगह की कठिनाइयों को समझते चतुर एलेक्सीव ने पहले तो यह जिम्मेदारी लेने से इन्कार किया था, लेकिन पीछे उसने स्वीकार कर लिया। सेनापति बनाए जाने पर उसने कार्निलौव से टेलीफोन पर बातें शुरू कीं, यह जानने को कि उसकी नियुक्ति पर कार्निलौव की क्या राय है और बाहर से कौन-कौन सी सेनाएँ पैट्रोग्राड की तरफ आ रही हैं। आधी रात तक यह बातचीत चलती रही।

चौदह सितम्बर को अलेक्सीव ने प्रधान सेनापति के दफ़्तर का चार्ज लिया। उसी शाम को अस्थायी सरकार की आज्ञा पाकर उसने कार्निलौव को गिरफ़्तार कर लिया। कार्निलौव के साथ उसके साथी दो और जनरल गिरफ़्तार किये गये। दूसरे दिन दक्षिण पश्चिम मोर्चे का कमान्डर डेनकिन

और उसके तीन साथी जनरल, बर्डिचेव में गिरफ्तार किये गये। यों कार्निलोव का विद्रोह खत्म हुआ। लेकिन इसीसे बाद में एक नया विद्रोह शुरू हुआ जो घनघोर गृह-युद्ध में परिणत हुआ।

## ३

### १

नवम्बर शुरू हो चुकी थी। एक दिन भोर में लिस्तनिस्की को रेजिमेंट कमान्डर ने खबर भेजी कि वह अपनी कम्पनी को लेकर शरदप्रासाद के मैदान में पहुँचे। उसने सर्जेंट मेजर को हुक्म दिया और आप कपड़े पहन तैयार होने लगा। दूसरे अफसर भी जम्हाई लेते और कोसते तैयार होने लगे। कम्पनी को पोत में लेकर लिस्तनिस्की जल्द सड़क पर आया। सड़कें उजाड़ थीं। दूर से गोलियों की आवाज आ रही थी। शरद-प्रासाद के मैदान में एक फौलादी हथियारबंद गाड़ी चक्कर काट रही थी और जंकरों का पहरा था। शरद-प्रासाद के दरवाजे पर चौथी कम्पनी के अफसर और जंकरों का एक दस्ता खड़ा था। कंपनी कमान्डर लिस्तनिस्की को एक तरफ ले गया और पूछा—

"पूरी कंपनी आप के साथ आई है ?"

"हाँ। क्यों ?"

दूसरी, पांचवीं और छठी कंपनियों ने आने से इन्कार कर दिया है। लेकिन मशीनगन का दस्ता हमारे साथ है। आप के कोजाकों की क्या हालत है ?

"बुरी ! लेकिन, पहली और चौथी रेजिमेंट का क्या हाल है ?"

"वे यहां नहीं हैं। वे नहीं आयेंगे। क्या तुम्हें मालूम है ! आज ही बोल्शेविक लोग धावा बोलने वाले हैं ! कहा नहीं जा सकता, क्या होने वाला है।" उसने लंबी सांस ली और जोड़ दिया—"इससे तो डोन लौट जाना कहीं अच्छा !"

लिस्तनिस्की अपनी कंपनी को प्रासाद के आंगन में ले गया। कोजाक अपने हथियार एक जगह इकट्ठा रख उस विस्तृत आंगन में घूमने लगे। अफसर एक कोने में इकट्ठे हो कर सिगरेट फूँकने और गप करने लगे।

कुछ देर के बाद जंकरों और औरतों की एक रेजिमेंट पहुँची। जंकर मशीनगन के साथ प्रासाद के बरामदों पर जा जमे। औरतें आंगन में ही भीड़ लगाये रहीं। कोजाक उन्हें देखते ही उनके निकट पहुँचने और गन्दे इशारे करने लगे। एक सर्जेंट ने तो एक औरत को पीछे से जाकर पकड़ लिया और बोला—

"आप का काम बच्चा जनना है, चाची; मर्दों के काम में आप क्यों दखल दे रही हैं।"

"तुम्हीं बच्चे पैदा करो।" गुस्से में चूर चाची बोल उठीं।

कोजाक ठहाका देकर हंसने लगे। लेकिन दोपहर तक उनकी हँसी भाप बन कर उड़ने लगी। औरतों ने दस्तों में बँट कर सभी दरवाजों पर लकड़ी के कुन्दों का बैरिकेड बनाया और जम गईं। उनका नेतृत्व एक मर्दाना सुरत की औरत कर रही थी, जिसके कोट में सेंटजार्ज का तमगा लटक रहा था। हथियारबन्द गाड़ियां तेजी से चक्कर काटने लगीं और जंकर कारतूसों की पेटियां इधर-उधर ढोने लगें।

लैगुतिन के पास बैठे उसके अपने जिले के कुछ कोजाक बहस कर रहे थे। अफसरों का कहीं पता नहीं था। आंगन में या तो कोजाक थे और औरतें थीं। कुछ मशीनगनें फाटकों पर एकाकी चमक रही थीं।

शाम को हल्की बर्फ गिरने लगी। कोजाकों के पेट बुलबुला रहे थे। उनमें से एक ने राय भी की कि किसी को फौजी भोजनालय से खाना लाने को भेजा जाय। दो आदमी भेजे गये। किन्तु दो घंटे बीत गये, न खाना आया और न वे आदमी लौटे। धूंधलका होने पर औरतों की बटालियन ने लकड़ी के कुंदों की आड़ से आंगन में गोली चलाना शुरू किया। कोजाकों ने

गोलियां नहीं चलाईं, वे तंबाकू पीने और कोसने में लगे रहे। अन्त में लैगुतिन उन्हें दीवाल के पास ले गया और प्रासाद की खिड़की की ओर नज़र रखते, उनसे बोला—

"यही हालत है, कोजाक भाइयो! यहां हमारे लिये कोई काम नहीं है। हम अब बाहर चलें, नहीं तो फिजूल हम तकलीफ उठायेंगे। वे जब प्रासाद पर गोलियाँ चलाना शुरू करेंगे, हमारी क्या गत होगी! अफसर लोग नौ दो ग्यारह हो गये। और, हमें यहां मरने को खड़ा कर दिया गया है। हम लोग भी घर लौट चलें। इस दीवाल में पीठ रगड़ने से क्या फायदा? और, इस अस्थायी सरकार की बात?...इससे हमारी क्या भलाई हो रही थी! आप लोग क्या सोच रहे हैं, भाइयो।"

"लेकिन, ज्यों ही हम आंगन से निकलेंगे, बोल्शेविक हमें भून डालेंगे।" एक कोजाक ने उज्र पेश किया।

"हम छिट-पुट होकर चलें।"

"नहीं, हम यहीं आखिर तक रहें।"

"हम यहां खूंटी में बंधी बकरी की तरह जल्लाद की छूरी के इन्तजार में हैं।"

"तुम जो कुछ कहो, हमारी सेना बाहर जायगी ही।"

"चलो, हम सब चल चलें।"

"हम बौल्शेविकों के पास आदमी भेजें; वे न हमें छेड़ें और न हम उन्हें छेड़ेंगे।"

पहली और चौथी कंपनी के कोजाक भी आ मिले और बहस में शामिल हुए। थोड़ी बहस के बाद तीन कोजाक—हर कंपनी से एक-एक—बौल्शेविकों के पास भेजे गये। थोड़ी देर में वे तीन नाविकों के साथ लौटे। उनमें से एक जिसकी काली दाढ़ी थी, उसकी टोपी पीछे लटक रही थी, जो नाविकों का जैकेट पहने था, कोजाकों के बीच में आया और बोला—

"साथी कोजाकों ! हम लोग बाल्टिक के क्रान्तिकारी नाविकों की ओर से आप के पास भेजे गये हैं। हम आप से अर्ज करते हैं कि आप इस प्रासाद को छोड़कर चल दें। आप इस पूँजी-पतियों की सरकार की क्यों रक्षा करें ! उन्हीं के बच्चों जंकरों को उनकी रक्षा करने दीजिये। आप के साथी पहली और चौथी रेजिमेंट के कोजाक हमारे साथ हैं। आप में से भी जो हमारा साथ देना चाहें, बांई तरफ खड़े हो जायें।"

"जरा ठहरिये भाई साहब !" पहली कंपनी का एक सार्जेंट आगे बढ़ कर बोला। "हम लोग खुशी-खुशी जाने को तैयार हैं, लेकिन, कहीं बोल्शेविकों ने हम पर गोलियाँ चलाईं तो।"

"साथियों ! मैं पैट्रोग्राड की क्रान्तिकारी-फौजी-कमीटी की ओर से आपको विश्वास दिलाता हूँ, कि आप का कोई शरीर भी स्पर्श नहीं करेगा।"

कोजाक हिचकिचाहट में पड़े थे। औरतों की बटालियन से कुछ औरतें बातें सुन रही थीं। एक कोजाक ने उन्हें देख कर कहा—

"क्यों, देवियों, आप भी हमारे साथ चलेंगी ?"

"अपनी राइफल उठाओ और मार्च करो !" लैगुतिन ने हुक्म दिया। कोजाकों ने तुरंत अपनी राइफलें उठाईं और पांत में खड़े हो गये। उनमें से एक ने उस नाविक से पूछा—"क्या हम मशीनगनें भी लेते चलें ?"

"हाँ, हाँ—उन्हें जंकरों के लिये क्यों छोड़िये !"

जब कोजाक आंगन से निकल रहे थे, अचानक अफसर आ जुटे। वे आकर एक साथ खड़े हो गये। उनकी आँखें तीनों नाविकों पर गड़ी थीं। सैनिक मार्च करने लगे। मशीनगन का दस्ता उनके साथ ही चला। मशीनगनों के पहिये भीगे पत्थरों पर कड़कड़ाते हुये आगे बढ़े। दरवाजे के पास कोजाक खड़े हो गये। वहाँ औरतों की पूरी बटालियन खड़ी कर दी गई थी। एक आदमी मशीनगन के पुश्त पर चढ़ कर बोला—

"सुनिये, देवियों। हम जा रहे हैं और आप स्त्री-सुलभ बेवकूफी के

चलते यहां ठहरी हुई हैं। खैर, चालाकी मत कीजिये, यही कहना है। अगर आपने मेरी पीठ पर गोली चलाई हम लौटकर आपके पुर्जे-पुर्जे उड़ा देंगे। हाँ। आखिरी सलाम लीजिये।"

फिर सब कोजाक बढ़े। जब वे बाहर के मैदान के बीचोंबीच थे, उनमें से एक चिल्लाया—

"वह देखो, एक अफसर हमारी ओर दौड़ा आ रहा है। कोई सिर मुड़े एक लम्बा तगड़ा अफसर दौड़ा आ रहा था। एक हाथ से वह टोपी पकड़े था और दूसरा हिला रहा था।

"अरे, यह अतारशिकोव है—तीसरी कम्पनी का।"

"वह हमारा साथ देना चाहता है।"

"वह बड़ा बहादुर है।"

अतारशिकोव के चेहरे पर हँसी थी—उसे देखकर सभी कोजाक हँस पड़े। "दौड़ो, कप्तान, जल्दी करो! वे चिल्ला रहे थे।

उसी समय प्रासाद के दरवाजे की ओर से एक गोली छूटी—अतारशिकोव को लगी। वह पीठ के बल गिर पड़ा और उठने की चेष्टा में पैर फेंकने लगा। बिना कमांड के ही पूरी कंपनी प्रासाद की ओर मुड़ पड़ी। मशीनगन वाले अपनी मशीनगनों को दुरुस्त करने लगे। गोलियों की आवाजें होने लगीं। लेकिन कहीं पर एक इन्सान भी नजर नहीं आया। कंपनी फिर पांत में होकर रवाना हुई। दो कोजाक जो अतारशिकोव को देखने गये थे, दौड़कर आये और सब को सुना कर चिल्ला पड़े—

"बगल में गोली लगी थी! बेचारा चल बसा।"

२

नवम्बर के मध्य तक मोर्चों पर भी पैट्रोग्राड की क्रान्ति की खबर पहुंचने लगी। अफसरों के अर्दलियों ने जो सबसे ज्यादा खबर रखा करते थे, इस बात का समर्थन किया कि अस्थायी सरकार अमेरिका भाग गई; करेंस्की को,

उनका कहना था, नाविकों ने पकड़ लिया, उसका मूँड़ मुँड़ा दिया, उसके चेहरे पर कालिख लगा दी और दो दिनों तक पेट्रोग्राड की सड़कों पर घुमाते रहे।

लेकिन, कुछ दिनों के बाद सरकारी खबरें पहुँचीं कि अस्थायी सरकार खत्म हो गई और उसके बदले बोल्शेविकों के हाथ में शासन-सूत्र आया है। इस खबर से कोजाकों में बड़ी उत्तेजना फैली। कुछ खुश थे कि लड़ाई बन्द होगी। लेकिन, जब यह खबर आई कि करेंस्की तीसरी घुड़सवार-सेना के साथ पैट्रोग्राड पर चढ़ाई करने जा रहा है और दक्षिण से कोजाक रेजिमेंट लिये कालेदीन भी बढ़ रहा है, तब उन्हें बड़ी चिन्ता हुई।

मोर्चे टुकड़े टुकड़े हो गये। अक्तूबर में सैनिक भागते थे छिटपुट चुपके-चुपके, तीतर बीतर। लेकिन दिसम्बर आते ही कम्पनियाँ, रेजिमेंटें, डिविजनें बाकायदा मोर्चा छोड़ कर पीछे हटने लगी। कभी-कभी वे हल्के सामान के साथ लौटतीं। लेकिन प्रायः ही सैनिक अपने अफसरों को गोली मार देते, फौज की सम्पत्ति लूट लेते, रास्ते में लूट-पाट करते और अचानक आई बाढ़ की तरह घर को चल पड़ते।

तारतारस्क गाँव का मिशा कोशवाई बारहवीं रेजिमेंट में था। इस रेजिमेंट से कुछ दिनों तक भगोड़ों को रोकने और टूटे हुए मोर्चों को जोड़ने का काम लिया गया। लेकिन पीछे देखा गया, ऐसी चेष्टा फिजूल है। दिसम्बर में यह रेजिमेंट अपने सामानों को एकत्र कर एक रेलवे-स्टेशन पर पहुँची। यूक्रेन होकर उसकी ट्रेन डोन की तरफ बढ़ रही थी कि जनामेंका के लगभग बोल्शेविक सरकार के प्रतिनिधि उसके हथियार लेने को पहुँचे। एक घंटे तक बातें होती रहीं। कोशवाई और फौजी-क्रान्तिकारी-कमीटी के चेयरमैन ने प्रतिनिधियों से निवेदन किया कि हथियार उनके साथ जाने दिये जाँय।

"आप लोग अस्त्र-शस्त्र ले जाकर क्या करेंगे?" उन्होंने पूछा।

"अपने पूँजी पतियों और अफसरों के सर उड़ायेंगे और कालेदीन की दुम मरोड़ेंगे। कोशवाई ने सबकी ओर से जवाब दिया।

ट्रेन को बढ़ने दिया गया। क्रेमेंनका में फिर उनसे हथियार लेने की कोशिशें हुईं, लेकिन कोजाकों ने डब्बों के मुँह पर मशीनगन खड़ी करके लड़ाई की घोषणा कर दी। ट्रेन फिर बढ़ी। एकास्लाव में लाल सेना ने उन पर गोलियाँ चला कर उन्हें डराना चाहा; लेकिन, तो भी वे हथियार देने को राजी नहीं हुए। बड़ी मुश्किल से उनसे मशीनगनें, कुछ कारतूस मैदानी टेलिफोन के औजार आदि जप्त किये जा सके। चापलिन के नजदीक अराजकवादियों और यूक्रेनियनों में युद्ध चल रहा था। वे आपही उसमें शामिल हो गये। उनमें तीन मरे और बाकी फिर आगे रवाना हो गये।

तीन दिनों के बाद रेजिमेंट का पहला दस्ता मिलेरवो स्टेशन पर उतरा। उनमें से आधे सीधे अपने घरों को घोड़े की बाग मोड़ी। बाकी कारगिन गाँव तक पाँत में बढ़े। दूसरे दिन उन्होंने आस्ट्रियनों से पकड़े घोड़ों और लूट के सामानों का बँटवारा किया। पैसे और सामानों को भी आपस में बाँट लिया।

कोशवाई आदि तारतारक गाँव के कोजाक अपने गाँव की तरफ चले। उन्होंने एक पहाड़ी पार की। पहाड़ी पर उन्होंने मुड़ कर कारगिन गाँव को देखा, जो डोन के गाँवों में सबसे सुन्दर था। गाँव की मिल की चिमनी से धुआँ निकल रहा था; लोग गिरजाघर की ओर बढ़ रहे थे, जहाँ संध्या की प्रार्थना की घंटी बज रही थी। उसके पीछे जंगल था, जहाँ बर्फ पर पड़ने से डूबते हुए सूरज की किरनें और भी चमकीली और रंगीन हो रही थी।

## ३

१९१७ की शरद के अखीर में मोर्चों से कोजाक अपने गाँवों को लौटने लगे। क्रिस्तोनिया लौटा बूढ़ा होकर और अनीकुश्का चेहरे पर झुर्रियाँ लेकर। याकोव लौटा, मार्टिन लौटा और लौटा इवान एलेक्सीविच जाखार कोरोलिमोव के साथ। दिसंबर में अचानक मिटका गाँव में आ धमका। इवान कोशवाइ,

प्रोखार आन्द्री, मगर सब के सब एक-एक कर आ धमके। फिवोदोत एक खूबसूरत लाल घोड़े पर पहुँचा। उसने बतलाया कि वह इसी घोड़े पर बोरीनेज से ही आया है और रास्ते के गाँवों में किस तरह क्रान्ति की लपटें धधक रही हैं। तब पियोत्रा दो साथियों सहित पहुँचा। उसकी रेजिमेंट बोलशेविकों का साथ दिया था, इसीसे वह भाग आया था। ये ही लोग यह खबर लाये कि ग्रिगर बोल्शेविकों के साथ मिल गया है और उनके साथ कामेंका में लड़ रहा है। घोड़ा चुराने में बदनाम मीतिम के भी बोल्शेविकों के साथ मिल जाने की खबर आई।

जिन घरों में कोजाक लौटे, उनकी खुशियालियों का क्या कहना ? इनकी खुशियालियाँ और नुमायँद हुई उन लोगों की गमगीनी से जिनके सम्बन्धी लड़ाई में काम आ चुके थे। बहुत से कोजाकों की हड्डियाँ गैलिशिया, बुकोवेना, पूर्वी प्रूसिया, रूमानियाँ आदि के मैदानों में सड़ रही थीं। साथियों ने उनकी लाशों पर जो मिट्टी डाल दी थी, उस पर पौधे उग आये थे और बर्फ की हल्की चादर ने उन्हें ढक दिया था। अब भले ही कोजाक स्त्रियाँ अपने लम्बे बालों को खोले अपनी तखेथियों की ओट से उनकी राह घूरने की कोशिश करें, अब उनके प्यारे घोड़ों पर घर नहीं लौट सकते। अपनी आँखों से वे चाहें जितना आँसू बहा लें, उनके दिल का जख्म इस खारे पानी की धुलाई से भर नहीं सकता। अब वे उनकी वर्षी या यादगार में जितनी भी चिल्लायें, उनकी पुकार गैलिशिया या प्रशियाँ तक पहुँच नहीं सकती।

समाधि पर घास उग आती है ; समय पीड़ा को ढक लेता है। हवा मृतात्मा के चिन्हों को उड़ा ले जाती है, समय शारीरिक पीड़ा और स्मृतियों को उड़ा ले जाता है। आदमी की जिन्दगी एक छोटी-सी चीज है और हमें एक ही घास पर ज्यादा देर तक चलने की मनाही है।

प्रोखर शामिल की बीबी जमीन पर सिर पटकती और दांत से जमीन पकड़ती है। चिल्ला-चिल्ला कर जान देने पर उतारू थी। अलेक्सी की माँ

बेटे की पुरानी कमीज को सूँघती, छाती लगाती, उसे अपने आँसुओं से शाम सुबह भिगो डालती थी। यों ही कितने घरों में कुहराम मचा हुआ था। सिर्फ स्टेपन अस्तखोव के लिए कोई रोने वाला नहीं था जिसका घर उजड़ गया था, उसकी दीवालें भी गिरने लगी थीं। आक्सीनिया यागदनों में रहती थी और उसके बारे में किसी को कोई खबर तक नहीं थी — वह गाँव में कभी लौटी तक नहीं थी।

---

## च

### १

जनवरी १६१७ में ग्रिगर मेलेखौव की तरक्की अफसर के ओहदे पर हुई। उसने जो बहादुरी बार-बार दिखाई थी उसका यह स्वाभाविक परिणाम था। उसको दूसरी रिजर्व रेजिमेंट का ट्रूप कमान्डर बनाया गया। सितम्बर के महीने में वह छुट्टी में घर गया। क्योंकि बीमारी के बाद उसके फेफड़े में कुछ सूजन हो गई थी। घर पर वह छः हफ्ते रहा। पीछे जिलेके मेडिकल कमीशन ने उसे चंगा घोषित किया और वह फिर मोर्चे पर लौटा। नवम्बर की क्रान्ति के बाद उसे और तरक्की मिली और वह कंपनी-कमांडर बना दिया गया। इसी समय उसके विचारों में गहरा परिवर्तन हुआ। इसका कारण एक तो परिस्थिति में अप्रकाशित परिवर्तन होना था और दूसरा, उसकी रेजिमेंट के कप्तान येफिम इजवारिन का उस पर प्रभाव था।

घर से लौटते ही ग्रिगर की जान पहचान इजवारिन से हुई। यह एक धनी कोजाक खानदान से था। उसकी फौजी शिक्षा जंकर ट्रेनिंग कोलेज में हुई थी और शिक्षा समाप्त कर वह सीधे दसवीं कोजाक रेजिमेंट में मोर्चे पर भेज दिया गया था। एक वर्ष में ही उसे सेन्ट जार्ज का तमगा मिला और मिले उसके शरीर को सुविधा और असुविधा की जगहों पर बीस बम के घाव। घाव से आराम होने पर वह रिजर्व रेजिमेन्ट में भेज दिया गया था।

वह योग्यताओं से भरा प्रतिभाशील, शिक्षित और साधारण कोजाक अफसरों से ज्यादा होशियार था। वह पक्का कोजाक राष्ट्रवादी था। मार्च-

क्रांति के बाद वह कोजाकों से मिल कर रूस से अलग डोन क्षेत्र के लिये शासन प्राप्त करने का आन्दोलन करने लगा। वह इतिहास का जानकार था, उसकी आवाज में ताकत थी और उसकी आँखों में दूर-दर्शिता। वह कोजाकों के सामने उस दिन की गुलाबी तस्वीर खींचता जब डोन आजाद होगा, उसकी सन्तानों को यूक्रेन और रूस के लोगों के सामने टोपी नहीं उठानी पड़ेगी, उसकी सरहद पर कोजाकों का पहरा होगा और कोजाक स्वतन्त्र प्राणी की तरह छाती खोल कर चलेंगे। इजवारिन ने सीधे सादे कोजाकों और कम पढ़े लिखे कोजाक अफसरों को अपने पक्ष में कर लिया। ग्रिगर भी उसका शिकार हुआ। पहले तो ग्रिगर ने बड़ी बहसें की लेकिन, इजवारिन के सामने वह टिक नही सका। ग्रिगर पूछता—

"लेकिन बिना रूस के हमारा काम कैसे चलेगा, जब कि सिवा गेहूँ के हमारे यहाँ कुछ नहीं पैदा होता?"

इजवरिन उसे समझाता—

"मैं डोन क्षेत्र के लिए बिलकुल पृथक और पूर्ण स्वतन्त्र अस्तित्व की कल्पना नहीं करता। हम कूबान, ट्रेक और कोखिया के लोगों से मिल कर एक संघ कायम करेंगे। कौकोसिया में खनिज पदार्थ की कमी नहीं, वहाँ हमें सभी चीजें मिल जायँगी।"

"कोयला भी।"

"और डोन की गुजरगाह तो हमारी बगल में ही है।"

"लेकिन वह तो रूस का है।"

"वह किसका है और उस पर किसका कब्जा होना चाहिये, यह विवाद का विषय है। अगर डोन की गुजरगाह रूस को मिले तो भी हमारा कोई नुकसान नहीं। हमारे संघ का आधार उद्योग-धन्धा तो होगा नहीं। हमारा तो कृषिप्रधान संघ होगा और अपने अनाज से हम कोयला मजे में खरीद सकेंगे। सिर्फ कोयला ही क्यों, लकड़ी, धातु की चीजें आदि भी तो हमें

खरीदना ही होगा। अपने अच्छे गेहूँ और तेल दे कर हम चाहें जो भी मोल ले सकेंगे।

लेकिन, रूस से पृथक हमें क्या फायदा होगा?"

"यह तो बिलकुल सीधी बात है। पहले तो, हम रूस के राजनीतिक संरक्षण से मुक्त हो जायँगे। रूस के जार ने हमारी पद्धति को नाश में मिला-दिया है। हम उसका पुनरुद्धार करेंगे और जितने विदेशी हैं, उन्हें अपने क्षेत्र से निकाल बाहर करेंगे। दस सालों में नई खेती के औजार मँगाकर हम अपनी उपज दस गुनी बढ़ा लेंगे, हम दस गुना धनी हो जावेंगे। जमीन हमारी है। हमारे पुरखों ने अपने खून से इसे सींचा है, अपनी हड्डी से जर-खेज बनाया है। लेकिन, चार सौ सालों से हम रूस की गुलामी में रहे। हम रूस की रक्षा करते रहे, अपनी ओर ध्यान नहीं दिया। समुद्र का किनारा भी हमारे पास है। हम बड़ी सेना रख सकेंगे और रूस या यूक्रेन को हिम्मत नहीं होगी कि वह हमारी आजादी में कोई दस्तन्दाजी करे। उस समय हम जमीन पर ही स्वर्ग का आनन्द लूट सकेंगे।

इजवारिन औसत ऊँचाई का खूबसूरत नौजवान था। उसकी छाती चौड़ी, बाल घुंघराले और ललाट तिरछी थी। वह सुरीली आवाज में बातें करता और बात करते समय बाईं भौं को भी चढ़ा लेता और नाक यों सिकुड़ा देता कि मालूम होता वह किसी पर छींकने जा रहा हो। उसकी चाल में शान-थी। उस पर रेजिमेंट कमांडर से भी अधिक लोगों की श्रधा थी। जब ग्रिगर उससे बातें कर रहा था, उसे बार बार मास्को हास्पिटल में मिले गारांजा की याद आ रही थी। दोनो की बातों में वह तुलना भी कर रहा था और सोचता था कि सत्य किस में है। किन्तु वह निर्णय नहीं कर सका और हार कर उसने अनजाने में ही इजवारिन का लोहा मान लिया।

नवम्बर-क्रान्ति के बाद उसने इजवारिन से फिर बातें की और उससे बोल्शेविक के बारे में पूछा—"बताओ, इजवारिन, बोल्शेविक सही रास्ते पर हैं या नहीं।

अपनी भौं को चढ़ाते और नाक को सिकोड़ते इजवारिन बोला—"क्या बौल्शेविक सही रास्ते पर हैं? हा-हा! लड़के, तुम तो बच्चे-सा मालूम होते हो। बौल्शेविकों का अपना कार्य-क्रम है, अपनी योजनायें हैं, अपनी आशायें हैं। अपनी जगह पर वे सही हैं, अपनी जगह पर हम सही हैं। तुम बौल्शेविकी पार्टी का यथार्थ नाम जानते हो? उसका नाम है "रूसी सोशल डिमोक्रैटिक मजदूर पार्टी।" समझा? "मजदूर पार्टी!" वे किसानों और कोजाकों से चंचुसम्मेलन कर रहे हैं, लेकिन उनका आधार हैं मजदूर। वे मजदूरों को मुक्ति दिलायेंगे, लेकिन किसानों की तो उनसे और भी दुर्गत होगी। अगर जारशाही लौटे, तो जमीन्दारों को मौज मिलेगी और दूसरों की दुर्गत होगी, उसी तरह इनके राज में मजदूर मौज करेंगे और दूसरे दुर्गत भोगेंगे। हम इन दोनों में से किसी को नहीं चाहते। हम अपना राज चाहते हैं। हम अपने इन सभी संरक्षकों से मुक्ति चाहते हैं, चाहे वे कार्निलोव हों, करेन्स्की हों, या लेनिन। भगवान हमें दोस्तों से बचाये और दुश्मनों को तो हम देख लेंगे!

"लेकिन तुम्हें मालूम होगा कि कोजाकों का बहुमत बौलशेविकों की तरफ झुक रहे हैं।"

"मगर, मेरे दोस्त, जरा इसे ठीक से समझ लो, क्योंकि यह मूल बात है। आज किसानों और कोजाकों की राह बौलशेविकों की राह से मिलती है; यह सही है, लेकिन क्यों? क्योंकि बौल्शेविक लड़ाई बन्द करना चाहते हैं और हम कोजाक लड़ाई से सब से ज्यादा ऊबे हुए हैं।" इतना कह कर उसने अपने कंधे पर एक थप्पड़ लगाई और अपनी भवों को सीधी करते हुए बोला—"यही कारण है कि कोजाक बौल्शेविकों की तरफ झुक रहे हैं। लेकिन···लेकिन, ज्योंही लड़ाई खतम होगी और बौल्शेविक अपना पंजा कोजाकों की मिल्कियत की ओर बढ़ायेंगे, फिर दोनों की दो राहें होंगी। यह मूल बात है, यह ऐतिहासिक दृष्टि से लाजिमी है। कोजाकों की जिन्दगी

और समाजवाद के बीच में एक लम्बी खाई है-जिसे पाटा नहीं जा सकता ! बोलो, इस बारे में तुम्हारी क्या राय है ?"

"मैं कुछ नहीं समझता।" ग्रिगर ने कहा। "मैं घाटी पर की बरफ की तरह हूँ, जो इधर-उधर भटकती रहती है।"

"ऐसा कह कर तुम पिंड नहीं छुड़ा सकते। जिन्दगी तुम्हें एक निर्णय पर पहुँचने को बाध्य करेगी और तुम्हें इस ओर या उस ओर जाना ही पड़ेगा।"—इजवारिन ने अपनी दलील पर जैसे मुहर लगा दी।

२

यह बातचीत नवम्बर के शुरू में हुई थी। उसी महीने ग्रिगर की भेंट दूसरे कोजाक से हुई, जिसने डोन की क्रान्ति में बड़ा हिस्सा लिया था। दोपहर से वर्षा हो रही थी। शाम को आसमान खुला। ग्रिगर अपने दोस्त ग्रोज्दोव से मिलने चला। वहाँ उसने एक हट्टा-कट्टा कोजाक को देखा, जिसके कंधे पर सर्जेंट मेजर का बिल्ला लगा था। उसके दोस्त ने दोनों का परिचय दिया। इस कोजाक का नाम पोद्तील्कोव था। उसका जन्म क्रोतोवस्की में हुआ था, लेकिन अब वह क्रोनोवस्की में बस चुका था।

ग्रिगर ने इसके चेहरे को ध्यान से देखा। उस पर चेचक के दाग थे। दाढ़ी-मूँछ को उसने सलीके से ऐंठ रखा था। छोटे-छोटे कानों पर घने बाल थे, बाईं भौं के बाल उठे हुए थे। उसकी आँखें अजीब किस्म की थीं। मालूम होता था कि वे शीशे की बनी गोलियाँ हैं, जो जिस चीज़ पर गड़तीं हटने का नाम न लेतीं। सब से बढ़ कर, उसकी पलकें बहुत ही कम गिरतीं।

"एक दिलचस्प बात, भाइयो!" ग्रिगर ने बातें शुरू कीं। "लड़ाई तो खत्म ही होने जा रही है, अब हम घर बसायेंगे। यूक्रेन वालों की अलग सरकार होगी और डोन पर फौजी कौंसिल का राज होगा।"

"आपका मानी है अतामन काले दीन से।" पोद्‌तील्कौव ने कहा।

"सब बराबर हैं—फर्क क्या आता है?"

"हाँ, फर्क क्या है?" पोद्‌तील्कौव ने हामी भरी।

"हम लोगों ने 'माता रूस' को आखिरी सलाम कह लिया।" ग्रिगर ने इज़वारिन की दलीलों को दुहराते हुए कहा—"अब हमारी सरकार होगी, हम अपने ढंग की ज़िन्दगी बितायेंगे। यूक्रेनियनों को हमारी कोज़ाक-भूमि को छोड़ना पड़ेगा। हम अपनी सरहदी सेना रखेंगे और इन कमीनों को निकाल बाहर करेंगे। जैसे हमारे पुरखे रहते थे, हम उसी तरह रहेंगे। क्रान्ति हमारे लिए वरदान के रूप में आई है—क्यों? तुम्हारी क्या राय है द्रोज्दौव!"

द्रोज्दौव मुस्कुराते हुए बोला—"यह हमारे लिए अच्छा होगा। ये किसान हमें लूटते रहे, हम इनकी मातहत क्यों रहेंगे? सभी आतामन तो ज़र्मन हैं—वौन तोवे, वौन ग्रावे! उफ कैसे-कैसे इन कमबख्तों के नाम! ये हमारी ज़मीन अफसरों को बाँट देते रहे। खैर, अब इनसे छुट्टी मिलेगी, हम इत्मीनान की साँस ले सकेंगे।"

"लेकिन क्या रूस इसे मंजूर करेगा?" पोद्‌तील्कौव ने पूछा।

"उन्हें मन्जूर करना होगा।" ग्रिगर ने ज़वाब दिया।

"उस हालत में भी बात यही रहेगी—पुरानी कढ़ा, हाँ जरा गाढ़ी।"

"आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?"

"ऐसा ही लच्छन जो दीखता है।" पोद्‌तील्कौव ने अपनी भारी पुतलियों की रोशनी ग्रिगर पर फेंकते हुए कहा—"आतामनों का ऐसा ही रवैया रहेगा, वे जनता को चूसते रहेंगे। आपको किसी "हुजूर" के पास जाना पड़ेगा और वह आप पर कोड़े फटकारता रहेगा। गले में एक भारी चक्की—इसके अलावा कुछ नहीं।"

ग्रिगर खड़ा हुआ और कमरे में टहलने लगा। फिर पोद्तील्कोव के सामने खड़ा होकर बोला—

"तब हमें क्या करना चाहिये ?"

"हम आखीर तक जायँ।"

"किस आखीर तक ?"

"जब आपने जोतना शुरू किया है, तो आपको बोना भी पड़ेगा। अगर आपने जार को उखाड़ा और क्रान्ति-विरोधी ताकतों को कुचला, तो आपको ऐसी सरकार कायम करने की कोशिश करनी पड़ेगी जो जनता की सरकार हो। पुराने जमाने की कहानी सिर्फ परियों की किताब में लिखने की है। पहले हमें जार तंग करता था, तो अब कोई दूसरा तंग करेगा।"

"तब तुम कौन रास्ता बताते हो, पोद्तील्कोव ?

"जनता की सरकार—चुनी गई। अगर हम सेनापतियों और अफसरों के चक्कर में आ गये तो फिर लड़ाइयाँ होकर रहेंगी। हमारा कल्याण तभी है, जब संसार भर में जनता की सरकारें कायम हो जायँ। तभी लड़ाइयाँ बन्द होंगी। पुराने पाजामें को उलट कर पहनने से काम न चलेगा। पुराने जमाने को भूल जाओ, उससे बचो, नहीं तो वह हमारे कंधों पर चढ़ेगा और फिर जार से भी बुरी गत हमारी होगी।"

ग्रिगर अपने हाथ से हवा को पकड़ने की कोशिश करते हुए गमगिन सुर में बोला—

"क्या हम अपनी जमीन छोड़ देंगे ?" उसे सब लोगों में बाँट देंगे ?

"नहीं।...हम ऐसा क्यों करेंगे ? इस प्रश्न से पोद्तील्कोव भी जैसे झंझट में पड़ गया हो। "हम अपनी जमीन कभी नहीं देंगे। हम अपनी जमीन आपस में ही बाँटेंगे—कोजाकों में ही। और उसके पहले जमीन्दारों

की जमीन हम छीन लेंगे। किसानों में हम अपनी जमीन कभी नहीं बाँटेंगे। वे तो हमें भिखार बना छोड़ेंगे ।"

"और हम पर हुकूमत कौन करेगा ?"

"हम अपनी हुकूमत आप चलायँगे।" अब पोद्तील्कौव के स्वर में शान्ति थी। "हमारी अपनी सरकार होगी। जरा कालेदीन की जीन को तो ढीली होने दो, हम उसे अपनी पीठ से फेंक कर रहेंगे।

ग्रिग' खीड़की के पास चला गया और वहीं से सड़क के दृश्य देखने लगा। वहाँ बच्चे खेल रहे थे। सामने के घर की छत भींगी-भींगी थी। पोपलर के पेड़ की डालियाँ सुर्झाई, भूरी बनी हुई थीं। पाद्तील्कौव और द्रोजदौव में जो बहस-मुबाहसा चल रहा था, उस पर उसका ध्यान ही नहीं रहा। विचारों की उलझन में वह इस तरह दब-सा रहा था कि कहीं रोशनी पाने के लिए व्यग्र था। वह किसी निर्णय पर पहुँचना चाहता था।

# गृह-युद्ध की चपेट में

## क

### १

नोवोचेरकास शहर उन सब के लिए आकर्षण का केन्द्र था, जो बोल्शेविक क्रान्ति से घबड़ाकर भाग हुए थे। प्रमुख जेनरल, जो कल तक रूस के भाग्यविधाता थे, डोन के निचले मैदान में उतर रहे थे और दकियानूस कोजाकों को मिला कर सोवियत रूस पर चढ़ाई करने के डोरे डाल रहे थे। १५ नवम्बर को जनरल अलेक्सीव शहर में पहुँचा। कालेदीन से बातें कर वह स्वयंसेवकों के संगठन में लगा। तीन सप्ताह के अन्दर ही विद्यार्थियों, सैनिकों, क्रान्ति-विरोधी कोजाकों और अवसरवादी अफसरों और जंकरों को लेकर उसने एक बड़ी सेना खड़ी कर ली।

दिसम्बर के शुरू से और भी जेनरल पहुँचने लगे। १९ वीं दिसम्बर को कार्निलोव भी आ धमका। तब कालेदीन ने रूमानिया और आस्ट्रिया-जर्मनी में फैली सभी कोजाक रेजिमेंटों को मोर्चे से वापस बुला लिया था और उन्हें डोन प्रान्त के सभी प्रमुख रेलवे-स्टेशनों पर तैनात कर दिया था। लेकिन युद्ध से थके और क्रान्तिकारी प्रवृत्ति में लौटे कोजाक बौल्शेविकों से लड़ने की इच्छा नहीं रखते थे। वे घर भागने लगे। मुश्किल से एक तिहाई लोग रेजिमेंटों में रह गये थे।

कालेदीन ने जब क्रान्ति के अड्डे रोस्टौव पर चढ़ाई करने की कोशिश की, उसकी चेष्टा विफल हुई। कोजाक थोड़ी दूर जाकर लौट आये।

लेकिन आधी दिसम्बर तक उसके पास वालंटियरों की एक जबर्दस्त सेना तैयार हो चुकी थी।

उधर तीन तरफ से लाल फौजें बढ़ती आ रही थीं। खारखोव और वोरोनेज में क्रान्तिकारी सेनायें इकट्ठी होकर क्रान्ति-विरोधी डोन-क्षेत्र पर चढ़ाई करने की तैयारियाँ कर रही थीं। डोन के ऊपर बादल उमड़ रहे, एकत्र हो रहे और घने हो रहे थे। यूक्रेन से जो तेज हवा आ रही थी, उसमें बारूद की गंध और तोपों की गड़गड़ाहट की गूँज रहती थी। डोन के लिए बुरे दिन आ रहे थे। उसे दुर्भाग्य घेरे जा रहा था।

## २

नोवोचेरकास पर पीले-उजले बादल छाये हुए थे। नवम्बर की एक ऐसी ही बादल-भरी भोर को इलिया बंचक मास्को की ट्रेन से नोवोचेरकास उतरा। सबसे पीछे उसने डब्बा छोड़ा और अपनी नागरिक पोशाक के अटपटेपन को हाथ से सुधारता शहर में घुसा। उसके हाथ में एक पुराना सस्ता सूटकेस था। रास्ता वीरान था। आधे घंटे में वह एक पुराने, ढहे मकान के नजदीक जाकर खड़ा हुआ। कई बरसों से उसकी मरम्मत नहीं हुई थी। मकान का फाटक हटाकर वह उसके भीतर घुसा। भीतर एक कमरे से दूसरे कमरे में गया। चारों तरफ टूटे-फूटे सामान बिखरे पड़े थे--किन्तु, उनमें कोई नहीं था। वह कमरे से बाहर आया, तब देखा आँगन के कोने की एक ओलती से एक बूढ़ी, झुकी हुई औरत निकल रही है। "क्या वह माँ है? —वह ऐसी हो गई!"--उसके होंठ काँप रहे थे। वह टोपी हाथ में लेकर उसकी ओर दौड़ा।

अपनी तलेथी से आँख पर साया किये वह औरत बोली--"तुम कौन हो?"

"माँ !" बचक के कंठ से भर्राये हुए स्वर में यह शब्द निकला—"माँ, क्या तुम मुझे भूल गईं !"

वह लड़खड़ाता उसकी ओर बढ़ा। उसकी चिल्लाहट से बुढ़िया काँप उठी थी और शायद वह भाग पड़ती अगर उसमें ताकत होती। वह बढ़कर उसे हाथों से पकड़ लिया, उसके झुर्रीदार चेहरे और धँसी हुई आँखों को चूमने लगा।

"इलिया, इलियूशा, मेरा बेटा ! मैं पहचान न सकी...या भगवान, तुम कहाँ से आ गये !--" बूढ़िया कह रही थी।

दोनों घर में गये। उसने कोट उतार दिया और टेबल के नजदीक जा बैठा।

"मैं नहीं सोचती थी कि फिर तुम्हें देख सकूँगी।...कितने साल हो गये।...मेरा प्यारा...मैं कैसे पहचानती रे, तू कितना बड़ा हो चला है।"

"लेकिन तुम किस तरह हो माँ !" उसने मुस्कुराते हुए पूछा।

वह यों ही कुछ बकती टेबल साफ करने और चूल्हे में कोयला डालने लगी। बार बार आँखों से आँसू की धारा बहाती वह बेटे के नजदीक आती और उसके चेहरे को थपथपाती, उसे छाती से सटाती। उसने खाना बनाया, पानी गरम किया। उसके चेहरे को उसने अपने हाथों से धोया और बक्स से एक पुराना धराऊ तौलिया निकाल कर पोंछा। आधीरात तक वह जगी हुई तरह-तरह के सवाल बंचक से पूछती और सिर हिलाती रही। जब दो बजे के घंटे की आवाज हुई, बंचक सोने के लिए लेट गया। उसे तुरत नींद आ गई और उसने सपना देखा, वह स्कूल में पढ़ रहा है और अपने सबक याद करने को अपनी किताबों पर ऊँघ रहा है। उसी समय उसकी माँ रसोईघर से आती है और उससे रूखे स्वर में पूछती है—"इलिया, ऊँघ रहा है रे, तूने कल का सबक याद किया ?" उसके चेहरे पर मुस्कान दौड़ रही थी।

रात भर उसकी माँ बार-बार उसकी खाट के नजदीक जाती और उसकी कम्बल और तकिया ठीक करती रही। जब जब जाती, उसकी ललाट को चूम लेती, और फिर धीरे-चुपके हट जाती।

वह एक ही दिन घर रह सका। भोर ही उसका एक साथी फौजी कोट पहने आया और उससे धीमे-धीमे बातें कीं। उस आदमी के जाते ही उसने झटपट अपने सूटकेस का सामान सम्हाला, कंधे पर कोट रखा और माँ से एक महीने के अन्दर मिलने का वचन देकर फ़ुर्सत ली।

"तुम कहाँ जा रहे हो, इलिया !" —उसने पूछा।

"रोस्टौव माँ, रोस्टौव ! तुरत लौटूँगा। घबराओ नहीं, माँ,...घबराओ नहीं।" उसने माँ को धीरज बँधाते हुए कहा।

माँ ने जल्दी में अपनी गर्दन से एक सलीब निकाली और बेटे को चूमते समय उसके सिर से छुलाया। फिर कांपते हुए हाथों से वह सलीब बेटे की गर्दन में बाँधती हुई बोली—

"इसे पहन ले, इलिया! भगवान, इसकी रक्षा करो, इसे बचाओ। अपने डैने से इसे ढंके रहो। इस संसार में यही एक मेरा है..." जब वह उसे छाती से लगा रही थी, वह अपने को काबू में नहीं रख सकी। उसके होंठ काँप रहे थे और आँखों से आँसुओं की गरम बूँदें एक-एक कर बंचक के हाथ पर गिर रही थी। उसने माँ के हाथों को अपनी गर्दन से हटाया और अपने भरे चेहरे को लिये घर से निकल भागा।

## ३

रोस्टौव स्टेशन पर देह से देह छिलती थी। सेहन में सिगरेट के आखिरी हिस्से और सूर्यमुखी के बीजों के छिलके घुटने तक लगे हुए थे।

स्टेशन के अगल-बगल शहर के सैनिक तम्बाकू और चुराये हुए सामानों की खरीद फरोख्त करते भिन्न भिन्न जातियों के लोगों की रेल-पेल थी। बंचक भीड़ में घुसा, पार्टी के कमीटी-रूम की तरफ बढ़ा। वहाँ लाल सेना का एक नौजवान जापानी ढंग की रायफल लिये खड़ा था। उसने पूछा—"आप किसे चाहते हैं, साथी।"

"मैं साथी अब्राम्सन से भेंट करना चाहता हूँ क्या वह यहाँ है?"

"बाईं ओर से तीसरे कमरे में।"

बंचक ने उस कमरे का दरवाजा हटाया और देखा कि एक ठिगना, लम्बी नाकवाला, काले केशों वाला आदमी एक मिनरसीदा रेलवे कर्मचारी से बातें कर रहा है। बायाँ हाथ उसके पाकिट में है, दाहिने को वह हवा में घुमा रहा है।

"यह अच्छा नही है।" वह काले केशो वाला आदमी कह रहा था—"इसका नाम सगठन नहीं। अगर आपने इसी ढग से काम किया तो हम वह नतीजा नहीं हासिल कर सकेंगे, जिसके ख्वाहाँ हैं।"

रेलवे कर्मचारी के चेहरे पर अपराध-स्वीकार के चिह्न थे। वह सफाई में कुछ कहना चाहता था, लेकिन दूसरे आदमी ने उसे मुँह खोलने का मौका नहीं दिया। उत्तेजना के स्वर में वह चिल्ला उठा—

"मिचेंको को अभी काम से हटाइये। यह बर्दाश्त करने की बात नहीं। वीरखोवीस्की को क्रान्तिकारी पंचायत के सामने जवाब देना होगा। क्या वह गिरफ़ार किया गया। हाँ, मैं उसे गोली से उड़ा देने का इसरार करूँगा।" गुस्से में उसने कहना खत्म किया, लेकिन उसने अपने पर काबू नहीं खोया। अपना मुँह बंचक की ओर घुमाते हुए उसने तेजी से कहा—"आप क्या चाहते हैं?"

"क्या आप के साथी अब्राम्सन हैं?" बंचक ने पूछा।

"हाँ।"

बंचक ने उसके हाथ में पैट्रोग्राद-पार्टी-कमीटी का कागज रख दिया और खिड़की के सिरे पर बैठ गया। अब्राम्सन होशियारी से उस पत्र को पढ़ता रहा और उदास मुस्कुराहट के बीच बोला—

"जरा ठहरिये, हम एक-दो छन में बातें करेंगे।"

उसने रेलवे कर्मचारी को रवाना कर दिया। फिर कमरे से बाहर जाकर कुछ मिनटों में ही एक लम्बे कद के, सफाचट अफसर के साथ लौटा जिसके जबड़े के नीचे हिस्से में तलवार की काट का लम्बा दाग था।

"यह हमारी क्रान्तिकारी फौजी कमीटी के सदस्य हैं। " अब्राम्सन ने बंचक से कहा। "और आप साथी बंचक, मशीनगन चलाने वाले क्यों ?"

"हाँ।"

"आप ही ऐसे आदमी की हमें जरूरत थी।" उस अफसर ने मुस्कुराते हुए कहा।

"क्या आप मजदूरों की लाल सेना से मशीनगन के दस्ते का संगठन कर सकियेगा ? और जल्द से जल्द ?" अब्राम्सन ने पूछा।

"मैं कोशिश करूँगा। इसमें समय लगता है न ?"

"कितना समय लगेगा ? एक हफ्ता, दो हफ्ते, तीन हफ्ते !" दूसरे आदमी ने बचक की तरफ झुक कर उत्सुकता में कहा।

"कुछ ही दिन लगेंगे।"

"वाह !"

अब्राम्सन अपने कपाल पर हाथ फेरते हुए झुँझलाहट के स्वर में बोला—

"शहर में जो हमारी सेना है, उनमें पस्तहिम्मती का दौरदौरा है। हम उन पर विश्वास नहीं कर सकते। सभी साथियों की तरह मेरा विश्वास भी मजदूरों पर है या नाविकों पर, लेकिन सैनिकों पर..." वह रुक कर दाढ़ी पर हाथ फेरने लगा और पूछा—"आपके पास 'सामान की क्या हालत है? हम उसका इन्तजाम करेंगे। क्या आपने आज कुछ भोजन किया है? नहीं, शायद नहीं।

"मेरे भाई, तुम भी भूख का मजा उठा चुके हो। तभी तो भूखे को चेहरे से ही पहचान लेते हो!" बंचक ने मन ही मन कहा। जब एक आदमी उसे अब्राम्सन के कमरे में ले गया, तब भी उसके दिमाग में अब्राम्सन ही बसा हुआ था—"यह बहादुर आदमी मालूम होता है—यह सच्चा बौल्शेवी है। सख्त है, तो भी इन्सानियत से अछूता नहीं। एक ओर यह बिना हिचक के एक काम में अड़ंगा डालने वाले को गोली से उड़ाने की बात करता है, तो दूसरी ओर अपने साथियों की जरूरत पर भी ध्यान रखता है।"

अब्राम्सन के कमरे में आकर उसने खाना खाया और उन किताबों से खचाखच भरी सँकरी जगह में ही लेट गया और खुर्राटे भरने लगा।

## ४

बाद के चार दिनों तक भोर से शाम तक बंचक उन मजदूरों की ट्रेनिंग में लगा रहता, जो उसके सुपुर्द किये गये थे। उनमें सोलह आदमी थे और पेशा, उम्र और नस्ल के ख्याल से उनमें बहुत भेद था। रेलवे वर्कशाप, लोहे का कारखाना, खान, प्रेस, होटल—भिन्न भिन्न जगहों से वे आये थे और यूक्रेनियन, ग्रीक, जर्मन, रूसी सब नस्लों के थे। जो सत्रहवाँ व्यक्ति उसके पास भेजा गया, वह एक औरत थी। वह एक लम्बा कोट ओढ़े और पैर से

भी बड़े कष्ट पहने बंचक के सामने आई और एक मुहरबंद लिफाफा उसके सामने रख कर खड़ी हो गई। लिफाफा लेते हुए उसने कहा—

"मेहरबानी करके आप मेरे आफिस में आइए।"

"मैं आप ही के पास भेजी गई हूँ...मैं मशीनगन चलाना सीखना चाहती हूँ।"

बंचक का चेहरा लाल हो उठा—

"क्या उन लोगों का दिमाग खराब हो गया है! क्या मुझे औरतों का दस्ता तैयार करना है? माफ कीजिये, यह काम आप लोगों के लिए नहीं है। यह भारी काम है, और मर्दों की ताकत चाहिए। नहीं, मैं आपको नहीं ले सकता।"

तो भी भवें तिरछी करके उसने लिफाफा खोला। उसका मजमून यों था—

"प्यारे साथी बंचक,

हम एक अच्छी साथी आपके पास भेज रहे हैं—यह हैं अन्ना पोगूद्को। इनके बार-बार के आग्रह के नजदीक हमें झुकना पड़ा और हमें उमीद है, इन्हें आप एक अच्छी मशीनगन चलाने वाली बना देंगे। मैं इस लड़की को जानता हूँ। मैं इसकी जबर्दस्त शिफारिस आपसे कर रहा हूँ—बड़ी काम की लडकी है। सिर्फ आप इस पर ध्यान रखें कि यह बड़ी जोशीली और तेज-मिजाज है—अभी बचपन भी तो खत्म नहीं हुआ। उसे विवेक-हीन कार्यों से रोकियेगा और निगरानी रखियेगा।

ट्रेनिंग में जल्दी कीजिये। सुनते हैं, कालेदीन हम पर चढ़ाई करने की तैयारियाँ कर रहा है।

"भाईचारे के सलाम के साथ अब्रास्सन—"

बंचक ने उस खड़ी हुई लड़की को घूर कर देखा। उस छोटी-सी कोठरी

में रोशनी कम आती थी। लड़की का चेहरा तो दिखाई पड़ता था, किन्तु उस पर की रेखायें नहीं। "अच्छा, तुम खुद जिद करती हो, और अब्राम्सन यही चाहते हैं, तो ठहरो।"

सबके सब मशीनगन को घेर कर खड़े हो गये और उत्सुक आँखों से बंचक की करामातें देखने लगे। बचक ने मशीनगन को पहले टुकड़े-टुकड़े खोल दिया, फिर उसके एक एक पुर्जे की बारीकी बताते हुए उसे जोड़ दिया। किस तरह उसमें गोलियाँ भरी जाती हैं, किस तरह निशाना लिया जाता है, किस तरह दूरी का तय किया जाता है, फिर किस तरह दुश्मन की गोलियों से बचा सकता हैं, आदि बातें उसने ब्योरे से सब को बताईं।

अन्ना सब बातें ग़ौर से सुनती और नये सवाल करती रही—"अगर पानी के पीपे में पानी जम जाय, तो क्या करना चाहिए", "अगर हवा का झोंका हो, तो निशाना किस तरह लिया जाय" आदि। वह बंचक से सटी हुई थी और उसकी काली आँखें बार-बार बंचक की आँखों से मिल जाती थीं। उसकी उपस्थिति से बंचक असमंजस में पड़ जाता और कुढ़ कर उससे ज्यादा काम लेता। उसके बर्ताव में भी ठढक रहती थी। लेकिन, जब हर सुबह ठीक सात बजे अपने जैकेट के आस्तीन में हाथ घुसाये वह उसके सामने आ जाती, वह एक अजीब उत्तेजना अनुभव करता। वह उससे छोटे कद की थी, काफी तन्दुरुस्त, और उसको खूबसूरत नहीं कहा जा सकता, अगर उसके पास वे दो-मस्तानी आँखें न होतीं।

पहले चार दिनों तक वह अन्ना की ओर ध्यान तक नहीं दे सका। पाँचवें दिन शाम को वह उसके साथ निकला। वह आगे आगे थी। आखिरी ज़ीने पर पहुँच कर वह मुड़ी, जैसे वह कोई सवाल पूछना चाहती हो। किन्तु, उसके मुँह से आवाज न निकली, सिर्फ उसकी आँखें उस पर जाकर गड़-सी गईं। एक अजीब दर्द अनुभव करता वह जीने पर बढ़ा। यह दर्द उसके लिए नया नहीं है—ज़िन्दगी की हर मोड़ पर उसने इसका अनुभव किया

है। अन्ना के गुलाबी गाल और आँख की नीलाभ श्वेतता ने उस दर्द को आज फिर पैदा किया। उसे लगा, जैसी वह परियों की कहानी पढ़ रहा है और एक परी बाल खोले, उजले दाँतों से उसकी ओर देखकर मुस्कुरा पड़ी है। आनन्द की एक लहर ने उसके पैर डगमगा दिये, उसने सिर नीचा कर लिया, जैसे वह प्रहार की प्रतीक्षा में हो, और बोल उठा—

"अन्ना, तू आनन्द की मूर्ति मालूम पड़ती है।"

"क्या फाल्तू बात!" वह दृढ़ता से, लेकिन हँसती हुई बोली। "साथी बंचक, मैं आपसे पूछने आई थी, कल किस वक्त शूटिंग का अभ्यास होगा।"

उसकी मुस्कान ने उसे और सीधा, मिलनसार और भौतिक रूप में पेश किया। वह उसकी बगल में जाकर खड़ा हो गया, एक बार वहाँ से डूबते सूरज की रंगीनियों में नहाती सड़क को देखा और शान्त भाव से जवाब दिया—

"कल आठ बजे। तुम किस रास्ते जाओगी? तुम कहाँ रहती हो?"

अन्ना ने एक गली का नाम लिया जो शहर के एक कोने में थी। दोनों वहाँ से रवाना हुए। कुछ देर तक तो दोनो चुप रहे। पीछे अन्ना ने मुड़कर उसकी ओर देखा और उससे उसका विस्तृत परिचय पूछने लगी। बंचक ने अपना परिचय देकर उससे पूछा। वह रोस्टौव में ही आ बसी थी और यहूदी थी। यहूदी सुनते ही उसने कहा—

"अच्छा है कि तुम हम लोगों के साथ हो।"

"क्यों?" उसने पूछा।

"बात यों है कि यहूदियों के बारे में कुछ बातें मशहूर हैं। और मैं जानता हूँ कि मजदूर उन बातों पर विश्वास भी करते हैं। मैं खुद भी एक मजदूर हूँ। वह बात यों है कि यहूदी सिर्फ हुक्म देना जानते हैं, गोलियों के

पास कभी नहीं फटकते। यह बात बिलकुल गलत है और मुझे आशा है, तुम इसे और गलत साबित कर दोगी।"

दोनों धीरे-धीरे जा रहे थे। अन्ना ने जान-बूझ कर लम्बी राह पकड़ी थी। उसने अपने बारे में और बातें भी बताईं। फिर कार्निलौव की चढ़ाई, पैट्रोग्राद के मजदूरों के रुख और नवम्बर क्रान्ति के बारे में पूछताछ करती रही। जब तीन घंटे के बाद अपने घर पहुँच कर अन्ना बिछुड़ी तब लौटते समय बंचक सोच रहा था—

"वह भली साथी और होशियार लड़की है। उससे बातें करने में मजा आया। मैं इन वर्षों में बिल्कुल रूखा-चिट्टा बन गया हूँ; अब मुझे लोगों से बातें करनी चाहिये, नहीं तो मेरी हालत कीड़े लगे बिस्कुट की हो जायगी।" निस्सन्देह वह अपने को धोखा दे रहा था।

अब्राम्सन क्रान्तिकारी-फौजी-कमीटी से तुरत लौटा था। बंचक से आकर उसने दस्ते की ट्रेनिंग के बारे में पूछ-ताछ की और अन्ना के बारे में दरियाफ्त किया—

"वह कैसा कर रही है? अगर वह अच्छा नहीं कर रही हो, तो उसे दूसरे काम में लगा दिया जाय।"

"नहीं, नहीं—वह बड़ी योग्य लड़की है।" बंचक चौंक कर बोला और बड़ी मुश्किल से उसकी ज्यादा तारीफ करने से अपने को रोक सका।

## ५

८ वीं दिसम्बर को कालेदीन रोस्टौव पर सेनायें भेजने लगा। अलेक्सीव की अफसर-सेना रेलवे लाइन से बढ़ी; उसके दाहिने जंकरों का गिरोह था और बायें पोपोव की स्वयंसेना थी।

शहर की चारों ओर फैली लाल सेना में हलचल थी, जिन्होंने जिन्दगी में पहली बार रायफल पकड़ी थी। ऐसे मजदूरों में से कुछ तो भय के मारे जमीन में धँसे जा रहे थे, कुछ सिर उठा कर क्रान्ति-विरोधियों के टिड्डीदल को देख रहे थे।

घोर निस्तब्धता से ऊब कर बिना हुक्म के ही लाल फौज ने गोली चलाना शुरू कर दिया। जब गोली की धाँय सुनाई पड़ी, बंचक अपनी मशीनगन के निकट से उछला और चिल्ला पड़ा,—"गोली चलाना बंद करो।" लेकिन, कौन बन्द करता है? वह जोरों से चिल्ला पड़ा, हाथ हिलाया और अपने एक साथी से मशीनगन चलाने को कहा। आँखें गड़ा वह दुश्मनों की फौज की तरफ देखने लगा कि गोलियाँ ठीक निशाना ले रही हैं या नहीं। फिर, सभी मशीनगनों को फायर करने को हुक्म दे दिया।

बीच से तीसरी मशीनगन में उसे गड़बड़ी मालूम पड़ी। वह उस ओर दौड़ा, आधी राह में ही स्पष्ट हो गया कि उसकी गोलियाँ फिजूल जा रही हैं। वह चिल्लाया—"नीचे निशाना लो, शैतानो!" उसकी अगल-बगल गोलियों की बौछार हो रही थी। दुश्मन सधे हुए निशानें ले रहे थे।

बंचक रेंगता हुआ उस मशीनगन के निकट पहुँचा, निशाने को दुरुस्त किया और देख कर खुश हुआ कि अब उसका असर हो रहा है। जंकरों का जो गिरोह उस ओर बढ़ा आ रहा था, अब दुम दबाये पीछे भागा जा रहा था।

उसी समय उसका दूसरा साथी दौड़ता हुआ उसके पास आया। उसके सिर से जब-जब गोलियाँ निकल जातीं, वह चिल्ला पड़ता। वह बोल रहा था—"मुझसे नहीं हो रहा, मुझसे नहीं हो रहा—मशीन जाम हो गई है।"

बंचक उस मशीनगन के ओर दौड़ा। थोड़ी दूर बढ़ पाया था कि देखा, अन्ना अपनी मशीनगन के सामने घुटने टेके, हथेली की ओट से बढ़ते

हुए दुश्मनों की ओर देख रही है। "लेट जाओ!" बंचक ने चिल्लाकर कहा--"लेट जाओ-मेरी आज्ञा है।"

अन्ना ने उसकी ओर देखा, फिर उस ओर ताकती रही। वह झपट कर उसके निकट पहुँचा और उसे पकड़ कर जमीन पर गिरा दिया।

मशीनगन के नजदीक पहुँच कर उसने उसे अच्छी तरह देखा, पाया कि एक गोली अटक गई है। बड़ी मुश्किल से जल्दी-जल्दी उसने मशीनगन को ठीक किया और उसे चलाया। रेंगता हुआ वह अपने साथियों के पास जाता और उन्हें उत्साहित करता रहा।

दुश्मनों की पाँत उनके नजदीक आ रही थी। उनकी गोलियों की बौछार घनी हो रही थी। तीन सैनिक उसके सामने ही गोली के घाट उतरे। जब बंचक अन्ना के निकट था, एक नौवजवान को गोली लगी, वह नाच गया, चिल्लाया, मुँह खोल कर लम्बी साँस ली और धड़ाम से जमीन पर आ रहा। बंचक ने अन्ना को देखा, उसकी आँखों में भय छाया हुआ था। वह एकटक मरे आदमी के उछलते पैर की ओर देख रही थी। बंचक ने चिल्ला कर कहा—

"गोली की पेटी—लड़की, नई पेटी दो।"

कालेदीन की फौज लाल सेना को घेरती जा रही थी। आखिर लाल सैनिकों के पैर उखड़ गये, वे शहर की ओर भाग चले। बंचक ने देखा, उसकी दाहिनी ओर की तीन मशीनगनों पर भी उनका कब्जा हो चुका था। दो मशीनगन चलाने वाले मारे जा चुके थे, तीसरा निकल चला था। किन्तु यह भागदौड़ तुरत रुक गई, क्योंकि तट पर जो जंगी जहाज थे, उन्होंने चढ़ाई करने वालों पर गोले फेंकना शुरू किया। लाल सैनिक, रुके, मुड़े और फिर चढ़ाई कर दी। बंचक ने अन्ना एवं दो मशीनगन चलाने वाले शिष्यों को एकत्र किया और दूर पर आड़ लेते हुए दुश्मनों पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। उधर जहाजों के गोले भी विध्वंस का काम जारी किये हुए थे। एक

गोला कालेदीन के भागते हुए सैनिकों के बीच में गिरा और अन्ना ने देखा किस तरह आदमियों के धुर्रे हवा में उड़ रहे हैं। अन्ना ने दूरबीन नीचे रख दी और कराहने लगी। बंचक ने पाया, वह गन्दे हाथों से मुँह ढापे काँप रही है।

"क्या बात है ?" उसकी ओर झुकते हुए उसने कहा।

अपने होठों को दबाते, छलछलाती आँखों से उसने कहा—

"मुझसे न होगा...।"

"हिम्मत करो ...अन्ना...तू......नहीं सुन रही है ?...तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये अन्ना...हिम्मत...हिम्मत...।" बंचक की हुक्म से भरी आवाज हवा में गूँज रही थी।

दाहिनी ओर ढालुएँ जमीन पर दुश्मन अपना बचाव कर रहे हैं, बंचक ने देखा। वह झट अपनी मशीनगन एक ऊँची जगह पर उठा कर ले गया और वहीं से गोलियों की बौछार करने लगा।

शाम के पहले ही बरफ का गिरना शुरू हो गया। एक घंटे में ही समूचा मैदान और मरे हुए लोगों की लाशें बरफ से ढँक गईं। कालेदीन की सेना पीछे हट गई।

बंचक ने वह रात मशीनगन के नाके पर ही बिताई। उसके बचे साथी सड़ा गोश्त नोच रहे या सिगरेट से गर्मी पाने की कोशिश कर रहे थे। वह गोलियों के बक्से पर बैठा अपने बड़े कोट से काँपती हुई अन्ना को ढाँपता और आँखों पर रखे उसके हाथों को हटा कर चूमता रहा। उसके मुँह से अप्रत्याशित कोमल स्वर निकल रहे थे—

"बताओ, ऐसे कैसे काम चलेगा।...तुम तो काफी सख्त थी...अन्ना, सुनो, अपने में हिम्मत लाओ...थोड़े दिनों में इसकी आदी हो जाओगी... अगर तुम भाग नहीं खड़ी हुई, तो बदल जाओगी...मुर्दों पर इस तरह आँखें नहीं गड़ानी चाहिये...अपने विचारों को यों नहीं भटकाना चाहिये...देखो,

तुम अपने को बहादुर कहती थी...औरतपन ने तुम्हें हरा दिया न ?...
हिम्मत. . . . हिम्मत !"

६

छः दिनो तक रोस्टौव के इर्द-गिर्द भयानक संघर्ष मचा रहा। सड़क पर और चौराहे पर—जहाँ देखिये, वहीं लडाई। दो बार लाल सेना ने स्टेशन छोड़ा और दो बार फिर उस पर कब्जा किया। इन छहों दिनों में दोनों तरफ से किसी ने कैदी नहीं बनाया।

एक दुपहरिया बंचक और अन्ना स्टेशन गुदाम की ओर से जा रहे थे, तब देखा, दो लाल सैनिक एक गिरफ्तार अफसर को गोली से उड़ा रहे हैं। यह दृश्य देखते ही अन्ना ने सिर फिरा लिया। बंचक ने जैसे ताना देते हुए कहा—

"बस, यही ठीक है ! इन्हें कत्ल कर देना चाहिये, गोली से उड़ा देना चाहिये। दया की बात नहीं—इन्होंने क्या हम पर दया दिखाई ? हम दया चाहते भी नहीं। इस गन्दगी को संसार से हटाना होगा। क्रान्ति के भाग्य की जहाँ बात है, वहाँ भावना के लिए क्या गुंजाइश ? ये सैनिक ठीक कर रहे हैं।"

लड़ाई के तीसरे दिन वह बीमार पड़ा। लेकिन तो भी कुछ दिनों तक वह खड़ा रहा। उसके सिर में चक्कर आता था, मतली आती थी, कमजोरी बढ़ रही थी।

१५वीं दिसम्बर को लाल सेना ने शहर छोड़ दिया। बंचक को एक ओर अन्ना पकड़े हुए थी, एक ओर दूसरा मशीनगन चलाने वाला और उसे एक गाड़ी में लिये जा रहे थे। मुश्किल से वह अपने बोझ को संभाल पाता था; उसके पैर यों पड़ रहे थे, जैसे वह नींद में हो; और मालूम होता था, दूर से अन्ना कह रही है—

"डब्बे में चढ़ो, हलिया ! सुनते हो ? मैं क्या कह रही हूँ ? समझते हो ? डब्बे में चढ़ो, तुम बीमार हो !"

लेकिन न वह सुन रहा था, न समझ रहा था और न जानता था कि वह मीयादी बुखार में है। उसे सिर्फ यह मालूम होता था कि उसकी आँखों से खून टपक रहा है और उसके पैर के नीचे की जमीन टुकड़े टुकड़े हुई जा रही है। उसके दिमाग में तरह-तरह की कल्पना की भिन्न-भिन्न जालियाँ बुनी जा रही थीं। वह बड़बड़ा रहा था—

"नहीं, ठहरो...! तुम कौन हो ...? अन्ना कहाँ है ? थोड़ी मिट्टी दो... इन्हें बर्बाद कर दो...मैं हुक्म देता हूँ, मशीनगन चलाओ...बंद करो... गर्म हो गया...।" उसने इतने जोरों से हाथ फटकारा कि अन्ना से पकड़ छूट गई।

बिलकुल उठा कर उन्होंने उसे डब्बे में रखा। थोड़ी देर तक उसकी नाक में अजीब सुगंध मालूम होती रही, उसकी आँखों में अजीब रंगीनियाँ झलकती रहीं; फिर एक काली, निशब्द शून्यता उस पर छा गई।

## ख

### १

घरों के छप्परों और छतों से बर्फ पिघल कर गिर रही थी। जमीन पर जहाँ-तहाँ बर्फ जमी हुई थी। जानवर सड़कों पर नाक मारते निकल रहे थे। गोरैये यों उड़ रहे थे जैसे कि बसंत आ गया हो। जनवरी के गर्म, बदली वाले दिन थे। कोजाक डोन की ओर बाढ़ की प्रतीक्षा में देख रहे थे। मीरन कोरशुनोव अपने सेहन में खड़ा सामने का बर्फीला मैदान और भूरी हरी डोन की धारा को देखता बुदबुदा रहा था—"परसाल की तरह इस साल भी बर्फ, बर्फ, सिर्फ बर्फ! इस बोझ से बेचारी धरती कसमस करती होगी।"

उसका बेटा मिट्का खाकी वर्दी पहने गोशाला साफ कर रहा था। उसकी टोपी पीछे लटक रही थी। उसके सीधे बाल भौं पर लटक रहे थे। गोशाला साफ कर दोनों पैरों को अलग कर वह खड़ा हो गया और अपनी किसी प्रियतमा के दिये हुए कसीदा वाले बटुए से तम्बाकू निकाल कर वह सिगरेट बनाने लगा। उसी समय क्रिस्तोना और इवान एलेक्सीविच उसके पास पहुँचा। मिट्का ने उन्हें तम्बाकू पीने का निमंत्रण दिया। क्रिस्तोना ने सधन्यवाद नाहीं कर दी। इन दोनों कोजाकों को देख कर बूढ़े दादा ग्रिशाका आधमका और बोल उठा—

"क्यों, तुम घरों में क्यों ठहरे हुए हो, सैनिको! क्या बीवियों से अभी मन नहीं भरा?"

"बात क्या है?" क्रिस्तोनिया ने पूछा।

"चुप रहो क्रिस्तोनिया ? मुझे धोखा मत दो कि तुम नहीं जानते।"

"ईसा की शपथ दादा, मैं कुछ नहीं जानता।"

"उस दिन एक आदमी वोरोनेज से आया था। वह एक व्यापारी था। साहूकार मोखौव का दोस्त और रिश्तेमंद। वह कह रहा था, अजीब ढंग के सैनिक, बोलशाक लोग, चेर्तकोव में हैं। रूस हम पर चढ़ाई करना चाहता है। और तुम लोग घरों में बैठे हो। निकम्मे कहीं के। मिट्का, तुम सुन रहे हो ? तुम क्या सोच रहे हो ?"

"हम इस बारे में कुछ नहीं सोचते।" इवान एलेक्सीविच ने कहा।

"शर्म की बात है कि तुम्हें इसकी चिन्ता नहीं !" बूढ़ा ग्रिशाका गरज रहा था। "वे तुम्हें बटेर की तरह जाल में फँसा लेंगे ! वे किसान तुम्हें कैदी बनायेंगे और तुम्हारी नाक कुचलेंगे।"

बूढ़े की बात सुन कर तीनों मुस्कुरा पड़े। बूढ़ा चलता बना। तब इवान मिट्का को फाटक की ओर ले गया और बोला—"कल तुम सभा में क्यों नहीं आये ?"

"मुझे फ़ुर्सत नहीं थी।"

"बातें मत बनाओ ! कल मोर्चे से लौटे सभी कोजाक सभा में आये थे, सिवा तुम्हारे और पियोत्रा के। हम लोगों ने तय किया है कि अपना प्रतिनिधि कामेंस्का भेजेंगे। वहाँ २३ जनवरी को मोर्चे से लौटे कोजाकों की सभा होने वाली है। मैं, क्रिस्तोनिया और तुम प्रतिनिधि चुने गये हो।"

"मैं नहीं जाता।" मिट्का ने गंभीरता से कहा।

"तुम कौन सा खेल खेलना चाहते हो ? क्या साथियों को छोड़ दोगे ?" क्रिस्तोनिया उसकी वर्दी का बटन पकड़ते हुए बोला—

"अरे, यह पियोत्रा से मिला हुआ है !" इवान ने उत्तेजित होकर क्रिस्तोनिया का आस्तीन पकड़ कर कहा—"चलो, यहाँ क्यों वक्त बरबाद

करते हो।" गुस्से में जाते हुए इवान जोरों से बोले बिना नहीं रह सका—
"साँप कहीं का!"

## २

वे २३ की शाम को कामेंस्का पहुँचे। कोजाकों की भीड़ सड़कों पर लगी हुई थी। इवान और क्रिस्तोनिया ने ग्रिगर, मेलखोव के घर की तलाश की, किन्तु, वहां पता चला कि वह सभा में जा चुका है। वे सभा में पहुँचे। सभा-भवन में लोग ठसाठस भरे थे, कुछ लोग जगह की कमी के कारण बरामदों पर भी खड़े थे।

"मेरे पीछे चले चलो"—कहकर क्रिस्तोनिया भीतर घुसा। भीड़ को चीरते उसे बढ़ते देख कोजाक हंस पड़ते और उनके दिल में उसके लिए एक अयाचित सम्मान पैदा हो जाता; क्योंकि वह उनसे गर्दन से ऊपर बड़ा था। उन्होंने ग्रिगर को दीवाल से सटा बैठा, सिगरेट पीता, प्रतिनिधियों से बातें करता पाया। अपने गाँव वाले को देखते ही उसकी दाढ़ी के अन्दर बत्तीसी चमक उठीं। वह चिल्ला पड़ा—

"अरे, कौन हवा तुम्हें यहाँ उड़ा लाई, इवान! और ओहो, दादा क्रिस्तोनिया!"

क्रिस्तोनिया मुस्कुरा पड़ा और उसके हाथ अपने बड़े कब्जे में लेकर बोला— "सब खैरियत है! गाँव के लोगो ने तुम्हें अभिनन्दन भेजा है और बाबूजी बुलाया है।"

"पियोत्रा कैसे है?"

"पियोत्रा"...इवान मुस्कुराया। "पियोत्रा हमसे नहीं मिलता।"

"मुझे मालूम है। और नातालिया कैसी है? और बच्चे? क्या तुमने उन्हे देखा है?"

"सब मजे में हैं और सब ने तुम्हें सलाम भेजा है।"

क्रिस्तोनिया बातें कर रहा था और मंच पर जो लोग बैठे हुए थे, उन्हें घूर घूर कर देख रहा था। ग्रिगर सवाल पर सवाल किये जा रहा था। इवान ने गाँव की सब बातें उससे बताईं। मोर्चे के सैनिकों की सभा और प्रतिनिधियों के चुनाव की बात भी कह दी। वह कामेंस्का में क्या हो रहा है, पूछने ही जा रहा था कि किसी ने आवाज दी—

"कोजाको! खान में काम करने वाले मजदूरों की प्रतिनिधि बोल रहे हैं, आप इनकी बात ध्यान से सुनिये।"

मोटे होंठ वाले एक कोजाक ने अपने बालों को पीछे तरफ सहेजता हुआ बोलना शुरू किया। उसके पहले शब्द से ही ग्रिगर और दूसरे कोजाक आकृष्ट हो गये। उसने ओजस्वी शब्दों में कालेदीन की धोखेबाजी जो कोजाकों को मजदूरों और किसानों से लड़ाना चाहता है, और कोजाकों और मजदूरों की स्थिति की समानता एवं बौल्शेविकों के पवित्र उद्देश्य की चर्चा करते हुए कहा—

"हम मजदूर अपना भाईचारे का हाथ मेहनतकश कोजाकों के आगे बढ़ा रहे हैं। जर्मनी की लड़ाई में जारशाही की चक्कर में आकर हम मजदूरों और आप कोजाकों ने एक साथ अपने खून बहाये, अब हम अपनी इच्छा से, अपने समान स्वार्थ के लिये, इन पूँजीपतियों के खिलाफ भी एक साथ खड़े होंगे। हाँ, एक साथ, हाथ में हाथ मिला कर! हम कंधे से कंधा मिलाकर उन शैतानों के खिलाफ लड़ेंगे, जो सदियों से मेहनत करने वालों को गुलाम बनाये हुए हैं!"

"बहुत ठीक, बहुत ठीक!" इवान चिल्ला उठा, जो आधा मुँह खोले बड़े ध्यान से सुन रहा था।

उसके बाद ४४वीं रेजिमेंट का एक प्रतिनिधि बोला। उसके वाक्य उलझे हुए थे, उसके शब्दों में बल नहीं था, लेकिन कोजाक उसकी बात बड़े ध्यान से सुन रहे थे। वह कह रहा था कि हम साढ़े तीन साल की लड़ाई

से ऊब उठे हैं, अब हमें कोशिश करनी चाहिये कि शान्ति हो। अगर लड़ाई जारी रही, तो फिर कोजाकों का वंश नाश हो जायगा।"

"तुम सही कह रहे हो!"

"हम लड़ाई नहीं चाहते!'

इस तरह का हल्ला देख सभा का सभापति पोद्तील्कौव ने टेबल पर हाथ पटकते हुए, 'शान्ति', 'शान्ति' की आवाज दी। वह प्रतिनिधि आगे बढ़ा—

हम अपना प्रतिनिधि नोवोचेरकास भेजें और कालेदीन को कहला दें कि वह अपनी सेना लेकर लौट जाय। हम बौल्शेविकों से भी कह दें कि उनकी सहायता की हमें जरूरत नहीं। हम खुद ही जनता के दुश्मनों से हिसाब चुकता कर ले सकते हैं।"

लिस्तनिस्की की रेजिमेंट से आया लैगुतिन उसके बाद बोला—उसके शब्दों में चिनगारियाँ भरी हुई थीं। लेकिन, बीच-बीच में हल्का हो जाता था। यह तय किया जा रहा था कि अभी बहस बंद रखी जाय। उसी समय पोद्तील्कोव बोल उठा—

"भाई कोजाको! हम यहाँ बहस-मुबाहसा कर रहे हैं, लेकिन हम लोगों के—गरीबों के—दुश्मन सीधे नहीं हैं। वे भेड़िये हमें भेड़ समझते और गफलत में ही झपट्टा मारना चाहते हैं। लेकिन, कालेदीन की मुराद पूरी नहीं होगी। अभी हमने उसके एक हुक्मनामे को पकड़ा है, जिस पर उसका दस्तखत है और जिसमें उसने इस सभा के सभी लोगों को गिरफ्तार कर लेने की आज्ञा दी है। मैं उसे पढ़ रहा हूँ।"

हुक्मनामे का पढ़ना था कि प्रतिनिधियों में अजीब उत्तेजना फैल गई। कोलाहल मच गया। "कालेदीन का नाश हो" "कोजाकों की क्रान्तिकारी फौजी सोवियेट की जय हो" आदि के नारे लगने लगे। एक ने प्रस्ताव किया कि कालेदीन से लड़ने के लिए इन प्रतिनिधियों में से चुन कर एक कमेटी बना ली जाय। ४४वीं रेजिमेंट वाले सुलह के लिए आवाजें उठाते रहे, लेकिन बहुमत उनके खिलाफ था। तुरत कमेटी का चुनाव होने लगा।

चुनाव तक ग्रिगर नहीं ठहर सका, उसकी बुलाहट रेजिमेंट के स्टाफ से आ गई थी। जाते समय क्रिस्तोनिया और इवान को अपने डेरे पर आने के लिए उसने निमंत्रित किया। रात में इवान पहुँचा। उसी से मालूम हुआ कि कमेटी के अध्यक्ष पोद्तील्कौव और मंत्री क्रिवौशालिकौव चुने गये हैं और लेगुतिन, गोलोवेंचेव, मीनेव आदि सदस्य।

"और क्रिस्तोनिया कहाँ है?"–ग्रिगर ने पूछा।

"वह कोजाकों के साथ कमेंस्का के अफसरों को गिरफ़ार करने गया है। वह इतना उत्तेजित था कि मैं रोक नहीं सका।"

## ३

ग्रिगर का दोस्त लेफ्टिनेंट इजवारिन उसी दिन अपनी रेजिमेंट से भाग गया, जिस दिन मोर्चे से लौटे कोजाकों की सभा कामेंस्का में हो रही थी। भागने के पहले की रात में वह ग्रिगर से मिला था और अपने इरादे की कुछ झलक दी थी—

'इस परिस्थिति में रेजिमेंट में रहना मुश्किल है। कोजाक दो छोरों के बीच इधर-उधर दौड़ रहे हैं, या तो वे बौल्शेविकों के फेर में हैं या राजतंत्र वालों के। उनमें से कोई कालेदीन का समर्थन करने को तैयार नहीं। वे नये खिलौने में ही बच्चों की तरह मस्त हैं। हमें एक जबरदस्त और मजबूत आदमी चाहिये, जो विदेशियों को सबक सिखाये। मैं समझता हूँ कि इस समय हमें कालेदीन का ही साथ देना चाहिये, नहीं तो हम पूरी बाजी हार जायेंगे।"

इसके बाद सिगरेट जलाते हुए उसने कहा— "मालूम होता है, तुमने बौल्शेविकों का साथ देना तय कर लिया है।"

"करीब-करीब"—ग्रिगर ने हामी भरी।

"ईमान से? या गोलबोव की तरह, जिसने कोजाकों में प्रिय होने के लिए ऐसा किया है।"

"मुझे किसी का प्रिय होने की परवाह नहीं। मैं तो सिर्फ अपने लिए एक रास्ता ढूँढ रहा हूँ।"

"तुम अंधी गली में घुस गये हो, तुम्हें रास्ता मिल नहीं सकता।"

"तो देखा जायगा।"

"मालूम होता है, अब हम दुश्मन की तरह ही मिलेंगे, ग्रिगर!"

"लड़ाई के मैदान में कोई दुश्मन दोस्त नहीं हो सकता?" ग्रिगर ने मुस्कुराते हुए कहा।

इजवारिन कुछ देर तक और बातें करता रहा, फिर चला गया। दूसरी ओर मे वह गायब हो गया—पानी में फेंके ढेले की तरह।

४

कालेदीन ने जिस १०वीं डोन कोजाक रेजिमेंट को इस कांग्रेस के मेम्बरों की गिरफ़्तारी के लिए कामेंस्का भेजा था, उसकी अजीब हालत हुई। उनमें बौल्शेविकों ने कुछ ऐसा प्रचार किया कि कोजाकों ने अपने अफसरों का हुक्म मानने से इन्कार कर दिया, यही नहीं, वे उन्हीं में मिल गये। लेकिन, इसके बाद तुरत चढ़ाई करने के बदले, क्रान्तिकारी फौजी कमेटी ने एक डेपुटेशन कालेदीन के पास सुलह करने को भेजना तय किया। इससे कालेदीन को तैयारी का मौका मिल गया। उसने कामेंस्का पर चढ़ाई कर दी और बौल्शेविकों को वहाँ से हटने को लाचार होना पड़ा।

कोज़ाक सैनिक हड़बड़ी में ट्रेनों पर चढ़-चढ़ कर भाग रहे थे। हल्के सामानों को लेकर ही उन्हें सन्तोष करना पड़ रहा था। संगठन ढीला पड़ गया था। सभी चीजें तीतर-बीतर हो रही थीं। हाँ, समझदार आदमी एक योग्य अफसर का अभाव अनुभव कर रहा था। उसी समय एक नौजवान अफसर कप्तान गोलुबोव ने सब का ध्यान अपनी ओर खींचा।

चुनाव द्वारा २७वीं कोज़ाक रेजिमेन्ट का कमान्ड उसे मिला और तुरन्त उसने एक सिलसिला कायम कर दिया। कोजाक उसकी बात झट मानने लगे। फौज में एकता लाना, ड्यूटी बांटना, कमान लेना—बिना झिझक के वह सभी सारी बातें करने लगा। जब सामान लादे जा रहे थे, कुछ कोज़ाकों को सुस्ती से काम करते देख वह गरज उठा—

"यह क्या हो रहा है? क्या आँखमिचौनी खेलना चाहते हो! होशियार—काम में लगो, जल्दी करो। कूमनों के नाम पर मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ, तुरत हुक्म तामील करो। ..क्या? वह कौन हल्ला कर रहा है? मैं उसे गोली मार दूँगा! चुप···तुम क्रांति के दुश्मन हो, हमारे साथी नहीं।"

और सभी कोज़ाकों ने उसके हुक्म का झट-झट तामील करना शुरू किया। कुछ लोगों को उसकी यह हाकिमाना ठाठ बहुत ही भाई—वे पुरानी बातें भूले नहीं थे! लाठी थोड़ी हाँकने वाले को कोज़ाक हमेशा ही अपना नेता मानते आ रहे थे।

कामेंस्का से हटकर ग्लुबोका को क्रांतिकारी फौजी कमीटी ने अपना हेडक्वार्टर बनाया। दो दिनों के अंदर ही गोलुबीव ने वहाँ अपनी फौजी मोर्चाबंदी कर ली। उसी के कहने पर ग्रिगर का भी एक डिवीजन का कमांड दिया गया।

रात में बहुत देर तक मोर्चेबंदी का निरीक्षण कर ग्रिगर सोया ही था, कि गोली की आवाज ने उसकी नींद तोड़ दी। बिछावन से तड़पकर उसने तुरत कमीज डाली, पैंट पहना और बूट में पैर रखते हुए दौड़ चला। सड़कों पर दनादन गोलियाँ चल रही थीं। एक बैलगाड़ी सुस्त चाल से जा रही थी। दरवाजे से बाहर से कोई भयमिश्रित आवाज में चिल्ला रहा था—हथियार पकड़ो, हथियार पकड़ो।

कालेदीन की फौज रात में ही बाहर की नाकेबंदी को तोड़ कर अब शहर में घुसी आ रही थी। धुँधले अँधेरे में घुड़सवार धावे कर रहे थे। आदमी इधर-उधर भागे जा रहे थे। सड़क के कोने पर एक मशीनगन लगा दी गई

थी। तीस कोज़ाक उस सड़क को रोके हुए थे। कुछ सैनिक सड़क के नीचे दौड़े जा रहे थे। नजदीक ही से तोप की आवाज आई, घोड़े की टाप सुनाई पड़ने लगी। मशीनगन ने आग उगलना शुरू किया।

बड़ी मुश्किल से ग्रिगर ने अपनी कम्पनी इकट्ठी की और स्टेशन की तरफ बढ़ा। उन्होंने देखा, कोज़ाक उधर से आगे भाग रहे हैं। ग्रिगर ने उनमें से आगे भागनेवाले की राइफल पकड़ ली और कहा—

"कहाँ जा रहे हो ?"

"जाने दो, जाने दो ! सूअर ! देख नहीं रहे कि हम पीछे हट रहे हैं। हमें क्यों रोक रहे हो ?"

"मारो, उलट दो—! बेवकूफ को हटाओ !" दूसरे चिल्ला उठे।

स्टेशन के मालगुदाम के निकट ग्रिगर ने अपनी कम्पनी को कतार में खड़ा कर दिया, लेकिन भगोड़ों के एक दल ने उनकी कतार को फँसा लिया। ग्रिगर के कोज़ाक सैनिक भी भगोड़ों में मिलने लगे और उन्हीं के साथ सड़कों की ओर भागने लगे।

"रुको, खड़े रहो, नहीं तो गोली मार दूँगा !" ग्रिगर ने कहा। वह गुस्से में काँप रहा था। लेकिन, उसकी बात कौन सुनता है ? सड़क पर मशीनगन की गोलियों की बौछार हो रही थी। कोज़ाक पहले दीवाल से सट कर खड़े हो गये, फिर मुड़ कर बेतहाशा भाग पड़े।

"ग्रिगर, तुम उन्हें रोक नहीं सकते !" एक साथी अफसर ने चिल्ला कर कहा। ग्रिगर उसके पीछे चला, वह दाँत पीस रहा था, उसकी राइफल झूल रही थी। इस भगदड़ में ग्लुबोका छोड़ कर उन्हें बाहर हो जाना पड़ा। बहुत-से सामान छोड़ देने पड़े। जब बिल्कुल दिन खुल गया, तब कहीं जाकर तीतर-बीतर सैनिकों को फिर एकत्र और कतारबंद किया जा सका और उन्हें लेकर प्रत्याक्रमण की तैयारियाँ की जाने लगीं।

परीशान, पसीने से तर, गोलुबौव भेंड़ की खाल का जैकेट पहने अपनी २७वीं रेजिमेंट के आगे दौड़ रहा और इस्पाती आवाज़ में चिल्ला रहा था—

"आगे बढ़ो, लेटो मत, बढ़े चलो!"

छः बजे लड़ाई शुरू हुई। कोजाकों और वौरोनेज से आये लाल सैनिकों को लेकर आगे बढ़ा गया। पूरब से हाड़ हिलाने वाली हवा बह रही थी। बादल के भीतर से ऊषा का रंग खून-सा गहरा लाल था। ग्रिगर ने आतामन कम्पनी के आधे हिस्से को तोपों की रक्षार्थ भेजा और आधे को लेकर धावा बोल दिया। दाहिनी ओर ४४वीं रेजिमेंट के सैनिक थे। गोलुबौव बीच के हिस्से से चढ़ाई कर रहा था।

ग्रिगर की कंपनी को तीन मशीनगनें दी गई थीं। उनका कमान्डर एक लगड़ा लाल सैनिक था, जिसका चेहरा सूखा था और हाथों में बाल भरे थे। उसके तत्वावधान में मशीनगनें इतनी सही निशाना ले रही थीं कि दुश्मन में हड़कंप मच गया और उनकी हिम्मत आगे बढ़ने की नहीं हुई। वह अपनी मशीनगन के पीछे हमेशा लगा था। उसकी बगल में एक औरत सैनिक की पोशाक में थी। जब ग्रिगर उस ओर से जा रहा था, वह गुस्से में सोच रहा था—"घाँघरे वाली! लड़ाई में आई है। यह कम्बख्त मैदान में भी औरत नहीं भूला। तो अपने बच्चों और गद्दों को भी क्यों न यहाँ लेता आया!"

मशीनगन का कमान्डर उसके नजदीक आया और बोला—

"इस कम्पनी के कमान्डर क्या आप हैं?"

"हाँ।"

"हम आतामन कंपनी के आगे गोलियाँ चलायेंगे—दुश्मन उनकी राह रोके हुए हैं।"

"अच्छी बात !"—ग्रिगर ने कहा । जो मशीनगनें एक मिनट के लिए रुकी थीं, वे गरज उठीं । एक मशीनगन चलाने वाला चिल्ला रहा था—

"बचक, तुम मशीनगन को गला दोगे—कहीं ऐसी तेजी से मशीनगन चलाई जाती है—तुम आदमी हो या भूत !"

सैनिक पोशाक पहने औरत अपने घुटनों पर खड़ी मशीनगन चलाये जा रही थी । उसकी काली आँखें अंगारे बन रही थीं । उन्हें देख कर ग्रिगर को अक्सीनिया की याद आ गई । एक क्षण तक वह साँस रोके, एकटक, उनकी ओर देखता रह गया ।

५

दोपहर को एक अर्दली गोलुबौव के पास से ग्रिगर के नजदीक पहुँचा और उसे एक हुक्मनामा दिया । ग्रिगर से कहा गया था कि वह अपनी कम्पनी को पीछे हटा कर, सम्भवतः दुश्मन से छिप कर, उसकी सेना को दाहिनी बाजू से घेरे और ज्यों ही गोलुबौव दुश्मन पर धावा बोले, वह भी अपनी सेना के साथ चढ़ दौड़े । ग्रिगर ने तुरत ऐसा ही किया और आठ मील का चक्कर देकर निश्चित जगह पर जा जमा ।

वहाँ पहुँचने पर उसे पता चला, वह आधा घंटा लेट आया है । बड़ी चतुराई से गोलुबौव ने दुश्मन की सेना के पिछले हिस्से को काट डाला था और अब उनपर सीधे धावा बोल रहा था । राइफलों और मशीनगनों की गोलियों की बौछार से व्याकुल हुई शत्रु-सेना में हड़कम्प मचा हुआ था । "आगे बढ़ो"—कह कर ग्रिगर ने अपनी कम्पनी को बगल से बढ़ने का आदेश दिया ।

तिपहरिया में ग्रिगर को एक गोली लगी, जिसने उसके घुटने के ऊपर के मांस को छेद डाला था । जख्म में जलने वाली पीड़ा हो रही थी और खून गिरने से उसे मतली आ रही थी । दांत पीसते वह कतार से छाती के बल रेंग

कर बाहर हुआ और पीड़ा से सर हिलाता वह आधी बेहोशी में उठ खड़ा हुआ। गोली छेद कर निकली नहीं थी, पुट्ठे में घुसी थो, जिससे और भी पीड़ा हो रही थी। वह खड़ा नहीं रह सका, लेट रहा। उस समय १२ वीं रेजिमेंट के साथ ट्रांसिल्वेनिया में लगे जख्म की उसे याद आ रही थी!

ग्रिगर के सहायक ने कमान लिया और उसने दो सैनिकों से ग्रिगर को घोड़े पर ले जाने को कहा। उन्होंने उसे घोड़े पर चढ़ाया, उसके कहने पर घाव पर पट्टी बांधी और उसे वहाँ ले आये जहाँ से प्रत्याक्रमण शुरू किया गया था।

अब दुश्मन की सेना भाग रही थी। जबर्दस्त मार खा कर, बहुत आदमियों को खोकर वह बेतहाशा ग्लुकोवा की ओर पलायन करती जा रही थी। ग्रिगर ने अपने घोड़े को तेज किया और उस तरफ बढ़ा, जहाँ कुछ कोजाक उसे दिखाई दे रहे थे। जब नजदीक पहुँचा तो उसने गोलुबौव को पहचाना। वह घोड़े की जीन पर बैठा था, उसका भेंड़ की खाल का जाकिट खुला हुआ था, उसकी रोयेंदार टोपी सिर के पीछे लटक रही थी, उसकी भवों पर पसीना चू रहा था अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते वह चिल्ला उठा—

"ग्रिगर! वह बहादुर! तुम घायल हो गये! शैतान! हड्डी बची है न? और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना वह मुस्कुरा पड़ा—"हमने उन्हें बिल्कुल पस्त कर दिया—चूर-चूर कर दिया! अफसरों की डिवीजन को ऐसा चकना-चूर कर डाला है कि फिर वे उसे इकट्ठा कर नहीं सकते।"

ग्रिगर ने उससे एक सिगरेट माँगी। जहाँ तक नजर जाती थी, कोजाक और लाल सैनिक ही दिखाई पड़ते थे। एक कोजाक घोड़े पर उछलता आया और दूर से ही चिल्ला उठा!

"चालीस आदमी पकड़े गये! चालीसों अफसर! चोरनेस्टौब भी उनमें है।"

"चोरनेस्टौव ! तुम झूठ बोल रहे हो।" कहकर गोलुबौव ने अपना घोड़ा उस ओर दौड़ाया। ग्रिगर भी उसके पीछे लगा।

सचमुच चालीस अफसर और चोरनेस्टौव उनके आगे-आगे ! निकल भागने की चेष्टा में वह अपना कोट भी खो चुका था और सिर्फ चमड़े का बनिआइन पहने था। बाँई आंख के ऊपर एक ताजा जख्म था, जिससे खून टपक रहा था। वह दृढ़ता से और तेजी से चल रहा था। रोयेंदार टोपी सिर के एक ओर लटक रही थी, जो उसकी बदमस्ती और जवानी का पैगाम देती थी। उसके गुलाबी-चेहरे पर जरा भी भय नहीं था। कोजाकों की ओर वह घृणा की निगाह से देखता था और एक सिगरेट जलाकर होंठ की बगल से पीये जा रहा था।

ज्यादातर अफसर नौजवान थे और इस कैद में भी शान दिखा रहे थे।

गोलुबौव अपना घोड़ा पहरेदार कोजाकों के पास ले गया और बोला—

"सुनो! क्रान्तिकारी फौज के अनुशासन का यह तकाजा है कि तुम इन कैदियों को जरा भी तकलीफ दिये बगैर कैम्प में ले जाओ और यह पुर्जा पोदतिल्कौव को दे देना।

उसने एक पुर्जा लिखकर उन्हें दिया और यह पूछ कर कि ग्रिगर उसी ओर जा रहा है, उसने उससे कहा—

"पोदतिल्कौव को कह देना, चोरनेस्टौव के लिए मैं जिम्मेवार हूँ। समझे ? अच्छा, तुम जाओ।"

ग्रिगर इन कैदियों के पहले ही कैम्प में पहुँचा और वहाँ पोदतिल्कौव को अफसरों, अर्दलियों और पैगामियों के बीच में घिरा पाया। ज्योंही उसने गोलुबौव की बात उससे कही, वह उबल पड़ा—

"गोलुबौव जहन्नुम में जाय ! कैसी भली माँग ? चेरनेस्टौव का जिम्मा उसका । उसका जिम्मा जो क्रान्तिविरोधी हत्यारों का सरगना है ! नहीं, ऐसा नहीं होगा । मैं उन सबको गोली से उड़ा दूँगा ।"

"लेकिन गोलुबौव ने कहा, उसकी जिम्मेदारी वह लेगा ।"

"मैं उसे नहीं दूँगा । मैंने कहा, मैं यही करूँगा । वह क्रान्तिकारी अदालत के सामने पेश किया जायगा और तुरत फैसला होगा उसका । जिसमें दूसरे सबक लें । तुम जानते ...हो" आते वह कैदियों की ओर घूरते हुए उसने दृढ़ता से कहा—"तुम जानते हो, उसने कितना खून बहाया है ? समुद्र भर जाय, इतना ! उफ, उसने कितने मजदूरों को गोलो के घाट उतारा है ।" गुस्से में वह दाँत पीसता और आंखें घुमाता फिर बोला—"नहीं, मैं उसे नहीं छोड़ूँगा ।"

"इतना चिल्लाने की जरूरत नहीं ।" ग्रिगर की आवाज भी ऊँची हो रही थी मानो पोदतिल्कौव की उत्तेजना उसमें भी आ गई हो—"यहाँ जजों की क्या कमी है ? वहाँ जाओ तब न ?" उसने युद्ध के मैदान की ओर इशारा किया । "बहुत से लोग अब कैदियों से बदला चुकाने को निकल आये हैं ।" उसका नथना हिल रहा था ।

पोद्तिल्कौव पीछे हट गया और दूर से ही बोला—

"मैं वहीं से आ रहा हूँ । यह मत सोचो कि मैं अपनी जान बचाने यहाँ इस गाड़ी में पड़ा था । ग्रिगर अपनी जबान पकड़ो । समझते हो ? तुम किससे बातें कर रहे हो ? वह पुरानी अफसरी शान छोड़ो । हाँ । क्रान्तिकारी अदालत फैसला करेगी और किसी को इसका हक नहीं ।"

ग्रिगर ने अपना घोड़ा उसकी ओर बढ़ाया और अपने पैर के जख्म को एक क्षण के लिए भूल कर जीन पर से उछल पड़ा । जमीन पर आते ही पीड़ा का ऐसा धक्का उसे लगा कि वह सिर के बल गिर पड़ा । उसके पैर से खून की धारा बहने लगी । बिना किसी की मदद के ही

वह फिर उठ खड़ा हुआ और फिर किसी तरह अपने को घसीट कर गाड़ी के नजदीक ले गया और उसकी पिछली कमानी से उँगठ कर लेट गया।

कैदी आये। बरफ पर पैर पटकते पोदतिल्कौव उनकी ओर बढ़ा। चोरने-स्टौव उनमें सबसे आगे था। उसने पोदतिल्कौव को ओर घृणा की नजरों से देखा, लापरवाही से अपना बायाँ पैर हिलाते हुऐ अपने नीचे के होंठ को दांत से दबाया। पोदतिल्कौव गुस्से में काँपते उसकी निर्भीक और घृणा से भरी आँखों में घूरने लगा।

"आखिर हमने तुम्हें पकड़ा—सांप कहीं का!" एक कदम पाछे हटते हुए उसने धीमी, दबी आवाज में कहा। एक रूखी हंसी, तलवार की धार सी उसके गालों पर खेल गई।

"कोजाकों को धोखा देने वाला! कुत्ता! गद्दार!" चोरनेस्टौव ने मुँह से थूक फेकते हुए कहा।

पोदतिल्कौव ने सिर हिलाया, उसके चेहरे पर कालिमा दौड़ गई और मुँह खोल कर उसने हवा खींची।

इसके बाद जो कुछ घटा, वह अजीब क्षिप्रता से। चोरनेस्टौव दांत निकाल कर, अपने घुस्से को सटाये, पीले चेहरे से अपने समूचे शरीर को आगे उछालते पोदतिल्कौव की ओर झपटा और अपने चंचल होंठो से गालियाँ बकने लगा। वह इतनी जल्दी में बके जा रहा था कि सिवाय "तुम्हारा वक्त भी आयेगा ... याद रखो।" इन शब्दों के अलावा पोदितल्कौव और कुछ सुन नहीं सका। वह जोरों से बक रहा था, जिसमें कैदी, पहरेदार और कैम्प के सभी अफसर सुनें।

"अच्छा : ..."पोदतिल्कौव रुँधे हुए कंठ से बोला और अपनी तलवार टटोलने लगा।

एक क्षण निस्तब्धता रही। कैम्प के आधे दर्जन अफसर पोदतिल्कौव की ओर बढ़े, लेकिन वह झपट कर आगे बढ़ा। समूचे शरीर को दाहिनी

तरफ मोड़ कर उसने झटके से म्यान से तलवार खींच ली और आगे झपट कर चोरनेस्टौव के सिर पर दे मारा।

ग्रिगर ने देखा, चेरनेस्तौव कांप उठा और वार को बचाने के लिये अपना बायाँ हाथ उठाया। तलवार से मोम की तरह कट कर कर उसका पँजा उसके सिर पर गिर गया। पहले उसकी रोयेंदार टोपी गिरी, फिर कटे डंठल की तरह चोरनेस्तौव धीरे-धीरे नीचे गिरा, उसका मुँह खिंच गया था, उनकी आँखें मींच गई थी। वह गिरा ही था कि पोदतिल्कोव ने उस पर फिर तलवार चलाई और भारी चाल से अपनी तलवार के खून को पोंछता चलता बना। गाड़ी के नजदीक पहुँच कर उसने पहरेदारों को आज्ञा दी—

"सबको काट डालो! ये जहन्नुम में जायँ। सब को। हम कैदी नहीं रखते उनके कलेजे में उनके खून में ..... !"

दनादन गोलियाँ चलने लगी और दूसरे ही छन वे सभी अफसर मारे जा चुके थे!

जिस समय यह हत्या कांड हो रहा था; ग्रिगर गाड़ी से अचानक उठा और पोदतिल्कौव की ओर आँखें गड़ाये उनकी ओर बढ़ा। लेकिन, उसी समय मीनेव ने पीछे से आकर उनका हाथ पकड़ लिया और उसके हाथ से पिस्तौल छीन कर अलग फेंकते हुए कहा—

"और तुम...........यह कौन क्या खेल कर रहे हो?"

---

# ग

## १

जब बंचक को होश हुआ और आँखें खोली, सबसे पहले उसकी नज़र अन्ना की काली आँसुओं से छलकती आँखों पर पड़ी।

तीन सप्ताह तक वह बेहोश रहा और अंटसंट बकता रहा। तीन सप्ताह तक वह एक अज्ञात, अकल्पित देश में घूमता रहा था। वह अन्ना की ओर गम्भीर नेत्रों से देखता हुआ पिछली बातें याद करने की कोशिश करता रहा, लेकिन वह उसमें पूर्णतः सफल नहीं हो सका। तुरत बीती हुई बातें भी उनकी याद के गहरे गर्त्त में पड़ी सोई थीं।

"पानी दो!"—वह अपनी अवाज आप ही सुन कर चकित हुआ और हँस पड़ा। उसने अपना हाथ अन्ना के हाथ में रखे प्याले की ओर बढ़ा दिया, लेकिन अन्ना ने अपने हाथ को खींचते हुए कहा—"मेरे ही हाथों से पीना चाहिये।"

उनके हृदय में अन्ना के लिए गम्भीर कृतज्ञता के भाव जग उठे। फिर उठाने की चेष्टा में काँपता हुआ उसने पानी पिया और फिर तकिये पर लुढ़क गया। वह दीवारों की ओर देख रहा था और कुछ कहना चाहता था। लेकिन थकावट उसपर हावी थी और वह झपकी लेने लगा।

जब वह जागा, फिर अन्ना थी उत्सुक, दुखित आँखों को उसने देखा। रोशनी का नारंगी रंग घर में फैल रहा था।

"अन्ना, सुनो।"

वह उसके निकट आई, उसके हाथ को पकड़ा और पूछा—

"अब कैसी तबियत है ?

"मेरी जीभ पर दूसरे का कब्जा है, मेरे सिर पर दूसरे का अधिकार है और मेरे पैर की भी यही हालत है। मालूम होता है, मैं दो सौ साल का बुड्ढा हूँ।" वह एक-एक शब्द जोड़कर और जोर देकर कह रहा था। थोड़ी देर चुप रहा और उसने फिर पूछा—

"मुझे सन्निपात ज्वर हो गया था ?"

"हाँ।"

उसने घर की ओर नजर दौड़ाई और अस्पष्ट शब्दों में बोला—"हम कहाँ हैं ?"

"जारिस्तीन में।"

"और तुम......तुम यहाँ कैसे ?

"मैं तुम्हारे साथ हूँ।" और अपनी उपस्थित की कैफियत देते हुए उसने कहा—हम लोग तुम्हें अजनबी लोगों पर कैसे छोड़ सकते थे। अब्रासन और दूसरे साथियों की आज्ञा हुई और मुझे तुम्हारे साथ जाना पड़ा।

इसके बाद वह अपने साथियों के बारे में सवाल पर सवाल करने लगा। अन्ना ने उसे ज्यादा बोलने से मना किया। और पूछा—"जरा दूध पीओगे ?"

वंचक ने सिर हिलाया और करवट ली। उसका सिर लटक गया और खून आँखों में उतर आया। अन्ना की हाथों की कोमलता अपनी भवों पर अनुभव करके उसने आँखें खोलीं। यह प्रश्न उसे पीड़ा दिये हुए था—जब वह बेहोश था, किसने उसकी जरूरतों को देखा। क्या अन्ना ने ? लज्जा की एक लाली उसके गालों पर दौड़ गई। उसने पूछा—

"क्या अकेले तुम्हीं को मेरी देखभाल करनी पड़ी ?" अन्ना ने कहा—हाँ।

२

ज्वर तो दूर हुआ, लेकिन सन्निपात ने उसके कान को थोड़ा बहरा बना दिया। पार्टी से भेजे हुए डाक्टर ने अन्ना से कहा कि पूरा चंगा होने पर ही कान अच्छा होगा। वह धीरे धीरे अच्छा होने लगा। भेड़िये-सी भूख उसे लगती, लेकिन अन्ना उसके भोजन में संयम रखती। इसके चलते उनमें प्रायः झगड़े हो जाते।

"थोड़ा और दूध दो"—वह कहता।

"इससे ज्यादा नहीं दिया जा सकता"—वह बोलती।

"मैं कहता हूँ......मुझे और दो। क्या तुम मुझे भूखों मारना चाहती हो?"

इलिया, तुम जानते ही हो, मैं तुम्हें अधिक दे नहीं सकती।"

वह गुस्से में चुप हो जाता, अपना चेहरा दीवाल की ओर कर लेता लम्बी साँसे लेता और बोलने से इन्कार कर देता। यद्यपि अन्ना में उसके लिए मातृत्व-सा स्नेह होगया था, किन्तु वह जरा भी नहीं डिगती। थोड़ी देर के बाद वह करवट बदलता और भरे हुये चेहरे से गिड़गिड़ा कर बोलता।

"क्या मुझे थोड़ा मुरब्बा नहीं दे सकती हो? अन्ना मेरी प्यारी जरा सोचो......सुनो......यह अब डाक्टरों की लंतरानी है।"

लेकिन जब इतने पर भी हमेशा नाहीं मिला करती, तब वह कठोर शब्दों का इस्तेमाल करने लगता—

"तुम मेरे साथ इस तरह खेलवाड़ नहीं कर सकतीं। न तुम में दिल है। न जजबात। तुम औरत नहीं हो। मैं तुमसे घृणा करता हूँ।"

"मैंने जो कुछ सेवा की है, उसका पुरस्कार इससे बढ़कर और क्या मिल सकता है, भला!" वह भी अपने पर काबू नहीं कर पाती।

"मैंने तुम्हें सेवा करने को नहीं कहा। इसके लिये मेरी भर्त्सना तुम नहीं कर सकतीं। तुम अपनी जगह से नाजायज फायदा उठा रही हो। खैर, यही सही। मुझे कुछ मत दो। मुझे मरने दो। आह! मैं।"

अन्ना के होंठ काँप उठते, लेकिन, वह अपने पर काबू करती और सब धीरज पूर्वक बर्दाश्त करती। लेकिन, एक दिन जब वह दिन का खाना खा रहा था, अन्ना ने उसकी आँखों में आँसू चमकते देखा।

"तुम बिलकुल बच्चे हो!" वह बोल उठी और दौड़ती हुई रसोईघर में जाकर तश्तरी भर कर खाना ले आई।

"खाओ, खाओ, इलिया! अब नाराज मत होना। लो, यह पूरी तश्तरी।" यह कह कर उसने तश्तरी उसके हाथों में रख दी।

वंचक ने चाहा कि वह इन्कार कर दे, लेकिन, वह अपने लोभ को नहीं रोक सका। अपने आँसुओं को पोंछते वह समूची तश्तरी चट कर गया। एक अपराध पूर्ण हँसी उसके चेहरे पर थी और उसकी आँखें क्षमा मांग रही थीं। वह बोला—

"मैं बच्चे से भी बदतर हूँ। देखती ही हो, मैं तो रो ही पड़ा था।"

अन्ना ने उसकी पतली गर्दन, खुले बदन की कमीज से निकली उसकी सिकुड़ी छाती और उसकी हड्डी भरी बाँह पर नजर डाली। प्रेम और करुणा से चंचल उसके सूखे, पीले ललाट को पहली बार उसने चूम लिया।

## ३

कहीं एक पखवारे के बाद वह घूमने-फिरने लायक हुआ। उसकी लम्बी पतली टाँगें बार-बार काँप उठतीं और चेष्टा करके कहीं वह चल फिर पाता था।

"देखो, अन्ना. मैं चलने लगा।" वह चिल्ला उठा और तेजी से चलने की कोशिश करने लगा। लेकिन उसके भारी बोझ को उसकी टांगें बर्दाश्त नहीं कर सकीं और कोई सहारा खोजने लगा। उसके चेहरे पर हँसी थी, उसके ललाट पर रेखायें खिंची थी वह अपने प्रयत्न में असफल हो फिर बिछावन पर आ रहा।

यह कमरा नदी किनारे था। उसकी खिड़की से वोल्गा की बर्फीली धारा और उसके परे का जंगल दिखाई पड़ता था। अन्ना इसी खिड़की से बाहर देखने लगी। बंचक की बीमारियों ने उसे उसके बहुत ही निकट ला दिया था। यों तो रोस्टौव में ही जब उसने पहले इसे देखा था, उसने अनुभव किया था, कोई अदृश्य शक्ति दोनों को एक बंधन में रखने को प्रेरित कर रही है। अपनी जिन्दगी के उन्नीसवें बसंत में, जब कि वह एक तूफानी वातावरण से गुजर रही थी, अचानक उसने अपने को बंचक की ओर खिचता पाया था। बंचक की सादगी और सरलता ने उसके हृदय को अनायास मोह लिया था, जिन्दगी और मौत के संग्राम ने मानों उस पर मुहर लगा दी थी।

लम्बी और कठिन यात्रा के बाद जब वह जारिस्तान पहुँची थी, जिन्दगी के बोझ और दर्द से उसका दिल रो पड़ा था। जिसे वह प्रेम करने लगी थी, उसकी तकलीफों को इस नंगे रूप में देख कर वह व्यग्र हो जाती थी। अपने दाँतों को दबा कर वह उसके पाजामे को बदलती, उसके सिर पर कंघी देकर जुयें निकालती और काँपती हुई उसके नंगे मर्दाने शरीर को देखती, जिसके भीतर उसका प्यारा प्राण मुश्किल से गर्म था। हर चीज बगावत पैदा करती, लेकिन बाहरी गन्दगी उसके आन्तरिक स्नेह को नहीं कुचल पाती। इन सब का नतीजा यह हुआ कि उनका प्रेम और भी गहन-तल तक जा पहुँचा।

एक मरतबा बंचक ने पूछा—

"मैं समझता हूँ, इन सब बातों से तुम्हारे दिल में मेरे प्रति विरक्ति आ गई होगी ?"

"हाँ, यह एक सख्त इम्तिहान तो था ही।"

"किसका ? तुम्हारे आत्मसंयम का ?"

"नहीं, मेरी भावनाओं का।"

उसने करवट बदली और बहुत देर तक उसके होंठ काँपते रहे। इसके बाद दोनों में से किसी ने इसकी चर्चा नहीं चलाई। शब्द फालतू होते।

जब वह पूरा स्वस्थ हो चला, दोनों में जरा भी नाइत्तफाकी नहीं रह गई थी। वह हर मौका ढूँढ़ता, जिसमें वह उसकी सेवाओं का प्रतिदान दे सके, लेकिन, इसमें दिखावटपना जरा भी नहीं आने देता। वह रूखी लेकिन श्रद्धा भरी निगाहों से उसकी ओर देखता रहता।

४

जनवरी के अन्त में वे बोरोनिओज के लिए रवाना हुए। जब जारित्सीन का शहर पीछे छूट रहा था, अन्ना अपना हाथ उसके कंधे पर रख कर इस तरह बोली मानों वह कोई पिछली बातचीत की कड़ी पूरी कर रही है---

"हम अजीब हालत में एक दूसरे से मिले। अच्छा हुआ होता, अगर नहीं ही मिले होते। यह दिल से नहीं दिमाग से बोल रही हूँ और क्यों कह रही हूँ, तुम समझते ही हो। देखो..." उसकी उँगली बर्फ से चमकती बाहर की जमीन की ओर थी। "बाहर एक जिन्दगी पुकार रही है। वह हमारी जिन्दगी की पूरी ताकती चाहती है और मेरा ख्याल है, ऐसे मौकों पर भावनायें हमारे संघर्ष के लिए आवश्यक एकांत चिन्तना में बाधा डालती है। या तो हम पहले मिले होते, या बाद।"

"यह ठीक है ।" बंचक मुस्करा पड़ा और उसे नजदीक खींच लिया । "हम तुम दोनों एक होंगे और यह हमारी एकाग्रता को नष्ट नहीं करेगा बल्कि उसे मजबूत बनाएगा । एक डाली को तोड़ना आसान है, लेकिन दो डालियाँ आपस में जुड़ गई हों, तो मुश्किल है ।'

"यह उदाहरण सटीक नहीं बैठता, इलिया ।"

"शायद नहीं । ... लेकिन इस बातचीत का नतीजा ही क्या हो सकता है ?"

"ठीक कहते हो...।" वह कुछ असमंजस में पड़ी थी । "मुझे इसका अफसोस नहीं है कि हम यो आधी राह तक बढ़ आये हैं । व्यक्तिगत इच्छायें हमारे संघर्ष की कामना को नहीं दबा सकतीं ।"

"संघर्ष ही नहीं, विजय की भी ।" बंचक का गुस्सा उत्तेजना में तन चुका था ।

इन दोनों का प्रेम शारीरिक सम्पर्क से परे था, इस बात ने उनमें एक बचपन की सी मनोभावना भर रखी थी । इस बात की कल्पना से अन्ना के हृदय में अजीब आनन्द का भाव उमड़ आया, वह बोली---

"हम लोगों का सम्बन्ध वैसा नहीं है, जैसा ऐसे मामलों में हुआ करता है । जारिस्तीन में सब यही समझते थे कि हम दोनों पति-पत्नी हैं । यह कैसा भला है कि हममें क्षुद्रता के बंधन नहीं हैं । संघर्ष के मध्य में ही हम-तुम मिले और बिना उसे अपवित्र किये हम अपने प्रेम को नित बढ़ाते ही जाते हैं !"

"इसी को 'रोमांस' कहते हैं !" बंचक हँस पड़ा ।

"क्या ?" अन्ना ने पूछा ।

बंचक ने चुपचाप उसके सिर को थपथपा दिया ।

अन्ना बाहर के मैदान, गाँव, पोखरे और झरने को देख रही थी । उसके मुँह से अनायास ही शब्द निकलने लगे ।

"और, आज जो हालत है, उनमें व्यक्तिगत सुख की आकांक्षा कितनी तुच्छ और जहरीली है। क्रान्ति के बाद पीड़ित मानवता जो अक्षय सुख प्राप्त कर सकेगी, उसकी तुलना में यह क्या है ? हमें अपने को इस मुक्ति-यज्ञ में पूर्णतः निछावर कर देना चाहिये। हमें अवश्य,...अवश्य ही अपने को समूह में निहित कर देना चाहिये और और अपने विलग अस्तित्व को भुला देना चाहिये।" कहते-कहते वह मुस्कुरा पड़ी—"जानते हो, इलिया, मैं भविष्य जीवन की कल्पना एक सुदूर, सुदूर के सम्मोहक संगीत से करती हूँ। वह संगीत, जो हम स्वप्न में सुनते हैं।...तुमने कभी सपने में संगीत सुना है ? वह पृथक, कोमल रागिनी नहीं मालूम होती, बल्कि शक्तिशाली, वर्धमान, स्वर-ताल-संयुक्त सामगान-सा मालूम होता है। सौन्दर्य किसे प्यारा नहीं है ? मैं तो उसके छोटे से रूप पर भी मोहित हो जाती हूँ। और समाजवाद में जीवन कितना सौन्दर्यमय हो जायगा। न लड़ाइयाँ होंगी, न गरीबी होगी, न उत्पीड़न रहेगा, न राष्ट्रीय दीवारें रहेंगी।...कुछ नहीं। उफ् ! मानव ने इस पृथ्वी को कितनी गंदी, अपवित्र बना रखा है। आज कितनी यातनायें पृथ्वी पर बाढ़-सी फैली हुई हैं।" वह बंचक की ओर मुड़ कर उसका हाथ अपने हाथ में लेकर बोली—"बताओ, क्या इसके लिए मर जाना प्यारा नहीं है ? बताओ। हाँ, यदि इस पर विश्वास न रखा जाय, तो किस चीज पर ? तब आदमी जिन्दा ही क्यों रहे ? मैं सोचती हूँ, यदि मैं संघर्ष में ही मर जाऊँ..." उसने बंचक के हाथ को अपनी छाती से सटा लिया, जिससे वह उसकी छाती की धड़कन का अनुभव कर सके और उसकी आँखों में आँखें डाल कर धीमे स्वर में बोली—"और मैं प्रहार खाते ही तुरत न मर गई, तो मेरे कानों में अन्तिम शब्द जो सुनाई पड़ेंगे, वे उसी संभविष्य के संगीत के विजयी और सुन्दर गुञ्जार होंगे !"

बंचक सिर झुका कर सुन रहा था अन्ना के इस यौवन-सुलभ उद्गार ने उसके हृदय में चिराग सा जला दिया। गाड़ी की पहियों की खटखट और इंजिन के गर्जन के बीच भी वह भविष्य के संगीत का अनहद नाद

सुन रहा था। उसकी पीठ में एक अजीब ढंग की कँपकँपी महसूस हो रही थी।

५

बंचक और अन्ना वोरोनिश्रोज पहुँच कर यह मालूम होते ही कि जेन कोजाकों में गृहयुद्ध छिड़ा हुआ है, और चोरनेस्टौव की सेना ने कामेंस्का ले लिया है, तुरंत ही ग्लुबोका के लिए रवाना हो गये। वहाँ पहुँचते ही उसने मशीनगन का कमांड लिया और दूसरे ही दिन चोरनेस्टौव की फौज को पराजित करने में सफलता पूर्वक हाथ बँटाया।

चोरनेस्टौव के पराजय के बाद ही उसे अचानक अन्ना से जुदा होना पड़ा। एक ओर से,अन्ना चौंकी हुई आई और बोली—

"तुम्हें मालूम है। अब्राम्सन यहाँ आये हुए हैं। वह तुम्हें तुरत देखना चाहते हैं। और एक खबर और थी...मैं कल बाहर जा रही हूँ।"

"कहाँ ?" चकित होकर उससे देखा।

"अब्राम्सन, मैं और कई आदमी लुगांस्क जा रहे हैं, वहाँ प्रचार करना है"

"तो तुम मेरे दस्ते से भाग रही हो ?" उसने रूखे स्वर से कहा! वह हँस पड़ी और अपने रंङ्गीन चेहरे को उसकी छाती में डाल दिया।

"साफ कहूँ ? तुम्हारे दस्ते को छोड़ने का सदमा नहीं है, जितना तुम्हें छोड़ने का। लेकिन यह थोड़े दिनों के लिये है। मेरा ख्याल है, मैं वहाँ ज्यादा काम कर सकूँगी। प्रचार मेरे खून में ज्यादा है बनिस्बत मशीनगन के। उसने अपनी आंखें फाड़ कर कहा—"चाहे बंचक के कमांड में ही क्यों न हो ?"

वह झटपट परदे के अंदर गई और पोशाक बदल आई। वह सैनिक की वर्दी पहने थी। कमर में चमड़े की पट्टी थी। तुरत उसने बाल धोये थे,

थे गुच्छों में इधर उधर लटक रहे थे। उसने सुस्त और धीमी आवाज में कहा—"क्या आज की लडाई में भी तुम जाओगे।"

"क्यों ? जरूर ही। मैं हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठ सकता ?"

"मुझे सिर्फ यही कहना है......जरा होशियारी से रहना। ऐसा मेरे लिये; क्या तुम नहीं करोगे ? मैं एक जोड़ा फांजिल उनी मोजा छोड़े जा रही हूँ। सर्दी न खाना और पैर को गरम रखना। लुगांस्क से मैं तुम्हें लिखूँगी।"

उसकी आँखों की रोशनी अचानक गायब हो गई। अंतिम नमस्कार करते समय वह बोली—

"देखो, तुम्हें छोड़ते मुझे कम दर्द नहीं हो रहा। जब अब्राम्सन ने चलने को कहा, मैं खुश! हुई थी लेकिन देख रही हूँ, तुम्हारे बिना कैसा सूनापन लगेगा। खैर, नमस्कार।"

उसमें ठंडक थी, संयम था। लेकिन, उसके हृदय की गरमी का अनुभव बंचक स्पष्ट ही कर सका। वह उसे दरवाजे तक पहुँचाने गया। जब अंतिम बार वह नमस्कार कर रही थी, उसकी आँखों में पानी चमक रहा था। बंचक ने आनन्द का बहाना करते हुए कहा—

"हम रोस्टौव में मिलेंगे......अच्छी तरह रहना अन्ना।"

उसके जाते ही बचक ने एक अजीब सुनसानपन अनुभव किया। वह घर में गया, लेकिन उससे ऐसा निकल भागा जैसे भीतर आग लगी हो। वहाँ की हर चीज अन्ना-अन्ना पुकार रही थी। वह स्टेशन की ओर टहलने चला। लेकिन किसी चीज में उसका मन नहीं लग रहा था।

---

# घ

## १

क्रांति विरोधियों की अंतिम आशायें सड़ी लकड़ी सी टूट रहीं थीं। बौल्शेविकों का पंजा धीरे-धीरे डोन प्रांत की गर्दन में कसता जा रहा था। क्रांतिकारी फौज रोस्टोव के निकट पहुँचती जा रही थी और यह समझ कर कि यहाँ रहना सुरक्षित नहीं, २२ वीं फरवरी को कार्निलौव ने यह शहर छोड़ना तय किया।

उसी शाम को सैनिकों की एक लम्बी कतार रास्टोव से बाहर निकली। इनमें से अधिकांश सैनिक अफसरों की वर्दी पहने हुए थे, और कर्नल एवं कप्तान उनका कमांड कर रहे थे। कतार में जंकर और अफसरों की ऊँची से ऊँची पदवी धारी से लेकर नीची पदवी तक के लोग थे। उनके पीछे भगोड़ों का एक दल था, जिनमें साफ-सुथरे कपड़े पहने भलेमानसों और ऊँची ऐड़ी के जूते पहने भद्र महिलाओं की भरमार थी। उनकी एक कम्पनी में लिस्तनिस्की भी था।

शाम की अँधियारी घनी हो रही थी। बर्फ गिरने लगी थी। डोन से आती ठंढी हवा झकोरे ले रही थी। चलना दुश्वार था और बूटों में बर्फ घुस आती थी। जब वह जा रहा था, लिस्तनिस्की ने दो आदमियों को बातें करते सुना। उनमें एक अफसर था, दूसरा कोजाक।

"आप ने देखा, लिफ्टेनेंट साहब! रोडजियान्को, जो डूमा के सभापति रह चुके हैं, बूढ़े हैं, पैदल चलने को लाचार हैं।"

"रूस हम लोगों के लिए नरक बन रहा है ?"

"हाँ नरक ! लेकिन आग की जगह जहाँ बर्फ है, जाड़ा है, ठंडी हवा के झोंके हैं !" एक आदमी ने उसमें जोड़ दिया।

"तुम्हारे पास सिगरेट है !" एक लेफ्टिनेंट ने लिस्तनिस्की से पूछा ! लिस्तनिस्की ने उसे सिगरेट दिया, वह अपनी नाक का नेटा हाथ से पोंछता और फिर उँगलियों को कोट में रगड़ता धन्यवाद देने लगा।

"अच्छा प्रजातंत्री ढंग तुम अख्तियार किये जा रहे हो।" दूसरा लेफ्टिनेन्ट मुस्कुराया।

"अरे भाई जमाना ही ऐसा आया है। क्या करोगे ? किसके पास एक दर्जन रूमाल हैं ! "

लेफ्टिनेंट कर्नल ने जवाब नहीं दिया। जाड़े के मारे वह लम्बी लम्बी साँसें ले रहा था।

"रूस के ये रतन !" लिस्तनिस्की ने सोचा, जब उसने सड़क पर चलती हुई इस कतार पर एक नजर डाली। उसे अपने बाप, उनकी जमींदारी और अस्तीनिया की भी याद आई। वह कांप उठा। वह सोचने लगा—

"इन पांच हजार आदमियों में से हर एक के दिल में क्रोध और क्षोभ की नदी तरंगें ले रही होंगी। हरामजादों ने हमें अपने ही देश में बे घर बार का बना दिया है और चाहते हैं कि हमें बिलकुल नेस्तनाबूद कर दें। हम देखेंगे। कार्निलौव हमें मास्को की विजय दिला कर रहेगा।"

२

२४ मार्च तक कोर्निलौव ने अपनी इस सेना को रोस्टौव से थोड़ी दूर पर ही रक्खा, क्योंकि वह जनरल पौपौव की प्रतीक्षा कर रहा था, जो कि नोवोचेरकास से सोलह सौ सैनिक, पांच तोपों और चालीस मशीनगनों के साथ

पीछे हटा आ रहा था। २६ को पोपौव वहाँ पहुँचा और अपने घोड़े को खड़ा कर सीधे उस झोपड़े में गया, जिसमें कार्निलौव ठहरा हुआ था।

उसके पहुँचते ही एक छोटी-सी समिति परामर्श के लिये तुरन्त बैठ गई। कार्निलौव ने पोपौव की ओर घूरते हुए पूछा—

"जनरल, बताइये, आप के पास कितनी बड़ी सेना है ?"

"पन्द्रह सौ तलवारें, एक तोप और ४० मशीनगनें।"

"आप जानते ही हैं, हमें क्यों रौस्टौव से हट जाना पड़ा है। हम लोगों ने बस तय किया है कि हम कुबान की ओर कूँच करेंगे और उसके लिये हमने यह रास्ता चुना है। उसने टेबल पर रखे नक्शे पर पेन्सिल खींचते हुए कहा—"रास्ते में कुबान के कोजाक हमसे मिलते जायेंगे और छिटपुट लाल सैनिकों का हम सफाया करते चलेंगे। हम चाहते हैं कि आप की सेना भी हमारे साथ चले। अब जुदा-जुदा चलना ठीक नहीं।"

"मैं यह नहीं कर सकता।" पोपोव ने तेजी और दृढ़ता से जवाब दिया।

एलेक्सीव उसकी ओर थोड़ा झुक गया और बोला—"क्यों ? क्या मैं यह सवाल कर सकता हूँ ?"

"क्योंकि हम दोन का प्रांत छोड़ना नहीं चाहते। हम दोन के उत्तर में रह कर वहाँ की घटनाओं का निरीक्षण करते रहेंगे। हमारे दुश्मन का जोर दिन-दिन घटेगा ही और उनकी मदद में तोप या घुड़सवार भेजे नहीं जा सकते। हमने जिस जगह को चुना है, वहाँ हमें खुराक और आदमी मिलते जायँगे और वहाँ से रह कर हम गोरिल्ला लड़ाई भी जारी रखेंगे।"

वह बोल ही रहा था कि देखा, कोर्निलौव का सिर हिल रहा है। उसने कहना जारी रखा—

"मुझे खत्म करने दीजिये। एक प्रमुख बात और है। हमारे कोज़ाक कुबान जाना पसंद नहीं करेंगे—हमारा उनपर विश्वास भी नहीं है। अतः अच्छा यह हो कि आप लोग भी कुबान जाना रोक दें और हम सब उत्तरी

दोन के हिस्से में जमकर रहें । बसंत आने दीजिये, हमें नये आदमी भी मिलेंगे और नये उत्साह से हम धावा बोलेंगे ।"

कौर्निलोव ने एलेक्सीव की ओर देखा, क्योंकि वह भी असमंजस में पड़ गया था। एलेक्जीव तुरत निर्णय लेने का आदी था, वह बोल उठा—

"हमें कुबान की ओर ही चलना चाहिये, क्योंकि वहाँ बोल्शेविकों के के घेरे को तोड़ना आसान होगा और वहाँ हमारे पक्ष में लोग बढ़ भी रहे हैं।"

"लेकिन हमें सफलता नहीं मिली, तो ?" लुकोवस्की ने पूछा ?

नक्शे पर हाथ फेरते हुए एलेक्सीव बोला—"अगर सफलता नहीं मिलेगी, तो भी कौकेशस पहाड़ की ओर बढ़ना हमारे लिये आसान होगा।"

यों ही कुछ देर तक बातें होती रहीं। अधिकांश जनरलों के मत से कार्निलौव की बात मान ली गई। जब वहाँ से सब जुदा हुए, पौपौव का सहकारी सिदोरिन अपने दस्ते के नजदीक गया और चिल्लाया—"घोड़े !"

एक नौजवान कोजाक कप्तान उसके नजदीक आया और धीमे से पूछा—"क्या निर्णय हुआ है ?"

"बुरा नहीं। सिदोरिन धीरे और बनावटी मुस्कराहट मुँह पर लाते हुए बोला—"हमने कुबान जाने से इन्कार कर दिया है। हम तुरंत चल पड़ेंगे इजवारिन, तुम तैयार हो ?"

"बिल्कुल ! घोड़े लाये जा रहे हैं।"

घोड़े लाये गये और इजवारिन, ग्रिगर का दोस्त, अपने घोड़े पर चढ़ कर दूसरे कोजाकों को भी चलने का हुक्म देकर रवाना हुआ। पौपौव और सिदोरिन भी अपने घोड़े पर चढ़ कर चलते बने।

—:-:०:-:—

ॐ

१

अप्रैल का महीना था। मिशा कोशेवाई सुबह ही अपने जाल को देखने दोन की तरफ चला। जमीन पर मुलायम बर्फ की पर्त जमी थी, पैरों से दबती, टूटती। किनारे जाकर उसने नाव खोली और तेजी और मजबूती से उसे खेने लगा।

उसने जालों का निरीक्षण किया, मछलियाँ निकालीं, फिर जाल पानी में डाल नाव को लौटा ले चला। नाव पानी की धारा पर आप-आप जाने लगी। वह सिगरेट पीने लगा। सूरज उग रहा था—पूरब का आस्मान लाल-लाल था। मालूम होता था किसी ने नीले कालीन पर खून की धारा बहा दी हो। खून का रंग ऊपर जाकर सोने का बन रहा था। एक चिड़िया उड़ी जा रही थी। धूआँ पेड़ों की डाल से लड़खड़ाता बादलों की ओर बढ़ रहा था।

आज के शिकार को देखा—काफी मछलियाँ! क्यों न इनमें से कुछ को बेच दिया जाय और उनके पैसे से सेब खरीद कर उसका मुरब्बा डालने को माँ से कहा जाय?

घाट पर पहुँचने पर उसने देखा, एक आदमी बगीचे के घेरे के नजदीक बैठा है। नजदीक पहुँचने पर मालूम हुआ, यह तो वैलट है। वह पलथी मारे बैठा अखबार से बनाया एक लम्बा सिगरेट पी रहा है। उसकी आँखें चमक रही थीं, उसके गालों पर बाल बढ़ गये थे। मिशा ने पुकार कर कहा—

"क्या चाहते हो!"

"नजदीक आओ!"

"क्या मछली चाहिये ?"

"मछली लेकर मैं क्या करूँगा ?"—ऐसा कह कर जोर से खाँसते हुए वैलेट खड़ा हो गया। उसका लम्बा कोट जमीन तक लटक गया—उसके गंदे कानों को उसकी टोपी ढाँपे हुए थी। वह हाल ही में मैदान जंग से लौटा था और इस बदनामी के साथ कि वह लाल सैनिक है! कोजाकों ने उससे पूछा कि फौज की बरखास्तगी के बाद तुम कहाँ थे, किन्तु उसने टालमटूल का जवाब दिया। हाँ, इवान एलेक्सीविच और मिशा कोशवाई से उसने यह स्वीकार किया था कि वह यूक्रेन में लाल फौज में था, एक बार लड़ाई में पकड़ गया था, तो भाग निकला और फिर रोस्टौव की लाल सेना में भर्ती हुआ और अब तन्दुरुस्ती के खयाल से छुट्टी पर यहाँ आया है।

वैलेट ने टोपी उतारी, अपने बेतरतीब बालों को सम्हाला, चारो तरफ देखा, नाव के निकट पहुँचा और गुनगुनाया—

"कुछ बुरी बातें होने जा रही हैं—बुरी! यह मछलियाँ मारना छोड़ो! तुम सारी बातें भूल कर जाल के पीछे पड़े हो।"

"क्या बात है ? बताओ।" मिशा ने अपने पंजे में वैलेट के हाथ को लेते हुए कहा। वे दोनो पुराने दोस्त थे!

"कल मिंगुलिंस्क में लाल फौज बुरी तरह हराई गई। लड़ाई शुरू हो गई, भाई, कुहासा अब फटने को है।"

"कौन-सी लाल फौज ? वे मिंगुलिंस्क में कैसे पहुँचे ?"

"वे लोग उस जिले में मार्च कर रहे थे; कोजाकों ने उन्हें घेर लिया और कैदी बनाकर कारगिन भेज रहे हैं। उन्हें वहाँ कोर्ट मार्शल किया जायगा। आज तारतारस्क में भी फौजी जमावड़ा होगा।"

मिशा कोशेवाई ने नाव बाँध दी, मछलियाँ टोकरे में रख लीं और लम्बे डग से रवाना हुआ। उसके आगे वैलेट नौजवान घोड़े की तरह नाचता जा रहा था—उसकी बाहें झूल रही थी, उसके कोट की पूछ लहरा रही थी।

"इवान एलेक्सीविच ने मुझसे कहा है! उसने तुरंत मुझे मिल से बुलाया है—रात भर वहाँ काम होता रहता है। उसने यह बात सीधे घोड़े के मुँह से सुनी है। वीशेंस्का से एक अफसर आये हैं और मोरनौव के घर पर ठहरे हैं।"

मिशा के लड़ाई से पके और मुरझाये चेहरे पर चिन्ता की छाया दौड़ गई। वह वैलेट की ओर देखते हुए बोला—"क्या होने जा रहा है?"

"हमें गाँव छोड़ देना चाहिये।"

"कहाँ जायेंगे?"

"कामेंश्का चलें!"

"लेकिन वहाँ के कोज़ाक भी तो क्रान्तिविरोधी हैं!"

"तो वहाँ से भी अधिक जायें।"

"लेकिन हम निकल कैसे सकेंगे?"

"अगर तुम चाहो, तो सब हो सकता है? नहीं तो ठहरो और उन दुष्टों के हाथ पड़ो!" वैलेट गुर्राने लगा—"कहाँ, कहाँ? मैं क्या बताऊँ कि कहाँ? जरा चौकन्ने होकर चारों ओर देखो और आप ही बिल मिल जायगा!"

"नाराज मत हो—इवान क्या कह रहा था?"

"इवान हमारा साथ देने को तैयार है।"

जोर से मत बोलो, उधर एक औरत देख रही है।"

दोनो ने भय-विस्फारित नेत्रों से उस नवयुवती को देखा, जो खेत से गाय हँका रही थी। अगले चौमुहाने से मिशा पीछे मुड़ा।

"कहाँ जा रहे हो?" वैलेट ने आश्चर्य से पूछा।

बिना घूम कर देखे ही मिशा गुनगुनाया—

"मैं अपना जाल लेने जा रहा हूँ।"

"किसलिए?"

"मैं उसे क्यों खोने दूँ?"

"तो हम लोग जा रहे हैं ?" वैलेट ने खुशी में पूछा।

मिशा अपनी नाव की डांड हिलाता जाता बोला—

"तुम इवान के पास चलो। मैं जाल घर में रख कर आता हूँ।"

२

इवान ने यह खबर उन सबके पास पहुँचा दी थी, जो क्रान्ति के पक्ष में थे। उसने अपने छोटे बेटे को मेलेखौव-परिवार में भेजा और उसी के साथ ग्रिगर आया जो घर में बीमारी के कारण लाल सेना से छुट्टी लेकर आया था और यहीं पड़ा था। क्रिस्तोनिया इस तरह आ पहुँचा, जैसे उसे पहले ही खबर हो। मिशा कोशेवाई भी पहुँचा और वे आपस में बातें करने लगे। वे जल्द जल्द बातें कर रहे थे और कान लगाये हुए थे घंटे की ओर जो गाँव-भरके लोगों के फौजी जमावड़े के लिए तुरंत ही बजने वाला था।

"हमें तुरत भाग निकलना चाहिये, नहीं तो ये लोग हमें भी क्रान्तिविरोधी फौज में भर्ती होने को लाचार कर देंगे"—वैलेट के शब्दों में उत्तेजित करने वाले अंगारे भरे थे।

"कारण बताओ। हम क्यों भागें ?" क्रिस्तोनिया ने पूछा।

"हम क्यों भागें ?—क्या कहते हैं ? क्या तुम समझते हो कि वे हमें छोड़ देंगे ?"

"हम नहीं जायँगे ! बात यहीं खत्म होती है।"

"वे तुम्हें घसीट कर देखें तो ? हम बैल नहीं हैं, जो जिस-तिस हल में जोत दिये जायँ।"

इवान ने अपनी ऐंचातानी आँखों वाली बीवी को घर से बाहर भेज दिया और उत्तेजना में बोला—

"वे तुम्हें घसीट ले जायँगे। वैलेट का कहना ठीक है। लेकिन कहाँ भाग चलें, सवाल यह है।"

"हाँ यही सवाल है?" मिशा के स्वर में उसाँस थी।

"तुम जैसा चाहो, करो। क्या मैं तुम्हारी संगत के लिए परेशान हूँ?" वैलेट बोला—"मैं अकेले ही जाऊँगा। डरपोकों को मैं अपने साथ लेना भी नहीं चाहता। 'हम कहाँ जायँ "हम क्यों जायँ'—ऐसे सवाल करते रहो; जब वे तुम्हें बोल्शेविकों का साथ देने के कारण जेल की हवा खिलायँगे, तब समझोगे? ऐसा वक्त और हम यहाँ दिल्लगियों में लगे हैं!"

वैलेट की बातों को सुन कर ग्रिगर को गुस्सा आया, वह बोला—

"ऐसी बातें बंद करो। तुम्हारी हालत जुदा है, तुम चाहे जहाँ जा सकते हो। लेकिन हमें होशियारी से सोचना है, मेरी बीवी है, दो बच्चे हैं। मैं तुम्हारी तरह नंगधड़ंग नहीं।" कहते-कहते उसकी आँखें सिकुड़ गईं, दाँत निकल आये और चिल्ला उठा—"तुम अपनी जीभ ताबड़तोड़ हिला सकते हो—ओ ढोढ़े साँप! जैसे तुम थे, आज भी वैसे ही हो। सिवा देह पर की खलड़ी के तुम्हारे पास है क्या?"

"यों आँखें मत दिखाओ!" वैलेट ने चिल्ला कर कहा "तुम्हें अफसरी की शान है। चिल्लाओ मत! मैं तुम्हारी जरा भी परवाह नहीं करता!"

ग्रिगर अपने बाल-बच्चों के साथ घर की आराम की जिन्दगी बिता रहा था। जब उसने सुना था कि उसके जिले में लाल फौज घुस रही है, उसे बुरा लगा था। अब अपना सारा गुस्सा जैसे वह वैलेट पर ही उतारना चाह रहा हो, वह अपनी जगह से उछल कर वैलेट के नजदीक चला गया और घूसा तानते हुए बोला—

"चुप! बदमाश! हरामजादा! तुम हुक्म देने वाले कौन? भाग, जहाँ तेरे पैर ले जा सकें। मत बोल, भाग—जा!"

"बस करो ग्रिगर—यह कोई तरीका नहीं।" कोशेवाई ने ग्रिगर के घुस्से को वैलेट की नाक से हटाते हुए कहा। कोजाकों का यह चलन छोड़ो। तुम्हें शरम आनी चाहिये। तुम पर लानत है, ग्रिगर लानत!"

अपराधी की तरह काँपते हुए वैलेट उठा और दरवाजे तक गया। लेकिन वहाँ पर वह अपना गुस्सा सम्हाल न सका, वह मुड़ कर ग्रिगर से बोला, जो मुस्करा रहा था—

"और यह लाल फौज में था! जार के कुत्ते! तुम्हारे ऐसे आदमियों को हम गोली के घाट उतारते हैं।"

इस पर ग्रिगर उसपर इस तरह उछला, जैसे वह रबर का हो और उसकी गर्दन को दरवाजे पर रगड़ता हुआ बोला—

"निकलो, नहीं तो तेरी टाँग चीर दूँगा।"

इवान का सिर हिल रहा था और उसकी नाराज आँखें ग्रिगर पर गड़ी थीं। मिशा अपने होठों को काट रहा था, क्योंकि वह अपने गुस्से को पी जाना चाहता था।

"वह हमें क्यों समझाने बैठा था कि हमें क्या करना चाहिये? हमसे असहमत होने का उसके लिए कारण क्या था?" ग्रिगर मानों अपनी करतूत की कैफियत दे रहा था। क्रिस्तोनिया ने उसकी ओर ऐसे देखा, मानो वह उसका समर्थन कर रहा है। ग्रिगर बच्चों की तरह दाँत निकालता हुआ बोला—"मैं उसे पीट ही चुका था? बेचारे को खून बह चलता।"

"खैर, हम निर्णय कर लें कि क्या करना है।"

यह वाक्य मिशा कोशेवाई का था—जिसकी आँखों से आखिरी इरादा टपका पड़ता था। इवान का हृदय काँप गया, वह कोशिश करके बोला—

"क्यों? क्या? ग्रिगर का कहना एक तरह से ठीक है। किस तरह हम अपनी चीजें सम्हाल कर भाग सकते हैं। अपने परिवारों के बारे में

हमें सोचना पड़ेगा। हम जरा ठहरें।" इसी समय उसका ध्यान मिशा के उतावले इशारों की ओर गया। "हो सकता है, कुछ नहीं हो। कौन जानता है? सीट्रिकौव में उन्होंने दस्ते को तोड़ दिया है। दूसरा कौन आवेगा? हम जरा इन्तजार करें। मेरी बीवी है, बच्चा है, कपड़े फटे हैं, आटा भी नहीं। मैं किस तरह उन्हें छोड़ कर जाने की सोचूँ?"

मिशा ने उत्तेजना में अपनी भवें उठाईं और घड़े पर आँख गड़ा कर बोला—" मालूम होता है, तुम नहीं जाना चाहते।"

"मैं सोचता हूँ, जरा हम इन्तजार करें। भागने को तो हम कभी भी भाग सकते हैं। तुम क्या सोचते हो ग्रिगर, बोलो क्रिस्तोनिया!"

इवान और क्रिस्तोनिया का समर्थन पाकर ग्रिगर को उत्साह हुआ, वह उत्साहित स्वर में बोला—

"जरूर जरूर! यही तो मैं कहता था। इसीलिए तो मैं वैलेट पर बिगड़ा क्या हम इतना जल्द सबसे नाता तोड़ सकते हैं? एक-दो और चल दो! हमें इस पर विचार करना है—विचार करना है।"

ग्रिगर का कहना खत्म होता ही था कि गिरजा घर से खतरे की घंटी बज उठी और उसके स्वर ने जल, थल, पहाड़, मैदान, जंगल सबको गुंजायमान कर दिया।

"अच्छा, घंटा बज ही गया।" क्रिस्तोनिया ने पलकें मारी। "मैं अपनी नाव से उस पार के जंगल में चला। वे मुझे खोज तो लें।"

"तो क्या करना है?" कोशेवाई ने बूढ़े आदमी की तरह उठते हुए पूछा।

"हम तुरंत नहीं जाते।" सबकी ओर से ग्रिगर ने कहा।

मिशा ने अपनी भवें ऊपर कीं, अपने चेहरे से सुनहले बालों के गुच्छे को हटाते हुए कहा—

"तो आखिरी सलाम ! अब साफ हो गई कि हम लोगों के रास्ते अलग-अलग हैं।"

जब मिशा और वैलेट गाँव से बाहर निकल रहे थे, विधवा मेरिया मर्दानी आवाज में गा रही थी—

"आह ! उससे ज्यादा किसको तकलीफ है..."

उसकी दो संगिनें अब कोरस में साथ दे रही थीं—

"जितनी मेरे लड़ाई में गये खाविन्द को।
वह तोप खाने में काम करते हैं,
और हमेशा सुफी पर ध्यान लगाये रहते हैं।"

मिशा और वैलेट गाने को सुन रहे थे—

"तब चिट्ठी आई, जिसने बताया,
कि मेरे महबूब मारे गये।"
"ओहो वे मारे गये, मेरे प्यारे मारे गये,
"अब वे झाड़ी के नीचे मरे पड़े हैं।"

मेरिया के स्वर का उठान अब सातवें सुर पर था—

"उनके बालों की वे लटें, सुनहली लटें,
हवा में इधर-उधर उलट रही थीं।
और उनकी आँखें, वे काली आँखें—
एक काला कौवा नोच कर ले गया!"

## २

कोशवाई के जाने पर कुछ देर तक बाकी तीनों बैठे रहे। गिरजा का घंटा बज ही रहा था। इवान ने खिड़की से बाहर की ओर देखा। जमीन पर छत की छाया लोट रही थी। घास पर की ओस की बूँदें सूखी नहीं थीं।

आस्मान साफ, नीला, चमक रहा था। इवान ने क्रिस्तोनिया की लटकती हुई गर्दन को देखा।

"हो सकता है, यहीं खतम हो जाय। मिगुलिंस्क के लोगों ने लाल फौज की कमर तोड़ दी है और वे अब आगे बढ़ नहीं सकते।"

"नहीं।" ग्रिगर की समूची देह ऐंठ रही थी। "जब उन्होंने शुरू किया है, तो जारी रखेंगे। क्यों, हम लोग सभा के मैदान में नहीं चलेंगे ?"

इवान ऐलेक्सीविच ने हाथ बढ़ा कर अपनी टोपी ली और अपने सन्देह को व्यक्त करते हुए कहा—

"मालूम होता है, हममें जंग लग गई।"

किसी ने जवाब नहीं दिया। वे चुपचाप चलने लगे और मैदान की ओर मुड़े।

इवान चलते समय जमीन पर नजर गड़ाये था। वह सोच रहा था कि उसने गलत रास्ता पकड़ा है, अपनी आत्मा की पुकार की अवहेला की है। वैलेट और मिशा सही थे, उनका साथ देना जरूरी था। अपने काम को सही साबित करने की उसकी चेष्टायें व्यर्थ जा रही थीं। उसकी आत्मा की स्पष्ट पुकार उसे टुकड़े-टुकड़े कर रही थी, जैसे घोड़े की टाप बरफ को कुचलती—टुकड़े बनाती है। उसने एक निश्चय कर लिया कि ज्यों ही मौका मिलेगा वह फिर भाग कर बोल्शेविकों से जा मिलेगा। लेकिन यह बात उसने क्रिस्तोनिया या ग्रिगर से नहीं कही, क्योंकि वह जानता था कि उनके दिल में इस समय दूसरी ही तरह की बातें थीं। तीनों ने परिवार का बहाना करके वैलेट के प्रस्ताव को ठुकराया था। लेकिन उनमें से हर-एक समझता था कि यह बहाना उनके काम का औचित्य सिद्ध करने के लिए काफी नहीं है। तीनों ही एक-दूसरे से घबरा रहे थे, मानों उन्होंने कोई कुकर्म, पाप का काम किया है। वे चुप थे, लेकिन जब वे मेखौव के घर के निकट पहुँचे,

इवान अपने को जप्त न कर सका, वह बोल उठा :—

"छिपाने से क्या होता है ? हम लोग लड़ाई से बोल्शेविक बनकर लौटे थे, लेकिन अब हम अपनी जान बचाना चाह रहे हैं। दूसरे लड़ें और हम अपनी बीवियों के घाँघरे में सिर छुपायें ?"

"मैंने अपना हिस्सा लड़ दिया है अब दूसरे लड़ें।" ग्रिगर भौंक उठा और मुड़ गया।

"और वे होते कौन हैं ?" क्रिस्तोनिया ने कहा "लुटेरों की जमात ! हम क्यों उनका साथ दें ? इसी का नाम लाल फौज है—औरतों का सतीत्व लूटना, कोजाकों का धन छीनना। हमें अपने काम को तो समझना ही पड़ेगा। अंधे हमेशा कुएँ में गिरते हैं।"

"तुमने ये सब देखा है, क्रिस्तोनिया ?"— इवान ने रुखाई के साथ पूछा।

"लोग ऐसा कहते हैं।"

"आह रे लोग।"

## ४

सभा का मैदान लोगों से भरा था। कोजाकों के धारीदार पैजामे और ऊँची रोयेंदार टोपियाँ झलक रही थीं। गाँव का हर आदमी वहाँ हाजिर था—सिवा स्त्रियों के। बूढ़े लोग आगे खड़े थे, अपनी लकड़ियों को टेके हुए। उनके पीछे जवानों क ठट्ठ था, जिनमें कुछ ग्रिगर के साथी भी थे। बूढ़ों के बीच उसका बाप पैंतैलीमन अपनी उजली दाढ़ी हिलाते खड़ा था, उसकी बगल में मीरन ग्रिगरिविच था। जवानों केझुँड में उसने अपने भाई पियोत्रा को फौजी कोट पर सेंट जार्ज का तमगा लटकाये हुए देखा। सभा के बीच में एक टेबुल के सामने गाँव की क्रान्तिकारी

समिति का अध्यक्ष बैठा हुआ था और उसकी बगल में एक अफसर फौजी पोशाक में लैस खड़ा था। क्रान्तिकारी समिति का अध्यक्ष उस अफसर से गरम-गरम बातें कर रहा था। लोगों की आवाज से सारी सभा मधुछत्ते की तरह भन्न-भन्न कर रही थी। कोजाक आपस में गप्पें और चुहलें कर रहे थे, किन्तु, उनके चेहरे पर चिन्ता की रेखायें थीं। एक आदमी ने ऊब कर पुकारा—

"अब काम शुरू कीजिये, सब लोग आ चुके हैं।"

वह अफसर तन कर खड़ा हुआ, टोपी उतारी और ऐसी सादगी से बोला, मानो, वह अपने परिवार वालों से बातें कर रहा है—

"गाँव के बुजुर्गों, और मोर्चे के साथी कोजाक सैनिको! आपने सुना ही होगा कि सीट्रिकोव गाँव में क्या हुआ है? दो दिन पहले वहाँ लाल फौज का एक दस्ता आया था। जर्मन यूक्रेन की ओर बढ़ रहे हैं और उन्होंने लाल फौज वालों को पीछे खदेड़ दिया है। इन लाल सैनिकों ने गाँव में पहुँचते ही औरतों की इज्जत लूटना शुरू किया, कोजाकों की सम्पत्ति छानने लगे और गैर कानूनी ढंग से गिरफ्तारियाँ शुरू कर दी। बगल के गाँव वालों ने जब यह सब सुना, वे इन लाल लुटेरों पर टूट पड़े—उनमें से आधों को काट डाला, आधों को गिरफ्तार किया मिंगुलिस्क और कंजांस्क जिलों ने भी बोल्शेविकों को खदेड़ दिया है। माता-दोन की रक्षा में छोटे-बड़े कोजाक कंधे से कंधा भिड़ा कर लड़ रहे हैं। वीशंस्का में क्रान्तिकारी समिति को उखाड़ फेंका गया है और वहां जिला आतामन का चुनाव हो चुका है। अधिकांश गाँवों में भी ऐसा ही हो रहा है।"

इस पर बूढ़े फुसफुसाने लगे और क्रान्तिकारी समिति का अध्यक्ष इस तरह कस-मस करने लगा जैसे भेड़िये को किसी ने जाल में पकड़ लिया हो।

"हर जगह फौजी दस्ते तैयार किये जा रहे हैं। आपको भी उन जंगली

लुटेरों के झुंड से बचने के लिये अपना दस्ता तैयार कर लेना चाहिये। हमें अपनी सरकार भी बना लेना है। हम लाल सरकार नहीं चाहते—ये आजादी के नाम पर दुराचार फैलाते हैं। हम अपनी माँ-बहनों की इज्जत किसानों द्वारा नहीं लुटने देंगे। हम अपने गिरजाघरों को अपवित्र नहीं होने देंगे, अपने जान माल को बर्बाद नहीं जाने देंगे। क्यों बुजुर्गों, आप इससे सहमत हैं न ?"

सभा ने चिल्ला कर बताया—"हम सहमत हैं।" फिर अफसर एक ऐलान पढ़ने लगा। अध्यक्ष महाशय यह रवैया देख कागज-पत्तर छोड़ नौ दो ग्यारह हो गये।

ज्यों ही अफसर ऐलान पढ़ रहा था, ग्रिगर भीड़ से चुपके हटा और घर की ओर कदम बढ़ाया। उसे जाते देख मीरन ने पैतेंलीमन का ध्यान उस ओर आकृष्ट किया और अपने बाप के आग्रह पर वह मुड़ा ही था कि उसने कोजाकों को कहते सुना

"और, अफसर था !"

"अरे, यह खुद बोल्शेविक बन गया था" !

"इसने कोजाकों का खून बहाया था।"

"यह लाल शैतान है !"

ग्रिगर दांत पीस रहा था और वह मुड़ कर चला जाता अगर अपने बाप और भाई का ख्याल उसे न होता।

सभा में बूढ़ों की बातें रहीं—बहुमत उनके पक्ष में था। मीरन गाँव का आतामन चुना गया। पहले की तरह वोट लेकर चुनाव नहीं हुआ, सीधी-सादी बात थी—जो उसके पक्ष में हों वे दाहिनी ओर खड़े हों, और सब के सब आ खड़े हुये; सिवा एक बूढ़े चमार के, जिससे मीरन का पुराना झगड़ा था। मीरन के हाथ में जब आतामन का ताँबा-मढ़ा दंड दिया गया, तो वह जिम्मेदारी के बोझ से काँप उठा। लेकिन "नये आतामन की जय"

के नारे के बीच कौन उसकी लाचारी समझने जाता !

फिर उस अफसर ने गाँव का कमान्डर चुनने का प्रस्ताव पेश किया और अपनी ओर से ग्रिगर का नाम रक्खा क्योंकि उसने वीशेंस्का में ग्रिगर की तारीफें सुन रक्खी थीं। उसने कहा—"यह अच्छी बात हो कि आप एक ऐसे आदमी को कमान्डर बनायें, जो अफसर रह चुका हो। वह ज्यादा कामयाब होगा; थोड़ी हानि से ज्यादा फायदा पहुँचा सकेगा। उसके प्रस्ताव पर लोग हँसने लगे—

"अच्छा आदमी है।"

"ग्रिगर! अरे, वह तो बाँका लड़ाका है।"

"जरा बीच में खड़े हो भाई! बूढ़े लोग तुम्हे देखना चाहते हैं।"

पीछे से यारों ने धक्के दिये, लाल चेहरा लिये ग्रिगर बीच में खड़ा हुआ। अपनी छड़ी से उसके सामने सलीब का निशाना बनाते एक बुजुर्ग ने कहा—"बच्चों का नेतृत्व करो बेटा! तुम्हें सफलता मिले, तुम्हें ज्यादा तमगे मिलें।"

"पैंतेलीमन, खुदा ने कैसा अच्छा बेटा दिया तुम्हें!"

"जैसी देह गठीली, वैसा दिमाग पुख्ता।"

"भई लँगड़े, शराब पिलाना होगा।" एक ने उसके बाप से मखौल किया।

कमान्डर के चुनाव के बाद सेना में नाम लिखाने की बात आई। अफसर ने लोगों से नाम माँगे, लेकिन बीच ही में एक बुजुर्ग उठ कर खड़ा हुआ और कहने लगा—

"हुजूर, आप गांव के बारे में नहीं जानते, नहीं तो आपने ग्रिगर का नाम कमान्डर के लिए नहीं, मेरा किया होता। हम बूढ़े इस चुनाव को नापसंद करते हैं।"

"क्यों नहीं पसंद करते हैं? बात क्या है?

"हम उसका विश्वास कैसे कर सकते हैं, जब कि वह खुद लाल सेना में रह चुका है, उनका कमान्डर था, अभी दो महीने पहले वह उनमें से घायल होकर लौटा है।

अफसर भौंचक्के में आगया, उसने यह बात सुनी नहीं थी। इधर लोगों में हल्ला मचने लगा। बूढ़ों की क्या बात नौजवानों ने भी चुनाव के खिलाफ आवाज उठाई—

"यह पहले मुकाबले में ही फिर उनसे जा मिलेगा।"

"पियोत्रा को कमान्डर बनाया जाय!"

"ग्रिगर पहले सिपाही का काम करे—हमें विश्वास दिलावे।"

ये बातें सुन ग्रिगर को गुस्सा आया। वह चिल्ला पड़ा—

"तुम्हारी इस कसानी पर थूक! मैं तुम्हारा पद नहीं मंजूर कर सकता। तुम जहन्नुम जाओ।"

इस पर भयानक ही हल्ला मचा—

"नरक के कीड़े! यह तेरा तुर्की खून बोल रहा है।"

"यह चुप नहीं होगा। यह इसी तरह मोर्चे पर भी अफसरों से जबान-दराजी करता था।"

"पीछे हटो।"

"हम इसके नेतृत्व में लड़ेंगे! आह! तू!"

अब कहीं बहुत देर पर सभा में शान्ति हो सकी। जबान की लड़ाई से हाथापाई की नौबत आई। किसी की नाक से खून चूने लगा तो किसी की आँख के नीचे एक बड़ी-सी गुलेठी निकल आई।

जब चुप्पी फैली, तो पियोत्रा कमांडर चुना गया। किन्तु, सबसे अधिक दिक्कत तो अब पेश आई। जब अफसर ने लोगों से स्वयं सैनिकों में नाम लिखाने का आह्वान किया, तो एक भी नाम नहीं आया। जो लोग मोर्चे से लौटे थे, वे हिचकने लगे। उनमें से एक ने एक नौजवान से कहा—

"तुम क्यों नहीं नाम देते, अनिकी !"

अनिकी फुसफुसाया—

"मैं अभी बच्चा हूँ !......मेरे तो दाढ़ी भी नहीं आई ।"

"दिल्लगी मत करो ! क्या हमारा मखौल उड़ाना चाहते हो ।"—यह गुस्से की आवाज थी ।

"तुम अपने बेटे का नाम क्यों नहीं लिखाते ?"

उसी समय टेबुल से आवाज आई "प्रोखर जिकौव, क्या तुम्हारा नाम लिखें ?"

"मुझे मालूम नहीं ?"—उसने जवाब दिया ।

मिटका कीशुनौव उसी समय आगे बढ़ कर टेबुल के नजदीक आया और गम्भीरता से बोला—

"मेरा नाम लिख लो ।"

"दूसरा कौन नाम देता है ? फियोकोव, तुम क्या कहते हो ?"

"जरा मैं फँसा हुआ हूँ !" उसने आँखें नीची करते हुए कहा । लोग बेतहाशा हँस पड़े और एक बोला—

"अपनी बीबी को भी लेते जाना—वह उलझन सुलझा देगी ।"

यों ही हँसी दिल्लगी के वातावरण में साठ नाम आये । आखिरी नाम अकिस्तोनिया का था वह टेबुल के नजदीक गया और बोला "मेरा नाम लिख लो, लेकिन, मैं कहे देता हूँ, मैं लड़ूँगा नहीं ।"

"तो नाम क्यों देते हो ?" अफसर ने चिढ़ने के स्वर में पूछा ।

"मैं तमाशा देखूँगा, अफसर साहब ! तमाशा !"

"लिख लो ।" अफसर ने कंधे हिलाते हुए कहा ।

तिपहरिया के पहले सभा नहीं खत्म हुई । तय हुआ कि दूसरे ही दिन

मिंगुलिंस्क गाँव की मदद में यह दस्ता भेजा जाय ।

५

दूसरे दिन साठ में से सिर्फ चालिस सैनिक मैदान में हाजिर हुए । पियोत्रा खूब सज कर आया था । भूरा कोट हिलाते, ऊँचे बूट को चरमराते उसने अपने दस्ते का निरीक्षण किया । बहुत से सैनिकों के कंधों पर उनके पुराने रेजिमेंटों के ही नम्बर थे । जीन के थैले में खाने पीने की चीजें, कपड़े और मोर्चे से लाये कारतूस भरे थे । औरतें, बच्चे और बूढ़े उन्हें बिदा देने को एकत्र हो गये थे । पियोत्रा ने सैनिकों को पंक्ति में खड़ा किया । उनके कई रंग के घोड़े थे । उनकी वर्दियाँ भी तरह-तरह की थीं ।

"कम्पनी रवाना !" का हुक्म होते ही चाबुक सरसरा उठे और रेकाब पर खड़े हो, कोजाकों ने घोड़ों को दौड़ा दिया । हवा उनके चेहरे पर थपेड़े दे रही थी, घोड़ों की दुम हिल रही थी । थोड़ी दूर जाने पर घोड़े धीरे-धीरे चलने लगे, गप्पें होने लगीं, मखौल उड़ाये जाने लगे । वे इस उम्मीद में बढ़ रहे थे कि मिंगुलिस्क में कुछ होना-जाना नहीं है । बोलशेविक भाग चुके होंगे ।

और बात भी ऐसी ही हुई । पियोत्रा जब कारगिन गाँव में पहुँचा, वहाँ के आतामन ने उसे बताया कि इन्हें आगे बढ़ने की जरूरत नहीं । वहाँ का काम खत्म हो चुका है । आतामन ने पियोत्रा से कहा—

"नहीं, बेटा, मिंगुलिंस्क में तुम्हारी जरूरत नहीं रह गई । उन्होंने अपना काम अकेले कर लिया । कल ही मुझे तार मिला है । घर लौटो और अगले हुक्म का इन्तजार करो । कोज़ाकों को उत्साहित किये रहो । तारतारस्क ऐसा गाँव और चालीस ही सैनिक ! छीः । उन्हें बताओ कि उनकी जान, माल खतरे में है । बिदा—तुम्हारी यात्रा शुभ हो ।"

जिस उत्साह में वे लौटे उसका क्या कहना ? जाते समय घोड़े सिर्फ दुलकी चाल में आये थे, लेकिन लौटने पर तो अब वे सरपट भागे जा रहे थे। उनकी टाप से जमीन कड़ाम-कड़ाम बोल रही थी।

तारतारस्क में वे आधी रात को लौटे। अपनी अगवानी की सूचना में अनिकुश्का ने अपनी आस्ट्रियन बंदूक से एक गोली दागी। इसका जवाब कुत्तों ने स्वागत की अवाज में दिया। घोड़े घर की सूंघ पाकर हिन-हिना उठे। गांव में वे अलग-अलग दिशाओं में, अपने-अपने घर को गये।

जब पियोत्रा दरवाजे पर पहुँचा, पैंतेलीमन ने आगे बढ़कर घोड़े की रास थाम्ही और जीन उतार कर उसे अस्तबल में बाँध दिया।। बाप बेटे आँगन में घुस रहे थे, बूढ़े ने पूँछा—

"लड़ाई खत्म होगई ?"

"हाँ !"

"अच्छा हुआ। इसकी खबर हमें फिर न सुननी पड़े।"

दारिमा गाढ़ी नींद से उठ कर अँगड़ाई लेती हुई अपने पति के लिए खाना लाने चली। ग्रिगर आधे कपड़े में भाई के पास बाल खुजलाते पहुँचा और दिल्लगी के स्वर में पूछा—

"तो, आपने उन्हें मार भगाया !"

"पहले भूख भगाने दो भाई ! कुछ बचा है ?"

६

अप्रील के पहले तक लड़ाई की कोई भनक या गंध नहीं मिली। ईस्टर के शनिवार को वीशेंस्का से एक सवार घोड़ा उड़ाता मीरन ग्रिगरिविच के दरवाजे पर पहुँचा और उसे देखते ही पूछा—

"यहाँ के आतामन आप ही हैं ?"

"हाँ।"

"तो कोजाकों को तुरत तैयार कीजिये। पोद्तील्कौव अपनी लाल सेना नागोलिंस्क जिले में बढ़ाये जा रहा है। यह हुक्मनामा लीजिये।" उसने पसीने से लथपथ अपनी टोपी उतारी और उसके भीतर से कागज निकाल कर दिया।

जेनरल आलफटोव का हुक्म बहुत सख्त था। उसने धमकी दी थी कि जो सेना में नहीं जायगा, उससे कोज़ाक की पदवी छीन ली जायगी। इससे दूसरे ही दिन जो कुमुक तैयार हुई, उसमें चालीस नहीं सौ से ऊपर कोज़ाक थे। कुछ बढ़े भी थे, जो बोल्शविकों को देखने की उत्कंठा में शामिल हो गये थे।

ग्रिगर का घोड़ा कतार के पीछे था। आसमान में बादल छाये थे, बूँदा बूँदी हो रही थी। एक चील पहाड़ के ऊपर मँड़रा रही थी। मैदान वर्षा के कारण हरा दीखता था।

जब वे कारगिन गांव से आगे बढ़ रहे थे, एक चरवाहा उन्हें दिखाई पड़ा। वह अपनी चाबुक फटकारता इनके पास पहुँचा और बोला—"जरा तम्बाकू दीजियेगा, चाचा जी!"

"तम्बाकू! यह लो!" ग्रिगर ने कहा।

वह चरवाहा ग्रिगर के पास पहुँचा और उसके चेहरे को घूरता हुआ बोला—

"थोड़ी देर में ही आप लाशों को देखेंगे। ज्योंही पहाड़ी की उस तरफ पहुँचे। कल हमारे कोजकों ने लाल कैदियों को खदेड़ा और कत्ल किया। मैं उस झाड़ी में छिपा था, जहां से उनका टुकड़े-टुकड़े किया जाना देखता रहा। आह! भयानक दृश्य था! जब तलवारें उठाई जातीं, वे चिल्लाते और भागते। बाद में मैंने जाकर देखा, वे चीन-देश के लगते थे। एक को कंधे से नीचे तक दो टुकड़े कर डाला गया था, मैंने उसके दिल को धुक-धुक करते और उसके नीले जिगर को देखा। उफ! भयानक था!"

वह इनके चेहरे को देखकर ताज्जुब कर रहा था, जिन पर इन हत्याओं का कोई असर नहीं हो रहा था। फिर तम्बाकू ले, सिगरेट बना, उसे जला कर पीता हुआ वह अपने ढोरों के नजदीक दौड़ गया।

सड़क के किनारे एक छिछले छेद में, जिसे बरसात के पानी ने धो दिया था, थोड़ी-सी मिट्टी के छिड़काव के नीचे लाल सैनिकों की लाशें पड़ी हुई थीं। एक सीसे-सा नीला चेहरा ऊपर दिखाई पड़ रहा था, जिसके होठों पर खून के दाग थे। उसका ऊनी पाजामें वाला एक पैर जमीन से बाहर निकल आया था।

"इसे अच्छी तरह दफन कर दिया होता! ये सूअर!"—क्रिस्तोनिया के मुँह से निकला। उसने अपने घोड़े को चाबुक लगाई और ग्रिगर से भी आगे बढ़ गया।

"आखिर दोन की मिट्टी पर भी खून बह कर रहा!"--सोमिलिन मुस्कुराया, यद्यपि उसके गाल की चमड़ी सिकुड़ रही थी—"ग्रिगर, तुमने उनका खून सूँघा! उफ! वह कैसा महक रहा है!,,

# च

## १

सुबह को मौसम में एक अजीब तब्दीली आई। नौ बजे तक बहुत ही गर्मी थी, लेकिन, दोपहर होते होते दक्षिणी हवा जोरों से बहने लगी, आसमान पर बादल छा गये और रोस्टोव शहर के इर्द-गिर्द के चीड़ के पेड़ों के पत्तों से एक अजीब ढंग की सुगंध फैलने लगी।

कल बंचक और अन्ना ने एक छोटा सा दस्ता लेकर अराजकवादियों की एक टुकड़ी को निरस्त्र किया था। उस समय बंचक के चेहरे पर झुर्रियों की रेखायें थी। लेकिन अब इस दक्षिणी हवा ने उसकी चिन्ताओं को उड़ा दिया था और वह दरवाजे पर बैठा अपनी आँखें अन्ना के चेहरे पर गड़ाये स्टोव जला रहा था। अन्ना के चेहरे पर व्यग की हँसी की गरमी खेलवाड़ कर रही थी।

जलपान के पहले बंचक ने कहा था, वह भुँजिया और शोरवा बनाने में उस्ताद है। अन्ना ने आश्चर्य प्रगट करते हुये कहा था—"क्या सच? या दिल्लगी कर रहे हो?"

"सच!"

"कहाँ सीखा?"

"पोलैंड की एक स्त्री ने इस लड़ाई के दरम्यान मुझे सिखलाया था!"

"अच्छा, बनाओ तो? मुझे तो सन्देह है।"

इसीलिये यह स्टोव जल रहा है। इसीलिए बंचक की पेशानी पर रेखायें

और अन्ना की मुस्कुराहट। इस मुस्कुराहट में ऐसी चुभन थी कि वह व्याकुल हो उठा। कड़ाही में रखे आलू को भूनता हुआ वह बोला—

"यों घूरने से कुछ बन नहीं पायगा। और यह स्टोव है या भट्ठी ?"

अन्ना धीरे से बोली, जैसे सपने में बक रही हो—

"तुम तो रसोइया थे न ? कौन-कौन चीजें पकाना जानते हो ?"

"रसोई-विभाग को छोड़ के तुमने अच्छा नहीं किया ?"

"सुनो, तुम बहुत बढ़ी जा रही हो।"

अपनी अलकों के एक गुच्छे से खिलवाड़ करती और उसे उँगली में लपेटती अन्ना ने पलकें उठा कर बंचक की ओर देखा और खिल-खिला पड़ी—

"मैं आज ही सबसे कह दूँगी, कि तुम मशीनगन चलाना खाक जानो; तुम तो किसी बड़े घर से रसोइया थे।"

बंचक की उदासी की हद नहीं रही, जब शोरवे की जगह उसने महकती हुई, बुरे स्वाद की, एक अजीब चीज तैयार की। लेकिन अन्ना बड़े प्रेम से उसे खाती हुई बोलती गई—

"उतना बुरा नहीं ! अच्छा शोरवा है ! जरा तीता है, बस।"

"क्या सचमुच अच्छा है ? वह उत्साह में बोला—"थोड़ा प्याज डाला गया होता, तो और भी..." वह अपने होंठों को चाट रहा था।

खाने के बाद अन्ना उदास चेहरे से बैठ गई, जम्हाई ली, कुछ सोचने लगी, बंचक की बातों का जवाब उसने नहीं दिया। फिर दाँत से तिनके कुचलती वह बगीचे के बाड़े से सटकर खड़ी हो गई। बंचक ने उसके सिर को अपने कंधे से सटाते, उसके बालों को सूँघते पूछा—

"क्यों इस तरह चुपचाप हो गई ! क्या बात है ?"

वह अपनी पपनियों को नीची करती, उसकी ओर घूरती रही, फिर अपनी चोली के बटनों को बार-बार खोलने और लगाने लगी।

“क्या तुम शहर जा रहे हो ?” उसने पूछा।उन्हें जोर से दबाये रही। प्रतीक्षा किये ही बोली—“मालूम होता है, मुझे फौज उन्होंने उजले कोजाकों
ड़लिया !”
उत्साहित करते हुये

“क्यों ?”

उसने कंधे हिलाये, चीड़ के पत्तों पर की किरणों की खे मारे पास इनकी डाली फिर बाड़े पर छाती का बोझ देती हुई बोली—

“मैंने इन्तज़ार किया .....मुझे यकीन न होता था। लो गई खोदने समझ गई। सात, साढ़े सात महीने में मैं माँ बन जाऊँगी।” राई।

समुद्र की हवा पेड़ के पत्तों को हिलाती अन्ना की लटों को उस चेहरे पर बिखेर रही थी। अन्ना ने उन्हें सम्हाला नहीं। बंचक चुप खड़ा था। उसने अन्ना के हाथों को थपथपाया, किन्तु, वह इस चुमकार से जैसे कुछ अप्रतिहत-सी हुई और डगमगाते पैरों से घर में लौट आई। बंचक उसके पीछे-पीछे घर में आया, किवाड़ लगा दिया और बेचैनी से बोल उठा—

“तो अब क्या होगा ?”

“कुछ नहीं।” उसने लापरवाही से कहा।

चुप्पी से वेदना बढ़ रही थी। बंचक ने शब्दों की तलाश की, लेकिन विचारों का कोई सिलसिला न बैठा—

“उसे आने दो। तब तक क्रान्तिविरोधियों को हम सर कर चुके होंगे। क्यों, क्या बच्चा होना बुरा है ?” अचानक जैसे उसे रास्ता मिल गया। वह उत्साह में कहने लगा—“बच्चा ! अन्ना, कैसी अच्छी बात हो कि तुम्हें बेटा हो—मजबूत, तन्दुरुस्त, मोटा बेटा ! मैं फिर ताले का रोजगार शुरू करूँगा। आह ! हमारी जिन्दगी कितनी सुखकर होगी। तीन बरस के बाद तुम भी मोटी होने लगोगी, और मेरी भी तोंद निकल आयगी। मैं अपना घर बनाऊँगा, हमारी खिड़की पर लवंग-लता लटकती होगी, हमारे पिंजड़े में

और अन्ना की मुस्कुराहटो हम मित्रों को दावत देंगे— तुम केक बनाना और
हो उठा । कड़ाही में रम्बेन पाय तो उसांसे लेना । हम पैसे बचायेंगे..."

"यों घूरने से कुछ अनिच्छा से ही मुस्कराती रही, लेकिन, अन्त में
अन्ना धीरे से बो

"तुम तो रसोदर्शी हो !"

"रसोई-वि हे यह पसंद नहीं ?"

"सुनो, । में तो अच्छा ही लगता है ।"

अप

लपेट

कि

## २

दोनों साथ-साथ शहर में गये । रोस्टोव में सैनिकों, मज़दूरों और गरीब लोगों का जमघट जुटा था । जहाँ तहाँ चिपकाये हुक्मनामों और ऐलानों के फटे कागज हवा में फर-फर आवाज कर रहे थे । बे-बुहारी गलियों से घोड़ों की लीद और गरम पत्थर की गंध आ रही थी । शहर के इस रूप-परिवर्तन पर अन्ना का ध्यान गया और वह बोली—

"देखो, इलिया, शहर कैसा सादा मालूम होता है । न कहीं भड़कीली पोशाक या तिरछी टोपी । सब पर पत्थर का रंग ।"

"शहर गिरगिट की तरह होता । उजले लोगों को आने दो, देखोगी, यह कैसा रंग बदल देता है ।" कह कर वह मुस्कराया । चुपचाप वे देर तक टहलते रहे और चुपचाप ही वे जुदा हुए ।

शाम को वे फिर मिले, जब पोद्तील्कोव ने दोन की कार्यसमिति की बैठक बुलाई । नोवो चेरकास्क से कोजाकों का एक दस्ता इस ओर बढ़ा आ रहा था, उन्हें कैसे रोका जाय यही विचार करना था । निर्णय के अनुसार बंचक और अन्ना दोनों एक टुकड़ी के साथ रवाना हुये ।

"तुम लौट जाओ ।"—बंचक ने उसका हाथ छूते हुये, आजिजी से कहा ।

लेकिन उसने अपने होठों को हिलाया तक नहीं, उन्हें जोर से दबाये रही।

शहर के आखिरी छोर से वे निकले ही थे कि उन्होंने उजले कोजाकों को बढ़ते हुये देखा। पोद्तील्कौव ने लाल सैनिकों को उत्साहित करते हुये कहा—

"कारतूसों की परवाह मत करना—चलाये जाओ; हमारे पास इनकी कमी नहीं।"

बंचक ने होठों के तीते पसीने को जीभ से चाटा, जल्दी से खाई खोदने के औजार से एक गड्ढा खोदा और उसीमें अपनी मशीनगन खड़ी कराई। मशीन गन में कारतूस की पेटी लगा दी गई।

बंचक की इस मशीनगन का चलाने बाला मैक्सिम प्रायाजनोव था, जो तारतारस्क गांव का ही था। कुलेपोव के दस्ते से लड़ते समय उसका घोड़ा मर गया था, जब उसका घोड़ा उसकी जाँघ के नीचे मर गया, उसने उसकी जीन खोल ली और तीन मील तक उसे ढोते आया। फिर उसने देखा की इस बोझ के साथ वह बचकर नहीं निकल सकता, तो जीन की सभी धातु की चीजें उसने नोच लीं और वहां से चलता बना। रोस्टौव में आकर जुआ खेलने में उसने ये चीजें भी खो दीं और वह चाँदी भी मूँठ वाली तल्वार भी जिसे लड़ाई में उसने एक कप्तान से छीना था। अन्त में अपनी वर्दी, पतलून और कोट भी उसने जूये के लिए बेच डाला। बंचक की टुकड़ी मे शामिल होने के समय वह करीब-करीब नंगा था। वह धीरे-धीरे सम्हल पाता, लेकिन, आज पहली लड़ाई में ही एक गोली उसके सिर में लगी। उसकी आँखें निकल कर छाती पर टपक पड़ीं और माथे क पीछे से खून की धारा बहने लगी। यह स्पष्ट था कि तारतारस्क का यह लाल कोजाक, जो कभी घोड़े चुराया करता था, हाल ही में शराबी बन चुका था, इस संसार से प्रस्थान कर चुका था।

बंचक ने मृत्य-पीड़ा में छटपटाते शरीर को देखा और मशीनगन के

कुन्दे से खून को अच्छी तरह पोंछ डाला। थोड़ी देर में ही उसे पीछे हटने को लाचार होना पड़ा। बंचक मशीनगन को घसीटते हुए पीछे जा रहा था और मैक्सिम की लाश वहीं हुई थी—ठंडी, मोटी, कमीज से जिसका चेहरा ढँक दिया गया था!

## ३

शहर के पहले चौराहे पर लाल सैनिकों ने मोर्चा बनाया। फटी टोपी पहने एक सैनिक ने बंचक को मशीनगन खड़ी करने में मदद की और बाकी लोग सड़क पर बैरिकेड बनाने लगे। अन्ना बंचक की बगल में लेटी थी।

अचानक दाहिनी ओर की दूसरी गली से पैरों की आवाज आई और नौ-दस लाल सैनिक कोने पा आकर खड़े हो गये। उनमें से एक चिल्लाया—"वे आ रहे हैं।"

एक क्षण में ही चौराहा सूना हो गया। फिर धूल की आँधी सी देखी गई औ एक कोज़ाक घुड़सवार अपनी टोपी में उजला फीता लगाये और बगल में तलवार हिलाते कोने पर आ खड़ा हुआ। उसने घोड़े की लगाम इतने ज़ोर खींची कि घोड़ा पिछले पैरों पर गिर गया। बंचक ने अपने रिवाल्वर से गोली चलाई। घोड़े पर झुक कर वह कोजाक उछल पड़ा। बेरीकेड के पीछे के सैनिक दुविधा में पड़ गये और उनमें से दो दीवाल के सहारे भाग कर फाटक पर लेट गये। ऐसा मालूम होता था कि दूसरे ही मिनट में ये सैनिक भाग खड़े होंगे।

उसके बाद जो कुछ हुआ, उसके सिर्फ एक क्षण की ही याद बंचक को है। अपने सिर से बँधे रूमाल को पीछे करती, उत्तेजना में अभिभूत अन्ना राइफल लेकर खड़ी हुई, चारों ओर देखा, उस घर की ओर इशारा किया जिस ओर वह कोजाक भागा था, फिर एक अपरिचित टूटी आवाज में

चिल्ला उठी "पीछे आओ !" और अनिश्चित, डगमगाते पैरों से वह कोने की ओर दौड़ पड़ी।

वंचक्र जमीन पर खड़ा हुआ। उसके मुह से चीख निकल पड़ी। बगल के सैनिक से एक राइफल छीन कर वह अन्ना के पीछे दौड़ा। वह हाँफ रहा था, उसके पैर काँप रहे थे, उसके चेहरे पर स्याही दौड़ रही थी, वह चिल्ला कर अन्ना को रुकने के लिये कहना चाहता था किन्तु कह नहीं पाता था। उसके पीछे कई लोग दौड़े आ रहे थे जिनकी हाँफी वह सुनता था। उसे यह अनुभव हो रहा था कि मुझे ऐसी भयानक चीज होने जा रही है, जिसकी क्षति-पूर्ति हो नहीं सकती।

कोने तक पहुँचते-पहुँचते वह अन्ना की बगल में था। वह जोरों से कोजाकों की ओर दौड़ा जो घोड़ों को कुदा रहे थे और उनपर ताबड़तोड़ गोलियाँ चलाने लगा। गोलियों की सनसानाहट ! अन्ना की एक क्षीण, दर्दीली चीख। तब उसने उसे सड़क पर गिरते देखा—उसके हाथ फैले, आँखे सूनी ! उसने कोजाकों को मुड़ कर भागते नहीं देखा, अन्ना से उत्साह की आग पाकर लाल सैनिकों को उनका पीछा करते भी नहीं देखा। वह ! सिर्फ वह उसकी आँखों में थी, वह जो उसके पैर के नजदीक आकर गिर चुकी थी। उसने उसे उलटा और चाहा कि कंधे पर उठा कर ले भागे। लेकिन उसने देखा कि उसकी बगल से खून की धारा निकल रही है और उसकी नीली चोली लाल, सुर्ख बन रही है ! उसने समझ लिया कि उसे दमदम की गोली लागी है, उसने समझ लिया कि वह मर रही है—उसने उसकी मुरझाई आँखों में मृत्यु देख ली !

किस भावुकता में उसने उन आंखों को, उन मर्दाने हाथों को चूमा, उसे जगाना चाहा, जोर से झकझोरा कि वह कहीं जिन्दा हो उठे !......उसी समय किसी ने उसे एक तरफ हटा दिया और उसको लेकर आँगन में छाया के नीचे रख दिया !

एक सैनिक ने घाव में रूई भर दी और खून से सने टुकड़ों को निकाल फेंका। अपने पर काबू करके बंचक ने उसकी चोली के बटनों को खोल दिया; अपनी कमीज के एक टुकड़े को फाड़ कर उसे तर कर घाव को उससे दबाया। लेकिन, खून उस कपड़े को भी भिगो कर गिरता ही रहा। उसने उसके चेहरे को नीला पड़ते देखा और उसके काले बन रहे होंठों पर पीड़ा का कम्पन देखा। वह मुँह खोल कर हवा लेना चाहती थी उसके फेफड़े साँय-साँय कर रहे थे। हवा फिर उसके मुँह से और घाव से निकल गई। उसने उसकी चोली को निर्लज्जता से फाड़ डाला और मौत के पसीने से ढँपी उसकी देह को नंगी कर दिया। बड़ी मुश्किल से उन्होंने उसके घाव के खून को थोड़ी देर के लिये रोका। कुछ मिनट बाद—उसे होश आया। उसकी धँसी आँखें बंचक को एक क्षण के लिए घूरती रहीं, फिर काँपती पलकों ने उन्हें ढँक लिया।

"पानी!...गर्मी -" वह चीख पड़ी छटपट करती। वह आँसू बहा कर रोने लगी—"मैं जीना चाहती हूँ। इलिया, प्यारे! आह!"

बंचक ने अपने फूले हुए होठों को उसके जलते हुए गालों पर रख दिया वह उसकी छाती पर पानी बरसाने लगा। यह पानी गर्दन की हड्डी के खड्ड में इकठा हुआ फिर एक क्षण में ही सूख गया। वह मृत्यु की आग में जल रही थी वह छटपटाने लगी और उसके हाथ से निकल गई।

"आह, गर्मी!...आग!"

उसकी ताकत उसे छोड़ रही थी। वह धीरे-धीरे शान्त होती जाती थी और अब बड़बड़ा रही थी—

"इलिया, लेकिन क्यों? हाँ, हाँ, यह कितना आसान है...तुम अजीब आदमी हो...कितना आसान है यह......इलिया प्यारे, तुम......अरे, वहाँ माँ हैं......" उसने आधी आँख खोली और अपनी पीड़ा और भय पर कब्जा करने से खयाल वह अंटसंट बकने लगी—"पहले जरा सी... चोट

और जलन......अब तो जैसे चिता पर जल रही हूँ......मालूम होता है......मैं मर रही हूँ।" जब उसने बंचकको नाँही के लहजे में सिर हिलाते देखा, तब वह क्रोध में बोली—"नहीं! भीतर खून निकला जा रहा है। मेरे फेफड़ों में खून भर रहा है......बड़ी मुश्किल...आह, सांस लेना कितना मुश्किल !"

वह बहुत बोलने लगी और रह-रह कर उत्तेजित हो जाती। मानो वह कहना चाहती है, लेकिन कह नहीं पाती। भय के साथ बंचक ने देखा उसके चेहरे से नूर टपक रहा है, फिर एक क्षण में ही उसकी पेशानी पीली पड़ गई। बंचक ने उसके हाथ की ओर ध्यान दिया, जो अब निर्जीव-सा पड़ा था और उसके गुलाबी नखों पर कालिमा छा चुकी थी।

"पानी ! छाती पर कितनी गर्मी !"

बंचक घर पानी लेने के लिए दौड़। जब वह लौटा, उसने छाया में अन्ना की साँस की आवाज नहीं सुनी। डूबने को जा रहे सूरज की किरणें उसके चेहरे पर पड़ रही थीं। अपने हाथ को उसके कंधे से लपेटता उसने उसे उठाया और उसकी नुकीली नाक, आँखों के नीचे के काले निशान और काली भवों के नीचे की अपलक पलकों को देखा। उसका सर नीचे झुका जा रहा था और उसकी पतली गरदन पर नाड़ियाँ आखिरी बार सर पटक रहीं थीं।

अपने ठंडे अधरों को उसकी काली अधमुँदी पलकों पर रख कर वह चिल्ला उठा—

"प्रियतमे !...अन्ने !"

तब वह खड़ा हुआ, मुड़ गया, अस्वाभाविक ढंग से तन कर चलने लगा उसकी बाहें देह से सटी थीं, जरा भी नहीं झूल रही थीं। जैसे वह अंधा हो, दरवाजे के खम्भे से वह टकरा गया और भूत की तरह चिल्लाता चारों खाने चित गिर पड़ा। फेन भरे होठों से अस्पष्ट स्वर में चीखते

हुए वह अधमरे जानवर की तरह हाथ-पैर से रेंगता हुआ जमीन से सिर सटाये आगे बढ़ा—तीनों लाल सैनिक उसकी ओर निर्निमेष दृष्टि से देख रहे थे—मानवी करुणा का ऐसा दृश्य उन्होंने कहाँ देखा था ?

४

उसके बाद के दिनों में बंचक इस तरह रहा, जैसे वह सन्निपात के चक्कर में या बाई के झोंके में हो। वह बाहर जाता, काम करता, खाता, सोता लेकिन हमेशा ऐसी हालत में जैसे उसने अफीम खाई हो। वह सूनी अध-मुँदी आँखों से चारों ओर देखता, लेकिन अपने दोस्तों को भी मुश्किल से पहचान पाता। वह इस तरह दिखाई पड़ता, जैसे वह नशे में चूर हो या बहुत दिनों के बाद बीमारी से उठा हो। जिस क्षण अन्ना के प्राण निकले, उसमें अनुभव करने की ताकत जाती रही। वह कुछ भी कामना नहीं करता था, कुछ नहीं सोच पाता था। "बंचक, खाओ!" उसके दोस्त कहते, तब वह खाने लगता, धीरे-धीरे जबड़ों को चलाता। जब सोने का समय होता, वे कहते, "सोने का वक्त हो गया।" और वह लेट जाता।

चार दिनों तक संसार से बिलग रह कर, वह इस तरह दिन काटता रहा। पाँचवे दिन क्रिवोश्लिकौव से उसकी भेंट सड़क पर हुई। उसने उसके पंजे को पकड़ लिया और कहा—

"ओहो! तुम हो! मैं तुम्हारी ही तलाश में था।" वह बेचारा नहीं जानता था कि बंचक पर क्या बीत चुकी है। उसकी पीठ पर प्यार की धौल लगाते हुए, मुस्कुराते-मुस्कुराते फिर बोला—"यह तुम्हें क्या हुआ है ? तुम तो शराब छूते तक नहीं थे! क्या अब पीने लगे हो ? खैर, तुमने सुना है, हम लोग दोन के उत्तरी जिले में एक फौजी मुहिम भेजना चाहते हैं। पोदतील्कौव उसका नेतृत्व करेंगे। हमारी सारी आशा उत्तर के कोजाकों

पर केन्द्रित है। नहीं तो हम यहीं पकड़ लिये जाँयगे। क्या चलोगे? हमें कुछ प्रचारकों की जरूरत है। चलते हो न?"

"हाँ चलूंगा।" बंचक ने संक्षेप में जबाब दिया।

"बहुत ही ठीक! हम कल ही रवाना होते हैं।"

अपनी उसी मानसिक विमुग्धता की हालत में बंचक ने चलने की तैयारी की और दूसरे ही दिन वह रवाना हो गया।

५

उस समय दोन के दक्षिणी हिस्से की हालत दोन की सोवियत-सरकार के लिए बड़ी खतरनाक बनती जा रही थी। जर्मन सेना अपना कब्जा बढ़ाते यूक्रेन की ओर बढ़ी आ रही थी। दक्षिणी दोन के जिलों में क्रान्ति विरोधियों की बगावत पर बगावत हो रही थी। पोपोव दोन के मैदान में घात लगाये नोवोचेरकास पर किसी भी वक्त धावा करने की ताक में था। सोवियत की प्रान्तीय कांग्रेस मई में होनेवाली थी, किन्तु रोस्टौव पर कोजाकों की चढ़ाई की खबर से उसे बार-बार रोकना पड़ा था। सिर्फ उत्तरी हिस्से में क्रान्ति की आग धधक रही थी और पोदतील्कौव और दूसरे नेताओं का वही आशा-केन्द्र बन रहा था।

पोदतील्कौव हाल ही में दोन की सोवियत सरकार का चेयरमैन चुना गया था। लैगुतिन की प्रेरणा से उसने तय किया कि हम लोग उत्तर की ओर बढ़ें और वहां के पुराने सैनिकों की भर्ती कर तीन-चार रेजिमेंट तैयार करें, जो एक ओर जर्मनों के बढ़ाव को रोकें और दूसरी ओर क्रान्ति-विरोधियों के सिर कुचलें। इसके लिए पाँच आदमियों की एक कमीटी बनाई गई, जिसका अध्यक्ष पोदतील्कौव ही था। खजाने से एक करोड़ रुबल की निकासी की गई। कार्मेस्का जिले के कोजाकों को लेकर एक रक्षक दल तैयार किया गया और १४ मई को यह अभियान उत्तर दिशा की ओर रवाना हुआ।

रेल की सड़कों पर यूक्रेन से हटने वाली लाल फौज की भीड़ लगी थी। विद्रोही कोजाक पुलों को तोड़ रहे और सड़कों एवं रेलों की बरबादी कर रहे थे। हर सुबह जर्मनों के हवाई जहाज भूखे गिद्ध की तरह रेलवे-लाइन पर मँड़राते और नीचे से उड़ते हुए मशीनगनों की गोलियों की वर्षा लाल फौजी दस्तों पर करते रहते। चारों ओर संहार के भीषण दृश्य थे,—जले और चूर हुए रेल-डब्बे, टूटे खम्भे पर लटकते तार के जाल, गिरे हुए घर, उजड़े हुए बाड़े !

पाँच दिनों तक यह अभियानी दल धीरे-धीरे मिलेरोवो की ओर बढ़ता रहा। छठे दिन पोदतील्कौव ने अपने डब्बे में कमीटी की बैठक बुलाई।

"हम लोग इस तरह आगे नहीं बढ़ सकते। मैं सोचता हूँ कि हमें रेल को छोड़कर सड़क हो कर रास्ता तय करना चाहिये।"—उसने प्रस्ताव रखा।

"यह क्या कह रहे हो ?" लैगुतिन चिल्ला उठा। "जब तक हम पैदल टख-टख बढ़ते रहेंगे, क्रान्ति विरोधी हमें आगे से घेर लेंगे।"

"बहुत दूर है !" क्रिखिन ने संदेह के स्वर में कहा।

क्रिवोश्लिकौव चुप बैठा था। वह अपने समूचे शरीर को बड़े कोट से ढके हुए था, क्योंकि मलेरिया उसे सता रही थी। वह बहस में नहीं हिस्सा ले रहा था, यों चुप था कि वह चीनी का बोरा हो।

"तुम क्यों नहीं बोलते ? तुम्हारे भी जबान है। तुम्हारी क्या राय है ?" पोदतील्कौव ने उससे सूखे स्वर में पूछा।

"सवाल क्या है ?"

"ओहो, तुम सुन भी नहीं रहे थे। मेरी राय है कि हमें रेल छोड़ कर पैदल बढ़ना चाहिये। नहीं तो दुश्मन हमें घेर लेंगे। तुम क्या सोचते हो ? तुम हममें सबसे पढ़े लिखे हो।"

"हम सड़क से भी चल सकते हैं।"

"बहुत ठीक"—पोदतील्कौव के स्वर में उत्साह था।

उसने एक नक्शा निकाला। ग्रिखिन ने उसके दो कोने पकड़े। "हमें इस सड़क को पकड़ना चाहिये।" सिगरेट के धुएं से पीली बनी अपनी उंगुली से उसने बताया। "इस रास्ते डेढ़ सौ मील की दूरी होगी। क्यों?"

"हाँ, लगभग इतनी ही।" लैयुतिन ने कहा।

"मैं कोजाकों से ट्रेन छोड़ने को कह रहा हूँ। अब वक्त बर्बाद करने से क्या फायदा?" ग्रिखिन ने सब की ओर देखा और किसी ओर से कोई उज्र होता नहीं देख, डब्बे से कूद पड़ा।

६

वंचक अपने डब्बे में पड़ा था अपने बड़े कोट से अपने सिर को ढाँपे हुए। पुरानी अनुभूतियाँ उसके दिमाग में चक्कर काट-काट पीड़ा की पुनरावृत्ति कर रही थीं। उसकी धुंधली निगाहों के सामने बरफ से भरा मैदान चाँदी के के बड़े सिक्के की तरह मालूम पड़ता था। उसने कुछ ठंडक महसूस की और पाया अन्ना उसकी बगल म खड़ी है। उसकी काली आंखें, उसके मुँह की कोमल लकीरें, उसकी नाक का नुकीला हिस्सा, उसकी पेशानी की विचार रेखायें—वह सब देख रहा था। वह कुछ बोल रही थी, किन्तु, वह उसके शब्दों को नहीं पकड़ पाता था। उसके स्वर में एक अजीब ढंग की आवाज़ और हंसी मिली हुई थी। लेकिन उनकी आंखों की चमक और उसकी पलकों की झपक से वह उसकी सब बातें समझ रहा था।

लेकिन, उसने फिर दूसरी अन्ना को देखा! उसका चेहरा नीलापन लिये हुए पीला था, उसके गालों पर आंसू के धब्बे थे, उसकी नाक धंसी हुई थी, होंठ पीड़ा से हिल रहे थे। उसने झुक कर उसकी आंखों के काले कोटर को चूमना चाहा! फिर, वह आप ही आप कराह उठा और अपने गले को दबाया कि कहीं हिचकियां न आने लगें। अन्ना एक क्षण के लिये भी नहीं छोड़ रही थी। समय आ बीतने पर भी उसकी सूरत न धुंधली

होती थी, न काली पड़ रही थी। उसका चेहरा, उसकी शकल, उसकी चाल, उसके इशारे, भवों का तनाव—सब मिलजुल कर उसकी जीवित चलती फिरती तस्वीर बना रहे थे। उसके शब्द, उसकी भावुकताभरी प्रेम की बातें, सब एक-एक कर याद आते थे। और ये स्मृतियाँ उसकी पीड़ा को दस गुनी बढ़ा देती थीं।

अपने दिमाग की मौजूदा हालत का विश्लेषण करने की उसने कोशिश नहीं की—उसने बिना तर्क के, पशु की तरह, अपने को वेदना के हाथों में सौंप दिया। इस तरह जंजीरों में जकड़ा वह नष्ट हो रहा था—उस वृक्ष की तरह जिसकी जड़ में दीमक लग गई हो।

जब ट्रेन से उतरने का हुक्म मिला, लोगों ने उसे उठाया। वह उठा और लापरवाही से नीचे उतर आया। सामानों को उतारने में भी उसने मदद पहुँचाई। फिर उसी लापरवाही से एक घोड़ा-गाड़ी पर चढ़ कर वह रवाना हुआ।

ठिठुराने वाली वर्षा हो रही थी। सड़क के किनारे की ठिगनी घासों पर पानी की बूँदें थीं। खुले मैदान में हवा हाहाकार कर रही थी। उनके पीछे रेलगाड़ी का काला धुआँ था और स्टेशन के लाल घर थे। नज़दीक के गाँवों से चालीस घोड़ा गाड़ियाँ भाड़े पर की गई थीं, वे सड़कों पर टख-टख करती चल रही थीं। घोड़े धीरे-धीरे चल रहे थे। पानी से धुली काली मिट्टी उनके पैरों को पद-पद पर पकड़ रही थी। पहियों में कीचड़ चिपक जाती और चक्कर खाकर रूई की तरह दूर फेंक दी जाती। उनके आगे-पीछे खान के मजदूरों का काफला था, जो फोजाकों के भय के मारे, बाल बच्चों के साथ पूरब की तरफ भागे जा रहे थे।

—::०:-:—

छः

१

कई दिनों तक यह अभियानी दल दोन प्रान्त के भीतर प्रवेश करता रहा। यूक्रेनी गाँवों के लोग तो इनका स्वागत करते रहे, आतिथ्य देते रहे, खाने पीने का प्रबंध करते और सोने को मकान देते रहे। लेकिन ज्यों ही कोजाकों की बस्तियों में ये घुसे, पोद्तील्कौव और नेताओं के कान खड़े होने लगे। इन लोगों ने लोगों के व्यवहार में परिवर्तन देखा,—इन्हें वे देखते ही डर जाते, इनका बुरा चाहते, इनके हाथ खाना वेचने से हिचकते और इनसे बातें करने से भागते। इस ठंडे स्वागत से ऊब कर एक कोजाक लाल सैनिक एक दिन एक गाँव के बीच के मैदान में अपनी तलवार हिलाते हुए बोला—

"तुम आदमी हो या शैतान! क्यों तुम चुपचाप खड़े हो? हम तुम्हारे लिए अपना खून बहाते हैं और तुम नजदीक भी नहीं आते। अब समता कर राज है, भाइयों! कोई हमें नीच नहीं कह सकता, न हम पर हाथ डाल सकता है! हमें अंडे और मुर्गियाँ दो और हमसे सोने-चाँदी के चमकते सिक्के लो!"

छः आदमी सिर झुकाये यों खड़े थे, जैसे घोड़े जूए में जुतनेको खड़े हों। इस जोशीले भाषण का उन पर कोई असर नहीं हुआ। "यों मत चिल्लाओ!" कह कर वे अलग-अलग और निकल गये।

उसी गाँव में एक स्त्री ने एक कोजाक लाल सैनिक से पूछा—

"क्या यह सही है कि तुम लोग सब कुछ चुरा लोगे और सबको कत्ल कर दोगे?"

पलक झपकाये बिना ही कोजाक ने कहा—

"हाँ, सही है ! सबको कत्ल भले न करें, बूढ़ों को तो बिना कत्ल किये छोड़ेंगे नहीं।"

"अरे दैया ! उन्हें क्यों कत्ल कर दोगे, भैया ?"

"खाने के लिए ! बकरे के मांस में वैसा स्वाद कहाँ ? उसमें मिठास कहाँ ? बूढ़े-दादा लोगों को हम कड़ाह में रख कर शोरबेदार मांस तैयार करेंगे।"

"क्या तुम यह दिल्लगी नहीं कर रहे ?"

"यह झूठ बोला रहा है, बहिन।" मिखिन ने बीच में आकर कहा और सैनिक से बोला—

"तुम्हें सीखना पड़ेगा कि किससे दिल्लगी की जाती है और कैसी दिल्लगी की जाती है। ये कौन से किस्से तुम फैलाना चाहते हो ! ये लोग जायेंगे और प्रचार करेंगे कि हम बूढ़ों को कत्ल करते हैं।"

२

चिन्ता में चूर पोद्तील्कौव ने ठहराव और रात के आराम का समय कम कर दिया और अपने अभियान को लिये-दिये जल्दी-जल्दी चला। ऊपरी दोन जिले में पहुँचने के पहले के दिन उसने लैगुतिन से यों बातें कीं—

"दूर जाने की बात नहीं है इवान। हमें सेना की भर्ती तुरत शुरू कर देना है। हम भर्ती का ऐलान कर देंगे, अच्छा मुशाहरा देंगे, आदमी हमें मिल जायँगे। मिखेलोवस्क तक पहुँचते-पहुँचते हम एक डिवीजन सेना जरूर प्राप्त कर लेंगे। आदमी मिल जायँगे न ? तुम क्या सोचते हो ?"

"आदमी मिल जायँगे, बशर्ते कि वहाँ पहले से ही कोई गड़बड़ न हो।"

"तुम्हारा ख्याल है कि क्रान्ति-विरोधियों ने अपना काम वहाँ शुरू कर दिया होगा ?"

"कौन जाने ? "—लैगुतिन ने अपनी पतली डाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा—"हम लोग कुछ देर से आये हैं। मुझे डर है कि हम लोग असफल होंगे। जारशाही अफसरों ने अपना काम शुरू कर दिया है। हमें जल्दी करना चाहिये।"

"हम जल्दी कर रहे हैं। लेकिन डरो मत। हमें डरना नहीं चाहिये।" पोद्तीलकोव की आँखें चमक रही थीं। "हम लोग राह बना कर रहेंगे। दो सप्ताह में हम जर्मनों और क्रान्तिविरोधियों को दोन प्रान्त से निकाल बाहर करेंगे।" कड़े सिगरेट पर जोरों से कश लगाते हुए उसने फिर कहा—"अगर देर हो गई है, तो हम लोग खत्म हो चुके और हमारे साथ ही दोन में सोवियत भी खत्म हो चुकी। हमें ज्यादा देर नहीं करना है। अगर हमारे वहाँ पहुँचने के पहले ही अफसरों ने विद्रोह की तैयारी कर ली है, तब तो सब खत्म हो चुका।"

## ३

दूसरे दिन शाम को उन लोगों ने कोजाकों के प्रदेश में पैर रखा। पोद्तीलकोव, लैगुतिन और क्रिवोश्लिकोव आगे की गाड़ियों में से एक पर थे। जब वे एक गाँव के निकट पहुँचे, उन्होंने कुछ चरवाहों को जानवर चराते देखा। "हम इन चरवाहो की नब्ज जरा टटोलें ?" पोद्तीलकोव ने लैगुतिन से से प्रस्ताव किया।

गाड़ी से कूद कर वे नीचे आये। पोद्तीलकोव ने एक बूढ़े चरवाहे से सलाम बंदगी के बाद पूछा—

"तुम्हारी तरफ का क्या हाल-चाल है, भाई साहब।"

"कोई खास बात तो नहीं। लेकिन तुम होते कौन हो ?"

"हम सिपाही हैं, घर लौट रहे हैं।"

"क्या तुम में पोद्‌तील्कौव भी है ?"

"हाँ।"

चरवाहा सुनते ही सहम गया, उसका चेहरा पीला पड़ गया।

"क्या बात है बूढ़े दादा !" पोद्‌तील्कौव ने पूछा।

"सुना है, तुम लोग सभी पुराने धर्मावलंबियोंको मार डालोगे ?"

"झूठी बात ! किसने ऐसी बातें कहीं ?"

"आतामन ने सभा में दो तीन दिन पहले कहा था।"

"तो क्या आतामन तुम्हारे सिर पर सवार हो गया ?" लेगुतिन ने पोद्‌तील्कौव की ओर देखते हुए पूछा !

"कुछ दिन पहले हमने आतामन चुना ! सोवियत भंग कर दी गई है।"

पोद्‌तील्कौव गाड़ी पर आया और हाँकनेवाले से कहा—"घोड़े को चाबुक लगाओ।" वह गाड़ी पर बैठ कर हाँकने वाले से बार-बार गाड़ी को तेजी से चलाने को कहने लगा।

वर्षा होने लगी। आसमान भरा हुआ था। सिर्फ पूरब की ओर थोड़ा आसमान खुला था जिस पर सूरज की किरणें खिल रही थीं। जब वे पहाड़ी से नीचे उतर रहे थे, उन्होंने देखा एक छोटे से गाँव से लोग भागे जा रहे हैं। "वे भाग रहे हैं। वे हमसे डरते हैं।" लेगुतिन ने साथियों पर नजर दौड़ाते हुए भरे गले से कहा।

यहीं उन्हें यह भी पता चला कि जिस आदमी को आगे राह देखने को भेजा था। उसे कोजाकों ने वह गिरफ्तार कर लिया है। कोजाक कहीं नजदीक ही होंगे, अतः सलाह करने के लिए अभियान के नेता ने लोगों को बुलाया। पहले तो पोद्‌तील्कौव आगे बढ़ने पर जोर देता रहा, लेकिन पीछे उसके पैर भी डगमगाने लगे। एक कोजाक प्रचारक ने बीच ही में टोक कर उससे कहा—

"तुमने अकल खो दी क्या ? तुम हमें कहाँ ले जाना चाहते हो ? क्रान्तिविरोधियों की गोद में ? हम लौटते हैं। हम फिजूल मरना नहीं चाहते

वह देखो, वह क्या है ?—" उसने गाँव के उस ओर उँगली उठाई। लोगों ने उस ओर देखा। पहाड़ी पर तीन घुड़सवारों की काली छाया साफ दिखाई दे रही थी!

"ये उनके सन्देशवाहक हैं!" लेगुतिन ने कहा।

"और वहाँ देखा ?"

और भी घुड़सवार देखे गये। वे पहाड़ी में छिप गये। और फिर दिखाई पड़े।

पोद्तील्कौव ने लौटने का हुक्म दिया। वे लोग लौट कर पहले यूक्रेनी गाँव में आये, लेकिन यहाँ देखा कि कोजाकों से चेतावनी पाकर, ये लोग भी गाँव छोड़ कर भागे जा रहे हैं।

शाम हो रही थी। वर्षा से उनके कपड़े ही नहीं शरीर की चमड़ी तक लथपथ हो गई थी। सभी गाड़ी की अगल-बगल राइफल लिये चल रहे थे। इन्होंने पहाड़ी की इर्द गिर्द कोजाक घुड़सवारों को प्रगट होते और लुकते-छिपते देखा। उनकी बेचैनी का क्या कहना ?

एक झरने के किनारे पोद्तील्कौव गाड़ी पर से कूदा और "तैयार" का हुक्म दिया। झरने से थोड़ी दूर पर एक बाँध पर झाड़ियाँ थीं। झाड़ियों में कहीं कोजाक छिप कर धावा न करना चाहते हों, इसीसे यह हुक्म दिया गया था।

"यहां वे नहीं होंगे।" क्रिवोश्लिकौव ने धीमे के कहा। "वे अभी धावा नहीं करेंगे, वे रात का इन्तजार करेंगे।"

## ४

काफी रात बीतने पर वे अगले गाँव में पहुँचे। अभियान के लाल कोजाकों ने गाड़ियों को सड़क पर ही छोड़ दिया और झोपड़ों में अपने

लिए जगह खोजने लगे। पोद्‌तील्कोव ने चाहा कि कुछ लोग सन्तरी का काम करें, लेकिन कोई तैयार नहीं हो रहा था। तीन आदमियों ने तो साफ इन्कार कर दिया।

"तुरत साथियों की फौजी पंचायत बुलाइये और उन्हें हुक्म उदूली के लिए गोली मार दीजिये।" क्रियौशिलकौव ने गुस्से में कहा। लेकिन पोद्‌तील्कौव ने कहा—

"वे थक कर हिम्मत हार बैठे हैं! वे अपनी रक्षा कर नहीं सकते। हमारा खात्मा हुआ!"

किसी तरह लैगुतिन ने कुछ लाल कोजाकों को इकट्ठा किया और गांव के बाहर उन्हें सन्तरी के काम से खड़ा किया। पोद्‌तील्कौव ने रात में कई बार गश्त लगाई और अपने विश्वासपात्र कोजाकों से कहा—"सोना मत बच्चे, नहीं तो वे हमें पकड़ लेंगे।"

वह रात भर टेबल पर अपने हाथों पर सिर झुकाये बैठा रहा—घायल जानवर की तरह उसकी सांस भारी और भयानक थी। भोर होते-होते उसको झपकी आ गई, लेकिन वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ और पीछे हट चलने की तैयारी में लग गया। दिन खुल रहा था। वह आंगन में आया। घर की मालकिन ने उससे धीमे से कहा—

"पहाड़ी पर घुड़सवारों का जमघट लगा हुआ है।"

वह दौड़ कर बाहर आया और पहाड़ी की ओर देखा। कोजाकों की बड़ी फौज वहां इकट्ठी थी। वे अपने घोड़ों को तेजी से दौड़ा कर समूचे गांव को घेर लेने के प्रयत्न में लगे थे।

कुछ लाल कोज़ाक तब तक पोदतील्कौव के नज़दीक आ चुके थे। उनमें से एक ने उसे अलग ले जाकर कहा—

"साथी पोदतील्कौव ...उनके प्रतिनिधि अभी आये थे।" उसने पहाड़ी की ओर उंगली उठाई। "और हमसे कह गये हैं कि आप

जल्द हथियार रख दें, आत्म समर्पण करें, नहीं तो वे तुरन्त ही चढ़ाई करेंगे ।"

"चुप !... बदमाश ! तुम क्या कहने की हिम्मत कर रहे हो ?" पोदतील्कौव ने उसके कोट का कालर पकड़ कर झकझोरा, उसे अलग धकेल दिया और आप सीधे गाड़ी के नजदीक आया । अपनी राइफल उठा कर उसके घोड़े पर हाथ रखते हुए वह ज़ोरों से चिल्ला पड़ा—

"आत्मसमर्पण ! क्रान्ति विरोधियों से हमारी क्या बात हो सकती है ! हम उनसे लड़ेंगे । मेरे पीछे चलो हथियार उठाओ !"

कुछ कोज़ाक आंगन से दौड़े और उसके पीछे हो लिये । वे सब गांव के आखिरी हिस्से में पहुँचे थे कि ग्रिखिन दौड़ता हुआ वहां आया और बोला—

"छीः । पोदतील्कौव । यह क्या कर रहे हो ? क्या हम अपने भाई का खून बहायेंगे ? वे भी तो कोज़ाक हैं । लौटो !"

पोदतील्कौव ने देखा कि कम ही लोगों ने उसका साथ दिया है और लड़ाई होगी तो हार निश्चित है, उसने अपनी टोपी हिलाई और कहा—

"कोई मतलब नहीं सधेगा, बच्चो ! गांव में लौट चलो !"

वे लोग आये । पूरा अभियानी दल आँगन में एकत्र हुआ । कुछ मिनट के अन्दर ही चालीस कोज़ाक घुड़सवार गांव में घुसे । बाकी लोग पहाड़ी पर डटे हुए थे । पोदतील्कौव गांव के छोर पर जाकर उनसे आत्मसमर्पण की बातें करने चला । जब वह जा रहा था, वंचक दौड़कर आया और बोला—

"क्या हम आत्मसमर्पण करने जा रहे हैं ?"

"दूसरा चारा क्या है "

"क्या मरना चाहते हो!" बंचक सिर से पांव तक कांप गया। "कह दो कि हम हथियार नहीं डालेंगे।" वह चिल्ला पड़ा—"तुम हमारे नेता नहीं रहे। किससे तुमने इस बारे में सलाह ली? किसके हुक्म से तुम हमें धोखा देने जा रहे हो?"

वह मुड़ गया और अपना रिवाल्वर हिलाता हुआ लौटा। आंगन में आकर उसने लाल कोज़ाकों को लड़ने और रास्ता बनाकर रेलवे तक निकल चलने को ललकारा, लेकिन बहुमत आत्म समर्पण के पक्ष में था। कुछ ने मुँह घुमा लिया, कुछ ने गुस्से में कहा—

"तुम जाओ लड़ो। हम अपने भाई पर गोली नहीं चलायेंगे।"

"हम उन पर विश्वास करेंगे—बिना हथियार के ही रहेंगे!"

"अरे, आज ईस्टर का रविवार है। और तुम कहते हो कि खून बहाओ।"

बंचक मुड़ा और अपनी गाड़ी पर आया। अपना कोट बिछा दिया और रिवाल्वर को ज़ोरों से पकड़े लेट गया। पहले उसने सोचा कि वह भाग निकले, लेकिन अपने साथियों को छोड़कर चुपचाप भागना उसे उचित नहीं जँचा। वह पोदतील्कौव की प्रतीक्षा करने लगा।

५

पोदतील्कौव तीन घंटे के बाद लौटा, उनके साथ बहुत से सुफेद कोजाक थे। वह सिर ऊंचा किये दृढ़ता से कदम बढ़ा रहा था। उसकी बगल में क्रांति विरोधी कोजाक सेना का कमान्डर स्पिरिदोनौव था, जो उसके साथ ही तोपखाने में काम कर चुका था। उसके पीछे एक कोज़ाक घोड़े पर चढ़ा उजला झंडा छाती से चिपकाये था।

गलियों और आँगनों को, जहाँ गाड़ियाँ खड़ी की गई थीं, इन आये हुए कोज़ाकों ने घेर लिया। होहल्ला-सा मच गया। उनमें से बहुत पुराने साथी थे, ज्यों ही उन्होंने एक-दूसरे को पहचाना, खुशी की आवाज और हँसी छूटने लगी।

"अरे, तुम प्रोखर! कौन सी आँधी तुम्हें यहां उड़ा लाई?"

"उफ, हम तो तुमसे लड़ हो जाते।" प्रोखर ने कहा।—"याद है। हम लोगों ने मिल कर किस तरह लकेव में आस्ट्रियनों को खदेड़ा था?"

"ओहो, भाई दानिलो! ईसा फिर जी उठे!"

"सचमुच, जी उठे!" दानिलो ने ईस्टर की बधाई देते हुए कहा। आपस में चुम्बन का बाज़ार गर्म हुआ। दोनों कोज़ाक एक दूसरे को गले लगाते चूमते, मुस्कुराते अघाते नहीं थे। उनमें से जो लाल कोज़ाक था उसने कहा—

"हमने ईस्टर व्रत का उपवास भी अभी नहीं तोड़ा है!"

"लेकिन तुम तो बोल्शेविक हो तुम्हें व्रत से क्या लेना-देना?"

"वाह! बोल्शेविक हुए तो क्या हुआ? हम भगवान पर विश्वास रखते हैं।"

"नहीं, तुम झूठ बोल रहे हो।"

"भगवान की कसम, बिल्कुल सच!"

"और तुम सलीब भी पहनते हो?"

"जरूर—यह देखो।" लाल सैनिक ने अपने कोट का बटन खोला और कमीज के नीचे से ताम्बे का सलीब निकाल कर दिखलाया।

जो बूढ़े कुल्हाड़े और हथोड़े लेकर "लाल पोद्तील्कोव की नास्तिकता" दूर करने आये थे वे तो हैरत में पड़ गये। वे एक दूसरे को ताज्जुब से देखने लगे—"उन लोगों ने तो हमें बताया था कि तुमने ईसाई धर्म छोड़

दिया ।" दूसरे ने कहा– "हमने सुना था कि तुम गिरजाघर को तोड़ते और पादरियों को क़त्ल करते हो।"

"यह सब झूठी बात है।" चौड़े कंधे वाले लाल सैनिक ने कहा। "उन लोगों ने तुमसे झूठी बातें कही हैं। जब मैं रोस्टौव आया मैं सीधे गिरिजाघर गया और वहां का प्रसाद लिया।"

गलियों और आँगनों में बातचीत का बाज़ार गर्म था। आध घंटे के बाद कुछ कोजाक गलियों में गये और लोगों को धक्के देते हुए कहने लगे–"पोद्‌तील्कोव की सेना के जो लोग हैं, वे अलग कतार में खड़े होने को तैयार हो जायं।"

उनके पीछे लेफ्टीनेन्ट स्पिरिदोनोव आया और सिर से अफसर की टोपी उतारते हुए कहा—

"पोद्‌तील्कोव के दस्ते के जो लोग हैं, वे बाईं ओर उस बाड़े की तरफ चले जायँ। और लोग दाहिनी तरफ। भाइयों, सैनिको, आपके नेताओं के साथ तय हुआ है कि आप लोग अपने सब हथियार हमें सौंप दें, क्योंकि आप से जनता डरती है। अपनी राइफल और दूसरे हथियार गाड़ियों पर रख दीजिये। हम सब मिलकर उनकी हिफाजत करेंगे। हम आप लोगों को क्रैस्नोकोतस्क भेज रहे है, वहां, आपके हथियार आपको वापस कर दिये जायँगे!"

असन्तोष की एक तीखी लहर लाल सेना के कोजाकों में फैल गई, उनमें से एक चिल्ला उठा—

"हम हथियार नहीं देंगे।"

स्पिरिदोनौव के कोजाक हुक्म पाते ही दाहिनी ओर हट गये किन्तु लाल सैनिक तितर-बितर बेजान गिरोह-सा सड़क पर ही खड़े रहे। क्रिवोश्लिकोव ने जहरीली निगाह से चारों ओर देखा और लैगुतिन अपने होंठ चाट रहा था। बंचक ने निश्चय कर लिया था कि वह अपने हथियार

नहीं देगा। वह तेजी से पोद्तील्कौव के निकट आया और बोला—

"हमें हथियार नहीं देना है ! सुनते हो ?"

"अब बहुत देर हो चुकी !" पोद्तील्कौव ने धीमे से कहा।

सबसे पहले उसने अपनी रिवाल्वर के खोल से रिवाल्वर निकाल कर सौंप दी और कहा—

"मेरी तलवार और राइफल गाड़ी पर है।"

लाल सैनिकों ने बड़ी हिचक के साथ अपने हथियार सौंपना शुरू किया। उनमें से कुछ ने अपनी रिवाल्वरें छिपाना चाहा। बंचक के नायकत्व में कुछ ने हथियार देना अस्वीकार कर दिया और उनसे जबर्दस्ती छीनना पड़ा। एक मशीनगन चलानेवाले ने मशीनगन का एक आवश्यक पुर्जा लेकर गांव से निकल भागना चाहा। इस उथल-पुथल में कई इधर-उधर छिप भी गये। स्पिरिदोनोव ने पोद्तील्कौव और दूसरे लोगों पर पहरे बैठा दिये और उनकी तलाशी लेनी शुरू की। फिर नाम लेकर सबकी हाजिरी लेना शुरू करने जा रहे थे कि कैदी बने लाल सैनिकों ने ललकारा—

"क्या हाजरी ले रहे हो ? हम सब यहीं हैं।"

"हमें कार्ग्नाकुतस्क की ओर हांक ले चलो।"

"यह तमाशा खत्म करो।"

खजाने के बक्से पर मुहर करके सख्त संतरी के पहरे में उसे रवाना किया गया। स्पिरिदोनोव ने कैदियों को एकत्र किया और तुरंत अपना रुख बदल कर, गम्भीर चेहरे और तेज़ आवाज में हुक्म दिया—

"दो पांत में ! बाईं ओर से ! तेज कदम। चुपचाप।"

लाल सैनिकों की पांत से हल्ले की आवाज हुई। अनिच्छा-पूर्वक वे रवाना हुए, किन्तु, पांत में न चल कर तितर-बितर चलने लगे।

जब पोद्‌तील्कोव ने अपने आदमियों से हथियार डालने को कहा था, तब किसी अच्छे नतीजे की सम्भावना की आशा उसे थी। लेकिन ज्यों ही कैदी गांव से बाहर हुए, पहरे के कोजाकों ने अपने घोड़े उन पर डालने शुरू कर दिये। बंचक बाईं ओर से जा रहा था। एक बूढ़े कोजाक ने, जिसके कानों की बाली उम्र के तकाजे से काली पड़ गई थी, बेजरूरत ही उस पर कोड़ा चला दिया। कोड़े की छोर बंचक के गाल पर आ लगी। उत्तेजित होकर बंचक ने घूसे ताने, किन्तु उसी समय दूसरा कोड़ा इतने जोर से लगा कि उसे लाचार कैदियों के बीच चला जाना पड़ा। उसने ऐसा आत्मरक्षा की स्वाभाविक प्रकृति के कारण किया और अन्ना की मृत्यु की बाद उसके होंठ पर पहली बार इस विचार से मुस्कुराहट दौड़ गई कि मनुष्य में जीने की लालसा कैसी प्रबल होती है!

पहरे के कोजाकों ने कैदियों को पीटना शुरू किया। बूढ़े लोगों को तो जैसे गुस्सा उतारने का मौका मिल गया। वे घोड़े से झुक-झुक कर कोड़े और तलवार की मूंठ से इन निस्सहाय लोगों पीटे जा रहे थे। कैदी एक दूसरे को धक्के देकर बीच में घुसना चाहते थे। अपना हाथ ऊपर उठा कर एक लम्बा लाल सैनिक चिल्ला उठा—

"अगर तुम हमें कत्ल करना चाहते हो, तो जल्दी मार डालो। हमें क्यों नाहक इस तरह तड़पा रहे हो ?"

कुछ देर बाद बूढ़ों की निर्दयतामें कमी आई। एक कैदी के पूछने पर एक पहरेदार ने कहा—

"हमें हुक्म हुआ है कि तुम्हें पोनामारियोव ले जायें। डरो मत दोस्तो, वहां इससे कुछ बुरा न होगा।"

जब वे पोनामारियोव पहुँचे स्पिरिदोनोव ने एक दुकान के सामने रुक कर पास से गुजरनेवाले कैदियों से पूछना शुरू किया—

"तुम्हारा पुकार का नाम! धर्म का नाम! तुम कहां पैदा हुए थे?"

बंचक की बारी आने पर ज्यों ही सिपरिदोनोव ने "तुम्हारा नाम!" पूछा और अपनी पेन्सिल कागज पर ले गया कि उसका ध्यान इस असाधारण आदमी के भावनामय चेहरे पर गया, जो उस पर थूकने के लिए अपने होंठ हिला रहा था। वह उछल कर एक ओर हट गया और चिल्ला पड़ा—

"आगे बढ़ो, सूअर! तुम बिना नाम के ही मरोगे।"

बंचक के उदाहरण से उत्साहित होकर अन्य लाल सैनिकों ने भी नाम बताने से इन्कार किया, उन्होंने बिना नाम-धाम के ही शहीद हो जाना उचित समझा।

इन सबको उसी दुकान के भीतर बंद कर सिपरिदोनोव ने ताला जड़ दिया और सख्त पहरे का इन्तजाम कर चलता बना।

## ६

उस दुकान के बाहर एक ओर तो लूट के सामान का बंटवारा चल रहा था और दूसरी ओर फौजी अदालत का स्वांग रचा जा रहा था। उसका चेयरमैन एक तगड़ा सा कप्तान था, जो अपनी टोपी सिर के पीछे किये टेबुल पर झुका हुआ था और अदालत के अन्य सदस्यों से पूछ रहा था—

"हम इनके साथ क्या सलूक करें, बुजुर्गो? ये हमारे देश के दुश्मन हैं और हमारे घर को लूटने, कोजाकों का सर्वनाश करने को पधारे थे।"

एक बूढ़ा झट उठ खड़ा हुआ और बोला "इन्हें गोली मार दो—इनमें

से हर एक को ! वह इस तरह सिर हिला रहा था, जैसे उस पर भूत सवार हो। उसकी आंखें चारों ओर घूम रही थीं। मुंह से थूक उड़ाते उसने फिर कहा "इनके साथ कोई रहम की बात नहीं। ये धर्म के द्रोही हैं इन्हें कत्ल करो, धूल में मिलाओ!"

"इन्हें निर्वासन की सजा क्यों न दी जाय ?" एक ने झिझकते हुए कहा।

"गोली मारो !"

"मौत की सजा !"

"आम फांसी !"

"इन्हें गोली से जरूर उड़ाना है। इस पर बहस किस बात की ?"—स्पिरिदोनौव ने गुस्से में कहा।

चेयरमैन के चेहरे का रंग बदल गया—उसके होंठ पत्थर से सख्त हो गए। "गोली से उड़ाना! तो लिख लीजिये!" उसने सेक्रेटरी से कहा।

"और पोद्तील्कौव और क्रिवोश्लिकौव ? उन्हें भी गोली से उड़ाया जायगा ? यह तो उनके लिए मुँह मांगा वरदान होगा!" खिड़की पर बैठे एक बूढ़े कोजाक ने गुस्से में चिल्लाते हुए कहा।

"वे नेता थे! उन्हें फाँसी देनी चाहिये।" चेयरमैन ने जवाब दिया। सेक्रेटरी की तरफ मुखातिब होकर उसने कहा—"इसे भी लिख लोः "हुक्म—हम नीचे लिखे...

तेल के अभाव में दीपक झपकने लगा, धूएं से गंध आने लगी। उस निस्तब्धता में छत के नीचे मकड़ जाला में फंसे पतिंगे का छटपटाना, कागज पर कलम की घिस-घिस, अदालत के एक सदस्य के पुराने दमे का घर्घराना—सब कुछ सुना जा रहा था।

सेक्रेटरी ने लिखना खत्म करके सब सदस्यों से दस्तखत करने को कहा।

एक सदस्य ने कलम को अजीब ढंग से पकड़ते हुए कहा "लिखने में जरा मैं बोदा हूँ!" जब सबने दस्तखत कर दिये, चेयरमैन खड़ा हुआ और अपने रूमाल से पेशानी को पोंछता हुआ बोला—

"कालेदीन स्वर्ग में खुश हो रहे होंगे!"

एक आदमी मुस्कुराया, लेकिन उसका साथ किसीने न दिया। वे चुपचाप झोपड़े से निकले, बाहर आंगन में एक आदमी के मुंह से अचानक निकल पड़ा—

"प्रभु ईसा! यह क्या होने जा रहा है?"

७

दुकान में बन्द कैदियों में से किसी को भी उस रात अच्छी नींद नहीं आई। हवा की कमी और चिन्ता ने उनके गले को दबा रखा था। शाम को उनमें से एक ने पहरेदार से पूछा था—

"साथी, जरा दरवाजा खोलो! मैं जरा फरागत के लिए जाऊंगा।"

"यहां तुम्हारा कोई साथी नहीं है।" एक पहरेदार ने कहा।

"भाई, खोलो!" कैदी ने सम्बोधन को बदलते हुए कहा।

पहरेदार ने अपनी राइफल जमीन पर खड़ी की, सिगरेट का पीना खत्म किया, फिर दरवाजे पर मुंह लेजाकर कहा :

"पाजामें में ही हगो, ओ हरामजादे! रात भर कौन देखता है और भोर में उसी गंदे पाजामें में तुम्हें दूसरी दुनिया को हम रवाना करेंगे!"

कैदी कंधे से कंधा भिड़ा कर बैठे थे। एक कोने में पोद्‌तीत्कोव अपने

चोर-जेब से नोटों का पुलिंदा निकाल कर फाड़ रहा था। फिर उसने क्रिवोशिलकौव का कंधा छूते हुए कहा—

"अब बात साफ हो गई ... ..इन्होंने हमें धोखा दिया ? धोखा दिया, इन शैतानों ने ! उफ, कैसी शरम की बात ! जब मैं बच्चा था, अपने बाप के साथ मैं जंगल में जाता था और बत्तखों को झील में देखकर उनपर गलत गोलियां चलाता था। लेकिन मुझे अपने पर घृणा होती थी, इच्छा होती थी कि मैं शरम से रो पड़ूं। यहां भी मैंने गलती की ! बुरी तरह गलती। अगर रोस्टौव से तीन दिन पहले मैं चला होता तो हमें यहां मौत का सामना नहीं करना पड़ता। हम लोगों ने सब कुछ उलट दिया होता।

पीड़ा से दांतों को पीसते हुए क्रिवोशिलकौव ने धीमे से जवाब दिया :—

"वे जहन्नुम जायें ! वे हमें कत्ल करें। मैं मरने से नहीं डरता। मुझे अफसोस यही है कि दूसरी दुनिया में हम एक दूसरे को पहचान नहीं सकेंगे। हम तुम मिलेंगे, लेकिन अपरिचित की तरह ! ...आह ! यह तो भयानक है ?"

"रहने दो !" पोद्तील्कौव ने गुर्राते हुए कहा—"यह कोई तकलीफ नहीं।"

बंचक दरवाजे के नजदीक था—छेद से जो हवा आती उसे जल्द-जल्द सांस में ले रहा था। वह भूतकाल की दुनिया में था। उसे मां की याद आ रही थी। बड़ी मुश्किल से अपने ध्यान को उस ओर से हटाकर वह तुरत बीती बातों पर आया। अन्ना की तस्वीर उसकी आंखों के सामने खड़ी हुई ! उसे बड़ा इत्मीनान हुआ। उसका कांपना जाता रहा। वह उत्सुकता से इन्तजार करने लगा कि कब उसका शरीर छूटे। जिन मुसीबतों से वह गुजर रहा था, उनका खातमा होने जा रहा है। फिर वह खुश

क्यों न हो ?

उससे थोड़ा हटकर कैदियों का एक गिरोह बड़ी मस्ती से औरत, प्रेम, आनन्द आदि के अपने-अपने अनुभवों का बयान करके खुश हो रहा था । वे अपने परिवार, सम्बन्धी और मित्रों की चर्चा कर रहे थे । नई फसल का लहराना और उसमें कौओं का छिपना ! प्यारी शराब वोदका का घूंट और आजादी से नाचना गाना ! वे पोदूतील्कौव के कोसने लगे । लेकिन नींद ने उनके कल्पना के पंखों को काट दिया — वे अब खुर्राटे लेने लगे— लेटे, बैठे, खड़े !

जब भोर होने को आई, उनमें से एक अचानक रो पड़ा । जिसने बचपन के बाद कभी आंसू के स्वाद नहीं लिये, जो अपनी दृढ़ता और साहस के लिए मशहूर हो, वैसा तगड़ा आदमी जब रोने लगता है, तो वह दृश्य भयानक होता है ! कई तरफ से आवाजें आई—

"चुप रहो—"

"औरत की तरह रोने लगे !"

"लोग सो रहें हैं, और आप रोदन पसारने लगे !"

उस आदमी ने हिचकियाँ बद कीं, नाक साफ की और चुप हो रहा । जहाँ-तहाँ सिगरेट जलने की लाली चमक उठी, लेकिन किसी के मुँह से आवाज नहीं निकल रही थी । पसीने से, सिगरेट के धुएँ से और ओस की बूँदों से हवा भारी थी ।

गाँव में एक मुर्गा बोला—दिन की सूचना दी । दुकान के बाहर पैर की धमधम और राइफल का क्लिन-क्लिन सुनाई पड़ने लगा । "कौन जा रहा है ?" एक पहरेदार ने पुकारा ।

"अपने ही लोग ! हम पोदूतील्कोव के लोगों के लिए कब्र खोदने जा रहे हैं ।"

दुकान के झोपड़े में हर आदमी हिल उठा !

## ८

तारतारस्क गाँव से जो दस्ता पियोत्रा के नायकत्व में रवाना हुआ था वह पोनामारियोव उसी भोर में पहुँचा था । उन्होंने गाँव को कोजाकों के बूट से मुखरित पाया, जो अपने घोड़ों को पानी पिलाने ले जा रहे थे । लोगों का जमाव गाँव के एक छोर पर हो रहा था । पियोत्रा ने बीच गाँव में अपने लोगों को खड़ा होने और घोड़ों से उतर जाने का हुक्म दिया । कुछ उनके पास पहुँचे और पूछने लगे—

"आप लोग कहाँ से आरहे हैं ?"

"तारतास्क से ।"

"आप लोग कुछ देर से आये । हमने आप लोगों की मदद के बिना ही पोद्तील्कौव को पकड़ लिया । वे लोग वहाँ बंद हैं, मुर्गीखाने में बंद मुर्गी के बच्चों की तरह ।" वह हँस पड़ा और अपनी उगली दुकान की ओर उठाई ।

क्रिस्तोनिया, ग्रिगर आदि कुछ लोग उसके नजदीक आ गये । "आप लोग उन्हें कहाँ भेजेंगे ?" क्रिस्तोनिया ने पूछा ।

"जहन्नुम में ?"

"क्या दिल्लगी कर रहे हो ?" ग्रिगर ने उस आदमी का कोट पकड़ लिया ।

"जरा भलमंसाहत से सलूक कीजिये, हजरत !" उस आदमी ने तीखे स्वर में कहा और झटका देते हुए अपना कोट छुड़ाकर बोला— "वहाँ देखो, उनके लिए फांसी की टिकटी भी खड़ी की जा चुकी है ।" उसने दो खम्भों से लटकती हुई रस्सी की ओर ग्रिगर का ध्यान खींचा !

आसमान में बादल छाये थे। हल्की वर्षा हो रही थी। गाँव के बाहर कोजाकों और स्त्रियों की भीड़ जमा हो रही थी। ६ बजे से कत्ल और फाँसी शुरू हो जायगी यह जान कर गांव से लोग इस तरह टूट रहे थे, जैसे वे तमाशे या मेले देखने जा रहे हैं। औरतों ने अच्छे कपड़े पहन लिए थे, उनमें से कुछ ने अपने बच्चों को भी ले लिया था। कब्र के लिये खुदी खाई की नई मिट्टी पर बच्चे खेल रहे थे। औरतें आपस में भयमिश्रित स्वर में बातें कर रही थीं।

फौजी अदालत का चेयरमैन आया। तम्बाखू चबाते और सिगरेट का धुआँ उड़ाते। उसने भर्राई आवाज में पहरेदार से कहाः

"लोगों को खाई के निकट से हटाओ।" स्पिरिदोनौव से कहा—"पहले बैच को भेजें।" वह अपनी घड़ी देखता एक तरफ खड़ा हो गया। पहरेदार लोगों को अर्धवृत्त में खड़े कर रहे थे।

स्पिरिदोनौव कोजाकों का एक दस्ता लेकर दुकान की ओर जा रहा था कि पियोत्रा से उसकी भेंट हुई।

"तुम्हारे गाँव से कोई स्वयंसैनिक!" उसने कहा।

"किस काम के लिये?" पियोत्रा ने पूछा।

"गोली मारने के लिये!"

"नहीं! हो नहीं सकता!" पियोत्रा ने रुखाई से जवाब दिया। लेकिन उसी समय मिट्का कोर्शुनौव उसके नजदीक आया और अपनी हरी पुतलियों को नचाते हुए बोलाः

"मैं जाऊँगा! वाह! तुमने 'नहीं क्यों' कह दिया? कुछ कारतूस दो, मेरे पास सिर्फ एक ही है।"

और आन्द्री कैशुलिन और फियोदोत बोदोव्स्कौव ने भी तातांरस्क गाँव की शान रख ली!

## ६

कोजाक पहरेदारों के घेरे में जब दस कैदियों का पहला बैच दुकान से निकाला गया, दर्शकों में हल्ला मच गया। पोद्तील्कौव सबसे आगे था—उसका पैर खाली था, चुस्त फौजी पाजामा और चमड़े का कोट वह पहने था। कोट खुला हुआ था उसने अपना पैर कीचड़ में दृढ़ता से रोका और जब फिसलने लगा, हाथ से समतुलन किया। उसकी बगल में क्रिवोशिलकौव था, जो पीला पड़ गया था और जिसके पैर मुश्किल से आगे बढ़ रहे थे। उसकी आँखें चमक रही थीं, जैसे बुखार में हो। उसका चेहरा खिचा हुआ था। लैगुतिन बंचक की बगल में था। दोनो के पैर खाली थे और दोनों सिर्फ कमीजें पहने हुए थे। बंचक ने पहरेदारों के सिर से ऊपर आंखें कर अस्मान के बादलों को घूर कर देखा। उनकी ठंडी, शान्त आँखें चमक रही थीं। कोई भी उसे देख कर सोच सकता था कि वह किसी ऐसी चीज को देख रहा है, जिसे पाया नहीं जा सकता, किन्तु जिसकी कल्पना ही मधुर होती है। कुछ लोगों के चेहरे से विरक्ति टपक रही थी। एक आदमी घृणा से अपने हाथ हिला रहा था और पहरेदार के पैरों पर थूक भी फेंक चुका था! किन्तु दो तीन की आँखों में ऐसी मूक आकांक्षायें थीं, उनके चेहरों पर ऐसा निस्सीम भय आभासित था कि पहरेदार तक उनकी ओर देखने में झिझक उठते थे।

वे जल्दी से जा रहे थे। पोद्तील्कौव ने डगमगाते क्रिवोशिलकौव को अपने हाथ का सहारा दे दिया था। वे भीड़ के निकट पहुँचे। लैगुतिन की आंखें अपनी ओर गड़ी देख कर पोद्तील्कौव ने पूछा—

"क्या बात है?"

"इन कई दिनों में ही तुम्हारे बाल सफेद हो गये!"

"क्या ऐसा होना सम्भव नहीं?" पोद्तील्कौव की साँस ऊँची थी; उसने

हाथ से पेशानी का पसीना पोंछा और फिर बोला—"ऐसा होना नामुमकिन तो है नहीं? भेड़िये के बाल भी पिंजड़े में भूरे पड़ जाते हैं, मैं तो आदमी हूँ।"

बातें बन्द हुईं। भीड़ उनकी ओर बढ़ी। उनकी दाहिनी ओर कब्र की खाई खुदी हुई थी। स्पिरिदोनौव ने हुक्म दिया—

"रुक जाओ।"

पोद्तील्कौव जल्दी से एक कदम आगे बढ़ गया और भीड़ की ओर देखा। उनमें ज्यादा बूढ़े थे। नौजवान सैनिक पीछे छिटपुट खड़े थे। शायद उनकी आत्मा उन्हें कोस रही थी। पोद्तील्कौव की झुकी हुई मूँछों में थोड़ा कम्पन देखा गया और वह गम्भीरता से बोला—

"बुजुर्गों! मुझे और क्रिवोश्लिकौव को आप आज्ञा दीजिये कि हम अपने साथियों को मृत्यु का सामना करते हुए देख सकें। हमें आप पीछे फाँसी पर चढ़ाइये; हम पहले उन साथियों को देखना और उत्साह देना चाहते हैं जिनकी आत्मा कमजोर है।"

भीड़ ऐसी शान्त थी कि टोपियों पर बूँदों का गिरना भी सुना जाता था।

कप्तान मुस्कुराया, तमाखू भरे दाँतों को निपोड़ते हुए! उसने कोई उज्र नहीं किया। बुजुर्गों ने चिल्ला कर अपनी स्वीकृति जाहिर की। क्रिवोश्लिकौव और पोद्तील्कौव एक ओर खड़े हो गये। कोजाकों के द्वारा खाई पर ले जाये गये लाल सैनिकों की ओर उन्होंने देखा।

बाईं ओर के अन्त में उन्होंने वंचक को देखा; उसकी साँस ऊँची चल रही थी और आँखें जमीन पर गड़ी थीं। उसकी बगल में लैगुतिन था। उसकी बगल में जो आदमी खड़ा था, जिसे पहचानना भी मुश्किल होता था एक रात में ही उसकी सूरत बीस बरस ज्यादा उम्र की हो चली थी। दो और

लाल सैनिक खाई पर आये और घूम गये। उनमें से एक मुस्कुरा रहा था और खामोश भीड़ की ओर घूसा तान रहा था। अन्त के आठवें सैनिक को वहाँ घसीट कर ले जाना पड़ा था। वह पीठ के बल गिर पड़ा था, पैर उछालने लगा था, कोजाक पहरेदार को पकड़ लिया था और अपने चेहरे को आँसुओं से भर कर चिल्ला रहा था :

"मुझे छोड़ दो! छोड़ दो! भगवान के नाम पर छोड़ दो। भाई! ओ मेरे नन्हें भाई! तुम क्या कर रहे हो! मैंने जर्मन की लड़ाई में चार तमगे पाये थे। मेरे बच्चे हैं! भगवान की कसम, मैं बेकसूर हूँ। ओह! तुम क्या कर रहे हो?..."

एक लम्बा कोजाक उसके सीने पर बूट जमा कर, घसीटता हुआ उसे खाई पर ले आया था। पोद्‌तीलकौव ने जब उसे पहचाना, उसका दिल रूई हो गया। वह लाल सैनिकों में साहस के लिए सरताज समझा जाता था। उसने चार तमगे हासिल किये थे, वह एक सुन्दर नौजवान था। कोजाक ने खाई पर उसे खड़ा किया, लेकिन वह फिर ढह पड़ा और उसके पैर से लिपट गया। वह पैर, जो उसे बार-बार ठोकर लगा रहे थे! वह ऊँचे कंठ से कह रहा था :

"मुझे मत मारो! दया करो! मेरे तीन बच्चे हैं एक उनमें बच्ची है। बच्ची! मेरे भाई, मेरे दोस्त..."

उसने कोजाक के घुटने पकड़ लिये, लेकिन वह घुटना छुड़ा कर अलग कूद गया और अपने बूट से उसके कान पर ऐसी ठोकर जमाई कि कान फट कर लहू गिरने और उसके उजले कालर को लाल बनाने लगा।

"उसे खड़ा करो।" स्पिरिदोनौव ने गुस्से में हुक्म दिया।

किसी तरह उसे खड़ा किया गया और वे लोग वहाँ से जल्द हट गये। सामने गोली चलाने वालों का दल अपनी राइफलें सम्हालने लगा। भीड़

हुंकार कर उठी, कुछ औरतें चिल्ला पड़ीं।

बंचक एक बार और आस्मान और उस जमीन को देख लेना चाहता था, जिस पर वह उनतीस वर्षों तक घूमता रहा है। उसने आगे नजर दौड़ाई और लगभग पन्द्रह डग पर कोजाकों की पांत को देखा। उनमें से एक, जो ऊँचा था, जिसकी आखें हरी थीं, जिसके होंठ दबे थे, जो आगे की ओर झुका था, वह ठीक बंचक की छाती को लक्ष्य कर निशाना ठीक कर रहा था। गोली जब धाँय से दागी गई, ठीक उसके पहले बंचक के कानों में एक चीख सुनाई पड़ी, उसने मुड़ कर देखा, एक नौवजवान औरत गाँव की ओर भागी जा रही है, एक हाथ से वह गोद के बच्चे को सम्हाले है दूसरे से आँखें मूंदे हुए है!

गोली पर गोली चली—जब आठों आदमी गिर गये, गोली चलाने वाला दल खाईं की ओर बढ़ा। यह देख कर कि जिस लाल सैनिक पर उसने गोली चलाई है वह अब तक छटपटा रहा और अपने कंधे को दाँत पकड़े हुए है, मिटका कोरशुनोव ने दूसरी गोली फिर उस पर खर्च की और आन्द्री कौशुलिन से बोला—

"उस शैतान को देखो! उसने अपने कंधे को इस तरह दांत से पकड़ा था, कि खून निकल गया था। उफ, वह तो भेड़िये की तरह मरा है—बिना जरा भी कराहते या उसांस लेते हुए!"

यह मरने वाला बंचक था! बंचक, क्रान्तिकारियों का सरताज!

दस और लाल कैदी संगीनों की नोक से ढकेले जाकर खाईं के निकट लाये गये।

दूसरी बार गोली चली, भीड़ की खड़ी स्त्रियाँ चीख पड़ीं और वहाँ से भाग पड़ीं। वे एक दूसरे पर भहराती और बच्चों को घसीटती जा रही थीं। कोजाक भी वहाँ अपने को खड़ा नहीं रख सके। यह घिनौना नर संहार, मरनेवालों की पुकार और कराह, प्रतीक्षा में खड़े कैदियों की सिसक और

आंसू—उन लोगों के लिए असह्य हो उठे। सिर्फ युद्धभूमि से लौटे सैनिक वहाँ रह गये, जिन्होंने ऐसे कितने दृश्य देखे थे, जिनका हृदय पत्थर का हो चुका था।

लाल सैनिकों के नये गिरोह नंगे पाँव, नंगे बदन लाये जाते; खाई के निकट खड़े किये जाते, उनपर गोलियों की बौछार होती! वे गिरते, छटपटाते; अधमरों पर फिर गोलियाँ चलाई जातीं और अन्त में उनके शरीर को घसीट कर खाई में रख दिया जाता। पोद्तील्कौव और क्रिवोशिल-कौव आगे बढ़ कर उन्हें हिम्मत देने की कोशिश करते, लेकिन अब उनके शब्दों में कोई महत्व नहीं रह गया था। उन लोगों पर अब दूसरी शक्ति का प्रभाव था, जो दो-तीन मिनटों के अन्दर हो, पके फल की तरह, डाल से गिरने वाले थे।

ग्रिगर भीड़ से निकल कर अपने गाँव की ओर भागने का उपक्रम कर रहा था कि वह पोद्तील्कौव के आमने-सामने आ गया। उसका पुराना नेता उसकी ओर घूर कर देखने लगा और बोला—

"तुम भी यहीं हो, ग्रिगर!"

ग्रिगर के गालों पर नीलिमा दौड़ गई, वह रुक गया।

"हाँ यहीं! तुम देख ही रहे हो।"

"हाँ देख रहा हूँ!" पोद्तील्कौव सूखी मुस्कान में मुस्कुराया। उसकी आँखों में विस्फोटक घृणा थी, जो ग्रिगर के चेहरे पर फूटने जा रही थी। "तो, तुम अपने भाइयों को ही गोली के घाट उतार रहे हो! तुमने अपना रंग बदल दिया। कैसा......?" वह आगे बढ़ कर ग्रिगर के नजदीक पहुँच गया और धीमे से कहा—"तो तुम हमारी तरफ भी थे और उनकी तरफ भी! जो भी ज्यादा पैसे दे? धन्य हो तुम ."

ग्रिगर उसकी आस्तीन को पकड़ कर हाँफते हुए बोला—

"क्या ग्लुबोस्का की लड़ाई तुम्हें याद है कि किस तरह अफसरों को

कत्ल किया गया था ! कत्ल किया गया था तुम्हारे हुक्म से ! और अब तुम्हारी बारी आई है ! रोओ मत ! चिल्लाने से कुछ नहीं होता। तुम्हारे ऐसे लोग दूसरे पर तुहमत लगाते ही हैं। तुम खत्म हो चुके—मास्को कमिशार के चेयरमैन महोदय ! गंदा सूअर ! तुमने कोजाकों को यहूदियों के हाथ बेंच दिया ! क्या कुछ और सुनना चाहते हो ?"

क्रिस्तोनिया गुस्से से चूर ग्रिगर का हाथ पकड़ कर, वहां से हटा ले चला। "चलो,, अपने घोड़ों की ओर !" वह बोला—"यहाँ हम लोगों के लिए कुछ करना नहीं रह गया। भगवान ! लोगों पर कौन-से संकट आने वाले हैं !"

लेकिन वे रुक गये, जब उन्होंने पोद्तंल्कोव की आवाज फिर सुनी। वह लड़ाई से लौटे कोजाकों को लक्ष्य करके चिल्ला रहा था—

"तुम अंधे हो......जाहिल हो ! अफसरों ने तुम्हें ठग लिया है। वे तुम्हारे हाथों से तुम्हारे भाइयों को कत्ल करवा रहे हैं। क्या तुम सोचते हो कि हमारी मृत्यु से ही सब बातें खत्म हो जायँगी ? नहीं ! आज तुम ऊँचे हो, लेकिन कल फिर तुम्हें खाई के नजदीक खड़ा होना पड़ेगा—गोलियां खानी होंगी। समूचे रूस में सोवियत सरकार कायम होकर रहेगी ! मेरी बात याद रखना ! नाहक तुम हमारा खून बहा रहे हो ! तुम बेवकूफों की जमात हो !"

"जो दूसरे आवगे, हम उनसे भी निबट लेंगे !" एक बूढ़े ने जवाब दिया।

"चाचा साहब, आप उन सबको नहीं कत्ल कर सकते !" पोद्तील्कोव मुस्कुराया। "आप समूचे रूस को फांसी पर नहीं लटका सकते। आप अपने सिर की हिफाजत की ही सोचें। एक दिन आपको होश आयगा, लेकिन, तब बहुत देर हो चुकी होगी।"

ग्रिगर आगे सुनने को खड़ा नहीं रह सका। वह वहां से दौड़ पड़ा और अपने घोड़े के नजदीक आया। जीन कस कर वह क्रिस्तोनिया के साथ

गाँव से निकल पड़ा, पहाड़ी पर घोड़ा दौड़ाते मैदान में आया, पीछे जरा भी मुड़ कर नहीं देखा।

## १०

सभी लाल सैनिकों को गोली मारे जाने पर खाई उनके शरीर से पूरी-पूरी भर गई थी। उन पर मिट्टी डाल दी गई और पैरों से दबा दिया गया। काला बुर्का पहने दो अफसर तब पोद्तील्कौव और क्रिवोश्लिकौव को फाँसी के तख्ते की ओर ले चले। बहादुरी के साथ, सिर ऊँचा किये, पोद्तील्कौव उस तिपाई पर चढ़ गया, अपनी मोटी मजबूत गरदन से उसने कालर खोला और बिना जरा भी हिचक और कम्पन के खुद फाँसी की, साबुन से चिकनी की गई, रस्सी को अपने गले में लगा लिया। एक अफसर ने क्रिवो-श्लिकौव को तिपाई पर चढ़ने में मदद की और रस्सी को उसके गले में लगा दिया।

"बोलो—शुरू करो!" खड़े कोजाकों ने चिल्ला कर कहा।

अपने हाथ बचे-खुचे कोजाकों के सामने फैला कर उसने कहना शुरू किया—

"देखिये कितने कम लोग हमारी मौत देखने को रह गये हैं। विचार ने उनके हृदय पर चोट की है। काम करने वाली मेहनतकश जनता की ओर से हम लोगों ने अफसरों से, इन चूहों से, लड़ाई ली और अपनी जान की बाजी लगा दी और अब हम लोग आप ही के हाथों से कत्ल किये जा रहे हैं! लेकिन; इसके लिए हम आपको दोष नहीं देते, न अभिशाप देते हैं। आपको बुरी तरह धोखा दिया गया है। क्रान्तिकारी सरकार कायम होकर रहेगी और आप इसे अनुभव करके रहेंगे कि सचाई किस ओर थी। दोन के सबसे अच्छे, सबसे लायक बेटों को आज आपने इस खाई में गाड़ दिया है!"

लोगों का शोर बढ़ता जा रहा था और उसी में पोद्‌तील्कौव की आवाज भी लीन होती जा रही थी। इस मौके से फायदा उठाकर एक अफसर ने उसके पैर के नीचे की तिपाई पर ठोकर मारी, तिपाई हट गई। उसका भारी शरीर झूलने लगा, किन्तु, थोड़ी देर में ही उसके पैर जमीन छूने लगे। रस्सी का फंदा उसके गले में कस गया था, जिससे वह अपने को ऊपर बढ़ाने की कोशिश कर रहा था। उसने अपने पैर का अंगूठा गीली जमीन पर गड़ा दिया और साँस लेने के लिए मुँह खोलने लगा। अपनी बाहर निकलती हुई आंखों से भीड़ की ओर देखकर उसने कहना शुरू किया—

"और तु इतना भी नहीं जानते कि फाँसी किस तरह दी जाती है! स्पिरिदोनौव, अगर मैं यह करता, तो तुम जमीन तक नहीं पहुँच सकते थे!"

उसके मुँह से झाग निकल रहा था। बुर्कापोश अफसरों और नजदीक के आदमियों ने बड़ी मुश्किल से उसके भारी शरीर को उठाकर फिर तिपाई पर रखा।

क्रिवोशिलकौव को अपना व्याख्यान खत्म करने का मौका नहीं दिया गया। उसके पैर के नीचे से तिपाई खींच ली गई। उसका पतला शरीर आगे-पीछे हिलने लगा। कभी-कभी समूचा शरीर इस तरह सिकुड़ जाता कि घुटना ठुड्डी छूने लगता; और कभी इस तरह फैल जाता जैसे वह जम्हाई ले रहा हो। वह इस तरह छटपट कर रहा था और उसकी जीभ काली होकर बाहर निकल पड़ी थी कि पोद्‌तील्कौव के नीचे की तिपाई दूसरी बार फिर हटा दी गई। फिर उसका भारी शरीर नीचे गिरा। कंधे पर चमड़े के कोट का सीअन फट गया, लेकिन, फिर उसके पैर का अंगूठा जमीन पर पहुँच गया। कोजाकों की भीड़ में कराह उठने लगी, कुछ भगवान को गुहराते वहाँ से भागे। ऐसी निराशा और गड़बड़ी का वातावरण हो गया कि सब एक क्षण तक चित्रलिखे से पोदतील्कोव के पथराये शरीर को

देखते स्तब्ध खड़े थे।

लेकिन अब पोद्‌तील्कौव को बोलती बंद हो चुकी थी। रस्सी का फंदा उसके गले में गाढ़े कस गया था। सिर्फ उसकी आँखें घूम रही थीं, जिनसे आंसू की धारा निकल कर उसके चेहरे को धो रही थी। अपने क्लेश को कम करने की चेष्टा में वह अपने शरीर को भयंकर रूप से फैलाने की मर्णान्तक चेष्टा कर रहा था।

किसी को उस समय एक विचार सूझ गया, उसने उसके पैर के नीचे की जमीन को खोदना शुरू किया। उसका शरीर नीचे लटकता गया, गर्दन लम्बी होती गई और उसका सिर कंधे की ओर लुढ़क पड़ा। रस्सी उसके बोझ को बर्दाश्त करने में असमर्थ हो रही थी, वह चर्र-मर्र कर रही थी। मानों, उस आवाज की ताल पर ही पोद्‌तील्कौव का शरीर झूल रहा था और अपने आँसू और झाग से भरे चेहरे को अपने हत्यारों को घूम घूम कर दिखा रहा था!

:0:

## ज

### १

मिशा कोशेवाई और वैलेट ने तारतारस्क गाँव से भागने के बाद दूसरी रात को कारगिन छोड़ा। मैदान पर कुहासा छाया था। पहाड़ी पर कुहासा चलता-सा नजर आता था। नई घास में तीतर आवाज दे रहे थे। आसमान में चाँद इस तरह तैर रहा था, मानों झील में कुमुद का सद्यःप्रस्फुटित फूल तैरता जा रहा हो।

भोर तक वे लोग चलते गये। आकाशगंगा विलीन होने लगी। ओस चमकने लगी। वे लोग एक गाँव के निकट आये। लेकिन गाँव से दो मील बाहर गये होंगे कि छः घुड़सवार कोजाकों ने उन्हें पकड़ लिया। मिशा और वैलेट ने छिपने की कोशिश की होती, लेकिन घास छोटी थी और चाँदनी साफ थी।

कोजाकों ने उन्हें पकड़ा और कारगिन ले चले। करीब तीन सौ गज तक वे चुपचाप गये। तब गोली की एक आवाज हुई। वैलेट के पैर लड़खड़ाये और वह बगल की ओर दब गया, उस घोड़े की तरह, जो अपनी ही छाया से डरता हो। वह गिरा नहीं, बुरी तरह लुढ़क गया—उसका सिर एक लकड़ी से जा टकराया!

पाँच मिनट तक मिशा चलता रहा—वह संज्ञा-शून्य हो चला था, सिर्फ उसके कानों में गोली की आवाज गूँज रही थी। तब उसने पूछा—

"तुम गोली क्यों नहीं मार देते! सूअर! इस तरह पीड़ा देने से तुम्हें क्या मजा मिलता है?"

"बढ़े चलो, चुप रहो।" एक कोजाक ने दया सी दिखाते हुए कहा। "हमने उस हरामजादे किसान को मार डाला, लेकिन तुम पर दया आगई! तुम जर्मनी की लड़ाई में १२ वीं रेजिमेंट में थे—क्यों, यह सही है न?"

"हाँ!"

"तुम फिर १२ वीं रेजिमेंट में भर्ती किये जाओगे। तुम काफी जवान हो। तुमने थोड़ी गलती की है, लेकिन वह कोई बड़ा पाप नहीं—उसका प्रायश्चित करा लिया जायगा।"

## २

तीन दिनों के बाद मिशा के पाप के प्रायश्चित का निर्णय कारगिन की फौजी अदालत ने किया। उस जमाने में फौजी अदालतें दो तरह की सजायें देती थीं—गोली से मारा जाना और कोड़े से पीटा जाना। जिन्हें गोली मारी जाती, उन्हें रात में मैदान में ले जाते। जिनके सुधार की आशा समझी जाती, उन्हें सरे आम कोड़े लगाये जाते।

इतवार की भोर में लोग गाँव के बीच के मैदान में एकत्र होने लगे। मैदान में जगह न मिलने पर कितने छतों पर चढ़ कर तमाशा देख रहे थे।

सबसे पहले एक पादरी के बेटे को सजा दी गई। वह एक कट्टर बोल्शेविक था और वे उसे गोली के घाट ही उतारते, लेकिन उसका बाप एक धर्मशील पादड़ी समझा जाता था, उसकी सब इज्जत करते थे और मेहरबानी करके उसके बेटे को बीस कोड़े मारने की ही सजा दी गई थी। उसका पाजामा खोल लिया गया था। उसे नंगा करके बेंच पर लेटा दिया गया था, उसके हाथ बेंच के नीचे इकट्ठा बाँध दिये गये थे, एक कोजाक उसके पैर पर बैठ गया था और दो कोजाक दोनो बगल कोड़े लेकर खड़े थे। उन्होंने कस-कस कर कोड़े लगाये। कोड़े का लगाना खतम होने पर वह उठा, अपने को हिलाया, पाजामा पहना और चारों ओर घूम घूम कर सलामियाँ दीं। गोली खाने से बच गया, उसे इस बात की खुशी थी और इसके लिए उसने बुजुर्ग कोजाकों को धन्यवाद भी दिया।

"अब भी तुम सुधरो!" एक बुजुर्ग ने धन्यवाद के जवाब में कहा। इस पर ऐसी हँसी उठी कि अलग पेड़ के नीचे बैठाये गये कैदी भी हँसी नहीं रोक सके।

सजा के मुताबिक मिशा को भी बीस गरम-गरम कोड़े दिये गये।

लेकिन कोड़े से भी ज्यादा पीड़ा उसे शरम दे रही थी। समूचा जिला एकत्र था—बूढ़े जवान, बच्चे। मिशा ने रोते-रोते अपना पाजामा पहना और कोड़े मारने वाले कोजाक से कहा—

"यह मुनासिब नहीं हुआ ?"

"क्या, नामुनासिब ?"

"कसूर तो मेरे सिर का था जिसने सोचा, और सजा भुगतनी पड़ी चूतड़ को। मैं जिन्दगी भर यह लाज नहीं भूलूँगा।"

"अफसोस मत करो। लाज कोई धुआँ नहीं होती, जो आँख खा जायगी !" इन शब्दो में कोजाक ने उसे धीरज दिया और उसे उत्साह देने की चेष्टा में बोलता गया—

"तुम काफी मजबूत हो ! दो कोड़े तो मैंने अच्छे कस कर दिये थे। मैंने सोचा था, तुम चिल्लाओगे, लेकिन, तुम चुप्पी साधे रहे। उस दिन एक को कोड़े लगा रहा था, तो वह अपने को काबू में नहीं रख सका ! मालूम होता है, उसका पेट खराब था।"

दूसरे दिन मिशा को मोर्चे पर ले जाया गया।

३

वैलेट की लाश दो दिनों तक वहीं पड़ी रही। गाँव के आतामन ने तब दो कोजाकों को उसके लिये कब्र खोदने को भेजा। दोनो वहाँ जाकर बैठ गये और सिगरेट का धुआँ उड़ाते हुए बात करने लगे—

"यहाँ की जमीन बड़ी सख्त है।"

"लोहे की तरह ! मेरे जमाने में तो कभी नहीं जोती गई। इन चंद सालों की तरह यह भी सख्त हो गई !"

"हाँ, इस नौजवान को उस पहाड़ पर गाड़ना चाहिये— वहाँ की जमीन अच्छी है। वहाँ हवा है, धूप है, खुश्की है, वह जल्द नहीं सड़ेगा।"

उन लोगों ने वैलेट की लाश पर नजर दौड़ाई जो घास में लुढ़की पड़ी थी और खड़े होते हुए कहा—

"कपड़े उतार लो !"

"जरूर। उसके बूट भी नये हैं।"

एक सच्चे ईसाई की तरह पूरब की तरफ सिर करके उसकी लाश उन्होंने कब्र मे रखी और ऊपर से काली मिट्टी काफी डाल दी।

"क्या पैर से दबा दूँ ?" उनमें से छोटे ने पूछा, जब मिट्टी सर की जा चुकी थी।

"उसकी जरूरत नहीं, यों ही रहने दो।" दूसरे ने उदासी के स्वर में कहा—"जब फिरिश्ते बिगुल बजायेंगे, तो जिसमें बेचारे को जल्द उठ खड़ा होने में दिक्कत न हो।"

दो सप्ताह के अन्दर अन्दर उस कब्र पर घास-फूस उग आई। कुछ दिनों के बाद जंगली जई के बाल उस पर झूल रहे थे और जगली झड़बेरी के फूल उस पर झड़ रहे थे।

उसके बाद एक दिन एक बूढ़े-बाबा के मन में खब्त सवार हुई, उन्होंने उसकी कब्र के नजदीक एक छोटा-सा खम्भा गाड़ दिया, जिसके नीचे 'धरतीमाता' की स्थापना की गई और ऊपर एक तख्ते में यह लिख कर लटका दिया गया—

"उथल-पुथल और हलचल के जमाने में भाई भाई का इन्साफ न किया करें।"

तब से जो कोई मुसाफिर उस रास्ते से जाता, यह समाधि-स्तम्भ उसके मन में कितनी ही पीड़ायें पैदा करता और वह निराशा और आँसू भरी आँखें डालते जल्द-जल्द वहाँ से पैर उठाकर बढ़ जाता।

जून महीने मे दो बनतीतरों में वहाँ झगड़ा हो रहा था। उनका यह युद्ध स्त्रियों के अधिकार के लिए, जिन्दगी के अधिकार के लिए, प्रेम के लिए और सन्तानोत्पादन के लिए था। आखिर उनमे से एक ने स्तम्भ के नीचे एक गड्ढा बनाया, उसे घास फूस से सजाया और कुछ दिनों के बाद वहाँ ग्यारह नीले नीले चिकने, सुथरे अंडे देखे गये जिन्हें भर दिन माँ-तीतर अपने चमकीले, गरम पखों से ढक कर सेती रहती !

—:०:०:—